क़ुरआन परिचय
द्वितीय खण्ड
देवप्रकाश

लेखक.

देवप्रकाश

* ओ३म् *

कुरआन-परिचय

अर्थात्

कुरआन पर अनुसन्धानात्मक दृष्टि

द्वितीय : खण्ड

□ लेखक □

देवप्रकाश

भूतपूर्व आचार्य अरबी-संस्कृत महाविद्यालय.
अमृतसर.

• सम्पादक •

शशि भोगलेकर

कवि-लेखक एवं पत्रकार.
रतलाम.

प्रथमावृति | विजयादशमी १७ अक्टूबर १९७२ | मूल्य. ~~७ रूपये~~ 10

☐ प्रकाशक :
देवप्रकाश— भूतपूर्व आचार्य अरबी–संस्कृत महाविद्यालय, अमृतसर.
● आर्य–समाज दयानन्द मार्ग, रतलाम.

☐ मुखपृष्ठ सज्जा :
श्री दुर्गा शर्मा
● ३५ जाट मुहाल रतलाम.

पुस्तक मिलने का पता–

(१) पं. रूद्रदत्तजी, प्रधान आर्यसमाज, बाजार लक्ष्मणसर, अमृतसर.
(२) आर्यसमाज, नई सड़क उज्जैन.
(३) आर्यसमाज, दयानन्द मार्ग रतलाम.

☐ मुद्रक :
श्री शारदा प्रिन्टिंग प्रेस
● ३७, लक्कड़पीठा मार्ग, रतलाम (म. प्र.)

समर्पण

परम स्नेही और अभिन्न मित्रवर—

श्री लाला रामगोपालजी शालवाले

के-

"कर कमलों में यह ग्रन्थ सादर-
सप्रेम एवं सानुरोध समर्पित है।"

—देवप्रकाश

धन्यवाद-ज्ञापन

सर्व प्रथम मैं परमपिता परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए अमृतसर निवासी श्री लाला मेहरचन्दजी, श्री लाला रामशरणजी एवं श्री लाला लालचन्दजी चौपड़ा बंबई, को हार्दिक धन्यवाद सहित आभार ज्ञापित करता हूं, कि जिनके आर्थिक सहयोग से इस 'कुरआन परिचय' द्वितीय खण्ड का प्रकाशन सम्भव हुआ।

–देवप्रकाश

भारत के प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य विद्या वारिधि श्रद्धास्पद गोस्वामी श्री दीक्षितजी महाराज बड़ा मन्दिर बम्बई के

आशीर्वचन.

—●—

विद्वद्वर्य श्री पण्डित देवप्रकाशजी द्वारा लिखित 'कुरआन-परिचय" नाम की पुस्तक के प्रथम खण्ड और इस द्वितीय खण्ड को आद्योपांत पढ़ा।

कुरआन के आलोचनात्मक अध्ययन की दृष्टि से एवम् कुरआन जब प्रकट हुई उस समय की अरबस्थान की आन्तरिक स्थिति एवं उस समय के विभिन्न विद्वानों के कुरआन सम्बन्धी अभिप्रायों को निष्पक्षतया अध्ययन करने की दृष्टि से यह पुस्तक नितांत उपयोगी है। यह मेरी अतिशयोक्ति नहीं है।

इस प्रकार की आलोचनात्मक अध्ययनयुक्त पुस्तकों का विश्व में जितना अधिक प्रचार हो उतना ही जनता में से अन्ध-श्रद्धा एवं अन्धविश्वास कम होने की सम्भावना निश्चित है। मेरी दृष्टि में धर्म के नाम से जो अन्धश्रद्धा फैलाई जाती है, उसके कारण मानव समाज पर कैसे-कैसे भयानक संकट उपस्थित हुए हैं। जिसके इतिहास में तो पृष्ठ-के-पृष्ठ मानव के रक्त की कथाओं से भरे पड़े हैं; किन्तु वर्तमान समय में भी तो हम मार्च १९७१ से दिसम्बर १९७१ तक बगाल में देख चुके है। यह भयानक हत्याकांड भी धर्म के नाम पर फैलाई जाने वाली अंध-

श्रद्धा का ही परिणाम है। इस प्रकार की अन्धश्रद्धाओं से मानव समाज का संरक्षण करना प्रत्येक सत्यान्वेषी विद्वान का अनिवार्य कर्तव्य है ।

जब कि हम इतिहास की घटनाओं से यह निर्णय पा चुके कि धर्म के नाम पर फैलाई जाने वाली अन्धश्रद्धा को दूर करना चाहिए। चाहे वह फिर हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, ईसाई आदि किन्हीं भी धर्म के नाम से फैलाई जाती हो, उसको जनहितार्थ दूर करना प्रत्येक सज्जन मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य बन जाता है, और अन्धश्रद्धा को दूर करने का सर्वोत्तम उपाय सुसाहित्य के निर्माण व प्रकाशन द्वारा ही वास्तविक ज्ञान का प्रचार सम्भव हो सकता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक, जिसको मैं पढ़ चुका हूं और मुझे हर्ष है, कि जिस विद्वता व निष्पक्षता से इसमें कुर-आन के वास्तविक स्वरुप को उद्घाटित किया गया है। वह ८७ वर्षीय पं. देवप्रकाशजी की जीवन भर की अखण्ड विद्या-साधना और चिन्तन द्वारा ही सम्भव हो सकता था। मैं श्री पण्डितजी को इसके लिए साधुवाद देता हूँ और प्रत्येक ज्ञान जिज्ञासु पाठक से आग्रहपूर्वक इस महान शोध को पढ़ने-पढ़ाने की अनुशंसा करता हूं।

—गोस्वामी दीक्षित

विषय-सूचि.

लेखक की अन्य कृतियां :—

•—◉—•

१. महानिर्वाण तंत्र क्या है
२. मूर्तिपूजक मनोवृति पर एतिहासिक दृष्टि
३. दाफ़ेउल ओहाम (ऊर्दू)
४. मैदाने महशर
५. हसन निज़ामी का वास्तविक स्वरूप
६. कर्तव्य-आदेश
७. आस्तिक विचार
८. घोर आक्रमण
९. बहाई मत दर्पण
१०. यथार्थ दर्शन
११. मानव समाज व्यवस्था
१२. इन्जिलों में परस्पर विरोधी कल्पनाएं
१३. आर्य समाज के दिवंगत महापुरुषों का जीवन
१४. कुरआन परिचय (प्रथम खण्ड)

समादेश

कुरआन परिचय के प्रथम खण्ड में हमने कुरआन के सम्बंध में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विभिन्न साधनों, प्रक्रियाओं, नियमों, परम्पराओं, सूक्षम-सूत्रों, व्यवस्थाओं, पारिभाषिक शब्दों के रहस्यों, विशेष शैलिओं आदि का विस्तार से वर्णन किया था। कुरआन में वर्णित विषयों, उनकी सरल व्याख्या निरस्त (जिनके अन्वेषण का निषेध हो गया) आयतों, व जिन आयतों का आदेश स्थायी है उनको जानकारी कुरआन के सात प्रकार के पाठ, उनके परिणाम, आयतों के बनने के रहस्य, अस्पष्ट आयतों के समझने के प्रकार, कुरआन संग्रह के भेद, आयतों व उनकी मात्राओं का निर्धारण, कुरआन की आयतें किस प्रकार कहां से प्राप्त हुई, सृष्टि रचना व आदम की उत्पत्ति शैतान व खुदा का वाद विवाद, आदम के पथ भ्रष्ट होने की कहानी, कुरआन में फरिश्तों, हजरत उमर व अन्य अरब विद्वानों, शैतान व काफिरों के वचन, हजरत मुहम्मद के अतिरिक्त अन्य अरब विद्वानों ने जो कुरआन बनाए उनका सप्रमाण वर्णन व नमूने, हजरत उस्मान से पहले के सभी कुरआनों का अग्नि में जलाया जाना, कुरआन की विषय सूची, कुरआन में अरबी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के शब्द, खुदा के द्वारा अनेक प्रकार की कसमें खाने के उदाहरण आदि विषयों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया था।

अब इस द्वितीय भाग में कुरआन के पहले पारे की आयतों के अनेक भाष्यकारों द्वारा किए गए अर्थ, उनकी व्याख्या

उस पर विवेचना, एक आयत से दूसरी आयत का विरोध, आयतों के बनने के रहस्यमय कारण उनकी संगतियां निष्पक्ष भाव से इस्लाम के ही प्रमाणिक महान् विद्वानों के बहुमूल्य ग्रन्थों से संकलित कर पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस निष्पक्ष भाव से लिखे गए ग्रन्थ का लक्ष्य यह है कि मानव मानव के मध्य वर्तमान साम्प्रदायिक मतभेदों की इन खाइयों को पाटा जाए जिन्होंने हजारों बार भूमि माता को मानव रक्त से स्नान कराया है।

सत्य के ग्रहण करने व असत्य के परित्याग करने से ही यह साम्प्रदायिक वैर, व वैमनस्य शान्त हो सकता है। सत्य का गला घोंट कर असत्य का प्रचार करते रहने से तो शैतानी आसुरी भावों की अग्नि सुलगती ही रहेगी व समय पर विस्फोटों का रूप धारण कर, यही मतभेद मानवता पर संकट उत्पन्न करते रहेंगे।

मानवता के पुजारी प्रत्येक विचारशील मनुष्य का यह कर्तव्य है कि मानवता के शत्रु इन विषैले साम्प्रदायिक कीटाणुओं का पता लगा लगा कर भूमि माता को इनके घातक प्रभावों से सुरक्षित बनावें।

आरम्भिक शब्द

कुरआन परिचय के प्रथम भाग में हमने कुरआन की वास्तविकता को समझने के लिए विस्तृत सामग्री पाठकों के भेंट की थी, जिसमें कुरआन को समझने के लिए जो साधन तथा हेतु हैं, उनका विवरण उसमें निरूपण किया गया था अब इस द्वितीय भाग में कुरआन के प्रथम पारे को मूल आयतों पर विवेचना करेंगे। जिसका आधार कुरआन के प्रमाणिक भाष्य-कारों की व्याख्याओं और मुस्लिम विद्वानों की रवायतों तथा हदीसों पर होगा।

मुसलमानों के सैकड़ों सम्प्रदाय हैं, और बहुधा वह अपने पक्ष की सिद्धि कुरआन से ही करते हैं, पांच सम्प्रदाय मुख्य कहे जाते हैं। जिनको शाखा दर शाखा सैंकड़ों सम्प्रदाय बन गये। पांच सम्प्रदाय (१) अहले सुन्नत (२) मोतज़ेला (३) मर्जिया (४) शीआ (५) ख्वारज अल मिललोवन्नहल भाग २ अबु मुहम्मदअली बिन अहमद बिन हज़म।

इन मुस्लिम सम्प्रदायों के विद्वानों ने ही एक दूसरे सम्प्र-दाय के दोष लिखकर बड़ी बड़ी पुस्तकें प्रकाशित की है। और इस्लाम को ही बुरी तरह बदनाम किया है। इन्ही के ग्रन्थों से प्रभावित होकर सर्व साधारण ने इस्लाम के सम्बन्ध में अपनी कई प्रकार की धारणाये बनाली हैं इन मुस्लिम सम्प्रदायों ने परस्पर एक दूसरे के विरूद्ध जो साहित्य प्रकाशित किया है। प्रति पक्षी मतावलम्बियों ने उसका शतांश साहित्य भी नहीं

लिखा वैसे ईसाइयों ने इस्लाम के विरुद्ध बहुत मात्रा में पुस्तकें लिखी, उनके लिये भी शीआ और अहले सुन्नत की परस्पर विरोधी पुस्तकें ही आधारभूत बनी अस्तु आज कल मुस्लिम विद्वान कुरआन के विषय में भ्रामिक साहित्य बहुत बड़ी मात्रा में प्रकाशित कर रहे हैं, प्रत्येक पुस्तक में कुछ कल्याण की बातें भी होती हैं और विशेष कर कुरआन का सूरत कताल से पहले का साहित्य लोगों के लिये बहुत लुभावना और रूचिकर था, परन्तु वह आज्ञायें निरस्त हो चुकी जैसा कि हमने कुरआन परिचय के प्रथम भाग में बहुत अच्छी तरह लिख दिया है। आज उन्हीं निरस्त आयतों की बिना पर कुरआन के गुण गाये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त भारत में कुछ ऐसे लोग भी उत्पन्न हो गये हैं। जो मुसलमानों को प्रसन्न करने और सर्व प्रियता प्राप्त करने के लिये कुरआन के सम्बन्ध में प्रशंसात्मक साहित्य छाप कर सर्व साधारण को पथ भ्रष्ट कर रहे हैं। यद्यपि उन्हें कुरआन के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं है। इन कुरआन समर्थकों के मिथ्या लेखों के प्रभाव से विशेषतया हिन्दु भ्रमित हो कर गुमराह हो रहे है। इसी कारण हमें ऐसे लोगों की फैलाई हुई भ्रान्तियों को दूर करने और वास्तविकता को प्रगट करने के उद्देश्य से अपनी लेखनी उठानी पड़ी, जिससे सत्यासत्य को जान कर लोग सन्मार्ग को ग्रहण करें प्रथम हम इस बात को बल पूर्वक कहेंगे कि कुरआन के तात्पर्य को उसके अर्थों को पढ़ कर समझ लेना सम्भव नहीं, जिसको हम पहले भाग में पुष्ट प्रमाणों से सिद्ध कर चुके हैं। ऐसी आयतें कुरआन में बहुत थोड़ी हैं जिन के सामान्य अर्थ जान कर आप उनका कुछ आशय समझ सकें। मगर अधिकांश आयतें ऐसी है जो किसी प्रयोजन घटना और किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति, तथा सांकेतिक रूप में लिखी गई हैं। ऐसी आयतों का शाने नज़ूल (उतरने का कारण)

जानना आवश्यक है, उसके जाने बिना आयत का मतलब नहीं जाना जा सकता हम उदाहरणार्थ एक सूरत लिखते हैं—

अलम् यजिदका यतीमन फ़आवा व वजदका ज़ाल्लन फ़हदा व वजदका आएलन फ़अग्ना। सूरतुज्जुहा पारा--३०

इसका शब्दार्थ केवल यह है– क्या तुझको अनाथ नहीं पाया ! पस स्थान दिया और तुझे गुमराह पाया, पस हिदायत दी। और पाया तुझको निर्धन, पस धनवान बना दिया, इस अर्थ से जो सांकेत मात्र है आपको क्या पता लगेगा कि कौन अनाथ था, कौन पथ भ्रष्ट था, कौन निर्धन था, कैसे उसको स्थान दिया, कैसे सन्मार्ग दिखाया, कैसे धनवान किया। पहले हम मुआलेमुत्तन्ज़ील से इस आयत की व्याख्या पृष्ठ २२८/४ से लिखते हैं। शाने नज़ूल इस प्रकार है। इब्ने अब्बास ने बताया कि– रसूल ख़ुदा ने कहा कि मैंने अपने खुदा से प्रश्न किया, यदि न करता तो अच्छा था, मैंने कहा ऐ रब्ब ! तू ने सुलेमान बिन दाऊद को बहुत बड़ा राज्य प्रदान किया। अमुक को वह दिया, अमुक को यह दिया, इस प्रश्न के उत्तर में यह आयत उतरी कही गई है। इस पर खुदा की ओर से उत्तर मिला, इस को तफसीर इत्तोकान प्रकरण १६ पृ. ११८ पर इस प्रकार लिखा है। कि ऐ मुहम्मद ! क्या मैंने तुमको अनाथ पा कर पनाह नहीं दी और गुमराह देखकर हिदायत नहीं की और मुफ्लिस (नादार, फकीर) पा कर मालदार बना दिया, मैंने तेरा सोना खोल दिया और तेरे बोझों को तुझ से उतार दिया और तेरा ज़िकर बलन्द किया, इस तरह कि मैं ज़िकर न किया जाऊंगा मगर यह कि तू भी मेरे साथ ही याद किया जाएगा। तफ़सीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ४४७ पर इतना अधिक है कि– धनवान कर दिया तुझको ख़ुदीजा के धन से या

व्योपार के लाभ के कारण या लूट के माल के द्वारा। तफ़सीर मुआले मुत्तन्ज़ील पारा ३० पृष्ठ २२८/४ में इसका उत्तर इस प्रकार है। काला या मुहंम्मद अलम् अजिद का यतीमन फ़ओ तीतो का कुल्तो बला ऐ रब्बे कालालम् अजिद का द्वाल्लन फ़ह्-दैतोका कुल्तो बलाऐ रब्बे। कालालम् अजिद का आएलन फ़अग़्नैतोका कुल्तो बला ए रब्बे मुआलिम २२८/४ पारा--३० अर्थ वही है जो ऊपर किया मगर इतना विशेष है– कि प्रत्येक प्रश्न के उत्तर पर हज़रत मुहम्मद हां मेरे रब्ब ठीक है कहते रहे। तफसीर हक्कानी में इतना विशेष है कि जब हज़रत गर्भ में थे, तो पिता की मृत्यु हो गई। दो वर्ष के हुए तो माता भी चल बसी, जब ६ वर्ष के हुए तो पालक उनका दादा अब्दुल मुत्लब भी चल बसा। **तफसीर हक्कानी पारा-३०-पृष्ठ १६६**

तफसीर इब्ने कसीर भा–४–पा–३० पृष्ठ–११ आदि में भी यह कथा ऐसे ही लिखी है। **तफसीर हक्कानी पारा ३० पृ. १६६ यही वर्णन तफसीर जलालैन पृ. ५०२** हाशिया न०–६–७

आयतों की व्याख्या से जो बड़े बड़े भाष्यकारों ने लिखा है, उस से स्पष्ट हो गया कि ये आयतें केवल हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए हैं। जो उनके प्रश्न का उत्तर हैं। यदि आपको न बताया जाता तो आप कदापि जान नहीं सकते थे–कि यह आयत किसके लिये हैं।

मगर मैं आपको ज़रा गहराई में ले जाना चाहता हूं–जो व्यक्ति हज़रतमुहम्मद का अनुयाई है। वह तो इन आयतों को देख कर मुहम्मद का दृढ़ विश्वासी बन जायगा–और उसको पूर्ण विश्वास हो जायगा कि यह कुरआन निस्संदेह है। खुदाका कलाम

हैं और साधारण विरोधी को भी ये आयतें चक्र में अवश्य डाल देंगी और उनके विचार को हिला देंगी, ये आयतें विचित्र ढंग से बनाई गई हैं, यही तो हज़रत मुहम्मद का कमाल है परंतु आप ज़रा गहरी दृष्टि से देखेंगे—तो इसका रहस्य आप पर खुल जायगा—कि यह आयत अपनी नबव्वत (पैगम्बरी) को मनाने के लिए लिखी गई है हम पहले इत्तकान का एक वाक्य लिख चुके हैं कि खुदा ने कहा कि मैंने तेरा ज़िकर बलन्द किया (ऊंचा किया) कि जहां मेरा ज़िकर होगा। वहां तेरा ज़िकर भी मेरे साथ ही होगा बस यह बात मनाने का उद्देश्य था कि लोग ला इला हा इल्लिल्लाह के साथ मुहम्मदुर्रसू लिल्लाह भी इन आयतों से प्रभावित होकर आसानी से पढ़ लें इसी कारण अपनें जीवन की घटनाओं का वर्णन कर के प्रभाव डाला है कि पहली बातें तो खुदा ने ठीक कहीं हैं—और अब अपने आप कौन अपनी अवहेलना प्रगट करना चाहता है अतः यह बात अवश्य ख़ुदा ने ही कही होगी, यह सोचने की बात है। इस बात को यहां ही समाप्त कर के असल प्रकरण आरंभ करते हैं।

कुरआन के पहले पारे की आयतों का अन्वेषण

प्रथम सूरत

आम मुसलमान, कुछ एक को छोड़कर सब भाष्यकार कुरआन की प्रथम सूरत अल्हम्द को मानते हैं जिस का आरम्भ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

से होता है सूरत तौबा के अतिरिक्त कुरआन की सभी सूरतों के प्रारम्भ में इस आयत का प्रयोग किया गया है, यहां पर

मुस्लिम विद्वानों में भारी मतभेद है कि यह आयत अल्हम्द् की एक आयत है-या अन्य सूरतों की भांति फ़ासिला करने या प्रतिष्ठा के तौर पर लिखी गई है। इस पर विभिन्न मत देखें हज़रत अली का कहना हैं कि बिस्मिल्लाह अल्हम्द की एक आयत है। तफ़सीर इत्तकानप्रकरण २२–पृष्ट २११

तफ़सीर हक्कानी ने लिखा कि इस बात पर सब सहमत हैं–कि अल्हम्द की सात आयतें हैं। मगर इसमें मतभेद है कि बिस्मिल्लाह भी उसमें प्रविष्ट है कि नहीं सब का नाम सूरत फ़ातहा (अल्हम्द) रखा जावे या बिस्मिल्लाह को (जो कुरआन का भाग और खुदा का कलाम है।) इस सूरत के पहले बल्कि सब सूरतों के पहले इस लिए लिख दिया गया कि एक से दूसरी सूरत में फ़रक हो जाए, और इससे सूरत का आरम्भ करना प्रतिष्ठित समझा जाये पस: मदीना, बसरा तथा शाम के कारी (कुरआन के पाठी) और फ़ुक़हा (धर्म शास्त्रीयों) का भी यही मत है। प्रसिद्ध इमाम अबू हनीफ़ा का भी यही मत हैं कि यह । बिस्मिल्लाह । सूरत का भाग नहीं, केवल अन्तर करने और प्रतिष्ठा के लिए लिखा गया है। यही बात प्रमाणिक है। क्योंकि बुखारी और मुस्लिम ने उद्धृत किया हैं कि हज़रत मुहम्मद हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, नमाज़ को अल्हम्द से आरम्भ करते थे इसी प्रकार इब्ने, ख़ज़ीमा अबू दाऊद और हदीसों के लेखकों का मत है कि मुहम्मद साहिब नमाज़ में बिस्मिल्लाह को धीरे पढ़ते थे । अत: यह सिद्धहै कि बिस्मिल्लाह अल्हम्द का भाग नहीं, परन्तु मक्का वा कूफ़ा के कुरआन पाठी और धर्म शास्त्री बिस्मिल्लाह को अल्हम्द का भाग समझते हैं।............ दोनों पक्ष अपनी मान्यताओं को हदीसों से पुष्ट करते हैं। तफ़सीरें हक्कानी पारा–१ पृ–१६

हम कहते हैं कि इस साधारण बात को मुसलमान १४०० वर्ष में भी हल कर के एकमत न हो सके। इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है, कि तफसीर जलालैन और तफसीर कुरआनिलअजीम जैसी प्रमाणिक तफसीरों में अल्हम्द को कुरआन के आरम्भ में स्थान न मिला—और कुरआन के अन्त में लिखा गया।

बिस्मिल्लाह के सम्बन्ध में तफसीर इब्ने कसीर का लेख महत्वपूर्ण है। आपने लिखा कि दलायलुन्न बव्वत में इमाम बैहकी ने लिखा-कि यह सूरत अल्हम्द सब से पहले उतरी,बाकलानी ने उद्धृत किया है सूरत फ़ातिहा (अल्हम्द) सबसे पहले उतरी दूसरा मत यह है—कि अलमुद्दस्सिर पहले उतरी, तीसरा यह है कि इक़राआ पहले उतरी। इब्नेकसीर जिलद-१-पृ.१४ तफसीर इत्तोकान प्रकरण–७ में यह तीनों मत दिए गए हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह तीनों सूरतें एक के पीछे दूसरी निरन्तर उतरीं मानी जाती हैं। (बना कर पेरा की गई हैं) जो तीनों सूरतें ऊपर लिखी है जो उनके उतरने की व्यवस्था बताई गई हैं—वहां बिस्मिल्लाह का कोई उल्लेख नहीं। यही कहा गया है जिब्रील ने यह शब्द कहलवाए इक़राआ आदि से। जैसे ग़ारे हिरा में जिब्रील फ़रिश्ता ने मुहम्मद साहिब को बलपूर्वक एक एक शब्द मसल मसल कर पढ़ाया। उस समय उक्त प्रसंग में बिस्मिल्लाह का कोई चर्चा नहीं हुई यदि पहले इक़राआ फिर मुद्दस्सिर फिर अल्हम्द को तीसरे नम्बर पर माना जावे, तो भी उस समय बिस्मिल्लाह का नाम तक नहीं था, क्योंकि बिस्मिल्लाह तो वर्षों बाद सूरतनमलमें उतरी कही जाती है सूरत नमलमें इब्ने कसीर लिखते है कि हज़रत बरीदा ने फ़रमाया कि मैं हज़रत मुहम्मद के साथ जा रहा था—तो हज़रत मुहम्मद ने फर्माया कि मैं एक ऐसी आयत जानता हूं कि मुझसे पहले सुलेमान के सिवाय

और किसी पर नहीं उतरी, मैंने कहा वह कौनसी आयत है तो हज़रत मुहम्मद ने कहा कि मस्जिद से बाहर जाने से पहले तुझे बता दूंगा–अभी हज़रत ने मस्जिद से बाहर पांव रक्खा ही था, कि मेरे दिल में विचार आया, कि सम्भवतः आप भूल गए इतने में हज़रत ने यह आयत पढ़ी।

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम

और रवायत में है कि जब तक यह बिस्मिल्लाह आयत नहीं उतरी थी आज़मुत्तफासीर में लिखा है–कि हारेसुल्अकील कहते है कि जब तक बिस्मिल्लाह नहीं उतरी थी तब तक रसूले खुदा अपने पत्रों के आरम्भ में बे इस्मे कल्लाहुम्मा लिखा करते थे। और हर अमर में इसी से पवित्रता खोजा करते थे। यहां तक कि सूरते हूद में बिस्मिल्लाहे मजरेंहा व मर्सहा उतरा, तो लम्बे समय तक आप इसीको लिखते रहे औरजब कुल अदउल्लाहा औ अद्उर्रहमान उतरी, तो फिर रसूल बहुत समय तक इसी को लिखते रहे और पढ़ते रहे। यहां तक कि सूरते नमल में यह आयत।

बिस्मिल्लाहर्रहमानिर्रहीम उतरी

उस समय से आपने इसको लिखना आरम्भ कर दिया और रसूल दो सूरतों में अन्तर करने के लिये इसी बिस्मिल्लाह का प्रयोग करने लगे। आज़मुत्तफासीर भाग–१ ऊपर के प्रमाणों से यह सिद्ध हो गया–कि जब अल्हम्द उतरी थी–तो उस समय हज़रत मुहम्मद को बिस्मिल्लाह का ज्ञान तक भी न था–इस अवस्था में बिस्मिल्ला सूरत अल्हम्द की आयत कैसे हो सकता है, क्योंकि जब अल्हम्द हज़रत ने बनाया उस समय

तक हज़रत बिस्मिल्लाह को जानते तक न थे । इस अवस्था में बिस्मिल्लाह न तो अल्हम्द की आयत हो सकता है– और न उसके पहले लिखी मानी जा सकती है–हालात से यह पता लगता है–कि जब हज़रत मुहम्मद को बिस्मिल्लाह का पता लगा उसके पश्चात् उन्होंने अल्हम्द और अन्य सब सूरतों के पहले लगा कर पढ़ना आरम्भ कर दिया–जो सूरतें नमल से पहले उतरी कही जाती हैं उनमें बिस्मिल्लाह कैसे हो सकता है–अतः सूरत नमल के तथाकथित उतरने के बाद बिस्मिल्लाह पढ़नी आरम्भ की गई।

बिस्मिल्लाह--विवेचन

पूर्व लिख चुके है कि हज़रत मुहम्मद ने कहा कि बिस्मिल्लाह सुलैमान के अतिरिक्त मुझे ही दिया गया । परन्तु सुलैमान से पूर्व हज़रत मूसा के काल में जब मूसा हज़रत ख़िज़र के साथ भ्रमण कर रहे थे तो ख़िज़र ने एक दीवार की मरम्मत की । मूसा के आक्षेप करने पर ख़िज़र ने बताया कि इस दीवार में एक पाटी है जिस पर बिस्मिल्लाह लिखा हुआ है । मैंने दीवार बनाकर उसे सुरक्षित कर दिया है । (तफसीर इब्ने कसीर पृष्ट ८ कादरी जि० २ पृष्ट ५) इससे सिद्ध होता है कि सुलैमान से बहुत पहले हज़रत ख़िज़र को बिस्मिल्लाह का ज्ञान था । अतः यह दावा मिथ्या हो गया कि सुलैमान के अतिरिक्त बिस्मिल्लाह का ज्ञान और किसी को नहीं था ।

पारसी ग्रन्थों में बिस्मिल्लाह

मूसा से भी पहले पारसिओं के ग्रन्थों में बिस्मिल्लाह प्रायः लिखा जाता था न वह कहीं से उतरा न खुदा ने

उसे भेजा । सेल साहब कुरआन के अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध अनुवादक हैं । कुरआन के इस अंश की समीक्षा करते हुए लिखते हैं:---

मुसलमान प्रत्येक दशा में बिस्मिल्लाह लिखते हैं । यहूदी भी इसी उद्देश्य से इसी अर्थ का एक वाक्य लिखा करते थे जो बिस्मिल्लाह का समानार्थक है । ईसाई मिशनरिओं का भी यही तरीका है वे अपनी पुस्तकों को बाप बेटा व पवित्रात्मा के नाम से प्रारम्भ करते हैं परन्तु मुहम्मद साहब ने यह रास्ता पूर्णतः अग्निपूजक (पारसिओं) से ग्रहण किया है क्योंकि वे अपनी पुस्तकों को:--

बनामे एजद बख्शाइन्दा बख्शायश गर मेहर बां दाद गर ।

से प्रारंभ करते हैं। अर्बी भाषा में इसी का अनुवाद किया जाए तो बिस्मिल्लाह की आयत बन जाएगी । इसका उत्तर देते हुए मिर्जा हैरत देहलवी अपनी पुस्तक 'मुकद्दमा ए तफ़सी-रूल्फूर्कान में लिखते है:--जहां तक पादरी सेल साहिब के बिस्मिल्लाह के संबंध में खोज का प्रश्न है। कुछ मुसलमान लेखकों ने भी इस भ्रान्ति को अनुभव नहीं किया और अपनी बहुमूल्य रचनाओं में यह लिख दिया कि निस्संदेह बिस्मिल्लाह पारसिओं से ली गई है। तब भी ईश्वरीय वाणी के गौरव में कोई अन्तर नहीं आता। इस्लाम और उसके नियम वास्तव में संसार के धर्मों का निचोड़ हैं और जो पहले ईश्वरीय दूतों को ईश्वरीय ज्ञान के लम्बे चौड़े लेख व पुस्तकें मिली उनका सार है जिसमें समयानुसार प्रभु भक्ति की शिक्षा व जीवन कला व सभ्यता के नियम वर्तमान है । ईश्वर का नाम किसी

कार्य से पूर्व लेना उत्कृष्ट प्रकार की हृदय-शुद्धि का प्रमाण है।................ ईश्वर की प्रत्येक वाणी में उसका नाम पहले होना आवश्यक है। (पृष्ट ३६-३७)

मिर्जा हैरत जैसे सुलझे मुस्लिम विद्वान ने अपनी पुस्तक में यह भी स्वीकार कर लिया है कि हर समाज में ईश्वरीय दूत आए और ईश्वरीय वाणी भी आई होगी अत: विभिन्न पुस्तकों में लेखों की समानता नकल नहीं कही जा सकती क्योंकि खुदा के नाम से ही कलाम को प्रारम्भ करना आवश्यक है। मिर्जा साहब ने मुसलमानों द्वारा काफिर कहे जाने वाले पारसिओं के धर्म ग्रन्थों को भी ईश्वरीय स्वीकार कर लिया परन्तु इससे वास्तविक प्रश्न तो ज्यो का त्यो बना रहा। मुहम्मद साहब कहते हैं मेरे व सुलैमान के अतिरिक्त बिस्मिल्लाह किसी अन्य को नहीं दिया गया। यदि नहीं दिया गया तो पारसियों के पास कहां से आ गया। यदि पारसी स्वयं बना सकते हैं तो हज़रत मुहम्मद साहब को स्वयं बनाने में क्या कठिनाई है। तफसीरे आज़मुत्त फासीर ने इस विषय में एक ओर खोज पूर्ण बात लिखी है कि:--(भाग १ पृष्ठ ८)

फिरओन ने खुदाई का दावा करने से पहले एक महल बनाया जिसके बाहरी द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखवाया।

इस सत्य के उपस्थिति में हज़रत मुहम्मद का दावा तो स्वत: खण्डित हो गया!

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद ने इस विषय को बहुत ही स्पष्टता से स्वीकार किया है वे लिखते हैं:--

कुरआन में तौरेत इंजील यहूदियों की परम्पराएं, अंधकार युग की वाक्य प्रणाली से मिलते जुलते, मुशरिक (इस्लाम विरोधी) जातिओं के ग्रन्थों में बताए गए समाचार जैसे के तैसे मिलते है। इसलिए आपत्ति उठाई जाती है कि ये बातें वहां से ली हैं। (तफसीर सर सैयद प्रथम भाग पृष्ट ८) सर सैयद आगे लिखते है:--

निस्संदेह पारसिओं में यह परम्परा थी कि उनके पवित्र धर्म ग्रन्थों के सिरे पर एक वाक्य लिखा हुआ होता था जो बिस्मिल्लाह का समानार्थक है वह है--

शम्नाई हरशिन्दा हरशन्करज हरमाने खराहीद वर आने (पृ. ८)

यह फारसी वाक्य है। यह फार्सी वाक्य होने के कारण पारसी पुस्तकों से हजरत मुहम्मद को जबर व यसार आदि की सहायता से प्राप्त हो गया होगा जिसे हजरत ने अरबी में रूपान्तरित कर आयत बना ली होगी।

बिस्मिल्लाह के चमत्कार

बिस्मिल्लाह के इतने विस्तृत वर्णन के बाद पाठकों के मनोरंजन के लिए इस आयत के साथ जोड़े चमत्कार भी लिख देते हैं।

इब्ने कसीर ने लिखा-हजरत जाबर फरमाते है; जब यह आयत बिस्मिल्लाह उतरी बादल पूर्व की ओर छट गए, हवाएं रूक गई, समुद्र ठहर गया, जानवरों नें कान लगा लिएं, शैतान पर आकाश से आग के शोलें गिरे इत्यादि।

(इब्ने कसीर जि० १ पृष्ट २४)

अबू दाऊद ने उद्धृत किया है कि नबी (मुहम्मद) के सामने एक व्यक्ति ने बिना बिस्मिल्लाह पढ़े खाना खाया। जब भोजन का एक ग्रास शेष रहा तो उसने बिस्मिल्लाह पढ़ी तो शैतान ने जो कुछ खाया था खड़े होकर उल्टी कर दी। सहीह मुस्लिम ने उद्धृत किया है कि जिस भोजन पर बिस्मिल्ला नहीं पढ़ा जाता उसमें शैतान भागीदार हो जाता है। तिरमिज़ी ने हज़रत अली से उद्धृत किया है कि जब कोई व्यक्ति शौचालय में जाकर बिस्मिल्लाह पढ़ता है तो इससे उसके गुप्तांगों व जिन्नों की आंखों के मध्य यह कलाम परदा बन जाता है। तफ़सीर हक्कानी जिल्द १ पृष्ट १७ न जाने यह जिन्न पाख़ाने में मुसलमानों के पीछे क्यों जाते है।

बिस्मिल्ला का अर्थ

बिस्म के (व्याकरणानुसार) जार मजरुर होने से एक कर्म गुप्त हैं:-"अक़रओ (मैं पढ़ता हूं, या अशरओ (मैं प्रारंभ करता हूं) ईश्वर के नाम के साथ, अल्लाह संज्ञा है एवं रहमान व रहीम दो विशेषण है। अल्लाह शब्द पर कई मतभेद हैं। तफसीरे मज़हरी ने लिखा है:-कुछ लोगों को सम्मति है कि अल्लाह निज नाम है। सच्चाई यह है कि यह इलाह धातु (भक्ति योग) से मिलकर बना है। इसमें हमज़ा को लोप करके अलिफ लाम लाया गया है जिसमें अल्लाह हो गया। वाचक अक्षर) समाप्त करके उसके स्थान पर अलिफ़ व लाम बढ़ाया दो लाम में द्वित्व हो गया और अल्लाह बन गया।

तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ट २

आज़मुत्तफासीर में लिखा है कि अल्लाह शब्द पर पूर्ववर्ती लोगों का भारी मतभेद है। मुस्लिम विद्वानों का इसमें भी

विरोध है कि यह शब्द सर्यानी भाषा का है या अरबी या सम्मिलित विशेषण है और अमिश्रित नाम है, आगे लिखा है कि अल्लाह अरबी शब्द है और निज नाम है ।

(आजमुत्तफासीर पृष्ठ ३)

आगे लिखा है कि इमाम आज़म इसे निज नाम मानते हैं और इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन, परिवर्द्धन नहीं मानते परन्तु व्याकरणाचार्य सीबवैह इसमें धात्विक परिवर्तन मानते हैं। इसमें उसके दो कथन है :- एक यह कि अल्लाह वास्तव में अल इलाहों से बना है। हमज़ा को लोप करके पहले लाम का हलन्त करके दूसरे लाम में द्वित्व कर दिया । अल्लाह बन गया। दूसरा कथन यह है :- अल्लाह वास्तव में इलाहा धातु था हमज़ा अविधिपूर्वक बदल कर अलिफ़ लाम अन्त ले आए दो लामों का द्वित्व हो गया अल्लाह बन गया ।

आज़मुत्तफ़ासीर जि. १ पृष्ठ ११

इब्ने कसीर ने भी जि० १ पृष्ठ २६, २७ में दौनों बातें लिखी है। क़सीर ने फैजी की तफ़सीर का भी प्रमाण दिया है कि अल्लाह वास्तव में अल इलाहों था ।

आज़मुत्तफासीर जि० १ पृष्ठ ११

रहमान व रहीम दौनों रहम से बने हैं। रहम का अर्थ है अच्छे काम का संकल्प, इन दौनों शब्दों के अर्थ रहम व रहम पूर्ण पर लागू होते हैं जिसको मेहरबानियां और कृपाऐं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से व्यापक हों और जिसके अनुग्रह चर अचर सब पर बराबर हों। रहमान अर्थ की दृष्टि से सामान्य और रहीम विशेष है।

आजमुत्तफासीर जि० १ [illegible] ११

इब्ने कसीर कहते हैं कि रहमान और रहीम दोनों की रचना रहम शब्द से हुई है। रहम अर्थ में ही प्रयोग है दोनों के प्रयोग से अर्थ में बल बढ़ जाता है । यह विशेषार्थक शब्द बन जाते हैं। अर्थात् अधिक कृपा करने वाला । रहमान में रहीम से अधिक बल है जैसे अधिक रहम करने वाला।

तफसीर इब्ने कसीर जि० १ पृ. २८

इसी प्रकार सब तफसीरों में हैं।

अर्थ:--मैं अधिक कृपालु परमात्मा के नाम के साथ प्रारम्भ करता हूँ।

भाषा विज्ञान की दृष्टि से

जब रहमान शब्द पहले आ गया तो रहीम शब्द बाद में लाना क्या उपयुक्त है ? अधिक कृपा करने वाला कहने से जो भाव उत्पन्न होता है वह सामान्य कृपा करने वाले शब्द को ढक लेता है अर्थात् जब बड़ा रहम करने वाला कह दिया तो साधारण रहम करने वाले शब्द को पीछे लाना व्यर्थ है। इसमें भाष्यकारों के अपने विभिन्न मतभेद पूर्ण लेख स्वयं अपनी कहानी कह रहे हैं। इसमें फिर समीक्षा की क्या गुन्जाइश रह जाती है। पाठक स्वयं सत्या-सत्य का निर्णय कर लें।

सूरतुल्हम्द (फ़ातिहा)

बिस्मिल्लाह से आगे सूरतुल्हम्द प्रारम्भ होती है, इस सूरत को उम्मुल कुरआन, फातिहतुल किताब, सबा मसानी आदि बहुत नामों से पुकारा जाता है। (**मुआलिम पृष्ठ ४ इब्ने कसीर पा० १ पृ० १३ इत्तेकान पृ० २११**)

अलहम्द की प्रतिष्ठा

हजरत मुहम्मद साहब ने फरमाया:—मुझे पवित्र परमात्मा की शपथ है जो मेरे प्राण का स्वामी है कि सूरते फ़ातिहा जैसी सूरत न तो तौरेत में हैं न इन्जील में न ज़बूर में उतरी न कुरआन मजीद में........इस हदीस को तिरमिजी ने प्रमाणिक माना है।

इब्ने कसीर पा० १-पृ० १५

मुस्लिम और नसाई में हदीस है कि एक बार हजरत के पास जिब्रील बैठेथे और हम भी हजरत मुहम्मद के पास बैठेथे कि अकस्मात् ऊपर से धमाके की आवाज आई। जिब्रील ने ऊपर आंख उठाकर देखा और कहा कि आज से पूर्व यह द्वार कभी नहीं खुला। इतने में एक फरिश्ता आसमान से उतरा और हजरत मुहम्मद से निवेदन किया कि आपको ऐसे दो प्रकाशों की शुभ सूचना दी जाती है जिनकी सूचना आपसे पूर्व किसी ईश्वरीय दूत को नहीं दी गई। वह है:-फातिहुल्किताब और सूरत बकर की अन्तिम आयतें एक एक अक्षर इनमें से नूर है।

इब्ने कसीर पा०-१-पृ-१६

अब्दुल मलिक बिन उमेर से कथन उद्धृत है कि हजरत मुहम्मदने फरमाया कि अलहम्द प्रत्येक रोग के लिये औषधि है।

बुखारी ने अपने प्रमाण से इब्ने अब्बास का कथन उद्धृत किया है कि अलहम्द कुरआन के दो तिहाई के बराबर है। अबू सुलेमान कहते है कि एक बार मुहम्मद साहब के कुछ मित्र युद्ध-स्थल में थे कि उन्होंने जाते हुए एक मिर्गी का

रोगी देखा जो बिल्कुल बेहोश था। सूरते फातिहा पढ़कर उसके कान में फूंक दी गई वह स्वस्थ्य हो गया।

अबू सईद ख़ुदरी का कथन उद्‌धृत है कि हजरत मुहम्मद ने फ़रमाया कि अलहम्द विष तक की औषधि है। एक सांप के काटे हुए पर अलहम्द पढ़ कर फूंक मार दी गई वह तत्काल चंगा हो गया। साइब बिन यज़ीद कहते हैं कि नबी (मुहम्मद) ने अलहम्द पढ़कर दम किया और आफ़ातें बला (सर्व संकटों) से सुरक्षित रहने के लिए यह सूरत पढ़कर मेरे मुंह में अपना थूक डाल दिया।

(मजहरी पा० १ पृ० -१४-१५)

हजरत ने फ़रमाया– जिसे अली ने उद्‌धृत किया है कि यह सूरत (अलहम्द) उस खजाने से उतरी जो अर्श के नीचे है।

(मजहरी पा० १ पृ० १)

हजरत ने फरमाया जो कोई अपनी नमाज़ में अलहम्द सूरते फ़ातिहा, (कुरआन की मां (जननी) को न पढ़े उसकी नमाज टूट जाती है।

(इब्ने कसीर पा० १ पृष्ट १६)

इब्ने कसीर ने सूरते फातिहा की प्रशंसा में लिखा है कि मसनद अहमद में हजरत अबू सईद से उद्‌धृत किया है कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि रसूल ने मुझे बुलाया, मैंने कोई उत्तर न दिया। नमाज के पश्चात जब मैं गया तो आपने फरमाया कि अब तक किस काम में थे मैंने कहा नमाज़ में था। आपने फरमाया क्या यह ईश्वरीय आदेश तुमने नहीं सुना कि ए ईमान वालों अल्लाह के रसूल जब तुम्हें पुकारें तो जवाब दो फिर

सूरत अलहम्द बताई। यही कथा इसी प्रकार सही बुखारी अबू दाऊद निसाई व इब्ने माजा में दूसरे प्रमाणों के साथ है।

(इब्ने कसीर पा० १ पृष्ट १४)

तफसीरे मज़हरी पारा ६ पृष्ठ-७२ सूरत अनफाल में यही घटना इसी प्रकार की उवय्य बिन काब के सम्बन्ध में लिखी है जिसकी पुष्टि तिर्मजी व निसाई से की गई है। उवय्य को नमाज छोड़कर भी रसूल का आदेश मान कर पास आने का आदेश है। रसूल की आज्ञा से नमाज छोड़ना भी आवश्यक है।

आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ट ४६, ५० में हैं:-रसूल ने फ़रमाया कि अगर सूरते फातिहा एक पलड़े में व पूरा कुरआन दूसरे पलड़े में रखो तो सूरते फातिहा वाला पलड़ा सात गुना भारी होगा। अबू उबैदा फजायले कुरआन में इब्ने बसरी से उद्धृत करते हैं कि हजरत ने फरमाया कि जिसने सूरते फातिहा को पढ़ा उसने मानों तौरेत इन्जील ज़बूर और फ़ुर्कान को पढ़ा। हफ़ीज बिन यमान से उद्धृत है कि रसूल ने फरमाया जिस जाति पर खुदा संकट भेजने का विचार करता है अगर उस कौम का कोई बच्चा स्कूल में जाकर सूरते फातिहा पढ़ने की आवाज सुन लेता है तो वह संकट चालीस वर्ष के लिए उस कौम से दूर हो जाता है।

हसन कहते हैं:--अल्लाह ने आसमान से एक सौ चार किताबें उतारी। सौ किताबों का ज्ञान तौरात जबूर इन्जील फ़ुर्कान में रखा और इन चारों का ज्ञान कुरआन में वर्णन किया, सारे कुरआन का ज्ञान मुफस्सल में और मुफस्सल का

ज्ञान सूरते फातिहा में रखा। अर्थात् केवल सूरते फातिहा के ज्ञान से खुदा की सारी पुस्तकों का ज्ञान हो जाता है।

प्रश्न होता है कि सूरते फातिहा के बाद शेष कुरआन की आवश्यकता ही क्या रही? क्यों मनुष्य को उठाने के लिए ३० पारों का यह भार मनुष्य के कंधों पर रख दिया? यह कुरआन की निन्दा व अवहेलना स्पष्ट है।

अलहम्द के उतरने में मतभेद, सूरत मदिनी है या मक्की

इब्ने अब्बास, क़तादा और अबू आलिया की सम्मति में यह सूरत मक्की है एवं हजरत अबू हुरैरा, मजाहिद, अत्तार बिन यसार तथा जुहरी के मत में मदिनी है। यह भी एक मत है एक बार यह मक्का में उतरी, दूसरी बार मदीना में।

तफसीर इब्ने कसीर जि० १ पृ० १३

पहले हमने वर्णन किया कि यह सर्व प्रथम उतरने वाली सूरतों में से एक है परन्तु अहमद आदि ने अब्दुल्ला बिन जाबिर से उद्धृत किया है कुरआन में सबसे अन्तिम उतरने वाली सूरत अलहम्द है। कोई पहले कहता है कोई आखिर में।

तफसीर इत्तिकान जि० २ पृष्ठ ३७९

इस पर सम्मति देते हुए मजहरी कहता है कि एक़ बार मक्का में उतरी दूसरी बार मदीना में परन्तु अधिक सत्य यह है कि यह मक्की है सूरत हजर से पहले उतरी।

(मजहरी पा० १ पृष्ठ १)

मुआलिमुत्तंजील ने भी पृष्ठ ७ में हजर व अलहम्द को मक्की ही लिखा है। तफसीर जलालैन व तफसीर कुरानुलअजीम भी इसे मक्की मानते है। किसी का मतैक्य नहीं सामान्यतया सभी कुरआनों ने इसे प्रथम लिखा है एवं तफसीरे कुरानिलअज़ीम वा जलालैन में अन्त में लिखा।

कुरआन में तहरीफ़ (परिवर्तन)

इब्ने मसऊद ने सूरते फ़ातिहा से अल्लाहुम्मा इन्नानस्तईनुका को निकाल दिया इनमें से चुनकर उस्मान ने फ़ातिहुल किताब व मऊज़्तैन अपने मुसहिफ़ में लिखा

इत्तिकान जि० १ पृष्ठ १७४–१७५

इमाम राजी कहते है कि कुछ पुरानी पुस्तकों में इब्ने मसऊद ने सूरते फातिहा व मऊज़्तैन को कुरआन का अंग ही नहीं स्वीकार किया है। **तफसीरे इतिक़ान प्र.२२ से २७ पृ.२११** अल्लामा सयूती ने इब्ने कतीबा के मुश्किलुलकुरआन के प्रमाण से लिखा है कि इब्ने मसऊद का विचार था कि मऊज़्तैन कुरआन में सम्मिलित नहीं हैं।

अल्लामा सयूती ने **तफसीरे इत्तिकान प्रकरण १८ पृष्ठ** १७३ पर इब्ने मसऊद के कुरआन की सूरतों की जो सूची प्रकाशित की है उसमें अलहम्द व मऊज़्तैन नहीं है।

आयतों में भी भेद

कुरआन पारा १४ रूकुअ ६/६ में आयत है:–

लकद आतैना सबअम्मिनलमसानी वल्कुरआनिल अज़ीम

अर्थात्:– हमने निस्संदेह तुमको सात आयतें दी कि दोहराई जाती हैं और बड़ा कुरआन दिया।

तफसीर कुरानुल अजीम पृष्ठ १३३ के अनुसार मुहम्मद साहिब ने फरमाया कि वह सात आयतें अलहम्द (फ़ातिहा) हैं। उपरोक्त आयत में **वाव आतिफा** (दूसरे को संयुक्त करने वाला) माना जाए तो अलहम्द से पृथक एक बड़ा कुरआन ऐसा अर्थ बनेगा जो व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि अलहम्द कुरआन से पृथक सूरत माननी चाहिए। यदि वाव को हालिया (अवस्था संकेत) माना जाए तो अर्थ होगा कि दिया हमने तुझको अलहम्द जो कि बड़ा कुरआन हैं।

इस उलझन में फंसे मुस्लिम भाष्यकारों ने इसके जो अर्थ किए है वह वड़े रोचक हैं। आइए पहले हम इस आयत का शाने नज़ूल (उतरने का कारण) बताते हैं।

कहते हैं कि रसूलिल्लाह ने मक्का के वाहर वनी कुरीजा व वनू नजीर के सात काफिलों (व्यौपारिक समूहों) को देखा उनके पास विभिन्न प्रकार के जवाहरात और बहुमूल्य सामान व पहनने के उत्तम प्रकार के लिवास व कपड़े थे। तयस्सर में लिखा है कि कुरैश के सात काफिले एक दिन मे ही मक्का पहुँचे उनके पास खाने की अनेक वस्तुऐं थी, पहनने के भी अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्र थे जब रसूल व उनके साथियों ने काफिले वालों के यह ठाठ देखे तो परस्पर कहने लगे। काश ! कि हमारे पास भी इस प्रकार का माल होता तो सब प्रभु के मार्ग में तत्काल खर्च कर देते। व्याख्याकारों ने यह भी कहा है कि स्वयं नबी के मन में यह कामना उत्पन्न हुई और आपने फरमाया शोक ! कि मुसलमान तो अत्यन्त तंगी व निर्धनता की अवस्था में दिन काटे और खुदा के (तथाकथित) शत्रु इस विलासिता व आनन्द मौज में जीवन विताए। इस कारण खुदाने आपके व आपके साथियों के संतोष के लिए यह आयत उतारी जिसे हमने ऊपर लिखा: लकद आतैना सब अम्मिनल मसानी:- हमने तुझको सात आयतें व बड़ा कुरआन दिया है वह इन काफ़िलों व संसार के कुल नाशवान सामानों से भी उत्तम व उत्कृष्ट है (**तफसीर आजमुत्तफ़ासीर पारा १४ पृष्ठ १६६ यही लेख तफसीर कादरी पारा १४ पृष्ठ ५५४ जि० १ में हैं।**)

आज़मुत्तफासीर का लेख है कि इस आयन की व्याख्या में मुस्लिम विद्वानों में भारी मतभेद है परन्तु बहुमत इस पक्ष में है कि इससे सूरते फातिहा का ही वर्णन है।

आज़मुत्तफासीर पा० १४ पृष्ठ १६६

इब्ने अब्बास कहते हैं कि सबआ मसानी का अर्थ सात लम्बी सूरतें हैं:— (तफसीर मुआलिमुत्तंजील पारा १४ सूरत हज्र)

तफसीर इब्ने कसीर में वर्णन है कि आरम्भ की सात लम्बी सूरतें, वकर, आले इमरान, निसा, माएदा अनआम, एराफ़, यूनस ये सातों सबआ मसानी कहलाती हैं। एक कथन यह भी है कि अल्हम्द सबआ मसानी है। हजरत मुहम्मद ने हजरत अली को बताया कि सूरत फातिहा ही सबआ मसानी है यही कुरआने अजीम है फिर कहा कि पूरे कुरआन का बयान इसके विपरीत नहीं, यथा:—कितावम्मुतशाबे हम्मसानी इसमें सारे कुरआन को मसानी कहा है। (इब्ने कसीर पा० १४ पृष्ठ १९ व २० तफसीर हक्कानी ने वाव को आतिफ़ा (अन्तर) मानकर लिखा है:—और कुराने अज़ीम भी प्रदान किया। तफसीरे हक्कानी पा० १४ पृ० १४ व जलालैन प० है कि यह अलहम्द सूरत एक बार मदीना में उतरी इसके साथ सत्तर हज़ार फरिश्ते उतरे (जलालैन पृष्ठ २१५) बैजावी ने भी अलहम्द सात सूरतों के लिए लिखा (बैजावी सूरते हजर पृ० २५४।

तफसीरे मज़हरी सूरते हजर पृ० ३६० में इसका समाधान करते हुए: हजरत अली, उमर इब्ने मसऊद कतादा व बुखारी से उद्धृत किया है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया कि उम्मुलकुरआन सूरते फातिहा सात आयतें हैं। मसानी (नमाज में अनेक बार पढ़ी जाने वाली) वही कुराने अजीम कहलाएगी (शेष कुरआन छोटा रह गया) और यह भी कहा गया है कि सूरते फातिहा के दो भाग हैं एक अल्लाह के लिए एक मनुष्यों को प्रार्थना करने के लिए है। इससे आगे वड़ी सात सूरतों को भी मसानी माना है। प्रथा यह है कि सूरते हजर मक्का में उतरीं बकर आले इमरान निसा माएदा और अनफ़ाल मदीना में उतरी फिर जिन

सूरतों का अस्तित्व ही नहीं था। सूरते हजर की सात लम्बी सूरतों को सबआ मसानी कैसे कहा जा सकता है।

अल्हम्द की आयतों में विरोध

अल्लामा सयूती लिखते हैं कि बहुत से विद्वान अलहम्द की सात आयतें गिनते हैं, परन्तु मक्की व कूफी विद्वान अनअमता अलैहिम को आयत नहीं गिनतें और उसके स्थान पर बिस्मिल्लाह को एक आयत गिनते हैं। शेष इसके प्रतिकूल गिनते हैं। हसन कहते हैं इसकी ८ आयतें है। कुछ लोग ६ आयतें बताते हैं। अर्थात् बिस्मिल्ला व अनअमता दोनों को गिनती से अलग कर दिया है। एक साहब नौ आयतें बताते हैं। वे इय्याकाना बुदो को एक आयत मानते हैं। इसका समर्थन एक हदीस से होता हैं जिसको अहमद, अबू दाऊद, तिर्मजी, इब्ने खज़ीमा, हाकिम, दारे कुतनी आदि ने उम्मे सलमा से उद्धृत किया है कि नबी इस सूरत को ९ टुकड़ों में पढ़ा करते थे:- (१) बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम (२) अलहम्दोलिल्लाहे रब्बिल आलमीन (३) अर्रहमानिर्रहीम (४) मालिके योमिद्दीन (५) इय्याका नाबुदो इय्याका नस्तईन (६) इहदिनस्सिरातलमुस्तकीम (७) सिरातल्लजीना अनअमता अलैहिम (८) गैरिलमग़ज़ुबे अलैहिम (९) व लज्ज़ाल्लीन (तफसीरे इत्तिकान प्रक० १९ पृष्ठ १८१-१८२ अमर बिन उबैद ने ८ और हुसैन जाकी ने ६ भी कहा है। (तफसीरे इब्ने कसीर फातिहल्किताब का पृष्ठ १३)

यह गोरख धंधा आज तक एक समस्या बना हुआ है, फातिहा की पठन विधि में आश्चर्यजनक विरोध।

इब्ने कसीर ने लिखा है कि सातों प्रकार के वाचक (क़ारी) अलहम्दों की दाल को पेश (उ) से पढ़ते है (अलहम्दो)। इसके

विपरीत सुफ़िया बिन ऐ निया और रोया बिन हजाज का कथन है कि दाल जेर (इ) के साथ है अलहम्दे। यहां क्रिया को लोप मानते है। इब्ने अबी एला अलहम्द की दाल को और लिल्लाह के पहले लाम को पेश से पढ़ते हैं (अलहम्दोलुल्लाहे)। हसन और ज़ैद इब्ने अली इन दोनों अक्षरों को ज़ेर से पढ़ते हैं (अलहम्दे-लिल्लाहे) इब्ने कसीर पा० १ पृष्ठ ३०।

इसी प्रकार मालिके योमिद्दीन के बारे में कई भेद हैं कुछ मालिके, कुछ मलिक कुछ मलकि कुछ मलिकि पढ़ते हैं।

(तफसीरें इब्ने कसीर जि० १ पृष्ठ ३३)

इसी प्रकार इय्याका को कुछ लोग अय्याका पढ़ते हैं और कुछ हय्याका पढ़ते हैं। कसीर पृ० ३४

इसी प्रकार कोई नस्तईना कोई निस्तईन पढ़ता है। क़बीला वनुअसद, रबीआ और बनुतमीम को पठनशैली इसी प्रकार है। इब्ने कसीर पृष्ठ ३४

एहदिनस्सिरातल्मुस्तक़ीम

बहुत से सिरात स्वाद से व कुछ सीन से पढते हैं (इब्ने कसीर पृष्ठ ३४) इसी प्रकार के मतभेद शेष भाग के बारे में पाए जाते हैं।

(इब्ने कसीर पृष्ठ ३६)

खुदा की निश्चित वाणी के पढ़ने में यह अनेक मतभेद संदेहजनक बनाते हैं। मनमानी करने वाले लोगों को स्वयं इसके ईश्वरीय होने में संदेह लगता है, तभी तो उन्होंने अपनी मनमानी करना आवश्यक माना। फिर उसे ईश्वरीय कैसे माना जाए ?

अलहम्द का अर्थ :–

सब स्तुतियां ईश्वर के योग्य हैं जो प्रत्येक संसार का पालनहार है। जो बड़ा मेहरवान व दयालु है। जो कर्मफल के दिन का मालिक है। हम आपकी ही भक्ति करते हैं व आपसे ही सहायता की याचना करते हैं । हमको सन्मार्ग दिखाओ । उन लोगों का मार्ग जिन पर आपने उपकार किया, न कि उन लोगों का मार्ग जिन पर आपने ग़ज़ब वदले की भावना से दण्ड किया, न उनका जो पथभ्रष्ट हो गए ।

यह ईश्वरीय व्यवस्थाओं के विपरीत कल्पना है । एक वाक्य में सारे विश्व का उसे स्थायी कहा । दूसरे ही वाक्य में उसकी सार्वभौमसत्ता समाप्त कर केवल न्याय के दिन का स्वामी बताया ।

मार्ग दिखाने की प्रार्थना नबी मुहम्मद भी करते रहे। इसका भाव यह है कि वे मार्ग नहीं जानते थे, जीवन के अंतिम समय तक वे इस प्रकार की प्रार्थना करते रहे । इसका अर्थ हुआ कि उनका बताया मार्ग सत्य नहीं समझा जा सकता क्यों कि वे स्वयं को मार्गदर्शक नहीं मानते, मार्गदर्शन सदा खुदा का अधिकार है जो आज तक मुसलमान खुदा से नमाज में प्रार्थना द्वारा प्रकट करते हैं फिर नबी के अस्तित्व का महत्व ही कहां रहा ?

यदि सुक्ष्म दृष्टि से देखें तो इसमें ईश्वर को अन्यायकारी घोषित किया है । वही तो जीवों के लिये संसार के सारे साधनों को स्वयं बनाता है । जब पूर्व जन्म में जीव के कोई भले बुरे कर्म ही नहीं तो खुदा का किसी पर कृपा करना और किसी को संकट में डालना कहां तक न्यायोचित है ? मुसलमान अपने ईश्वर को

संदेह की दृष्टि से देखते है कि हो सकता है वह उन पर संकट पैदा कर दे। उन्हें पथभ्रष्ट कर दे। भला दयालु-कृपालु परमात्मा के सम्बन्ध में बनायी गई यह धारणा उसकी ज़ात (अस्तित्व) पर लाँछन नहीं तो और क्या है ?

तफसीर आजमुत्तफासीर ने जो व्याख्या इसकी की है उसका सार यह है कि यहूदियों को खुदा ने सकटग्रस्त किया और ईसाईयों को गुमराह (पृष्ठ ४४ से ४६) बेचारे यहूदियों व ईसाइयों पर गजब ढाना व उन्हें लानत मलामत करना कुरआन शरीफ का एक उद्देश्य हैं। मुआलिमुत्तंजील ने पारा १ पृष्ठ ४६ पर मगजूबे के अर्थ लिखे हैं:— किसी से वदला लेने के इरादे से दण्ड देना। भला ईश्वर अपनी सन्तान समान प्रजा को बदले की भावना से संकट में डालता है ! यह स्वभाव तो सांसारिक निकृष्ट मनुष्यों का होता है। ईश्वर के प्रति यह विचार कदापि प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। यह तो ऐसा ही हुआ कि:–

क्या हंसी आती है मुझको हजरते इंसान पर।
फेल बद (बुरा काम) तो खुद करें दोष दे रहमान पर।

तफसीरे इत्तक़ान, हक्कानी, इब्ने कसीर, मुआलिमुत्तंजील बड़े जोरों के साथ बेचारे यहूदियों व ईसाइयों को ईश्वरीय कोप का शिकार घोषित करते हैं, क्या वे सब ईश्वर के ही बनाए हुए मनुष्य नहीं है। अपनी सन्तान के प्रति पिता समान परमेश्वर का यह व्यवहार किसी समझदार मनुष्य की बुद्धि से परे की घटना है। सन्तान से वदला लेने का स्वभाव तो पशुओं में भी कहीं देखने को नहीं मिलता, फिर खुदा तो सबका स्वामी बताया गया है और पालन हार भी।

कुरआन के शब्दों का तो स्पष्ट ही तात्पर्य यह माना जाएगा कि संसार में जो लोग भी मार्गच्युत, पथभ्रष्ट पाए जाते हैं वे भी खुदा की ही अपनी इच्छा से। जब मार्ग खुदा ने ही दिखाया है, मनुष्य का कोई अधिकार या स्वेच्छा नहीं तो उसे दोषी माना ही कैसे जा सकता है। खुदा को कुरआन शरीफ पारा ५ रूकुअ ८ में कहा है कि:—**वल्लाहो अशद्दोबासन व अशद्दो तन कीला:**—अर्थात् खुदा युद्धों में अति कठोरता से काम लेता है और उसका हठ करना भी अतिउच्च कोटि का है। ऐसी अवस्था में मनुष्य मात्र के लिए दयालुता व कृपालुता का उसका स्वभाव कैसे माना जाए ? अपनी ही संतान रूप मनुष्य जाति पर खुदा का उक्त व्यवहार क्या न्यायपूर्ण कहा जा सकता है ? तफसीर कादरी पृ. १८२। जब सूरते तौबा में स्पष्ट है कि:—

हुवल्लजी अरसला रसूलहू बिल्हुदा व दीनिलहक्के

अर्थात्:—खुदा ने ही रसूल को सन्मार्ग व इस्लाम धर्म प्रदान कर भेजा है। फिर कहा:— **अल्लज़ीना अनअमल्लाहो अलैहिम मिनन्नबीय्यीना** अर्थात् वह मार्ग ईश्वरीय संदेशवाहकों व सच्चे मनुष्यों को प्रदान किया। इन आयतों से स्पष्ट है कि रसूल सन्मार्ग पर होते हैं। जब रसूल सन्मार्ग पर होते ही हैं फिर सन्मार्ग दिखाया यह प्रार्थना निरर्थक हो जाएगी जिसका पाठ नबी मृत्यु पर्यन्त पांच समय की नमाज़ में पढ़ते रहे। इसके अतिरिक्त सामान्य मुसलमानों का भी दिन में पांच बार खुदा से कहना कि ख़ुदा सन्मार्ग दिखाए, हमें पथभ्रष्ट न करे। इसका आशय तो यह है कि उन्हें खुदा पर संदेह है कि वह पथभ्रष्ट भी कर सकता है। क्या यह परम कृपालु खुदा के साथ अन्यायपूर्ण उपहास नहीं है ?

इस आयत में तीन भाव स्पष्ट है (१) कुछ पर उपकार (२) कुछ पर क्रोध व संकट (३) कुछ को खुदा पथभ्रष्ट करता है।

पहला शब्द निअमत है जिसके धात्विक अर्थ नरमी, प्रसन्नता व आल्हाद के है। कुरआन कहता है:-

वा मंय्युते इल्लाहा वर्रसूला फ़ओलाएका मअल्लजीना अनअ मल्लाहो अलैहिम्मनन्नबीय्यीना वस्सिद्दी कीना वश्शुहदाएवस्सा-लेहीना वा हसोना उलायका रफीक़ा । पा० ५ रकु ६।६

अर्थात् जो नबी की आज्ञा का पालन करते हैं।

खुदा की निआमते उन्हें ही मिलती है। खुदा अपने उपकार अपने नबीओं, सच्चे मनुष्यों, शहीदों, नेक लोगों व मित्रों पर करता है।

हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि मूसा व ईसा वह पाक उम्मत (समूह) मानी गई है और इससे तात्पर्य रसूल के साथी कुटुम्बी या पैगम्बर और सारे खुदा भक्त मुसलमान। (आज़मुत्तफासीर पा० १ पृ० ४१। इब्ने कसीर पा० १ पृ० ३६। मजहरी पृ० ११)

सवातेउल इलहाम के उद्धरण से आज़मुत्तफासीर में है कि जिन पर निआमते भेजी वे पैगम्बर या कुल मुसलमान व फरिश्ते हैं।

प्रथम प्रश्न उठता है कि फिर मुसलमानों ने ईसाईयों व यहूदियों के विरूद्ध खूंरेजी क्यों प्रारम्भ की ? जैसा कि डा. इकबाल लिखते हैं:- पर तेरे नाम पै तलवार उठाई किसने ? और जब तलवार से भी कुछ न बना और मुसलमानों का शासन व शक्ति समाप्त होकर मुसलमान दाने दाने को मुहताज बन गए तथा स्थान-स्थान पर उनका पतन होने लगा तो इक़बाल ने खुदा से शिकायत की :-

रह्मत हैं तेरी अग़यार के काशानों पर
बर्क़ गिरती है तो बेचारे मुसलमानों पर

ए खुदा तू इस्लाम के विरोधियों पर तो अपनी कृपा व दान का सागर उंडेल रहा है और मुसलमानों पर सब जगह बिजलियां गिरा रहा है।

ऐसी दशा में उपरोक्त आयतों व उसके भाष्यकारों के लेखों का क्या मूल्य रह जाता है ? वास्तव में पाप करने वाले किसी भी वक्त में सुख नहीं पा सकते व पुण्यात्मा सर्वत्र सुख पाते हैं। बेचारे यहूदियों व ईसाईयों पर इस्लाम ने सदा लानत भेजी है, फिर भी वे ससार में उन्नति के शिखरों पर चढ़ते हुए चले जा रहे हैं।

डा० इकबाल ने कहा किसी और के लिए था कि :-
तुम्हारी तहजीब अपने खंजर से खुद ही जाकर हलाल होगी।
जो शाखे नाजुक पै अशियाना बनेगा नापायेदार होगी।

परन्तु अब यह मुसलमानों पर ही लागू होता है कि वे अपने अत्याचारों व पापपूर्ण शिक्षाओं के कारण स्वयं नष्ट होकर ससार की दृष्टि में गिर गए व गिरते जा रहे हैं।

खुदा मालिके कुल का लिखा है कि वह गजब ढाता है। मग़ज़ूब शब्द के अर्थ मुआलिम व आज़मुत्तफासी.र दोनों ने बदले के विचार से दण्ड देना लिखा है। मुआलिम ने लिखा है :—
इन्नल्लाहा हकमा अललयहूदे बिलग़ज़बे फ़काला मल्लानतिल्लाहो व गजबा अलैहे व हकमा अलन्नसारा बिज्वाल्लै व गैरज्वालौन व कीललमग़ज़ूबो अलैहिम हुमुल यहूदो वज्वाल्लून हुमन्नसारा टिज्जुलाले (मुआलिमुत्तन्ज़ील जि. १ पृष्ठ १)

अर्थात् खुदा ने यहूदियों व ईसाईयों पर पथभ्रष्टता व संकट भेजे। यही लेख इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ३९. ४०, तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ठ १२ में इसी प्रकार पाया जाता है। मजहरी पारा १ पृष्ठ १२ में लिखा है कि गज़ब का अर्थ है : बदले की भावना से मन का उत्तेजित हो जोश में भरकर अत्याचार करना। जैसा कि इस्लाम के इतिहास में सदा सर्वत्र पाया गया।

भला दयालु कृपालु संसार का पालक पिता परमात्मा कभी ऐसा जघन्य कार्य कर कर सकता है ?

ईश्वर कर्मों का फल केवल कयामत के दिन ही देगा। उसमें भी मुसलमानों को जन्नत में भेजेगा। शेष संसार में चाहे कोई मनुष्य कितना ही पवित्रात्मा, धर्मात्मा, न्यायकारी, परोपकारी रहा हो सबको दोज़ख की भट्टी में झोंक देगा। वाह रे न्याय ! खुदा की कुरआन स्थान-स्थान पर अति कठोर दण्ड देने वाला और वह भी उनको जो मुसलमान नहीं। हक्कानी, कादरी, जलालैन, मुआलिम और सारी हदीसें, सारे इस्लामी धर्म ग्रन्थ पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि खुदा मुसलमानों के अतिरिक्त सबको महान पीड़ाएं व कष्ट प्रदान करेगा। यह आतंकवाद मनुष्यों को इस्लाम की शरण में लाने के लिए खुदा के नाम पर एक सुनियोजित चाल है।

खुदा के बदला लेने के नमूने, हजरत नूह की कहानी
कुरआन सूरत नूह पारा २९ में है :-

नूह ने लोगों से कहा कि खुदा की पूजा करो, उत्तर में लोगों ने कहा कि हम अपने देवी देवताओं को कदापि छोड़ने को उद्यत नहीं। तब खुदा ने कहा कि अब कोई भी तेरी कौम में

ईमान लाने वाला नहीं। तो नबी कहलाने वाले हजरत नूह ने खुदा से प्रार्थना की:–

रब्बे ला तज़र अलल अर्ज़ मिनल्काफ़िरीना दय्यारन, इन्नका इन तज़रहुम युज़िल्लू इबादका व ला यलिदू इल्ला फाजिरन कुफ्फ़ारन

कुरआन पारा २९ रकू २।१०

अर्थात्:– ए खुदा तू काफिरों में से किसी को भूमि पर मत छोड़ यदि तू इन्हें छोड़ देगा तो यह तेरे बंदों को भी गुमराह करेंगे और इनकी नस्ल भी इनकी ही भांति तेरी आज्ञाओं की अवहेलना करने वाली होगी। अन्त में खुदा को इतना जोश आया कि केवल मनुष्यों को ही नहीं, उनके बच्चों को भी, यहां तक कि पशु-पक्षियों का भी नामो निशान मिटा दिया।

हूद नबी का किस्सा

इसी प्रकार हूद ने अपने काल में लोगों को कहा:– तुम मेरे कहने पर चलो। लोगों ने कहा : ऐ हूद हम तेरे कहने से अपने देवी देवताओं को नहीं छोड़ेगें। इसके कारण खुदा ने एक भयभीत करने वाली आवाज से उनको नष्ट कर डाला। उनको ही नहीं उनके पशुओं और बच्चों तक को मिटा डाला।

ऐसे एक नहीं अनेक कथानक कुरआन में लोगों को भयभीत करने के लिए लिखे गए हैं कि खुदा ने मूर्ति पूजा करने वालों को समूल नष्ट कर दिया।

यह कहानी है खुदा के प्यार की व उसके अत्याचारों की जिसे खुदा के नाम पर सुना-सुना कर मुसलमान बनाने की योजना है। खुदा के वास्तविक स्वरूप से इसका सम्बध क्या हो

सकता है ? सबका पालन करने वाला परमात्मा क्या ऐसा करेगा ? आज भी संसार में ३ अरब २० करोड़ लोग इस्लाम को न मानकर भी सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं व भगवान् की दी हुई प्रत्येक वस्तु का उपभोग कर आनन्द मना रहे है। उपरोक्त भय की शिक्षा उन्हें आतंकित तथा प्रभावित नहीं कर सकती।

इस कुरआन की पहली सूरत में आपने देख लिया, कि इसके शब्द-शब्द में कितना अन्तर है-कोई कुछ पढता है। क्या इतना शब्दिक अन्तर ख़ुदा के कलाम मे हो सकता है ? साधारणतया देखने से यह सूरत बड़ी सारगर्भित प्रतीत होती है। मगर ध्यानपूर्वक देखने से कुछ इसमें ऐसी कमजोरियां है- जो इसे खुदा के कलाम से दूर रखती हैं:- उदाहरणार्थ ख़ुदा कयामत (प्रलय) के दिन का मालिक है। हम पूछते हैं, खुदा जबसे है क्या भूत, भविष्य तथा वर्त्तमान और सारी सृष्टि का अनादि मालिक नहीं ? फिर जब यह कह दिया कि हमको सीधा मार्ग दिखा, इतना कह देना काफी न समझ कर ख़ुदा को उस मार्ग का पथ प्रदर्शन करने की आयत के लेखक ने आवश्यकता समझी, वह रास्ता कि जो नेअमत किया पैग़म्बरों, सिद्धिकों आदि पर। इस पर भी लेखक को सन्तोष न हुआ-और आगे और कहा कि उन लोगों का रास्ता न दिखा जो कि मग़ज़ूबों,जिन पर तूने गज़ब किया, और न गुमराहों का रास्ता। जब यह बात कह दी कि ऐ खुदा हमको सीधा मार्ग बता-तो फिर यह कहना कि गजब किये गये और गुमराहों का मार्ग न बता-तो यह दोनों बातें ख़ुदा के लिए कहना उचित है ? क्या इतना कहने से खुदा नहीं समझ सका कि हमें सन्मार्ग दिखा-कि सन्मार्ग क्या होता है और उसे नकारात्मक मार्ग भी समझाना पड़ा-कि कहीं यह मार्ग न दिखाना,

यह बात किस कदर खुदा की शान के खिलाफ है ? क्या सूरत लेखक को नकारात्मक शब्दों से खुदा को समझाने की आवश्यकता अनुभव हुई-कि सीधा मार्ग बताना गुमराहों और क्रोध के भागी लोगों का न बताना। क्या लेखक को सन्देह था-कि ऐसा यदि न कहूंगा-तो सम्भवतः ख़ुदा को भ्रांति लग जाने का भय है-इसका सीधा मतलब यह है कि सूरत का लेखक ख़ुदा को भी उल्टा मार्ग दिखाने वाला समझता है। इसलिए उसको ऐसा कह रहा है-जब ख़ुदा उल्टा मार्ग किसी को दिखाते ही नहीं तो ऐसे शब्दों का प्रयोग उसके लिये उचित नहीं:-हमने अच्छी तरह व्याख्या में सब बातें बता दी हैं ध्यान से देखें:—

सूरते बक़र

इसे प्रारंभ करने से पूर्व कुरआन के सम्बन्ध में अति प्रचलित एक परम्परा का उल्लेख आवश्यक है।

कुरआन पारा १४ सूरत नहल १३/१९ में लिखा है :—

व इज़ा करातल्कुरआना फस्तइज़ बिल्लाहे मिनश्शैता निर्रजीम।

अर्थात्:—जब तू कुरआन पढ़े तो अल्लाह की शरण मांग जिससे निकृष्ट शैतान तुझे न सताए।

परन्तु अगली आयत में लिखा है :—

इन्नहू लैसा लहू सुल्तानुन अलल्लजीना आमनू व अला रब्बेहिम यतवक्कलून। (उपरोक्त प्रमाण)

अर्थात्:—निस्संदेह शैतान का प्रभुत्व उन पर नहीं होता जो मुसलमान हो गए और जिन्होंने ईश्वर पर विश्वास कर लिया।

तफसीर इब्ने कसीर ने लिखा है कि अल्लाह अपने नबी (मुहम्मद साहब) के द्वारा अपने मोमिन अनुयायियों को आज्ञा देता है कि कुरआन पढ़ना प्रारंभ करने से पूर्व वह अऊज (शैतान से सुरक्षा चाहना) पढ़ा करें। नज्जिकरा व इन्ना लहू लहाफिजून।

कुरआन पारा १४

इब्ने जरीर ने इस पर बहुमत का प्रतिपादन किया है। लिखता है:-इस आज्ञा का रहस्य यह है कि कुरआन वाचक अशुद्ध पाठ होने से उसके विचार से रूक जाए और शैतानी मिलावट संदेहों से बच जावे। इसलिये बहुमत अऊज पढ़ने के पक्ष में है। हदीसों से भी इसका समर्थन होता है।

यही भाष्यकार आगे जाकर अपनी उक्त मान्यता के विपरीत लिखते हैं कि:—ईमानदार, भरोसा करने वाले को वह शैतान गुनाहों में नहीं फांस सकता। उसकी कोई युक्ति या प्रभुत्व नहीं चल सकता। यह शुद्ध अनुयायी उसके महा कपटों से सुरक्षित रहते है। हां जो उसकी आज्ञा मान ले, कहने में आ जावें उसे अपना मित्र व पक्षपाती बनालें। शैतान को प्रभु-भक्ति में सम्मिकर लेवें उस पर शैतान छा जाता है।

इब्ने कसीर पारा १४ पृष्ठ ६०

कुरआन के परस्पर दो विरोधी वचनों को मनमानी व्याख्या से पुष्ट करने का यह उपाय मात्र है। वास्तव में पहला आदेश से कोई मेल नहीं खाता। इब्ने कसीर कुरआन की बिगड़ती बात को संभालने की कोशिश में कुरआन के आशय के सर्वथा विरूद्ध यहां तक लिख गए हैं कि:- ऐसा न हो कि शैतान उन मौमिनों के माल व संतान में भागीदार हो जाए (प्रमाण उपरोक्त)

बताइए कि जब ख़ुदा ने स्वयं कुरआन के बारे में कहा है कि– ला यातीहल बातिलो मिन बैना यदैहे व ला मिन खल्फ़ही अर्थात् कुरआन को झूठ न आगे से लगता है न पीछे से। अतः इसको हमने उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं।
पारा २४-रकू-५।१९

कुरआन क्या है व कहां से आया

इसका उत्तर स्वयं कुरआन इन शब्दों में देता है :— अफ़लम यदब्बरूलकौला अम जाअहुम्म मालम याते आबा आहोमुल अव्वलीन। (कुरआन पारा १८ रकू ४/४)

अर्थः- क्या उन लोगों ने ईश्वरीय वाणी में विचार नहीं किया अर्थात् जो कलाम मुहम्मद साहब पर उतरा और आपने पेश किया क्योंकि मुहम्मद साहब के पास कोई ऐसी वस्तु आई है जो उनके पूर्वजों के पास नहीं आई।
(तफ़सीरे मज़हरी जि० ८ पृष्ठ २९२)

इस आयत ने कुरआन के सारे रहस्य को खोल कर रख दिया कि मुहम्मद साहब ने नया और अपने ओर से निराला कुछ पेश नहीं किया। यह सब तो पहले से ही तुम्हारे पूर्वजों के पास था और रहा है। अर्थात् कुरआन में कोई नई बात नहीं।

वास्तव में कुरआन की कुछ बातें बाइबिल, तालमूद एवं अपने समय के प्रचलित धर्मग्रन्थों से ही संग्रह करली है। कुछ पैगम्बरों की कहानियां, इतिहास जनश्रुति से चला आ रहा साहित्य है। कुछ प्रश्न स्वयं उत्पन्न कर मनमाने उत्तर प्रस्तुत कर दिए गए हैं। जैसे असहाबे कहफ का किस्सा आदि। शरी-

अत (व्यवहार आदेश) मनुष्य प्रचलित परम्पराओं के अनुसार बना ही लेता है। इसी प्रकार बनाए है। इसके लिए न फरिश्तों की फौज खड़ी करने की जरुरत है न खुदा को बीच में लाने की। यह उपरोक्त आयत के शब्दों व अर्थों से स्वयं सिद्ध है।

नबी से पहले पैगम्बर

कुरआन में एक आयत है:—

व रूसलन क़द कसस्नाहुम अलैका मिन कब्लो व रूसोलल्लम नकसुस्हुम अलैका।

कुरआन पारा ६ रकू २३/३ निसा।

अर्थः- हमने कुछ दूत भेजे जिनका वर्णन हमने तुमसे कर दिया। जैसे आदम, शीस, इदरीस, जकरिया, यह्या, जुल्किफ़ल आदि और कुछ पैगम्बर और भी भेजे जिनका वर्णन हमने तुझसे नहीं किया। हजरत अबू ज़र ने फरमाया कि:-मैंने रसूलिल्लाह से पूछा कि सबसे पहले कौन पैगम्बर था। आपने फरमाया आदम, फिर मैंने प्रार्थना की कि ऐ रसूलिल्लाह! कुल रसूल कितने हुए आपने कहा तीन सौ और कुछ ऊपर दस। इसके पश्चात् अबू इमामा का कथन है कि मैंने प्रार्थना की कि या रसूलिलाह नबीयों की पूरी संख्या कितनी थी। तो फरमाया एक लाख चौबीस हजार, इनमें तीन सौ पन्द्रह की एक बड़ी श्रेणी रसूलों की हुई।

(तफसीर मज़हरी पारा ६ पृष्ठ ३३-इब्ने कसीर पारा ६ पृ. २३)

इस आयत से थोड़े अन्तर पर एक और आयत भी विचारणीय है:—**व लकद अर्सलना रुसोलम्मिन कब्लिका मिन्हु म्मन कसस्ना अलैका व मिनहुम्मल लम नकसुस अलैका**

(पारा २४ सूरते मौमिन रकू ८/१३)

अर्थः- और अवश्य भेजे हमने तुझसे पूर्व पैगम्बर, उनमें से कुछ का वर्णन तुझसे किया और कुछ का नहीं किया।

अब इसी आशय की एक और आयत देखिए:--

व कानन्नासो उम्मतंव्वाहिदतन फबअसल्लाहुन्नबिजीना मोबशिरीना व मुन्जे़रीना व अन्जला मआहुमुल्किताबा बिल्हक्क ले यहकुमा बैनन्नासे फीमख्तलफू फीह।

(कुरआन पारा २ रकू २६/१०)

अर्थः- सभी लोग एक समाज के रुप में रहते थे। फिर अल्लाह ने पैगम्बर और शुभ सूचना देने वाले तथा डराने वाले भेजे और उनके साथ सच्ची पुस्तकें भेजी जिससे उनकी परस्पर विरोधी बातों में आदेश करें।

प्रश्न यह है कि वह कौन सा काल था जब एक समाज के रूप में लोग रहते थे ? यही भाव बाइबिल का भी है। परन्तु वहाँ तो लिखा है कि खुदा ने उनकी भाषा में गड़बड़ डालकर उनकी एकता को छिन्न भिन्न कर दिया। आदम के काल की उम्मत की मनोदशा का पता इससे लगता है कि आदम के बेटे काबील ने आदम की आज्ञा की अवहेलना करके अपने भाई हाबील को मार डाला। फिर कुल काल पीछे हज़रत इदरीस के समय का वर्णन यह है कि जब इदरीस वयस्क (बालिग़) अवस्था को पहुँचे तो खुदा ने उन्हें पैग़म्बरी प्रदान कर दी। इदरीस ने धूर्तों व पथभ्रष्ट लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया तो जनता ने इदरीस की एक न सुनी और उन्होंने आदम व शीस के मार्ग का विरोध किया। थोड़े से लोग ईमान लाए। यह दशा देखकर इदरीस अपने देश को छोड़ (हिजरत) कर चले गए।

(कससुल्कुरान भाग १)

इसके पश्चात् हजरत नूह का समय आया। उस समय लोग बहुत ही दुराचारी व पथभ्रष्ट थे। बाइबिल में लिखा है कि:-स्वयं खुदा उनके आचार को देखकर घबरा उठा और उन सबको डुबो दिया।

हजरत नूह के काल से हजरत मुहम्मद के काल तक जनता अनेक प्रकार के धार्मिक विचारों में फंसी रही। आदम और नूह के मध्य एक हजार २६ वर्ष का अन्तर बताया जाता है। आदम की आयु ९६० वर्ष की कही जाती है, नूह की उत्पत्ति में केवल १२६ वर्ष शेष है। उपरोक्त आयत का भाव यह है कि पहले एक ही उम्मत थी खुदा ने नबी भेजे, शुभ संदेश देने वाले भेजे, डराने वाले भेजे। तो इस केवल १२६ वर्ष की थोड़ी सी अवधि में कितने पैगम्बर भेजे जा सकते थे। यदि इदरीस का नाम लिया जाए तो इदरीस के काल में तो बहुत ही मतभेद है। न उस समय कोई पुस्तक की चर्चा आई है। इससे सिद्ध होता है कि कुरआन ने जिस काल में एक उम्मत (समाज) कहा वह कोई दूसरा ही काल था। यदि इसे आदम और नूह के बीच का काल माना जाए तो मुसलमानों के लिए यह सिद्ध करना कठिन है कि इस मध्य कौन कौन से नबी आए। और सच्ची किताब किस पैगम्बर को दी गई। क्योंकि मूसा से पूर्व किसे किताब दी गई इसका मुसलमानों के पास कोई प्रमाण नहीं। क्योंकि हदीस में कहा है:-या नूहो अन्ता अव्वलरूसोलो अलल अर्ज़।

(कससुल्कुरान पा० १ पृ० ६३)

अर्थात्:- नूह ही पृथ्वी पर पहले नबी खुदा के माने गए हैं। जब पहले नबी नूह हैं और नूह को कोई पुस्तक भी नहीं दी गई तो सिद्ध हुआ कि कुरआन का यह सिद्धांत कि समाज एक

था उनमें नबी भेजे पुस्तक दी यह कोई और हो समय हो सकता है जिसकी मुसलमान विद्वानों को सच्चे दिल से खोज करनी चाहिए।

मजहरी पारा ३ पृष्ठ ४२३ में आदम से ईसा तक की वंशावली दी गई है। फिर यह उपरोक्त पैगम्बर किस काल के है इस पर भाष्यकारों की मनघड़न्त कहानियां सुनिए:–

इब्ने अब्बास कहता है:– आदम और नूह के मध्य दस किरण का अन्तर था। यह सब लोग एक ही धर्म को मानते थे फिर विरोध हो गया............हसन व अंता कहते है कि आदम की मृत्यु से लेकर नूह के आने तक सब लोग जानवरों की तरह अंधकार युग में (काफिर) थे।

मजहरी पारा २ पृष्ट ४२२-४२३

इब्ने कसीर में है कि पहले लोग सत्य पर थे फिर विरोध हो गया। इसी को सिद्ध करने के लिए इब्ने अब्बास ने लिखा है। उसने इसको सिद्ध करने के लिए अपनी कराअत (वाचक शैली) में फ़ख़तलफ़ू शब्द बढ़ाकर पढ़ा:- **कानन्नासो उम्मतन वाहिदतन फख्तलेफू**। कुरआन की भाषा में फख्तलेफू शब्द नहीं हैं। उवय्य बिन काब ने भी इब्ने अब्बास की भांति पढ़ा। जब विरोध हो गया तो अल्लाह ने नूह को भेजा। यही बात आजमुत्तफासीर पृष्ठ ४६ पर है। आगे लिखा कि जो नबी सृष्टि की ओर भेजे गए वे एक लाख चौंबीस हजार थे इनमें तीन हजार ऊंचे दर्जे के रसूल थे और सब नबियों पर एक सौ चार किताबें उतरी। (आजमुत्तफासीर पारा २ पृष्ठ ४७)

कितने ही नबी आए हों और कितनी ही किताबे उतरी हो परन्तु सब नूह के पश्चात् ही हो सकते हैं। क्योंकि आप पहले पढ़ चुके है कि आदम से बाद आने वाला पहला पैगम्बर नूह है। उसके पश्चात् वह एक लाख पैगम्बर कौन हो सकते हैं। जो हो सकते है उनके नाम तो कुरआन में आ गए। कहने मात्र से तो एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर सिद्ध नहीं हो जाएगें। नूह से मूसा तक के काल में कुरआन में वर्णित पैगम्बरों को कम करके शेष कहां और कब आए। उधर नूह प्रथम हैं। इधर ईसा और मुहम्मद के बीच और कोई पैगम्बर नहीं। मुहम्मद को मुसलमान अन्तिम पैगम्बर मानते है। फिर यह तो उलझन खड़ी ही रही। अब इस उलझन को टालने के लिए कुरआन की इस आयत का सहारा लिया जाता है कि:- खुदा ने नबी को उनके नाम नहीं बताए।

कुरआन के विषय में कुछ और आयतें

इन्ना नहनो नज्जलनज्जिकरा व इन्ना लहूल हाफिजून

(कुरआन पारा १३ रूकू १/१)

अर्थात्:-हमने कुरआन उतारा है और हम उसके संरक्षक है। यह वाक्य लोगों को आकृष्ट करने मात्र क लिए है। यदि आप तौरेत जबूर और इन्जील की रक्षा न कर सके तो कुरआन की क्या रक्षा क्या करेंगे ? क्या वह आपकी पुस्तकें नहीं हैं। और आपने कुरआन की जो और जिस प्रकार की रक्षा की है उसका कच्चा चिट्ठा हम कुरआन परिचय के प्रथम भाग में प्रस्तुत कर चुके हैं।

फिर लिखा:-

फजालिका औहेना इलैंका कुरआनन अरबिय्य ल लेतुजिरा उम्मुल कुरा व मन होलहा। (कुरआन पा० २५ रकू १/२)

अर्थात्:- हमने तुम्हारे (रसूल) के ऊपर कुरआन अरबी भाषा में इस लिए उतारा है कि तुम उससे अपनी कौम अर्थात् मक्का और उसके इर्द गिर्द रहने वालों को डराओ जो अरबी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा नहीं जानते।

(तफसीर आजमुत्तफासीर पा० २५ पृ० २९८)

यही दूसरे स्थान पर पारा ७ रकू ११/१७ में है:—

लितुंजिरा उम्मुल कुरा व मन होलहा। (अर्थ उपरोक्त) तफ़सीर हक्कानी में इसकी व्याख्या इस प्रकार है कि जिस प्रकार पहले पैगम्बरों पर संदेश (वही) भेजी गई हमने उसी प्रकार ऐ मुहम्मद तेरी ओर अरवी भाषा में वही भेजी ताकि तू मक्का के रहने वालों और उसके आस पास रहने वालों को सचेत कर के डरावे कि यदि तुम ठीक मार्ग पर न आओगे तो आपत्ति आने वाली है और उनको कयामत के दिन से भी डराया जावे।

तफसीर हक्कानी पारा २५ पृ० ५

इस विषय को स्पष्ट करने वाली और आयत:—

फ़स्तम्सिक बिल्लाजी ऊहेया इलैका इन्नका अला सिरातिम्मुस्तकीम् वा इन्नहूल जिक्रूल्लका व ले कौमेकावा सौफ़ातुस्अलून।

(कुरआन पा० २५ रकू १० (जुरूफ़)

अर्थात:- अतः ऐ मुहम्मद ! उनकी धमकी की आप कुछ परवाह न कीजिए। आप उस पर ख़ूब दृढ़ रहें, जो तेरी तरफ एक ही ईश्वर है। इस विचार से उत्तम कर्म को ख़ुदा की भक्ति के बारे में ईश्वरीय वचन भेजा गया है, और जो तेरे मार्ग को

बुरा उल्टा तथा तुझे पथभ्रष्ट कहते हैं। कहने दो निस्संदेह आप सीधे मार्ग पर हैं, और यह कुरआन तेरे वा तेरी कौम के लिए शिक्षाप्रद है। तफ़सीर हक्कानी पारा २५ पृ० ३

इस आयत में भी कुरआन तेरे और तेरी क़ौम के लिए कहा गया है।

नीचे लिखी आयत भी अरबी भाषा-भाषियों के समर्थन के लिए ही है।

वा लौ जअल्नाहो कुरआनन आजमिय्यल्लकाजू लौ ला फुस्सेलत आयातोहु आजमिय्युव्व अरबिय्युन। कुरआन पा० २४ रकू ५/१ यदि बनाते हम इस कुरआन को अजमी (अरबी से भिन्न) बोली का तो अवश्य वह कहते क्यों नहीं जुदा जुदा की गई आयतें इसकी भाषा के अनुसार यह क्या बात कि अजमी किताब और अरबी रसूल? इब्ने कसीर पा०-२४-पृ-७

कुरआन का चमत्कार

लौ अन्ज़लना हाज़ल्कुरआना अला जबलिल्लराएताहु खाशे अम्मुतसद्दे अम्मिन ख़श्यतिल्लाहा।

(कुरआन पारा २८ रकू ६ (हशर)

यदि हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि पहाड़ खुदा के भय से दब जाता और फट जाता। इब्ने कसीर पा० २८-पृ०-

आज कल मुसलमान पहाड़ों पर भी रहते है। वह कुरआन भी पढ़ते हैं। आज तक पहाड़ क्या कोई पत्थर भी न फटा? क्या

पहाड़ पर कुरआन उतरता-तो पहाड़ अरबी में लिखा कुरआन समझता और भय खाकर फट जाता ? यह सृष्टि नियम विरूद्ध मूर्खों को बहकाने की बातें हैं।

ऐसी बातें और भी भय देने वाली कुरआन में बहुत हैं। बग़वी लिखते हैं:- हज़रत दाऊद नगर से बाहर जंगल में जाकर खड़े होकर ज़बूर का पाठ करते, उस समय बनी इस्राईल के विद्वान आपके पीछे पंक्ति बांध कर खड़े हो जाते। विद्वानों के पीछे आम लोग और उनके पीछे जिन्न, तथा पहाड़ी चौपाए भी आपके सामने आकर मौन खड़े हो जाते और आश्चर्य से पाठ सुनते, और पक्षी बाजू (पर) फैलाए लोगों के सिरों पर मंडराते थे।
(तफसीर मज़हरी, पारा ६ पृष्ठ ३३०)

यह व्याख्या मजहरी ने कुरआन की निम्न आयत की की है:—

व आतैना दाऊदा ज़बूरा पारा ६

पहाड़ों को प्रभावित करने की बात जबूर के सम्बन्ध में कुरआन में है:— **व लक़द आतैना दाऊदा मिन्ना फज़्लन। या जेबालो अव्वेबी मआहू वत्तै र व अलन्नालहुल्हदीद।**

कुरआन पारा २२ रकू २/८

इब्ने कसीर इसकी व्याख्या करते हैं:— पृष्ठ ६०-६१ पारा २२ अल्लाह बयान फरमाता है कि उसने अपने बन्दे और और रसूल हजरत दाऊद पर सांसारिक व पारलौकिक कृपाऐं की, नबी भी बनाया, शासक भी बनाया था। सैनानी शक्ति भी दी फिर महत्वपूर्ण चमत्कार भी प्रदान किए कि उधर दाऊद की मधुर स्वर वायु में गूंजी उधर पहाड़ों व पक्षियों को भी मस्ती

आ गई। पहाड़ों ने दाऊद की आवाज में आवाज मिलाकर खुदा की स्तुति की और प्रार्थना करनी आरम्भ करदी। पक्षियों ने पंख हिलाने बंद कर दिए, और अपनी भाँति भाँति की बोलियों में खुदा की एकता के गीत गाने आरम्भ कर दिए........ ....पहाडों व पक्षियों को आज्ञा हो रही है कि हजरत दाऊद के साथ अपनी आवाज मिला लिया करें।

(इब्ने कसीर पा० २२-पृ० ५२)

इसके साथ वअन्नालतुलहदीश की व्याख्या पढ़ने योग्य है:-,

(इब्ने कसीर पारा २२ पृष्ठ ५२)

और दाऊद पर यह कृपा हुई कि उनको लोहा गरम कर दिया गया, न उन्हें लोहा गरम कराने की आवश्यकता होती न उसे कूटने की। हाथ में आते ही लोहा ऐसा हो जाता जैसा कि नरम नाजूक रेशम। अब आप उस लोहे से युद्ध में पहनने के लिए लौह कवच बनाते। प्रतिदिन १ कवच बनाते छः हजार में बिक जाती।

इससे अगली आयत में है कि सलैमान ने वायु को वश में कर लिया था।

ऐसी असम्भव बातों पर जो अविश्वास करे उसके लिए आदेश है:—

व मा यजहदों बि आयातेना इल्लल काफिरून

(कुरा० सू० अन्कबूत पारा २१ रकू ५-२१)

इसी प्रकार :— वा सा यजहदो बें आयातिना इल्लज़ालेमून

(सूरत अन्कबूत पा. २१ रकू ५/१)

अर्थात् : कुरआन की आयतों को अस्वीकार करने वाले लोग काफिर हैं, जालिम हैं।

उपरोक्त लेख का तात्पर्य यह है कि पाठक कुरआन सम्बन्धी सब बातों से परिचित हो जावें।

कुरआन की प्रत्येक आयत पर विचारारंभ

कुरआन का आरम्भ मुसलमानों के कुछ विद्वान सूरत बकर से ही मानते है। अलहम्द से नहीं मानते। जैसा कि हम पूर्व में सिद्ध कर चुके है।

कुरआन की बकर की आयतों का शाने नजूल

सूरत बकर एक समय तक मदीने में उतरी परन्तु एक आयत 'वत्तकू यौमन तुर्जऊन फीहे इलल्लाहे तक सब कुरआन उतर चुका तो पीछे उतरी, एवं सूद की आयतों का भी बाद में उतरना माना गया है।

आजमुत्तफासीर पारा प्रथम पृष्ठ ५९ में है:- इसका शाने नजूल एक यहूदी मालिक बिन जैफ है, जो मुसलमानों के दिलों मे भाँति भाँति के अनेक अनर्गल संदेह उत्पन्न करता था कि यह किताब जो मुहम्मद पर उतारी गई है। वह किताब सर्वथा नहीं हैं जिसकी पूर्व पुस्तकों में सूचना दी गई है। खुदा ने मुसलमानों के संदेश निवृति के लिए यह आयतें उतारी।

आजमुत्तफासीर पारा-१ पृ. ५९

तफसीरे हक्कानी ने उतरने का कारण यह लिखा है कि अब्दुल्ला बिन उबय्य, बिन सलोल यहूदियों व ईसाईयों के साथ

मिल गए। उन तीनों पक्षों की समालोचना के स्पष्टीकरण और संदेहों को मिथ्या प्रमाणित करने के लिए यह आरम्भिक आयतें उतरीं। हक्कानी पारा १ पृष्ठ ६-रकू-२

इसके साथ यह भी लिखा है कि सूरते बकर की प्रत्येक आयत के साथ अस्सी फरिश्ते उतरते रहे। जहां सूरते बकर पढ़ी जाती है वहां शैतान प्रविष्ट नहीं हो सकता।

अलिफ-लाम-मीम

सूरत बकर अलिफ़ लाम मीम इन तीन शब्दों से आरम्भ होती है। तफसीरे हक्कानी ने लिखा है कि इस प्रकार के जितने अक्षर सूरतों के प्रारम्भ में आए हैं उनको हरुफे मुकत्ते-आत् कहते हैं। विद्वानों का एक गिरोह इनको मुतशाबिहात के समान कहता है जिसको खुदा व रसूल ही जानते हैं और कोई नहीं जानता (पृष्ठ ४)। इसी भाँति पृष्ठ ११ पर जलालैन ने लिखा है। तफसीरे मज़हरी ने बहुत से मुस्लिम विद्वानों के वचनों को लिख कर सिद्ध किया है कि खुदा ही इनका अर्थ जानता है। सामान्य लोग इसके समझने की क्षमता नहीं रखते। बल्कि स्वय खुदा भी यह चाहता कि हर एक आदमी इससे परिचित न हो। (तफसीरे मज़हरी पारा १ पृष्ठ १६)

इब्ने कसीर ने लिखा है कि अलिफ़ लाम मीम जैसे अक्षर मुकत्तेआत् जो सूरतों के आरम्भ में आते हैं, उनकी व्याख्या में आते हैं, उनकी व्याख्या में भाष्यकारों में मतभेद है। कुछ कहते हैं कि इसके अर्थ केवल अल्लाह को ही मालूम है। और किसी को नहीं (इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ ४६) आजमुत्तफासीर का कहना है कि अलिफ़ लाम मीम यद्यपि हरूफे मुकत्तेआत् हैं जिनके अर्थों में भूत

कालीन तथा पश्चातवर्ती विद्वानों में बहुत मतभेद है। यह सब में से उन मुतशाबिहात (सदेहास्पद) के समान है जिनकी वास्तविकता को खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता, इसमें चर्चा करने की हमें कुछ भी आवश्यकता नहीं। हां, उन पर ईमान लाना और उसे सत्य मानना आवश्यक है (आजमुत्तफासीर भाग १ पृ. ५८)इसी प्रकार कादरी ने लिखा कि हरूफे मुकत्तेआत् कुरआन के भेद हैं प्रत्येक उसकी जानकारी नहीं रखता।

कादरी भाग १ पृष्ठ ३

मुआलिम ने लिखा :–
वल्कुल्लिल इल्मेफीहा इलल्लाहे व फायदतिज्जकरोहातल्बल ईमानेबेहा।

[मुआलिमुत्तन्ज़ील भाग १ पृष्ठ ११]

इसका प्रत्येक ज्ञान अल्लाह को है और इसका वर्णन खुदा की तलाश के लिए है। इस प्रकार के अक्षर कुरआन में २९ सूरतों के पहले आए हैं, और अलिफ–लाम–मीम सूरते बकर के अतिरिक्त आले इमरान, अनकबूत, रूम, लुकमान तथा सजदा में आये हैं।

हमारा विचार है कि ऐसे अक्षर आरम्भ में इसलिए लिख दिए जाते हैं कि लोगों का ध्यान आकृष्ट हो। इस प्रकार श्रृंखलारहित शब्द देखकर लोग इनकी ओर ध्यान लगाएं और यह समझे कि यह बड़े महत्वपूर्ण शब्द होंगे, क्योंकि लोगों पर यह प्रभाव डाला गया है कि सारा कुरआन ही इन शब्दों की व्याख्या है। मजहरी भाग १ पृष्ठ २३

बकर का महातम्य

वुखारी और मुस्लिम ने उद्धृत किया है कि उसीद बिन हजीर रात को सूरते बकर पढ़ रहे थे और उनका घोड़ा उनके पास बंधा था कि यकायक उनका घोड़ा चौंका। वह कहते हैं कि

मैंने पढ़ना बन्द कर दिया। घोड़ा भी ठहर गया, फिर जब मैंने पढ़ना प्रारम्भ किया तो फिर घोड़ा बिदका। तीन बार ऐसा ही हुआ। मेरा बेटा याहया निकट ही सोया था। मुझे भय हुआ कि कहीं घोड़ा उसको कुचल न डाले। फिर जब मैंने ऊपर को देखा तो एक बादल प्रकाशयुक्त दीख पड़ा कि जिसमें मशालें सी जलती दिखाई देती थीं। फिर मैं उसको देखने के लिए बाहर निकला। सुबह होने पर मैंने यह सारा किस्सा हजरत मुहम्मद की सेवा में वर्णन किया, तो आपने फरमाया कि फरिश्ते थे, जो तेरी आवाज सुनकर आये थे (तफसीर हक्कानी पारा १ पृ. ५-६)

(अब आंखों देखी बात को कौन झुठलावें। यद्यपि तर्क के आगे यह कल्पना नहीं ठहरती। उसीद बिन हज़ीर के अतिरिक्त जो हजारों लोग सूरतें बकर पढ़ते हैं उनके पास यह फरिश्ते क्यों नहीं आते ? यह सब कपोल कल्पना ही है।)

फिर कहा कि सूरते बकर और आले ईमरान पढ़ा करो क्योंकि कयामत के दिन यह अपने पढ़ने वाले के लिए बादल की भांति कृपा करने को आएंगे। जिस घर में बकर पढ़ी जाए उसमें शैतान का प्रवेश नहीं होता। यदि इस सूरत को किसी बीमार पर पढ़ा जाए और पके हुए चावल-खांड और दही किसी फकीर को खाने को दिए जायें तो बीमारी अवश्य दूर होगी। विशेषकर यह प्रयोग चेचक के लिए अत्यन्त लाभदायक है, फ़कीर के अनुभव में यह आया है। (तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ५६) हजरत मुहम्मद ने फरमाया कि सूरते बकर कुरआन की कोहान (ऊंट की उभरी हुई पीठ) और ऊंचाई है। इसकी एक-एक आयत के साथ अस्सी-अस्सी फरिश्ते उतरते रहे। कुल दस आयतें यदि पागल पर पढ़ी जाये तो उसका पागलपन दूर हो जाता है।

इब्ने कसीर पारा १ पृ. ४४

यह चमत्कार अब क्यों नहीं काम आते ? लोगों को बहकाने का इससे बढकर और क्या उत्तम उपाय हो सकता है ?

जालेकल्किताबे

मुआलिम में ज़ालेकल्किताबे को ए हाजल्किताबे लिखा है (पृ. १२ क्योंकि ज़ालिका दूर के सकेत के लिए आता है। हाजा निकट के लिए। वास्तव में ज़ा संकेतवाचक है। ज़ा के साथ हा लगाकर हाज़ा बन जाता है और ज़ा के साथ लगा लगा कर ज़ालिका बनता है। जालिका दूर के संकेत के लिए प्रयोग होता है। व्याकरण की उलझन को सुलझाने के लिए इस प्रकार बताया गया :— **वा कील हाजा फीहे मुज़मरिन ए हाज़ा जालेकल्किताबो।**

जालिका पहले ही था एक सकेत निकट का हाज़ा मिला कर दो संकेत एकत्रित कर "**हाजा जालेकल्किताबो** बना कर व्याकरण की भूल सुधारने का यत्न किया है। इसका अर्थ हुआ यह और वह पुस्तक। अन्त में लिखा है– **वहाजामित्तकरीबे लित्तकरीबे वा जालिका लिल्बईदे**. अर्थात्-हाज़ा निकट व जालिका दूर के लिए संकेत है। (मुआलिममुत्तंजील पा. १ पृ. १२)

व्याख्याकारों ने भांति भांति की कल्पनाएं की है जैसे:-

इब्ने कसीर ने कहा कि इब्ने अब्बास फरमाते है कि जहां जालिका हाज़ा के अर्थ में है। मुजाहिद अकरमा बिन सईद बिन ज़ुबेर; सद्दी, मकातिल बिन इबान, जैद बिन असलम और इब्ने जरीह का भी यह मत है। अब आगे इस बात को सिद्ध करने के लिए कि कभी कभी जालिका भी इशारा करीब के लिए आता है। इसके लिए आयत लिखी है:-

व ला फारेजुं व्वला बिकर अवानुम्बैना जालेका

(कुरा० पा० १ रकू ८।८)

मूसा के शिष्यों ने पूछा कि यह गाय कैसी है, तो मूसा ने कहा कि यह गाय न बुढ्ढी है न जवान न बच्चा। भाष्यकारों का इस आयत का प्रमाण ऊपर वाले प्रमाण का समर्थन नहीं करता क्योंकि यहां तो स्पष्ट ही दूर का संकेत है। गाय अपने मालिक के घर में दूर बंधी है। अतः दूरी स्पष्ट है। इस कारण जालिका का प्रयोग हुआ है। यदि भाष्यकार किसी व्याकरण के प्रयोग का प्रमाण देते तो समाधान हो सकता था। अन्य जो एक स्थान पर भूल करें तो दूसरे स्थान पर भी कर सकता है।

इब्ने कसीर आगे लिखते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहिब से जिस पुस्तक के उतारने का वादा हुआ था, इसका संकेत उस पुस्तक की ओर है। भाष्यकारों का मानसिक सतुलन कैसे बिगड़ा है। कुरआन सारा उतर चुकने पर यह वादे की खोज़ में है। यह सूरत भी उसी कुरआन की है। फिर लिखता है। इस शब्द से कुछ लोग तौरेत व कुछ लोग इजील की ओर संकेत मानते हैं। इस प्रकार १० प्रकार की उक्तियां भाष्यकारों ने लिखी है।

(लेखक) तफसीरे इब्ने कसीर पा० १ पृष्ठ ५० (पहले)

अल्लामा काजी मौलाना मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती की भी सम्मति सुनिए। लिखते है कि:-'जालेकल्किताबों' अर्थात वह किताबहै जिसे मुहम्मद साहिब पढ़ते और मुशरिक (ईश्वरीय ज्ञान को मिथ्या समझने वाले) उसको झूठा करने को उद्यत होते हैं। (आपने कहा) जालिका से कुरआन के उस भाग की ओर संकेत है जो सूरते बकर से पूर्व उतर चुका था।

(तफसीर मजहरी पा० १ पृ० २०)

यदि मौलाना का तर्क सत्य माना जाए तो जालिक़ा के पश्चात् का भाग वह जो इस आयत के पश्चात् उतरा वह संदेह-युक्त मानना पड़ेगा। फिर लिखा है कि सम्भव है सारे कुरआन की ओर संकेत हो, इतनी आवश्यक गुत्थी सुलझाने में संदेहजनक शब्दों का प्रयोग कितना आश्चर्यजनक है। इससे तो उत्तम यह था कि अन्य व्याख्याकारों की भांति लिख देते कि ईश्वर ही जानता है। फिर काजी साहिब लिखते हैं कि जालेका शब्द जो अरबी व्याकरण के अनुसार वईद मुशारन इलैह (दूर क़ी ओर संकेत वाला) प्रयोग है। मजहरी पृष्ट २४/१)

यह बिल्कुल विपरीत तर्क है, दूर की वस्तु निकट के शब्द के साथ प्रयोग करना तो प्रतिष्ठा का कारण हो सकता है, परंतु निकट की वस्तु को दूर अर्थ वाले शब्द से संकेत तो स्पष्ट ही असम्मान सूचक है। यह सब प्रमाण शून्य बातें हैं।
इसके पश्चात् हक्कानी लिखते हैं:—

अरबी भाषा में जालिका से दूर की वस्तु व हाजा से निकट कीं ओर संकेत होता है परन्तु यहां खुदा ने जालिका कहा, हाजा नहीं। इससे क़ुरआन की श्रेष्ठता व उच्चता का संकेत है। क्योंकि कोई वस्तु जब उच्च शिखर पर होती है व कमाल के अन्तिम दर्जे में होती है तो अत्यन्त श्रेष्ठ होने से जालिका से उसकी ओर संकेत किया जाता है। तफसीर हक्कानी पा. १ पृ. १३

मौलाना ने कोई उदाहरण नहीं दिया। तू दूर हो जा या दूर-दूर की वस्तु से तो सदा गिरावट अभिप्रेत होती है। जैसे शैतान को खुदा ने दूर कर उसे अप्रतिष्ठित कर दिया। प्रतिष्ठा दूर होने पर नहीं गुणों पर आधारित है। यहां तो जालिका स

प्रतिष्ठा तब स्वीकार हो सकती थी, जब कि कुरआन को हाजा से सम्बोधित न किया जाता। वास्तव में सर्वत्र कुरआन को हाज़ा शब्द से सम्बोधित किया गया है। वहां आपका क्या उत्तर होगा? जैसे:—

हाज़ा किताबुन अन्जलनाहो मुबारकुन (कुरआन पारा ७ रकू ११–१७) अहिया इलय्या हाजल कुरआना।

कुरआन पारा ७ रकू २–८

मौलाना सा. यहां कुरआन के साथ हाजा शब्द आने से इसकी प्रतिष्ठा कम हो गई? क्योंकि आपके विचार में प्रतिष्ठा के लिये जालिका व अप्रतिष्ठा के लिए हाजा का प्रयोग होना चाहिये। यह भाष्यकारों का अर्थहीन प्रयास है। इसलिए तफसीर जलालैन व कुरआनिल अजीम ने तो जालिकल्किताबो को हाजल्कितावा लिखकर छुट्टी पाई। कुरआन के एक ही प्रारम्भिक शब्द की यह दशा है तो सारी पुस्तक का क्या हाल होगा? यथा:—

खिश्ते अव्वल चूं निहद मैमार कज।
ता सुरैया मेरवद दीवार कज।

चुनने वाला यदि पहली ईंट ही टेढ़ी रख दें तो ऊपर तक सारी दीवार टेढ़ी ही जायेगी।

ज़ालेका के विषय में आपने देख लिया—कि किस प्रकार मुस्लिम विद्वान उलझन में पड़े हैं। कोई कहता यहां ज़ालेका हाज़ा के अर्थ में है। कोई कहता है जालेका प्रतिष्ठा से लिए रखा गया है। कोई कहता और स्थान पर भी ज़ालेका निकट संकेत के लिए है। कोई कहता है कि हज़रत मुहम्मद से जो कुरआन देने का वादा

था, इसलिए जालेका आया है। कोई कहता है कि बकर सूरत के पहले जो कुरआन उतरा उसकी ओर संकेत है। कोई कहता है इन्जील व तौरेत की ओर संकेत है परन्तु किसी को साहस नहीं हुआ कि वह व्याकरण से इसकी सिद्धि करे। हम पूछते हैं कि क्या लौहे महफूज़ में भी ऐसा ही लिखा है। यह कुरआन के विद्वानों की तहकीकात (अन्वेणष) है।

ला रैबा फ़ीह।

ला हरफे नफी (नकारात्मक है, जिस अर्थ है नहीं और रैब क़ा अर्थ आरोप-संदेह-शंका,) मिस्बाहुल्लुग़ात, पृष्ठ २३६ व कामूस मुतव्वल में भी यही अर्थ है। आजमुत्तफासीर में पारा १ पृ. ५८ में रैब के अर्थ सन्देह, भ्रान्ति, आरोप तथा कालचक्र की गर्दिशें लिखा है। मुआलिम ने लिखा है: **लाशक्का फीहे इन्नहु मिन इन्दिल्लाहे वा इन्नहुलहक्को।** मुआलिम पारा १३ भाग १

अर्थात्:- इसमें सन्देह नहीं और वह खुदा की ओर से है व सत्य है।

कुरआन पर तो कुरआन उतरने के काल में भी संदेह था। अब भी करोड़ों लोग संदेह करते हैं फिर इस एक पक्षीय निर्णय का क्या मूल्य होगा? कुरआन के उतरने के कारणों में आप पढ़ चुके है कि कई प्रकार के संदेह उस पर किए जाते थे फिर इस आयत का क्या प्रयोजन? यदि कुरआन में संदेह न होते तो इस्लाम में इतने सम्प्रदाय कैसे बन जाते? जिनके सिद्धांत परस्पर सख्त विरोधी हैं? यथा करामतों का झगड़ा, मामूं का सिद्धान्त जिसके आधार पर ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि की भांति नया बना

माना जाता है। जबिया-कदरिया तथा इस्माईलिया सम्प्रदायों की विनाशकारी घटनाऐं क्या संदेहों मतभेदों के विना हो घट गई हैं ?

हम कहते हैं कि फलों से शराब प्राप्त करना, उसका उपयोग सब मुसलमानों द्वारा होना। यह घटना सत्य है और फिर उसका हराम किया जाना यह भी सत्य है। कुरआन परिचय प्रथम भाग में विस्तार से हम लिख चुके हैं।

खुदा की आज्ञाओं में कहीं १० काफिरों पर एक मुसलमान का विजय होना है और फिर २ पर। इस आज्ञा से खुदा को स्वयं अपने आदेश में संदेह प्रकट होता है। चांद के टुकड़े होना, हज़रत मुहम्मद द्वारा हजारों वर्षों का मार्ग रात की गिनी घड़ियों में तै करना, सातों आसमानों के ऊपर जाकर खुदा से बातचीत करना, रात भर में वापिस लौट आना। आसमान पर बहुत से पैगम्बरों को मिलना। यह सब कपोल कल्पित कहानियां संदेह से कैसे खाली है ? कयामत के असम्भव कथानक, बहिश्त व दोजख के मनघडन्त किस्से क्या संदेह से परे हैं ! मूसा की लकड़ी के चमत्कार दाऊद की असम्भव बातें क्या संदेहजनक नहीं ? कहां तक लिखें सारे कुरआन के किस्से संदेहों से भरे पड़े हैं।

हमारा कहना है कि संदेह पहले भी था और सदा रहा जिसके कारण इस्लाम सम्प्रदायों के झमेलों में टुकड़े-टुकड़े हो कर रह गया। क्या स्वयं कुरआन में जो मुतशाबिहात संदेह जनक आयतें भरी पड़ी है वे संदेह से खाली कही जा सकती है ? संदेह तो पहले भी था आगे भी होगा। मुसलमान तो पहले भी शक में नहीं थे, उसके बाद भी शक नहीं हो सकता और जो काफ़िर

हैं, उनमें शक तो खुदा ने स्वयं डाल रखा है। मोहरें लगा रक्खी है, उनका शक भी दूर न होगा तो फिर आयत बेमतलब है।

यह शक नहीं का प्रयोग किस के लिए है, मुसलमानों या काफिरों के लिए ? सब इस पर सहमत हैं कि मुसलमान तो सन्देह करेगा ही क्यों ? उसे इस बात की आवश्यकता ही क्या ? रहे काफिर वे इस आदेश मे क्यों प्रभावित होंगे? वे सारे कुरआन की घटनाओं को ही अविश्वसनीय और मिथ्या मानते हैं, स्वयं कुरआन ऐसे कथनों से भरपूर है। फिर यह संदेह करने वाले कौन हैं ? हां जिन लोगों ने कभी संदेह किया वे कैसे निर्ममता से तलवार के घाट उतार दिए गए, इससे सारा इतिहास सारी भूमि मानव के रक्त से रंगी पडी है। यह आयत लिखकर खुदा ने तो मानव का मूल्य ही दो कौड़ी कर डाला है। खुदा के कथित भक्त कहला कर मज़हबी दरिन्दे इन्सान के खून से नित्य नई होलियां खेलते रहते हैं। मानव कल्याण का कोई सपना साकार नहीं हो पाता। अतः कुरआन की यह आयत मानव हितों के प्रतिकूल है।

हुदल्लिलमुत्तकीन्

इन दो शब्दों पर भाष्यकारों ने बहुत ऊंच-नीच लिखा है और बड़ी उधेड़बुन की है। जितना उन्होंने लिखा वह सभी तो उद्धृत नहीं किया जा सकता। संक्षेप में सार प्रस्तुत करते हैं। यह आयत सारे कुरआन को समझने की कुंजी मानी जाती है। समस्या है : हिदायत (शिक्षा) क्या है और मुत्तक़ीन (परहेज़गार) कौन है ?

(हुदल्लिलमुत्तकीन्) ऐ हुवा हुदन, ऐ रूशद, बयान लेअहलित्तकवा, व क़ीला हुवा नस्बुन अलल्हाले, ऐ हादियन तकदीरोहू ला रैबा फ़ोहे, फी हिदायते ही लिलमुत्तकीन् वल हुदा लिमायहतदी बिहिल इन्सानो लिलमुत्तोकीन ए लिल्मोमिनीन।

व काला इब्ने अब्बास अलमुत्तकी मंय्यत्तोकिशिर्का वल कबाएर वल फ़्वाहिशा व हुवा माखूजुनम्मिनल इरिकाए।

(मुआलिमुत्तंजील पारा १ पृष्ठ १२)

अर्थात्:– वह सन्मार्ग पर हो, संयमी को सत्पथिक कहा गया है, संदेहों से दूर रहने वाला, मोमिन, वह है जो शिरक से बचे–बड़े गुनाहों तथा अश्लीलता से दूर रहे, वह परहेजगारी से सम्बन्धित है। इसका स्पष्ट अर्थ यह हो गया कि शिक्षा केवल संयमियों के लिए है। यथा:–

कुल हुवा लिल्लंजीना आमनू हुदंव्वा शिफाउन

यह कुरआन ईमानदारां के लिए शिक्षा व आरोग्य प्रदान करने वाला है। फ़िर कहा:– वल्लज़ीना लायोमिनूना फ़ी आजानेहिम ववकरुंव्व हुवा अलैहिम अमन। पारा २४ रकू ५/१९

अर्थात्:–जो ईमान नहीं लाते उनके कान बोझिल हैं और उनकी आंखे अंधी हैं। पुनः कहा:–वा नुनज्ज़िलो मिनल्कुरआने मा हुवा शिफा उंव्वरह मतुल्लिल मोमिनीन।

कुरआन पारा १५ रकू ६/९

अर्थात्:— यह कुरआन ईमानदारों के लिए शिफा व रहमत है।

अल्लाजीना योमिनूना बिलगैबे

इब्ने कसीर ने लिखा कि संयमी वह है जिसका अल्लाह ने स्वयं इस आयत के पीछे वर्णन किया:– अल्लाजीना योमिनूना बिलगैबे इत्यादि। इब्ने जरीर ने लिखा:-कि यह सब सद्गुण मुत्तकी में एकत्रित होते हैं। ईमान लाना परोक्ष (ग़ैब) के साथ नमाज पढ़ना जकात (अनिवार्य दान) देना आदि।

मुआज़ फरमाते है:-कयामत के दिन जब लोग एक मैदान में रोक लिए जाएंगे तो उस समय एक घोषणा करने वाला

कहेगा कि परहेज़गार कहाँ हैं ? इस आवाज को सुनकर वह खड़े हो जाएंगे और अल्लाह उन्हें अपनी भुजाओं में ले लेगा और उन्हें अपने प्रत्यक्ष दर्शन से अनुग्रहित करेगा ।

(तफसीरे इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ ५०,५१)

इसके पश्चात् इब्ने कसीर ने लिखा कि मार्ग दर्शन केवल ईश्वर ही कर सकता है अन्य कोई नहीं । इसका सम्बोधन हज़रत मुहम्मद साहिब को है अन्य किसी को नहीं । आयत यह है:-

इन्नका लातहदी मन अहबब्ता वा लाकिन्नल्लाहा यहदी मंय्यशाओ । कुरआन पारा २ रकू ६/६

तुझ पर उनकी हिदायत नहीं है परन्तु अल्लाह जिसको चाहें हिदायत देता है । आगे आयत है:-

वा मंय्युज़् लेलिल्लाहो फ़मालहूमिन हादवां मय्यहदिल्लाहो फ़मालहूमिस्मुज़िल्ल । कुरआन पारा २४ रकू ४/११

अर्थ:- जिसे ईश्वर पथभ्रष्ट करे उसे कोई और मार्ग दर्शन नहीं करा सकता और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं ।

इसी प्रकार आयत :-

मंय्यह दिल्लाहो फहुवल्मुहतद ।
वामंय्युज़िल्लोफलन तजिदा लहू वलिय्यम्मुर्शदन ।

पारा १५ रकू २/१४

..... जिसको अल्लाह हिदायत करे पस वह सत्पथ पर है और जिसको खुदा मार्गभ्रष्ट करे उसे मार्गदर्शक कोई भी नहीं मिलेगा ।। इब्ने कसीर पृष्ठ ५१ भाग १

इसी प्रकार के प्रमाण पारा ५ रकू ११-१४, पारा २३ रकू १७, पारा २४ रकू ४/८, पारा २५ रकू ५/६ आदि में हैं।

विचारणीय बात यह है कि जिसे खुदा ने पथभ्रष्ट कर दिया वह तो कुरआन को मान नहीं सकता और जिसको खुदा ने मार्ग दिखाया उसको कोई पथभ्रष्ट कर नहीं सकता। यह सत्य मान लिया जाए तो कुरआन की इन शिक्षाओं का क्या मूल्य रह गया ? क्योंकि मार्गदर्शन ईश्वर के हाथ में है। इसी बात को लक्ष्य में रखकर यह आयत मे कहा गया है कि कुरआन केवल परहेजगारों को मार्ग दिखाता है। इस विषय को और स्पष्ट करने के लिए हम आज़मुत्तफासीर का एक उद्धरण लिखते हैं पाठक ध्यानपूर्वक पढ़ें:—आप लिखते हैं कि कुरआन भय करने वालों का मार्गदर्शन करता है, जो खुदा के सामने हर समय कांपते व डरते रहते हैं। भला विचार करें कि मार्गदर्शन तो ईश्वर के हो हाथ में है फिर उसकी क्या आवश्यकता ? कुरआन की सारी शिक्षा ही निरर्थक सिद्ध होगई, इससे बचने के लिए आज़मुत्तफासीर का लेखक कहता है:-हुदल्लिलमुत्तकीन के स्थान पर हुदल्लिज्जाल्लीन फरमाना ठीक है अर्थात् हिदायत करती है गुमराहों को क्योंकि परहेजगारों को हिदायत की जरूरत नहीं, जरूरत तो मार्गभ्रष्ट लोगों को होती है। जिसे जो वस्तु प्राप्त है उसे ही पुनः देना और जिसके पास नहीं उसको वंचित रखना कहां तक न्यायसंगत कहा जाएगा ? अब इधर तो कह दिया कि केवल मुसलमानों, परहेजगारों को ही मार्ग दिखाना यह बात गलत व असम्भव है। इसीका एक और पहलू देखें लिखा है कि हुदल्लिलमुत्तकीनकहने में एक विचित्र रहस्य की ओर संकेत किया गया है। रहस्य यह है कि इस वाक्यमें यह अर्थ न समझना चाहिए कि यह पुस्तक परहेजगार हो जाने के बाद उन्हें मार्ग दिखाती है। अपितु तात्पर्य है कि कोई परहेज़गार कुरआन के आदेश के बिना परहेज़गार हुआ ही नहीं

और इन परहेजगारों के सिवा किसी ने सच्चा रास्ता पकडा ही नहीं। मौलाना ने वहुत वारीकी से जो रहस्योद्घाटन किया है। यह तो कुरआन की आयत के सर्वथा विपरीत है। कुरआन तो यह कहता है कि जो परहेजगार है उन्हीं को राह दिखाता है किन्तु मौलाना कहते है कि कुरआन ने राह दिखाई इससे परहेजगार हो गए। मौलाना के वाक्य पढ़ने योग्य है :–

"कि कोई परहेजगार कुरआन की हिदायत के बिना परहेजगार नहीं हो सकता" यह अर्थ कुरआन व इस्लाम के मूल सिद्धांत के सर्वथा विपरीत है और मौलाना का मनगढन्त है।

(आजमुत्ताफासीर पृष्ठ ६४ भाग १)

आपने स्वयं ही तो ऊपर माना कि परहेजगार के लिए कुरआन का मार्ग दर्शक होना प्राप्ति की ही प्राप्ति है फिर परहेजगार के लिए परहेजगारी भी तो इसी कोटि में आई जो स्वय ही परहेजगार है उसको फिर और क्या सिखाना शेष रह गया। मौलाना कुरआन की इस विचित्र आयत का समाधान भी करते जाते हैं, और डरते डरते इस्लाम की ओर भी नजर फेंकते जाते हैं। इससे तो समाधान ने एक और उलझन का रूप धारण कर लिया।

यदि आपकी ही बात मान ली जाए तो बताइए कि कुरआन की शिक्षा के बिना जब कोई मुत्तकी नहीं हो सकता तो जब कुरआन नहीं था उस समय लोग नेक कैसे हुए? अतः आपकी यह एकपक्षीय सम्मति भी खण्डित हो गई। हम ऊपर आपके खुदा के कुरआन की आयता से सिद्ध कर चुके हैं कि खुदा ही लोगों को नेक व परहेजगार बनाता है परन्तु अब पुनः बात को पूरी तरह स्पष्ट करने के लिए लिखते हैं कि जिससे मुसलमानों को अपनी स्थिति का ठीक ज्ञान हो जाए।

वल्लाहो ला यहदिल्कौमल्काफिरीन कुरआन पारा ३ रकू ३६।४ अर्थात् खुदा काफिर समुदाय के लोगों को सन्मार्ग की ओर पथ प्रदर्शन नहीं करता। आगे आयत है:—फमंय्युरेदिल्लाहो अन यहदियाहू यशरहो सदरहू लिल इस्लामे व मंय्युरिद अंय्युजिल्लाहू यजअलो सदरहू जैकन हरजन कअन्नमा यस्साअदो फिस्समाए, कजालिका यजअलुल्लाहुरिज्सा अलल्ला जीना ला योमेनून।

पारा ८ रकू १५।२

व्याख्या:—पर जिस व्यक्ति को खुदा मार्गदर्शन करना चाहता है उसका सीना (हृदय) इस्लाम के लिए खोल देता है। जब यह आयत उतरी तो रसूलिल्लाह से "शरह सदर" की व्याख्या पूछी गई तो आपने बताया कि मोमिन के दिल के अन्दर एक नूर अल्लाह डाल देता है। जिसके कारण उसका दिल खुला और विस्तृत हो जाता है। मैं कहता हूँ तात्पर्य यह कि सत्य की पहचान के लिए उसका मन खुल जाता है और ईमान ले आता है। (अर्थात् मुसलमान हो जाता है।) मित्रों ने प्रार्थना की कि इसका कोई चिन्ह होता है? आपने कहा हां! यह कि परलोक की ओर ध्यान देना, इस नाशवान दुनियां से दूर रहना, मौत आने से पहले मौत की तैयारी करना और जिसको खुदा पथभ्रष्ट करना चाहता है उसका सीना बहुत तंग कर देता है। उसे ऐसी कठिनाई प्रतीत होने लगती है, जैसे वह आसमान पर चढ़ रहा है। मतलब यह है कि अल्लाह उसके सीने को ऐसा तंग कर देता है कि उसके अन्दर ईमान प्रवेश नहीं पा सकता। सत्य को स्वीकार करना उसके लिए दुष्कर हो जाता है। वह सत्य को असम्भव समझने लगता है। नेकी के प्रवेश पाने का कोई भी मार्ग उसके अन्दर नहीं रहता। हजरत उमर ने कहा कि मुनाफिक का दिल भी ऐसा होता है कि कोई भलाई उस तक नहीं पहुँच सकती अर्थात् जिस प्रकार आसमान पर चढ़ना असम्भव होता है, उसी प्रकार

ईमान का उसके मन में प्रविष्ट होना असम्भव होता है। जिस प्रकार बेईमान का सीना तंग व दिल ईमान से दूर रहता है। इसी प्रकार ईमान न लाने वालों पर अल्लाह फटकार डालता है। ला यौमिनूना का संकेत इसी ओर है कि उनका ईमान न लाना फटकार का कारण है।

(तफसीरे मजहरी पारा ८ पृष्ठ २१२, १३ व १४)

आयत में स्पष्ट ही ईमान लाने या न लाने का कारण अल्लाह ही को वताया गया है। आगे है:—

वा लौशाआ रब्बोका लआमना मनफिल अर्जे कुल्लोहुम जमीआ। अफा अन्ता सुकरिहुन्नासा हत्ता यकूनो मोमिनीन। व मा काना लिनफिसन अंय्योमेना इल्ला बिइज्निल्लाहे व यजअलुरिजसा अलल्लाजीना ला याकेलून। (कुरआन पारा ११ रकू १०/१५)

अर्थः-ए मुहम्मद ! यदि आपके भगवान की यह इच्छा होती तो भूमि पर रहने वाले सबके सब मुसलमान हो जाते और कोई बिना ईमान लाए न बचता और न कोई ईमान लाने से विरोध करता। सब ईमान लाने पर सहमत हो जाते........ .. ।

आयत बता रही है कि अल्लाह ने सब लोगों को मोमिन वनाना चाहा ही नहीं। यदि उसकी इच्छा होती तो सब मोमिन हो जाते...............ऐ मुहम्मद ! क्या आप लोगों को अल्लाह की इच्छा के प्रतिकूल विवश कर देंगे कि वह मुसलमान हो जाऐं। यह आयत इस सिद्धान्त पर प्रकाश डालती है कि अल्लाह न चाहे तो किसी मनुष्य का ईमान लाना असम्भव है। बल प्रयोग से भी उसको प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्रेरणा की तो बात ही साधारण है।..............जो कार्य बल प्रयोग से न हो सके वह प्रेरणा से कैसे पूरा हो सकता है ? बस अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि जिसके भाग्य में नेकी होगी वही ईमान लाएगा जा

अल्लाह के ज्ञान में संदेह करता है वह बदनसीब ईमान नहीं ला सकता।

इस आयत के द्वारा रसूल को संतोष दिलाया गया है कि किसी मनुष्य में यह शक्ति नहीं कि अल्लाह के इरादे और शक्ति के बिना ईमान ला सके और अल्लाह गंदगी उन लोगों पर डालता है जो समझते नहीं। न समझने से आशय है सत्य-असत्य में विवेक न करना। अर्थात् चूंकि काफिरों के दिलों पर मुहर लगी होती है और अल्लाह नहीं चाहता कि वे सत्य-असत्य में भेद कर सकें।

(तफसीरे मजहरी पारा ११ पृष्ठ ५४८, ४६)

इस आयत में इतना स्पष्ट कर दिया गया है कि खुदा स्वयं नहीं चाहता कि लोग मुसलमान बनें। पुनः कहा:—
व लौशाआ रब्बुका लजअलन्नासा उम्मतंव्वाहिदतंव्वलायजालूना मुख्तलिफीना इल्ला मर्रहेमो रब्बेका वा लेजालेका खलकहुम वा तम्मत कलेमतो रब्बेका लअम्लअन्ना जहन्नमा मेनल्जिन्नते वन्नासे अजमईन। (कुरआन पारा १२ रकू १०/१०)

अर्थात्:- यदि ईश्वर चाहता तो सब मनुष्यों को एक ही मार्ग पर चला देता। यह लोग भविष्यमें भी आपस में विरोधी बने रहेगें, परन्तु जिस पर आपके रब्ब की दया हो, और अल्लाह ने उन लोगों को इसी लिए उत्पन्न किया है, और आपके प्रभु की यह बात पूरी होगी कि मैं नर्क को जिन्नों व मनुष्यों दोनों से भरूंगा। (तफसीर इब्ने कसीर पारा १२ रकू १०/१०)

इस आयत ने तो बिलकुल ही स्थिति पर जो निर्णय दिया है उसमें संदेह का कोई सवाल ही नहीं रह जाता। खुदा एक धर्म, एक मार्ग चाहता ही नहीं। वह चाहे भी कैसे आखिर उसे जहन्नुम को भरने के लिए इसके सिवा चारा ही क्या है? यदि

मनुष्य आपस में विरोधी नहीं होंगे तो जहन्नुम बिचारी बिलकुल खाली रह जाएगी। अब इसकी व्याख्याकारों ने जो सगति मिलाई है वह भी देखें:—

(तफसीरे मजहरी पारा १२ (हूद) पृष्ठ १०८)

यदि खुदा चाहता तो सब मनुष्यों की एक ही समाज बना देता अर्थात्:- सबको नेक मुसलमान बना देता। (यद्यपि उसने सबको नेक मुसलमान हो जाने की आज्ञा दी है।) आयत से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि अल्लाह की इच्छा पृथक वस्तु है और आज्ञा पृथक अस्तित्व रखती है और दोनों एक नहीं है। अल्लाह ने प्रत्येक मनुष्य को मुसलमान बनाने का अनुबन्ध नहीं किया है। यदि वह चाहता तो उसकी इच्छानुसार अवश्य ऐसा हो जाता। इससे स्पष्ट है कि खुदा की आज्ञा, उसकी इच्छा के सन्मुख कोई महत्व नही रखती। संसार में जो भी कुछ होता है, वह खुदा की इच्छा से होता है, न कि उसकी आज्ञा से.................और मनुष्य सदैव ही सत्य का विरोध करते रहेंगे और विभिन्न प्रकार से असत्य की ओर झुकते रहेंगे। कोई यहूदी रहेगा, कोई ईसाई, कोई अग्निपूजक, कोई मूर्तिपूजक, कोई जबरी, कोई क़दरी, कोई राफज़ी, कोई खारजी इत्यादि। ....इनके अतिरिक्त जिन पर तेरा खुदा दया करे और अपनी कृपा से सन्मार्ग का निर्देश कर दे, वह लोग तो सत्य सिध्दांतों और ईश्वरीय आज्ञा का पालन करने में एकजूट रहेंगें............और इसीलिए अल्लाह ने उनका सृजन किया है अर्थात:-करुणा हेतु ही उनकी उत्पत्ति की है। ....हसन और अता ने कहा है कि जालेका से संकेत विरोध की ओर है, और ;हुम का संकेत विरोध करने वालों की ओर है। अर्थात्:—विरोध करने हेतु ही खुदा ने उनकी उत्पत्ति की है। अशहब ने कहा:-मैंने मालिक से इस आयत के सम्बन्ध में पूछा, तो मालिक ने कहा:— अल्लाह ने

उनको इसलिए पैदा किया है कि एक समुदाय स्वर्ग में और दूसरा नर्क में स्थान प्राप्त करे। अबू उबैदा ने भी कहा कि अल्लाह ने एक समुदाय को स्वर्ग और दूसरे समुदाय को नर्क हेतु उत्पन्न किया है। (यह है कुरआन का खुदा जो मनुष्यों को संकट भोगने हेतु ही उत्पन्न करता है।) ....और आपके खुदा की बात पूर्ण हो गई। कल्मा से तात्पर्य आज्ञा या वह वचन, जो फरिश्तों से फरमाया था, कि में नर्क को अवज्ञाकारी जिन्नों और मनुष्यों दोनों से भर दूँगा। तफसीर मजहरी, पारा १२ पृ. १०८-६

वाह ! क्या खुदा और उसका न्याय है ? कि फरिश्तों को नर्क भरने का वचन देने पर अरबों मनुष्यों और जिन्नों को नर्क गामी वना दियाः—

मुखबिर भी वही, कातिल भी वही, शाहिद भी वही, मुन्सिफ भी वही हैं।
अकरूबा मेरे, करे खून का दावा किस पर ?

पाठक वृन्द ! उपरोक्त विवरण स्वयंमेव अपनी राम कहानी है। मानव के लिए इस्लाम व कुरआन ने कितने कांटे जीवन में बो दिए हैं कि संसार में मनुष्य को कहीं चैन नहीं मिल सकता। इस पर भी खुदा रहीम है और रहमान भी। पाठक वृन्द कुरआन के वर्णित सिद्धान्तों के अनुसार बिना किसी पूर्व जन्म के कर्मों के खुदा कहलाने वाला यह न्यायाधिकारी स्वयं पापियों का निर्माण करता है और उन्हें स्वयं ही दण्ड देता है। दंड भी ऐसा कि मनुष्य सुनते ही कांप उठे। लेखक ने बड़े गौरव के साथ खुदा के बनाए इस नर्क का वर्णन किया है। कुरआन परिचय के प्रथम भाग में हमने विस्तार से इसका उल्लेख किया है। खुदा स्वयं ही गुमराह करता व स्वयं ही शिक्षा देता है कि गुमराही से बचना। गुमराहों को सन्मार्ग पर लाना भी नहीं चाहता। मनुष्यों की ज्ञानेन्द्रियों पर उसने मोहर लगा दी है। यथाः—

खतमल्लाहो अला कुलू बिहि़म व अला समएहि़म व अला अब्सारे हुम्ि गिशावह। (पारा १ रकू १)

खुदा ने उनके दिलों पर मुहर लगादी है और उनकी आंखों व कानों पर पर्दा डाल दिया है। कुरआन पारा १५ रकू ८/२० में और स्पष्ट है:—

वा इन्ना जअलना अला कुलू बिहिम अकिन्नतन अय्यंफक़ूहो वा फ़ी आजानेहिम वक्रा।

अर्थात्:–निस्संदेह हमने दिलों पर पर्दा किया इसलिए कि समझ न सकें और उनके कानों पर बोझ है। इस प्रकार प्रबंध कर देने पर भी जैसा कि हमने ऊपर लिखा है कि कुरआन के खुदा के दिल में खतरा ही बना रहा कि कहीं ऐसा न हो कि कुरआन को सुनकर सन्मार्ग पर आ जावें। पहले प्रबन्ध पर सन्तोष न होने पर एक विशेष प्रबन्ध करना पड़ा कि:—

इजा करातल कुरआना जअलना बैनका व बैनल्लजीना ला योमिनूना बिल आखेरते हिजा बम्मस्तूरा वाजअल्ना अला कुलू बिहिम अकिन्नतन अंय्यफकहूहो व फी आज़ानेहिम क्वरा। इत्यादि।

(पारा १५ रकू ५/५)

अर्थात्:– जब आप कुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और कयामत के दिन पर अविश्वास करने वालों (काफिरों) के मध्य छिपा हुआ पर्दा लटका देते हैं। हम उनके दिलों पर पर्दा डालते हैं ताकि वे इसे समझ न सके और उनके कानों में डाट लगा देते हैं। (इब्ने कसीर पारा १५ पृष्ट ५०)

भाष्य में लिखा है कि इस पर्दे ने उनके दिल ढंक दिए है जिससे वह कुरआन को नहीं समझ सकते। उनके कानों में बोझ है जिससे वह कुरआन को सुन नहीं सकते कि उन्हें लाभ पहुँचे।

(इब्ने कसीर पा० १५ पृष्ठ ५०)

इस प्रकार की और भी आयतें हैं जिनसे कुरआन के सिद्धान्तों की यह उलझनें स्पष्ट ही पाठकों के सन्मुख आती हैं जिनका कोई हल नहीं। अगली आयत है:—

अल्लज़ीना योमिनून बिल्गैबे–

यहां पर ईमान लाने वाले शब्द का प्रयोग हुआ। अतः ईमान शब्द को समझ लेना आवश्यक है। ईमान के धात्विक अर्थ हैं तस्दीक करना, किसी वस्तु का सत्य मान लेना, सत्य जान कर उस पर हृदय से विश्वास करना। इब्ने कसीर कहते हैं कि ईमान का शब्द कोष में केवल तस्दीक, सत्य मानने को कहते हैं उसकी धातु अमन है। ईमान अमन से बना है। ईमान के अर्थ हुए किसी व्यक्ति को अमन में कर देना। इसी कारण यह अर्थ तस्दीक के लिए अनिवार्य है परन्तु शरीअत (धर्मशास्त्र) की परिभाषा में उन चीजों को सत्य और ठीक मानने तथा विश्वास करने का नाम ईमान है, जिनका हजरत मुहम्मद की शरीअत में पूर्ण व निश्चित रीति से विश्वास हो चुका है। जैसे तौहीद (खुदा का एक होना,) (नबव्वत हज़रत को अन्तिम नबी मानना) (हशरो नशर, कब्रों से उठना तथा न्याय के लिए एकत्रित होना) (सज़ा, जज़ा, दण्ड या फल) यद्यपि शरीअत इसी को ईमान मानती है, परन्तु वास्तव में ईमान दिल से किसी वस्तु के तस्दीक करने, सच्चा विश्वास करने को कहते हैं। कर्मों का इससे कोई सम्बन्ध नहीं और पहले लोगों का यह क़थन है कि ईमान दिल से पहचानने और वाणी से स्वीकार करने को कहते हैं तथा शरीअत के सभी अंगों (अरकान) के साथ व्यवहार करने को कहते है। अर्थात् दिल से तस्दीक, ज़ुबान से इकरार और अरकाने इस्लाम, कलमा, नमाज़, रोजा, हज़ और ज़कात पर अमल करना एवं कार्य रूप में परिणित करने को कहते हैं।

कुरआन में कई अवसरों पर ईमान को दिल का काम बताया गया है। यथा:- व क़ल्बहु मुतमइन्नो बिलईमाने
कुतिबा फी कुलूबेहेमुलईमानो

उसका दिल ईमान से संतुष्ट हुआ, उसके दिल में ईमान लिखा गया। अतः यह प्रमाण सिद्ध करते हैं कि ईमान दिल की तस्दीक का नाम है। इसमें न नेक कार्यों की चर्चा है न बुरे कामों की। (आजमुत्तफासीर पा० १ पृष्ठ ६७)

इसी प्रकार तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ठ २७ में हैं कि मौमिन तस्दीक करने वालों को कहते है और यह तस्दीक़ दिल और जुबान दोनों से सम्बन्ध रखती है, परन्तु शरीअत का ईमान यह है कि दिल और जुबान दोनों से उसकी तस्दीक की जाए जिसको नबी अरबी (मुहम्मद) खुदा से लाए।

तफसीर हक्कानी ने लिखा कि शरीअत में ईमान उन चीजों को दिल से विश्वास करने को कहते हैं। जिनका इस्लाम में होना निश्चित रूप से प्रमाणित हो चुका है। अर्थात् कुरआन की स्पष्ट भाषा व हदीस मुतवातर से।

कुरआन व हदीस में जो कुछ है उसकी दिल से तस्दीक करने को ईमान कहते है।

(तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ १८)

ऐसे ही मुआलमुत्तंजील में लिखा है (पृ.१८) कि योमिनून का अर्थ है तस्दीक करना। योमिनून की सबने यही व्याख्या की है। परिणाम यह कि इस्लाम के सिद्धान्तों को ठीक मान लेना ही ईमान कहा जाता है।

आगे ईमान किस पर लाना गैब (परोक्ष) पर

गैब उसे कहते है जिसका आंखों से प्रत्यक्ष न हो । वलौ-गैबो मा काना मुगीबन मिनल उयूने । मुआलिम पृ. १३

मुआलिम व इब्ने कसीर एवं अन्य व्याख्याकार एकमत होकर लिखते हैं कि ईमान का अर्थ है अल्लाह, फरिश्तों, किताबों, रसूलों, कयामत, जन्नत, दोजख, ईश्वर से भेंट, मरने के बाद जी उठने पर विश्वास करने को कहते है । कतादा भी ऐसा ही मानते हैं । इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद एवं कुछ अन्य लोगों से उद्घृत है कि इससे तात्पर्य वे परोक्ष वस्तुऐं हैं, जो दृष्टि से ओझल है। जैसे स्वर्ग–नर्क आदि, जिन का कुरआन में वर्णन आया है । इब्ने अब्बास का कहना है कि खुदा की ओर से जो कुछ आया है वह सब गैब में प्रविष्ट है । हजरत ज़र कहते हैं इससे कुरआन अभि-प्रेत है । अता बिन अबू रबाह कहते है:- अल्लाह पर ईमान लाने वाला ग़ैब पर ईमान लाने वाला है । जैद बिन असलम कहते हैं कि इस का अर्थ तकदीर (भाग्य) पर ईमान लाना है ।

(इब्ने कसीर पा० १ पृष्ठ ५२

व युकीमूनस्सलाता

अर्थः-जो नमाज को स्थिर रखते हैं तथा उसके समय की रक्षा करते है ।

(मुआलिम पृष्ठ १३ भाग १

युकीमूना का अर्थ रक्षा करना है । मुत्तक़ी वह है जो नमाज की पूर्ण रीति से रक्षा करते है ।

(मजहरी भाग १ पृष्ठ ३

सलातः-अरबी शब्द कोष में सलात के अर्थ दुआ (प्रार्थना) के हैं । अरबी कवियों की कविताएँ इसका प्रमाण है, परन्तु शरीअत में इसका प्रयोग नमाज़ पर किया गया है । इब्ने जरीर कहते

हैं कि नमाज को सलात इसलिए कहा जाता है कि नमाजी अल्लाह से अपने कर्म का फल मांगता है और अपनी आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिए अल्लाह से याचना करता है। कुछ एक ने कहा है कि जो दो नाड़ियाँ पीठ से लेकर रीढ़ की हड्डी की दोनों ओर जाती है उन्हें अरबी में सलवैन कहते हैं। चूँकि नमाज में यह दोनों नाड़ियां हिलती है इसलिए नमाज को सलात कहा जाता है ? कई लोगों ने इसे सला से बना बताया है। जिसके अर्थ है चिपक जाना। कुछ विद्वानों ने कहा है कि जब लकड़ी को सीधी करने के लिए आग पर रखते है तो अरब तस्लिया कहते हैं। चूंकि नमाजी भी अपने टेढ़ेपन को नमाज से ठीक करते हैं, इस कारण उसको सलात कहते है।

(तफसीर इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ ५४)

अस्सलात आग जलाने को भी कहते है व अग्नि में प्रविष्ट होने को भी, (बयानुल कुरआन पृष्ठ १८ पारा १)

अब सारा अर्थ इस प्रकार हुआ कि कुरआन वह है जिसमें संदेह नहीं है। यह परहेजगारों को राह दिखाती है,जो ईमान लाते है परोक्ष पर और नमाज की रक्षा करते है।

कुरआन में यह तो फर्माया है कि नमाज का नियत समय पर अदा होना आवश्यक है परन्तु उसका विवरण, नमाज कितनी बार पढ़ी जाए, कौन कौन से समय पर हो। रकआत की संख्या (खड़े होना, झुकना, सज़दा करना) यह एक रकअत हुई। इनके अरकान (स्तुन) तथा अरकान की श्रृंखला इसका वर्णन कुरआन में किसी एक स्थान पर नहीं किया गया।

(बयानुलकुरआन पारा १ पृष्ट १८)

आयत पर कुछ विचार

मार्ग दिखाती है परहेज़गारों को वह जो ईमान लाते हैं साथ ग़ैब के [अर्थात् गुप्त पदार्थों पर या बातों पर] और स्थिर रखते हैं नमाज़ को, इत्यादि ।

हमने एक व्याख्याकार के शब्द ऊपर लिखे हैं कि परहेज़गारों को मार्ग दिखाने का तात्पर्य है, प्राप्त को प्राप्त करना। चाहिये यह था कि मार्ग दिखाती है गुमराहों को। इसी विषय पर हमने इस बात के समर्थन के लिए कई अन्य भी कुरआन की आयतें लिखी है और कारण भी सप्रमाण बताया है, कि परहेज़गार बनाना खुदा का काम है। खुदा ने सृष्टि बनने से पहले ही सब मनुष्यों के कर्म लिख दिये थे कि यह सईद [नेक] तथा शकी [बुरे] मनुष्यों को पैदा कर दिया था। अतः परहेज़गार मनुष्य न तो कुरआन बना सकता है न मुहम्मद सा. बना सकते हैं। इस लिए यह कहा कि परहेज़गारों को रास्ता दिखाती है,काफिरों को मार्ग नहीं दिखाती है। इस पर हम आगे एक मुस्लिम विद्वान के प्रमाण लिखेंगे। पहला वाक्य यह कि मार्ग दिखाती है यह परहेज़गारों को। यहां इस बात पर विचार करना चाहिए कि परोक्ष पर ईमान लाने के साथ परहेज़गार होने की शर्त भी है या नहीं ? यदि है तो परहेज़गार होगा वह ग़ैब [गुप्त] पर ईमान लाएगा ही। और जो परहेज़गार नहीं तो वह भी ग़ैब पर ईमान ला सकता है। यदि ला सकता है तो फिर परहेज़गार होने की शर्त व्यर्थ हो गई। इसके साथ दूसरी बात है नमाज़ कायम [स्थिर] करते हैं। यह तो साफ है ही कि नमाज़ तो वही पढ़ेगा जो मुसलमान होगा या हो जायगा। यदि इसी प्रकार ग़ैब को भी ले लिया जावे कि, जो परहेज़गार होगा वही ग़ैब को मानेगा तो संगति लग जायगी। ऐसा ही कुछ कुरआन के व्याख्याकारों ने लिखा है, कि

परहेज़गार वही है जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ को स्थिर रखते हैं और जो हमने दिया है उसको खर्च करते हैं। हम कहते हैं, कि जिसके पास सम्पत्ति, धन-धान्य है उसको उसे व्यय तो करना ही पड़ता है, तो फिर आयत की क्या विशेषता है ? खर्च तो उसे करना ही पड़ता है ? आयत में इस बात का कोई उल्लेख नहीं कि कितने धन से, कितना धन खर्च करे, किन पर खर्च करे, कैसे खर्च करे ? ऐसा न होने से आयत का कोई सार ज्ञात नहीं होता, ज़कात भी इस आयत से सिद्ध नहीं होती। क्योंकि भाष्यकार मज़हरी के कथनानुसार ज़कात से इसका कोई सम्बंध नहीं। अब तक इतना विवरण आया,वह किताब है जिसमें सन्देह नहीं, मार्ग दिखाती है परहेज़गारों को, जो ईमान लाते हैं साथ ग़ैब के और नमाज़ पढते हैं और जो हमने दिया है। खर्च करते हैं।

व. मिम्मा रज़क्नाहुम युन्फिकून

कुरआन, पारा १, आयत ४

अर्थात्:—जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसे खर्च करते हैं।

इब्ने कसीर, पारा १, पृष्ठ ५३

आयत में यह कहीं भी कोई स्पष्ट संकेत नहीं कि कहां क्या और कैसा व्यय किया जाए ? इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद एवं कुछ सहाबा (हजरत के मित्र) कहते हैं कि इससे तात्पर्य मनुष्य का अपने परिवार का पालन करना है। फिर लिखा कि यहां अर्थ ज़कात नहीं हो सकता क्योंकि यह आयत, **आयते ज़कात** से पूर्व की है। इब्ने जरीर कहते हैं कि यह आयत सामान्य आदेश है। जकात, परिवार पोषण और जिन लोगों को देना अनिवार्य है, उन्हें देना अभिप्राय है। रज़क़ के सही अर्थ भाग्य

और भाग से हैं किन्तु सामान्य परिभाषा में रिज़्क़ कहते हैं:-व वस्तु जिससे जीवित मनुष्य लाभान्वित हो। रहा इन्फाक, इसक वास्तविक अर्थ किसी वस्तु को अपने हाथ से स्वयं की सम्पत्ति से पृथक कर देना है। मज़हरी पारा १, पृष्ठ ३० रज़्क़नाहु शब्द लोक-परलोक, भाग्य या खाद्य वस्तुओं पर भी प्रयोग होता है। बयानुल्कुरआन पारा १ पृष्ठ १८ युन्फिक़ूना, इन्फाक नफ़क़ बना है। अर्थ हुआ कि एक वस्तु जो गुज़र गई। नफ़क़ सुरंग क कहते हैं, क्योंकि वह भूमि के भीतर चली जाती है। इसी नफाक है, जिस के अर्थ हैं, एक मार्ग से दीन में प्रविष्ट होना औ दूसरे से निकल जाना। बयानुल्कुरआन पारा १, पृष्ठ १ उपरोक्त वर्णन अन्य तफसीरों में भी इसी प्रकार है।

इस किताब में सन्देह नहीं कि मार्ग दिखाती है परहेज़ गारों को, जो परोक्ष पर विश्वास करते हैं और नमाज़ को स्थि रखते हैं तथा जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसे खर्च करते हैं इससे अगली आयत है:-

अल्लजीना यौमेनूना बेमा उन्ज़िला अलैका व मा उन्ज़िला मिन कब्लिका। आयत ५

अन्ज़ाल का अर्थ है किसी वस्तु का ऊपर से नीचे उतरना यहां जिब्रिल द्वारा लोह महफूज़ से कुरआन का भूमि पर उतारना अभिप्राय है। मजहरी पारा १, पृ.३१। तफसीर आजमुत्तफासीर में लिखा है कि जो लोग ईमान लाते हैं, साथ उसके जो तेरे ओर उतारी गई है। (अर्थात् हज़रत मुहम्मद की ओर) जो तेरे पूर्व उतारी गई है। (तौरेत-इन्जिल आदि) और जो प्रलय विश्वास रखते हैं। तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृ. ७

कुरआन में तौरात व इन्जिल की अत्याधिक प्रशन्सा की गई है कि यह सन्मार्ग की ओर ले जाने वाली तथा प्रकाशयुक्त है। तौरात में समस्त वस्तुओं का पूर्ण विवरण है। कुरआन में पारा १ रकू ६/६, रकू ११/११, पारा १३ रकू १/६, ५/१३ पारा १५ रकू १/१, पारा १७ रकू ४/४, पारा २६ रकू २/२, ४/१२, पारा २७ रकू ४/२० आदि में तौरात और इंजील के बहुत ही गुण गाये गये हैं किन्तु वर्तमान में मुसलमानों की तौरात व इन्जिल के सम्बन्ध में क्या सम्मति है ? जो कि निम्नांकित है:-

मौलाना अब्दुलहक साहिब अपनी कुरआन की व्याख्या में लिखते हैं कि वे पुस्तकें निसन्देह सत्य थो, हमारा भी यही विश्वास है। हां यह बात है कि उस काल (कुरआन अवतरण) में वे पुस्तकें विद्यमान थी अब अनुपलब्ध है, क्योंकि इन्जील के विषय में, जो इसाईयों को भी स्वीकार है और स्वयं इन्जील को देखने में भी ज्ञात होता है कि वर्तमान में उपलब्ध इन्जिल हज़रत मसीह की इन्जिल नहीं है, और न यह उन पर उतरी है, और न उन्होंने इसे लिखा, और न यह उनके समय में लिखी गई। अपितु वर्षों पश्चात कुछ लोगों ने जनश्रुतियों-लोककथाओं और दंतकथाओं से हज़रत ईसा के जन्म से मृत्यु पर्यन्त का विवरण इतिहास के रूप में एकत्रित किया। यह कार्य एक से अधिक, बहुत से व्यक्तियों ने किया जिनमें से कईयों का नामोल्लेख भी नहीं रह पाया है। जैसा कि **युहुन्ना की इन्ज़ील** से प्रमाणित है, और भी बहुत सी इन्ज़ोले तथा एतिहासिक पुस्तकें उपलब्ध हैं, उदाहरणार्थ **इन्जील बरन्वास** आदि................और इसी प्रकार तौरेत के विषय में भी असंख्य प्रमाण हैं कि यह पुस्तक हज़रत मूसा के सैकड़ों वर्षों के पश्चात इतिहास के रूप में किसी ने लिखी है ? अतएव इन पुस्तकों के सत्यान्वेषी अनुयाई भो उक्त बातों को

स्वीकारते हैं। साथ ही ज़बूर में भी ऐसा ही मतभेद है और यही स्थिति अन्यान्य पुस्तकों की है। तफसीर हकानी पा. २, पृ. २४

मेरे अपने दृष्टिकोण में यह है कि संसार के समस्त बुद्धि-जीवी मुसलमान मानते हैं कि शाह बख्तेनसर ने तौरात की मूल प्रति नष्ट कर दी और वर्तमान में उपलब्ध तौरात नया है। अब कुरआन का यह कथन कि हज़रत मुहम्मद के पूर्व पैगम्बरों पर उतरी पुस्तकों पर विश्वास करना, कहां तक उचित है ? इसके एवज में कुरआन यदि यह आदेश देता कि पुस्तकों के उतरने पर विश्वास करना, पुस्तकों पर नहीं, तो किञ्चित सीमा तक यह दृष्टिकोण फिर भी विचारणीय होता ? जो लोग कुरआन के दृष्टिकोण को पूर्णरूपेण समझते हैं, वे जानते हैं कि कुरआन का उक्त कथन ईसाईयों व यहूदियों को फंसाने का एक षडयंत्र अर्थात मात्र शब्दव्युह ही है। कुरआन के अतिरिक्त अन्यान्य पुस्तकों को मान्यता देना कोई लक्ष्य नहीं था, क्योंकि स्वयं कुरआन ने जब अपने से पूर्व अवतरित सभी दीनों (सम्प्रदायों) और पुस्तकों को निरस्त कर दिया और केवल हज़रत मुहम्मद व एकमात्र कुरआन पर विश्वास लाना ही उद्देश्य रखा तो फिर यह अन्य पुस्तकें परिवर्तित हुई या नहीं एक ही स्थिति में रहती है ?

कुरआन के भाष्यकार और तफसीर हक्कानी के लेखक मौलाना अब्दुलहक ने इंजील के विषय में लिखा कि 'जो ईसा-ईयों को भी स्वीकार है और स्वयं इंजील को भी देखने से ज्ञात होता है कि वर्तमान में उपलब्ध इंजील हज़रत मसीह की इंजील नहीं है, और न यह उन पर उतरी है, और न उन्होंने इसे लिखा, और न यह उनके समय में लिखी गई है।' पाठकवृन्द ! मौलाना अब्दुलहक और कुरआन के कथनोपकथन को सुक्ष्म दृष्टि से देखें

तो समस्त रहस्य स्पष्ट हो जायेगा । मौलाना साहिब ने लिखा कि हज़रत मुहम्मद के १ हजार ५०० वर्षों पूर्व से भी अधिक की वह घटना है कि शाह वख्तेनसर ने भयंकर अग्निकांड कर सारे क्षेत्र को नष्ट कर दिया, जिसमें तौरेत भी जल गया था । इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद के ४०० वर्षों पूर्व वर्तमान में उपलब्ध इंजीलों का सृजन हुआ । ऐसी स्थिति में हज़रत मुहम्मद के समय न तो असली तौरात, और न इंजील ही थी । तव कुरआन की वे आयतें निरर्थक और प्रभावहीन हो जाती है, जिनमें कहा गया कि हज़रत मुहम्मद के पूर्व पैगम्बरों पर उतरी पुस्तकों पर ईमान लाओ । कुरआन का यह कथन ईसाई व यहूदी धर्मावलम्बियों को दिग्भ्रमित करना ही मात्र प्रमाणित होता है ।

व बिल आख़िरते हुम यूकेनून

आयत ५

अर्थः– और वह न्याय के दिन के विषय में विश्वास रखते हैं । परहेज़गार (संयमी) के ईमान की छठी बात यह है कि वह कयामत [प्रलय] के दिन पर विश्वास करें । आख़िरत शब्द का अर्थ है अन्तिम । दुनिया शब्द वास्तव में दुनिआ है । नून पर ज़ेर [ईकार] होने से वा बदल कर या होने से दुनिया हो गया है । इसके अर्थ हैं निकट होना, मनुष्य की निकटतम दुनिया, उसकी निकटता का अन्त आख़िरत है । इमामवर्श बिल आख़ेरते को मात्रा बदल, और हमज़ा को लोप कर दोनों प्रकार से पढ़ते हैं ।

तफ़सीर मज़हरी पारा १, पृ. ३२

आखेरत क्या है ? यथा स्थान उसका वर्णन किया जाएगा । संक्षिप्त में यह कि समस्त मृतक पुनर्जिवित होकर एक मैदान में न्याय हेतु एकत्रित होंगे । इसे आखेरत कहते हैं । इस्लाम की

अपनी यह मान्यता है, जो कि सृष्टि नियम के सर्वथा विपरीत है और जिसे कोई भी बुद्धिजीवी विचारक कदापि स्वीकारेगा नहीं। अगली आयत है:–

ओलाएका अला हुदम्मिर्रब्बेहिम व ओलाएका हुमुल मुफ्लेहून
आयत ६

अर्थ:– यह लोग उचित मार्ग पर हैं, जो उनको अपने खुदा की ओर से प्राप्त हुआ है और यह लोग पूर्ण सफल हैं। इब्ने कसीर पृष्ठ ५६ पारा १। उक्त आयत का अर्थ मुआलिम ने विशेष रूप से यह लिखा है 'फलाह का उचित अर्थ फाड़ने से है। भूमि पर हल चलाने के अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है। अर्थात् भूमि को फाड़कर उसे अपने हेतु लाभदायक बनाना। उसी प्रकार मुत्तकी दुनिया व आखेरत में खैर अर्थात् सफलता प्राप्त करता है।
मुआलिम पृ० १४

आयत के अर्थ में मतभेद

इस्लाम के अन्तर्गत दो बड़े सम्प्रदाय मोतज़िला व ख्वारिज़ हैं। उन्होंने इस आयत का अर्थ लगाया है कि स्वर्ग में वही लोग जाएंगे, जिनका इस आयत में वर्णन है। शेष कबीरा व सगीरा (बड़े व छोटे) अपराधी मुसलमान भी नर्क में जाएंगे। यह मत इन दोनों सम्प्रदायों का है। इस विषय में तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ २६ में है कि "ख्वारिज़ व मोतजिला कहते हैं कि जो नमाज़ न पढ़ेगा व ज़कात (अनिवार्य दान) न देगा, वह ईमान से निरस्त होकर सदैव नर्क में जाएगा।" इसका उत्तर हक्कानी में है कि "कुरआन व हदीस में अनेक स्थानों पर मुस्लिम अपराधियों का क्षम्य होना व स्वर्ग में जाना लिखा है।" सूरतें

बक़र की जो भी आयतें अभी तक वर्णित की गई है, उनका अर्थ तफसीर कादरी में इस प्रकार है:—वह पुस्तक जिसके उतारने का वचन अल्लाह ने पूर्व पुस्तकों में दिया था। यह पूर्ण पुस्तक है अर्थात् कुरआन। इस पुस्तक (कुरआन) में कोई शंका या संदेह नहीं। संयमी व सत्य हृदय से विश्वास करने वालों, परोक्ष विषयों, अल्लाह, फरिश्तों, कयामत, व उससे सम्पृक्त गुप्त विषयों पर विश्वास करने वालों के हेतु मार्गदर्शिका है। कुछ का कथन है कि परोक्ष (ग़ैब) से ईश्वर द्वारा निर्मित भाग्य पर भरोसा, पांच समय नमाज़, अल्लाह द्वारा दी गई वस्तुओं का उपयोग अपने परिवार, सम्बन्धियों, पडोसियों व अधिकारियों पर व्यय करना अभिप्रेत है। जो लोग विश्वास करते हैं रसूल (हज़रत मुहम्मद) के ऊपर उतारे गए कुरआन पर तथा पूर्व में पैग़म्बरों पर उतारी गई पुस्तकों पर, जैसे तौरात इत्यादि तथा दुसरा घर अर्थात् कयामत, कर्मफल के दिवस पर। इन सद्गुणों को धारण करने वाला सम्प्रदाय सत्पथ पर है अपने पालक का आज्ञानुवर्ती एवं उसकी सामर्थ्य से सन्मार्ग प्राप्त किया है और वह लोग कष्ट की घाटियां से छुटकारा पाने वाले हैं।

तफसीर कादरी पारा १, पृष्ठ ३–४

इस विषय में हमने प्रबल प्रमाणों से पाठकों को यह सत्य हृदयंगम कराया है कि पूर्व आयतें कुरआन के सार्वभौमिक धर्म होने का निषेध करती है। यहां तक कि जिन्हें सन्मार्ग की आवश्यकता है, उनका भी मार्ग दर्शन नहीं करती। कुरआन अज्ञान की वृद्धि करता है, जैसा कि पाठक आगे पढ़ेंगे। सत्य तो यह कि भगवान [अल्लाह] को मनुष्य मात्र का सन्मार्ग दर्शन करना चाहिये। यही ईश्वरीय ज्ञान का मौलिक आधार है परन्तु कुरआन इस चरम सत्य का विरोध करता है। दोयम :– इस्लाम ने

ईमान का माध्यम गैब (परोक्ष) वस्तुओं के प्रमाण स्वीकारे हैं और प्रत्यक्ष प्रमाणों को मनुष्यां के विश्वास का अवलम्ब नहीं माना। संयमो बनने हेतु आंखें वन्द कर, बुद्धि पर बन्दिश लगा कर सत्यासत्य के निर्णय के अपने अधिकारों को तिलांजलि देकर जो भी सत्यासत्य कुरआन या हदीस कहे उसे निर्विरोध मानो अन्यथा भयभीत करने हेतु नर्क का हव्वा सन्मुख है जो खा जाएगा। अब सच्चा मनुष्य कहां जाए :—

खुदा ! बन्दा पे तेरे सादा लौह बन्दे किधर जाएं।
कि दरवेशी भी एय्यारी है, एय्यारी भी एय्यारी।

यदि परोक्ष वस्तुओं पर विश्वास न किया तो संयम भंग होता है, ईमान खंडित होता है। क्या विचित्र गोरख धंधा है ?

कुरआन के वर्तमान स्वरूप को परिवर्तित करने पर इस्लाम का विश्वास नहीं बदल पाया ? रूहुल्कुरआन में सैयद नजमुलहसन पृष्ठ १५ पर लिखते हैं :—

वर्तमान कुरआन के सम्बन्ध में मुस्लिम विद्वान एकमत है कि इसको शृंखला तरकीब नज़ूल (उतरने का क्रम) के अनुसार नहीं है।

मौलाना अशरफअली खान भी मुकद्दम ए कुरआन में लिखते हैं "हज़रत मुहम्मद साहिब पर सर्व प्रथम सूरते इकराआ बेसमे और सबसे अन्त में सूरते इज़ाजाआ नस्रूल्लाहे उतरी। आगे है कि 'मेरी सम्मति में सूरतो के अतिरिक्त बहुधा आयतों में भी शृंखला क्रम उचित नहीं रहा:-जैसे सूरत तहरीर ......।

अल्लामा जलालुद्दीन सयूती लिखते हैं कि:- हज़रत अली द्वारा एकत्रित कुरआन में सर्व प्रथम सूरते इकराआ, फिर मुदस्सिर, फिर नून और फिर मुज़म्मिल इत्यादि थी।

तफसीर इत्तिक़ान भाग १ पृष्ठ १६७

हज़रत अली के कुरआन के सम्बन्ध में अत्याधिक लोगों की धारणा है कि हज़रत अली ने कुरआन शरीफ उसी व्यवस्था में श्रृंखलित किया था, जैसा कि वह उतरा था। मुहम्मद बिन सीरीन का कथन है कि "यदि वह कुरआन शरीफ हम तक पहूँ-चता तो वास्तव में ज्ञान का कोष होता।

तारीखुलखुलफा [उर्दू] पृष्ठ १२८

उपरोक्त विषय में रूहुल्कुरआन में लिखा है:– मैं कहता हूँ हज़-रत अली द्वारा सग्रहीत कुरआन, जो कि अपने उतरने के अनु-सार ही था। जिसे उन्होंने हज़रत मुहम्मद की आज्ञानुसार सग्रहीत किया था। यदि उसे हज़रत अबू बकर ने सत्तारूढ़ होने पर स्वीकार कर लिया होता तो उन्हें पुनः कुरआन संग्रहीत करने का कष्ट न उठाना पड़ता। रूहुल्कुरआन पृष्ठ १२

वर्तमान कुरआन के सम्बंध में–

अल्लामा मशरिकी की सम्मति।

अपनी पुस्तक तकमला के पृष्ठ ६ पर अल्लामा अनायत-हुसेन मशरिकी ने लिखा कि:- चौदह सौ वर्षों में मुसलमानों ने कुरआन को जिस प्रकार पढ़ा और समझा तथा उसकी अंधश्रद्धा में निरर्थक और सारहीन बातें संसार के सन्मुख कुरआन जैसी महान पुस्तक के सम्बन्ध में प्रस्तुत की उनसे दुनिया कुरआन से परामुख हो गई। वह ढंग मिथ्या व पथभ्रष्ट करने वाला था। स्वयं मुसलमानों के मन और मस्तिष्क में ईश्वरीय ज्ञान (कुरआन) के सर्वथा सत्य होने का पूर्व में जो विश्वास था। आज भाष्यकारों की मनमानी व मिथ्या दर्शन के कारण समाप्त प्रायः हो गया है। रूहुल्कुरआन पृष्ठ १५। फिर जो लेखक

ने आगे लिखा वह पठनीय है: — मक्की व मदिनी सूरतों में जो व्यवस्था की गई है, उसमें अनेक स्थानों पर विराबाभास है, किन्तु उतरने के क्रमानुसार उनकी शृंखला इतिहास विरुद्ध और अयुक्तिपूर्ण है। जिस क्रम को मैंने अपनाया है, उसमें यह दोष नहीं होंगे। कुरआन की वर्तमान शृंखला असंगत व युक्तिरहित है, किन्तु कुरआन अपनी इस अवस्था में असंगतिपूर्ण और विसंगत साहित्य दृष्टिगोचर होता है। जिसका एक छोर, दुसरे छोर से नहीं मिलता। जिसकी रचना असंगत विचारों से कोई अधिक ज्ञात नहीं होती, जिसमें दुखप्रद, व्यर्थं विस्तारपूर्ण वाक्य दुहराये गये हैं जो मन और मस्तिष्क को असह्य अनुभूत होते हैं। जिसमें एक ही विषय को कष्टदायक प्रणाली से अनेकानेक बार पिष्टपेषण करने व दोहराने का कोई लक्ष्य नहीं प्रतीत होता। जिसकी प्रत्येक सूरत आरम्भ और अन्त सहित समयानुसार मिला कर पवित्रता हेतु पढ़ी जाती है और यह ज्ञात नहीं हो पाता कि कौन सूरत किन परिस्थितियों के अनुकूल उतरी अथवा उतारी गई और किन आवश्यकताओं के अनुसार किन घटनाओं को दुहराया गया है ? जिनमें कोई युक्ति और संगति का तालमेल ही नहीं है। आगे लिखा:— मेरी सम्मत्ति में और प्रत्येक सद्बुद्धि प्राप्त मनुष्य की सम्मति में यह ईश्वरीय सन्देश (कुरआन) के साथ घोर अन्याय है, कि जिस उपाय व क्रम से वह मनुष्य के पास आकर संसार को विध्वंस करने वाले समुदाय को सैंकड़ों वर्षों तक उत्पन्न कर जाए और वह उपाय व क्रम स्थिर न रखे जाएं उन्हें उपेक्षित कर उनका नामोनिशान तक न रहने दिया जाए और जब संसार को ऊंचा-नीचा करने वाली सत्ता का वातावरण समाप्त हो जाए तो मनुष्यों की भविष्य में आने वाली पीढ़ी को वही पुस्तक गड्डमड्ड कर धर्म के नाम पर दे दी जाए और कहा जाए कि जाओ इस पहेली को सुलझाओ और भटको कि

अरबी रसूल (हज़रत मुहम्मद) ने किस प्रकार विश्वास रखने वाले लोग उत्पन्न कर लिये थे। रूहुल्कुरआन पृष्ठ १६

वास्तव में अल्लामा मशरिकी का उपरोक्त कथन असत्य नहीं है। हज़रत मूसा की कथा ३७ सूरतों में, फरिश्तों की गाथा ३७ सूरतों की ८८ आयतों में तथा हज़रत नूह की कहानी २८ सूरतों में ४३ स्थानों पर दुहराई गई हैं। बेचारे मशरिकी ! इसीलिए परेशानहाल है, बेज़ार है।

सूरत वकर के प्रारम्भिक अक्षरों अलिफ–लाम–मीम के विषय में मुस्लिम विद्वान स्वयं कहते हैं कि इनकी वास्तविकता खुदा ही जानता है ? कुछ इनको खुदा का एक रहस्य कहते हैं, व इन्हें मुतशाहिबात (रहस्यमयी) बताते हैं, परन्तु यह सर्व सम्मत सिद्धांत है कि ईमान लाना इन पर अनिवार्य है, व इसकी व्याख्या करना निषिद्ध और दण्डनीय है।

सूरत–बकर के चमत्कार

उपरोक्त कारणों में चमत्कार खोजने वाले मुस्लिम भाष्यकारों में एक अल्लामा सियूती ने लिखा कि:-कुछ विद्वानों का कथन है कि कुरआन ए करीम (ईश्वरीय पुस्तक) की सम्बोधन प्रणाली तीन प्रकार की है:–

(१) एक प्रकार यह है कि जो केवल हज़रत मुहम्मद के ही हेतु उपयुक्त है।

(२) दोयम यह कि हज़रत मुहम्मद के अतिरिक्त अन्यान्य लोगों के हेतु भी उपयोगी है। और.... .... ।

(३) तृतीय प्रकार है, कि जो हजरत मुहम्मद और अन्य जन साधारण सभी के लिए एक समान है। प्रकरण ५१, पृ. ८०

भाष्यकार अल्लामा सियूती ने आगे लिखा कि-जो व्यक्ति कुरआन से अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक में सन्मार्ग को ढूंढेगा तो खुदा उसे पथभ्रष्ट कर देगा। (क्योंकि) कुरआन ही अल्लाह का विश्वसनीय कमन्द है। वही एक मात्र युक्तिसगत माध्यम है और सीधा मार्ग भी है।

तफसीर इत्तिकान प्रकरण ७२, पृष्ठ ३७२ भाग २

इसमें शंका नहीं कि यह काफ़िरों व मुसलमानों के हेतु कहा गया है। काफिरों को तो शंका ही नहीं क्योंकि वह तो उसे सर्वथा मिथ्या मानते ही हैं और जो मुसलमान गैब (परोक्ष) पर ईमान (विश्वास) ला चुके हैं उन पर शंका करना, उनके ईमान पर शंका करना है। शंका शब्द का प्रयोग ही यह सिद्ध करता है कि सन्देह की सम्भावना है अन्यथा कभी किसी गणित की पुस्तक में शंका शब्द का प्रयोग होता? हमें तो कुरआन के निर्माता के मन में स्वयं की रचना के सृजन के प्रति ही शंका दृष्टिगोचर होती है। यदि ऐसा नहीं होता तो इन शंकायुक्त आयतों को मुतशाबिहात का जामा (अनावरण) पहिनाकर यह न कहा जाता कि खुदा ही इनको जानता है। आयत के शब्दों पर विचार करते ही शंकास्पद स्थिति हृदयंगम हो जाती है। कुरआन की निम्न आयत भी हमारे मत की पुष्टि करती है:-

फ़अम्मलल्ज़ीना फी कुलूबेहिम ज़ैगुन फयत्तबे ऊना मातशाबहा मिन्हुब्तेगा अल फित्नते वब्तेगाआ तावीलेही।

कुरआन, पारा ३ रकू १/८ आले इमरान

अर्थः– वह लोग, जिनके दिलों में टेढ़ापन हैं, मुत्तशाबेहात आयतों का अनुसरण करते हैं। फलतः उनकी पथभ्रष्टता की इच्छा पूर्ति हो जाए। तफसीर मज़हरी, पारा ३, पृष्ठ १७९

उक्त आयत में मुतेशाबहा शब्द स्पष्ट घोषणा कर रहा है कि कुरआन में शंकास्पद आयतें भी हैं। यदि कोई उनका अर्थ करेगा या करने का प्रयास भी करेगा तो पथभ्रष्ट हो जाएगा, क्योंकि खुदा के अतिरिक्त उनका अर्थ कोई नहीं जानता। अतः उनके अर्थों को समझने-बूझने पर प्रतिबंध लगा दिया। यह कह कि भ्रमोत्पादक आयतें हैं। इन्हें समझने-बूझने के यत्न भी मत करो, यदि करोगे तो निश्चत ही पथभ्रष्ट हो जाओगे। क्या विचित्रता है ? शंका उत्पन्नकारक आयतों पर ईमान भी लाओ व शंका की चर्चा भी मत करो, अन्यथा काफ़िर हो जाओगे :–

ये दस्तूरे जुबां बन्दी अजब है इनकी महफिल में,
यहां तो बात करने को तरसती है जुबां मेरी।

कुरआन शंकाकुल आयतों से भरा पड़ा है, जिनकी यथा-स्थान चर्चा की जाएगी किन्तु तौरेत और इन्जील के सम्बन्ध में इस्लाम का अन्तिम निर्णय समझने की आवश्यकता है। कुर-आन की एक आयत एक आदेश देती है, तो दूसरी आयत दुसरा आदेश प्रसारित कर देती है। तफसीर मजहरी ने एक हदीस उद्धृत की है:– मुहम्मद बिन नसर ने हज़रत अन्स से उद्धृत किया है कि अल्लाह ने तौरेत के स्थान पर मुझे सब ए तवाल प्रदान की और इन्जील के स्थान पर अलिफ–लाम रा और त्वासीन वाली सूरतें और ज़बूर के स्थान पर त्वासीन वा हा मीम वाली सूरतें प्रदान की और विशेष रूप से मुझे मुफस्सेलात प्रदान की है।

तफ़सीर मजहरी, पारा १४ पृ. ३६१

पाठकवृन्द ! उपरोक्त उद्धृण से तौरेत-इन्जील व ज़बूर का अस्तित्व ही समाप्त हो गया किन्तु उनकी प्रशंसायुक्त आयतों का क्या मूल्य व महत्व रहा ? अब तो पाठकगण ! भलि भांति कुरआन के इस भूलभुलैया से भरे राहे मुस्तकीम (सीधी सादी राह) के गोरखधन्धे से परिचित हो ही गए होंगे ? जिस प्रकार ताना–बानायुक्त मछियारे का अपना जाल मछलियों को अपने बन्धन में कैद कर लेता है, ठीक उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद साहिब द्वारा अपने इस्लाम के सपने को साकार रूप देने की उलझनपूर्ण योजना थी। जिसकी गहराईयों को अल्लाह और रसूल अर्थात् स्वयं हजरत मुहम्मद के अतिरिक्त सम्भवतः संसार में अन्य कोई भी, कभी भी, समझ पायेगा ? यह सम्भव नहीं है।

कुरआन–लेखक की अनूठी कल्पना

किसी भी ग्रन्थ का प्रत्येक लेखक या प्रणेता अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में अथवा अन्त में स्वरचित ग्रन्थ के गुणों पर स्वयं चर्चा करना अपना कर्तव्य समझता है, परन्तु कुरआन ग्रन्थ जो कि अभी सम्पूर्ण ही नहीं हो पाया कि ला रैबा (शंकारहित) होने की घोषणा कर दी। अल्लामा सियूती के अनुसार सूरत बकर के पश्चात उतरने वाली २७ सूरतों का अस्तित्व ही नहीं, कि उनके पूर्व ही पुस्तक के सम्बन्ध में निर्णय कर लिया गया कि इसमें (कुरआन में) शंका नहीं। इस्लाम के मतानुसार यदि सूरते बकर को उसके उचित स्थान पर लिखा जाता तो वह सम्भवतः मध्य के किञ्चित ईधर आती तो बताईये कि ऐसे स्थान पर आने वाली सूरत में ऐसे शब्दों का प्रयोग क्यों उपयुक्त समझा जाए ? सम्भवतया इसीलिए कुरआन को क्रमबद्धकर्ता कारीगरों ने इसे प्रारम्भ में प्रयुक्त कर किताब प्रारम्भ की। यद्यपि यह

मदं मक्की सूरतों के लिखने के पश्चात श्रृंखला में आनी चाहिए थी। अगली आयत है :—

ओलाएका अला हुदम्मिर ब्बेहिम व उलायका हुमुल्मुफ्लिहून।
कुरआन पारा १, आयत ६

अर्थ:—यह लोग सन्मार्ग पर हैं अपने पालनकर्ता के और यह लोग वही है (जो) छुटकारा पाने वाले हैं।

आजमुत्तफासीर पारा १, पृ. ७७

इब्ने कसीर इसकी निम्न व्याख्या करते हैं :—
वह लोग वही हैं, जिनके गुणों का वर्णन पूर्व में किया, यथा गैब (परोक्ष) पर विश्वास लाना, नियमपूर्वक नमाज़ अदा करना, खुदा से प्राप्त धन में से दान देना, हज़रत मुहम्मद को प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान पर विश्वास करना तथा आपके पूर्व जो किताबें उतरी, उनको मान्यता देना और न्याय दिवस (कयामत) पर विश्वास रखना। यहां तक ही कुरआन ने वर्णन किया है, इससे आगे व्याख्याकार ने कतिपय बातें अपनी ओर से लिखी है। जैसे शुभ कर्म करना, बुराईयों व निषिद्ध कार्यों से बचना। यही लोग सन्मार्ग पाये हुए हैं, जिन्हें खुदा की ओर से प्रकाश प्राप्त हुआ है। इत्यादि।

एक बार किसी ने हज़रत मुहम्मद से पूछा कि हुजूर ! कुरआन पाक की कतिपय आयतें तो हमें धैर्य प्रदान करती है और कुछ आयतें कमर तोड़ देती है और ऐसी स्थिति आ जाती है कि हम निरुत्साह हो जाएं। आपने (हज़रत मुहम्मद) फरमाया—मैं तुम्हें स्वर्ग में जाने वालों की पहिचान स्पष्ट कर दूं।

फिर आपने अलिफ़-लाम-मीम से मुफ्लहून तक पाठ किया। (जितना हम सूरते दकर लिख चुके हैं।) फरमाया कि यह लोग हैं, जो स्वर्ग में जाने वाले हैं और (जो आयतें हम आगे लिखेंगे वह पढ़कर) फरमाया कि यह लोग नर्क में जाएंगे।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १, पृ. ५६

स्वर्ग वालों के हेतु कुरआन में केवल वह बातें हैं, जिनका वर्णन हमने परोक्ष पर विश्वास से लेकर कयामत में पूर्ण आस्था रखने तक लिखा है। इनमें कोई सार्वजनिक हित के कार्य करने तथा बुरे कर्मों से, कुवचनों से पृथक रहने का उल्लेख नहीं है। व्याख्याकार ने यह सब अपना ओर से स्वयं ही लिखा है। इसी आयत का अर्थ कादरी ने निम्नलिखित लिखा है :—

वह समुदाय जो इन गुणों से पूरित है और उन नामों से सम्बोधित है। जिनको लिखा व वर्णन किया गया है। वही सन्मार्ग तथा उचित दिशा में अपने पालनकर्ता की ओर चल रहे हैं। अर्थात्:—उन्होंने अल्लाह-प्रदत्त सामर्थ्य से भलाई का मार्ग पाया और वही समुदाय कष्ट की घाटियों से मुक्ति पाने वाला है और वह श्रेष्ठता की सर्वोच्च कोटि के पाने वाले हैं। उपरोक्त आयतें मुसलमानों व पुस्तकों के प्रति विश्वासी, जो मुसलमान हो चुके हैं, उनके लिए है। जैसे:-अब्दुल्लाह बिन सलाम व हज़रत मुहम्मद व अन्य साथी। तफसीर कादरी, पारा १, पृष्ठ ४

इस आयत ने भी भलि भांति पूर्णरूपेण घोषणा कर दी है कि वह भी परहेज़ (संयम) रखने और मुक्ति पाने के अधिकारी हैं। इनकी परिभाषा यह है कि (१) यह परोक्ष वस्तुओं पर ईमान लाते (२) नमाज पढ़ते (३) अपना धन खुदा की राह में व्यय करते ४ कुरआन और कुरआन से पूर्व उतारी गई पुस्तकों :- तौरेत ज़बूर और इन्जीलों पर विश्वास करते (५) और न्याय

दिवस(कयामत)पर विश्वास करते हैं। केवल यह उपरोक्त कार्य ही आवश्यक है। इनमें चोरी-झूठ-व्यभिचार-शोषण-छल कपट एवं लूटमार-अपहरण इत्यादि को त्यागना एवं सद्गुणों को ग्रहण करने हेतु कोई निर्देश या वर्णन नहीं है। आप यह कह सकते हैं कि कुरआन पर विश्वास कर लेने से सब कुछ आ गया। इसका प्रत्युत्तर यह है कि जब सभी कुछ आ गया तो फिर उपरोक्त वर्णित व निर्देशित गुणों का भी समावेश हो गया ? पुनः-पुनः इनका ही लेखन एवं वर्णन करना व अन्य विषयों की उपेक्षा करने मात्र से ही निश्चय भ्रमोत्पादन होता है कि कतिपय गुणों की खुदा को अपेक्षा है और अन्यान्य गुणों की उपेक्षा ? शेष रहा कि पूर्व में उतरी या उतारी गई पुस्तकों का विश्वास, तो हजरत मुहम्मद जहां स्वयं इन पुस्तकों के गुणगान करते जा रहे हैं। वही दुसरी ओर कुरआन में यह भी घोषणा करते जाते हैं कि इन पुस्तकों में परिवर्तन हो चुका है। अतः इनको मानने वाले सम्प्रदाय नर्क के अधिकारी हैं। इनकी मुक्ति केवल इस्लाम में विश्वास लाने से ही हो सकती है। आयतों का अपने उतरने का विशेष उद्देश्य है। प्रत्येक आयत किसी लक्ष्य को सन्मुख रख कर उतरी या उतारी गई है। यथाः- अभी पुस्तक (कुरआन) पूर्ण ही नहीं हुई कि पुस्तक के मध्य में ही कहना प्रारम्भ कर दिया कि इस पुस्तक (कुरआन) में सन्देह (शंका) नहीं। यह बात लेखक ने स्वयं लिखी है ? इसमें कोई शंका या मतभेद नहीं। यदि कोई अन्यान्य उक्त बातें लिखता या कुरआन में समाहित करता तो महत्व हो सकता था। यदि हजरत मुहम्मद इसे स्वयं खुदा की वाणी मानते थें, तो केवल इतना ही लिखना पर्याप्त था कि यह खुदा (ईश्वर) की वाणी है तथा खुदा की वाणी में शंका का प्रश्न ही नहीं उठता ? स्वयं की बात लिखना व कहना तो मात्र यही चरितार्थ करता है कि "चोर की दाढ़ी में तिनका" ?

यह लिखना कि यह केवल परहेज़गारों का ही पथ-प्रदर्शण करती हैं। इस पुस्तक (कुरआन) को सार्वभौमिकता से बहिष्कृत करता है। अल्लाह (ईश्वर) ने सम्पूर्ण संसार का स्वयं सृजन किया है। फिर उसे एक विशेष सम्प्रदाय का हितैषी व अन्यान्यों का अहितैषी मानना अल्लाह (भगवान) को दोषी सिद्ध करना मात्र है। वह पुस्तक जो दिग्भ्रमित व पथभ्रष्ट लोगों का समान दृष्टि से हित चिन्तन नहीं करती है, वह निरर्थक व अन्यथा ही प्रमाणित होती है। किसी एक विषय पर एक ही समुदाय के हितार्थ लिखी गई कोई पुस्तक सार्वभौमिक या खुदाई (ईश्वरीय) नहीं कही जा सकती है। गणित एक विषय है, जिस पर लिखना आवश्यक है किन्तु गणित के कारण अन्य विषयों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। ठीक इसी भांति कुरआन ने हजरत मुहम्मद के हितार्थ एक मज़हबी अनुगामियों का समुदाय उत्पन्न किया और उसे संगठित व्यापक रूप देने हेतु शब्द व्यूहों अंध-विश्वास-धमकीपूर्ण उपदेशों-भ्रमोत्पादक सिद्धान्तों-जन्नत का लोभ और नर्क का आतंक इत्यादि के ताने-बानों से युक्त एक सियासती शामियाना खड़ा कर दिया। जिसमें इस्लाम नाम से संसार में एक नये सम्प्रदाय-समुदाय व सत्ता की उत्पत्ति हो गई। परन्तु समुदाय और सत्ता का सृजन मात्र ही सत्य की कसौटी नहीं। समुदाय व सत्ता तो प्रायः क्रूर-अत्याचारी-निरंकुश-हिंसक युद्धलोलुप और अराजकतावादी लोग भी प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु सन्मार्ग और धार्मिक रूप से यही सब कुछ सिद्धान्त खुदाई (ईश्वरीय) मान लेने से मनुष्यता की सुरक्षा की ग्यारंटी भूमि पर से सदैव के लिए समाप्त हो जाएगी। अतः-इस्लाम धर्म के कार्यों व उसके एकांगी सिद्धान्तों का निरीक्षण-परीक्षण व शल्य-क्रिया प्रत्येक विवेकी एवं मानवतावादी मनुष्य मात्र के लिए परमावश्यक है।

इस्लाम का यह दावा है कि कुरआन केवल परहेजगारों (संयमियों के लिए परीक्षणीय है। किस प्रकार की परहेज़गारी? किस बात की परहेज़गारी ? यदि दुसरों पर आक्रमण करना। दुसरों के धन-धान्य और जीवन को लूटना व नष्ट करना। दुसरों की धर्म-मर्यादाएं भंग करना। दुसरों पर मिथ्या दोष आरोपित कर उनकी निर्बलता से लाभान्वित होकर अपना वर्चस्व स्थापित करना परहेज़गारी (संयमता) है, तो फिर अपराधपूर्ण जीवन की परिभाषा और मीमांशा क्या और कैसे की जा सकेगी ? शेष रहा परोक्ष (गैब) वस्तुओं पर बिना समुचित चिन्तन व मनन के मात्र विश्वास (ईमान) ले आना। यह तो मनुष्य जाति मात्र को अंध-विश्वास की भयंकर शृंखला में जकड़ना ही है, क्योंकि ऐसी बातें, जिनमें तर्क–विज्ञान–प्रकाश–परीक्षण और आत्मचिन्तन-मनन व अध्ययन का सर्वथा अभाव होता है, किसी भी कहने वाले की वाणी पर विश्वास कर चलना ही होता है। यह तो मनुष्य के विवेक को मिथ्या अंधविश्वासों के मायावी चक्रव्युह में फांस कर उसके जीवन को बौद्धिक दासता के अधीन कैद मात्र है। जिसमें दण्डनीय मनुष्य फिर कभी मुक्त हो ही नहीं सकता। स्वयं इस्लाम के अनेकानेक सम्प्रदाय अनेकानेक विभिन्न प्रकार के घोर अंधकारयुक्त विश्वासों व मान्यताओं में फंसे हुए हैं और वह परस्पर घोर विरोधी हैं। उनमें भी इस्लाम के अन्तर्गत मतैक्य नहीं हैं, तो फिर उन इस्लामिक सम्प्रदायों में कौन सम्प्रदाय परहेज़गार है और कौन सा नहीं ? इसका निर्णय किस कसौटी व तुला के आधार पर हो सकता है ? क्या है ऐसी कोई सम्भावना ? अतः इन आयतों की कोई उपयोगिता व संगति नहीं लगती। आगे आयत है:-इन्नल्लजीना कफरू सवाउन अलैहिम आ अन्जर्तहुम अम लम तुन्जिरहुम ला यौमिनून।

कुरआन पारा १ रकू १

आजमुत्तफासीर में इस आयत के उतरने के विषय में है कि:- यह और इससे अगली आयत उन काफिरों व मुशरिकों के लिए है, जिन्हें अल्लाह ने अपने अनादि ज्ञान से जान लिया था, कि उनकी मृत्यु कुफ्र पर होगी। जैसे—अ-बूजहल, वलीद बिन मुगीरा और वह भाग्यहीन जो बदर के युद्ध में मारे गए।

मोहक्केकीन (सत्यानुवेषी) फरमाते हैं कि इससे प्रतिष्ठित यहूदियों से तात्पर्य है। लगभग यही मत इब्ने अब्बास का भी है।

आजमुत्तफासीर भाग १, पृष्ठ ८१

इब्ने कसीर पृष्ठ ५७ में अबू आलिया का कथन है:- यह एहज़ाब के युद्ध के सरदारों से सम्बन्धित हैं। तफसीर मुआलिम पृष्ठ १४ पर है:- अरब के मुशरिक और कल्बी का कथन है कि यहूद। तफसीर मज़हरी पृष्ठ ३५ पर लिखा है कि इस (उक्त) आयत की पठन-शैली में भी मतभेद है।

काफ़िर कौन ?

शब्द कोष में कुफ्र सतरश्शैइन अर्थात एक वस्तु को ढांकने का नाम है। रात को काफ़िर कहा जाता है और किसान को भी काफिर कहा जाता है, इसलिए कि वह बीज भूमि में छिपा देता है और अहसानफरामोश को भी काफिर कहा जाता है।

उपरोक्त अर्थ ही आजमुत्तफासीर ने पृष्ठ ७९ पर लिखा है।

शरीअत में काफ़िर

शरीअत में कुफ़र हमारे नबी (हजरत मुहम्मद) करीम को न मानना। तफसीर बयानुल्कुरआन पारा १ पृष्ठ २२

और ऐसा ही आजमुत्तफासीर पृष्ठ ७९ पर भी लिखा है। तफसीर हक्कानी ने इस विषय को एक आयत से स्पष्ट किया है।

आयत इस प्रकार है:-

व लक़द ज़राना लेजहन्नमा कसीरम्मिनल जिन्ने वल इन्सेलहुम कुलुबुल्ला यफ्क़हूना बेहा व लहुम आ्ानुल्ला युब्सेरूना बेहा व लहुम आज़ानुल्ला यस्मऊना बेहा उलाएका कल्अन्आमे बल्हुम अज़ल्लो उलाएका हुमुल्गाफ़ेलून।

कुरआन पारा ९, रकू २२।१२

अल्लाह फरमाता है कि हमनें बहुत से जिन्न और मनुष्य नर्क के लिये उत्पन्न किये हैं। उन्हें दिल मिले हैं, परन्तु समझते नहीं। उन्हें आँखे दी गई, परन्तु देख नहीं सकते। कान दिये गये हैं, पर सुन नहीं सकते। वह लोग पशु सदृश्य हैं, अपितु पशुओं से भी पथभ्रष्ट तथा अचेतन हैं।

इससे स्पष्ट हो गया कि काफिरों को नर्क हेतु ही बनाया गया है। इसलिए वह मन-आंखे व कान आदि रखते हुए भी उनसे किञ्चित भी लाभ नहीं उठा सकते। क्योंकि उनको नर्क हेतु ही उत्पन्न किया गया हैं। तफसीर हक्कानी भाग १ पृ. २८

शाह अब्दुल कादिर ने उक्त आयत का अर्थ लिखा है :-

निसन्देह जो लोग काफिर हुए हैं, समान है उनके लिए कि क्या डराया तूने उनको और क्या न डराया तूने उनको। वे ईमान नहीं लायेंगे।

ईमान क्यों नहीं लायेंगे ? इसका कारण अगली आयत है :-

खतमल्लाहो अला कुलूबेहिम व अला सम्एहि म व अला अबसारेहिम गिशावतुन वल्हुम अज़ाबुन अजीम।

कुरआन पारा १, रकू १, आयत ८

अर्थः-मुहर की अल्लाह ने उनके दिलों और कानों पर तथा उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके लिए बड़ा संकट है।

आजमुत्ताफासीर पृ. ८२

आयत में **कुलूब** व **अबसार** बहुवचन तथा **समआ** एकवचन आया है। इसे सुधारने की दृष्टि से भाष्यकारों ने विभिन्न अटकलें की हैं। क्योंकि आयत के प्रारम्भ और अंत मे बहुवचन तथा मध्य में एकवचन का प्रयुक्त कैसे संगत होगा ? कतिपय व्याख्याकारों ने **समआ** को **मस्दर** (धातु) कह कर टाला है। यदि यह होता तो सभी का मतैक्य हो जाता किन्तु सभी ने यह नहीं माना। कुछ **कारी** (पाठ करने वाले) **समआ** के स्थान **अस्मआ** बहुवचन भी पढ़ते हैं।

तफसीर आजमुत्तफासीर के लेखक ने कुरआन के अद्भुत व्याख्याकार अल्लामा फ़ैजी जिन्होंने सम्पूर्ण कुरआन की व्याख्या ऐसे शब्दों में की है, जो कि बिना नुक्ते (शून्य का चिन्ह) के हैं। उसका अर्थ आजमुत्तफासीर में इस प्रकार है:- मुहर कर दी अल्लाह ने उनके दिलों पर अर्थात् उन्हें बन्द कर दिया और खूब मज़बूत कर के डाट लगा दी, कि नेक अमल करने के काबिल न रहे और अला शब्द को ताकीद के लिये दुबारा लाये हैं। **समआ** का शब्द असल की रियायत्त के कारण एकवचन लाया गया है क्योंकि वास्तव में वह धातु है। कुछ व्याख्याकारों ने उसकी व्याख्या की है कि **समआ** से सुनने की शक्ति अभिप्रेत **है,** और कुछ कुरआन पाठकों ने समआ (एकवचन) के स्थान पर अस्मआ (बहुवचन) भी पढ़ा है। उनकी आंखों पर पर्दा है। अर्थात् उनको अधकार के समूह ने चारों ओर से घेर लिया है। अभिप्राय यह कि उनकी ज्ञानेन्द्रियों और हृदय को सर्वथा निष्क्रय कर दिया। जिसके कारण न तो वह इस्लाम के रहस्य ज्ञात कर सकते हैं। न खुदा की आज्ञाओं को सुन ही सकते हैं। न भले लोगों का मार्ग ही देख सकते हैं। उनके लिये अत्यन्त घोर संकट है, जो कि सदैव रहेगा। तफसीर आज़मुत्तफासीर पृष्ठ ८

उपरोक्तानुसार ही तफसीर जलालैन पृष्ठ ४-५ पर भी लिखा है। साथ ही यह भी लिखा कि:- यह काफ़िर अभी ज़हल व अबीलाभ और ऐसे ही अन्य लोग भी हैं।

खतमल्लाहो का अर्थ करते हुए तफसीर मज़हरी ने लिखा है:-उनके दिलों पर ख़ुदा ने मुहर लगा दी है। अतः वह अच्छी व उत्तम बातों को याद नहीं रख सकते। .. ....ज्ञातव्य है कि अल्लाह समग्र वस्तुओं का उत्पादक है, चाहे वह गुण हों या द्रव्य...........खुदा यदि चाहे तो कोई भी वस्तु उत्पन्न न करें और ज्ञान व कर्मेन्द्रियों को निष्क्रिय व अन्तःकरण को विचलित कर दे।..........इसीलिए हज़रत मुहम्मद ने फरमाया कि:- **इन्ना कुलूबा बनी आदमा कुल्लाहा बैना इस्बएने मिन असाबेइर्रहमाने क कल्बिन वाहेद्दिन योसरिफोहू कैफा यशाओ।** यह हदीस मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर से उद्धृत की है। अर्थात :- समस्त मनुष्य के हृदय खुदा की दो अंगुलियों में इस प्रकार स्थित है, जैसे कि एक हृदय। वह हृदय को चाहे जिस ओर चाहे उस ओर पलट देता है। तात्पर्य यह है कि अल्लाह को काफिरों के दिलों को पवित्र करना स्वीकार नहीं था। इसलिए उन्हें आयतों में ध्यान देने और सृष्टि नियमों में गौर करने से रोक दिया। यद्यपि उन्होंने सृष्टि के चिन्हों और चमत्कारों को भी देखा किन्तु उनके हृदय में ईमान व विश्वास के प्रभाव को स्वीकारनें की योग्यता पैदा न हुई। तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ ३६

आगे लिखा है:- उनके कानों पर भी मुहर लगा दी है। **समआ** शब्द यद्यपि एकवचन है किन्तु बहुवचन के अर्थ में आया है। जैसे—**अला असमाएहिम** (बहुवचन के अर्थ में माना गया) **समआ** वास्तव में धातु (मस्दर) है, किन्तु धातु बहुवचन के रूप में

प्रयुक्त नहीं होता। इसलिए यहां समआ शब्द एकवचन के रूप में प्रयुक्त किया गया।

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ ३७

मोमिन व काफ़िर के भाग्य निर्णय

हक़ानी लिखते हैं:- इस प्रकट संसार में हजारों वर्षों पूर्व ख़ुदा की एक ज्योति आलोकित हुई। जिसमें संसार के समस्त बुद्धिजीवी अल्लाह के शासन में अपनी योग्यतानुसार लाभान्वित हुए। प्रारम्भिक काल में प्रत्येक को जिस वस्तु का जो भी अधिकारी दिखाई दिया। उस स्थान पर हज़रत आदम से उत्पन्न हुई सारी सन्तान चीटियों की भांति निकल पड़ी और ख़ुदा की ज्योति का प्रकाश प्रत्येक प्राणी पर आलोकित हुआ। अतः जिस प्राणी में अल्लाह की दी हुई शक्ति के कारण रच मात्र भी शुद्धता थी, उन पर वह प्रकाश पड़ा और चमका और जिसकी असल (जड़) में कुटिलता थी, उन पर वह प्रकाश नहीं पड़ा। जिस प्रकार वर्तमान संसार में सूर्योदय होने पर शुद्ध वस्तुएं जगमगाती हैं और मैली वस्तुओं में चमक नही आती। वहां प्रत्येक प्राणी ने ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार किया। जिन पर प्रकाश पड़ा वह लोग संसार में भाग्यवान और सदाचारी कहलाए और जिन पर नहीं पड़ा वह दुर्भाग्य के अंधकार में इस संसार में आए और काफ़िर व मुनाफ़िक़ कहलाये। अतः कुरआन वस्तुओं की वास्तविकता को परिवर्तित नहीं कर सकता। इसीलिए ख़ुदा ने धैर्य देने हेतु हज़रत मुहम्मद से फरमाया:- कि हमारे कुरआन व आपके कथन में कोई दोष नहीं, क्योंकि जो प्रारम्भ से मन्दभागी है, उनके भाग्य में भलाई नहीं।

तफसीर हक्कानी भाग १ पृष्ठ २७

मौलाना हक्कानी के उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि कुरआन और हज़रत मुहम्मद दोनों ही काफिरों को सन्मार्ग पर

नहीं ला सकते। जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं कि किसी को काफिर व मौमिन बनाना खुदा का कार्य है। जिसको अल्लाह काफिर बनाता है,उसको सन्मार्ग पर कोई भी नहीं ला सकता है।

प्रश्न यह है कि जिन प्राणियों पर खुदा की ज्योति का प्रकाश नहीं पड़ा, वह काफिर हैं ? अब, जब कि वह खुदा की ज्योति से आलोकित ही नहीं हुए तो फिर उनके दिलों पर मुहरें लगावे, कानों में डाट डालने व आंखों पर पर्दा डालने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी ? वह इसके बिना भी काफ़िर बने रह सकते थे। जैसा कि अल्लाह चाहता है। खुदा को फिर यह शंका क्यों हुई कि कहीं यह सन्मार्ग न ग्रहण कर लें ? संसार का कोई भी विवेकशील विचारक मानव-सन्तति के साथ किये जा रहे खुदा के इस व्यवहार से खुदा के प्रति आस्थावान नहीं रह सकता। यही कारण है कि संसार का बुद्धिजीवी वर्ग ऐसे खुदा का घोर विरोधी है। इसीलिए किसी कवि ने कहा है:-

इन्हीं बातों को देखकर, खुदा से मुन्किर हुई है दुनिया
जिस खुदा के हैं काम ऐसे, कोई वह सच्चा खुदा नहीं है।

अल्लाह ने स्वयं प्राणियों को उत्पन्न किया और स्वयं ने ही उन्हें विनाश के मार्ग की ओर अग्रेसित किया तथा रक्तिम नदियों को बहाने के उपाय भी किये। भला ऐसे में मनुष्य किधर जायें और क्या करें ?

यदि नर्क को मनुष्यों से भरना ही एकमेव लक्ष्य है ? जैसा कि कहा है:-**'ल अमलअन्ना जहन्नमा'** हम नर्क को भरेंगे, तो ऐसे नर्क की आवश्यकता ही क्या थी ? क्या इसके अभाव में खुदा की खुदाई अपूर्ण रह जाती ? खुदा रूहों (आत्माओं) को सुख

शांति व सन्मार्ग पर बसने-बसाने हेतु भी उत्पन्न कर सकता था? क्या वह कादिरे मुतलक (सर्व शक्तिमान) नहीं है ? यदि सुख शान्ति और स्नेह से मनुष्य धरती पर बसते, तो इसमें खुदा की कोई हानि थी ? इस उक्त चर्चा का एक महत्वपूर्ण अंग यह भी है कि कुरआन कहता है कि काफ़िर, मुसलमान नहीं बन सकते? तो बताया जाये कि इस्लाम के पूर्व व प्रादुर्भाव के समय तथा उसके पश्चात भी संसार के करोड़ों लोग जो मुसलमान बने, वह मुसलमान बननें से पूर्व कौन और क्या थे ? क्या कुरआन उन्हें काफ़िर नहीं कहता ? क्या वह काफ़िर नहीं माने जायेंगे ? वास्तव में इस्लामी धर्म-ग्रंथ पुकार-पुकार कर उन्हें काफिर ही कहते है। वह फिर कहीं भय से, कहीं बहकाने से, कहीं दिल से कुफ्र को छोड़कर ही इस्लाम में प्रविष्ट हुए और इस प्रकार मुसलमान बनने वाले लोगों के लिए ही वह जन्नत (स्वर्ग) का प्रलोभन दिया गया। जिसके हेतु हज़रते ग़ालिब कहते हैं :—

खूब मालूम हे जन्नत की हकीकत लेकिन–

दिल के बहलाने को ग़ालिब, यह ख़याल अच्छा है।

आश्चर्य है कि इतने महान धार्मिक धोखे को कितनी बड़ी होशियारी से सृजन कर समस्त संसार को भ्रमित कर दिया गया और मनुष्य-मनुष्य के मध्य भयंकर रक्तपात की बुनियादी स्थिति निर्मित कर दी गई।

कुरआन का लेखक अपनी स्वयं की इस कमजोरी को भलिभांति जानता था । इसीलिए एक स्थान पर उसनें स्वयं अपनी स्थिति स्पष्ट करने में भी अत्याधिक सावधानी से काम किया है। कुरआन में आयत है :—

वा कुलिलहक्को मिर्रब्बेकुम, फमनशाआ फलयोमिन वा मनशाआ फल्यक्फूर इन्ना आतदना लिज्जालिमीना नारन।

कुरआन पारा १५, रकू ४/१६

अर्थः—ऐ रसूल ! कह दो कि यही सच्चा धर्म है, तुम्हारे पालन-कर्ता की ओर से आया है। सो जिसका जी चाहे, ईमान ले आये और जिसका जी चाहे काफ़िर रहे। निसन्देह हमने ऐसे अत्या-चारियों के हेतु नर्क की अग्नि तैयार कर रखी है।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १५, पृष्ठ ६६.

उक्त आयत की व्याख्या तफसीर मजहरी में है किः—

सत्यता वह है, जिसे अल्लाह नें सत्य कहा है। मानसिक इच्छाएं सत्य नहीं है । या यह अर्थ है कि यह कुरआन व इस्लाम ही सत्य है, जो अल्लाह की ओर से आया है । अब जो चाहे वह ईमान लाये और जो काफिर रहना चाहे वह काफ़िर रहे.........अर्थात ईमान और कुफ्र दोनों अधिकार दिये गये हैं।

तफसीर मजहरी, पारा १५, पृ. २१६

सूरत्तीन पारा ३० में भी मनुष्यों के विचार स्वातन्त्र्य का अधि-कार स्वीकार किया गया है।

पाठकवृन्द ! पूर्वोक्त आयतों से इस उक्त आयत के आदेश पर विचार करें तो एक से दुसरी आयत की आपस में कोई सम्पृक्ति नहीं प्रतीत होती है । पूर्वोक्त आदेश सत्य है या इस आयत का ? कोई भी सरल हृदय मनुष्य या जन साधारण मज-हब की इस भूलभुलैया में भटक कर ही रह जायेगा। इसके अति-रिक्त अन्य कोई मार्ग ही नहीं है । क्योंकि पूर्व आयतों में बड़े

दावे के साथ स्वीकारा गया कि मौमिन और काफिर उत्पन्न करना केवल खुदा का ही कार्य है और जिस मनुष्य को अल्लाह ने काफिर बना दिया, उसे कोई भी मौमिन नहीं बना सकता। जब कि इस आयत में स्पष्ट है कि जो भी मनुष्य चाहे, वह मौमिन या काफिर बने। यह उसके विचार स्वातन्त्र्य की वस्तु है। स्पष्ट है कि इस आयत ने पूर्व की समस्त आयतों को प्रभावहीन और निरर्थक बना दिया है। क्या ऐसा विरोधाभास और मतभेद ईश्वरीय वाणी में सम्भव है ?

अगली आयत :—

व मिनन्नासे मंय्यकूलो आमन्ना बिल्लाहे वा बिलयोमिल आखेरे व माहुम बेमोमिनीन् । कुरआन पारा १, आयत ६

अर्थः—और उन लोगों में कतिपय ऐसे लोग भी हैं, जो कहते हैं कि हम अल्लाह और कयामत पर विश्वास लाये। जब कि वास्तव में वह ईमान वाले नहीं।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १, पृष्ठ ५६

कुरआन की सर्व प्रथम आयतें ईमानदारों हेतु थी और इसके पूर्व की आयतें काफिरों के लिये हैं और यह आयत मुनाफिकों (कथनी और करनी में भेद वालों) के लिये है। मुआलिम ने कहा है:— **वन्नासो जमा इन्सान सुम्मेया बेही लेअन्नहू अहेदा अलैहे फनसेया।**

नासः- इन्सान का बहुवचन हैं। इन्सान, नाम इसलिए रखा गया है कि वह अपनी प्रतिज्ञा को भूल गया।

तफसीर मुआलिम, पृष्ठ १५

आजमुत्ताफासीर में इब्ने अब्बास कहते हैं–यह निसियान से निर्मित है, इसका मूल नसैया है। इसका नाम इन्सान रखने का यह कारण है, कि यह खुदा के साथ की गई प्रारम्भिक प्रतिज्ञा को भूल गया। इसी पर एक कवि ने कहा है:–'सम्मेता इन्सानन ले अन्नका नासी' तेरा नाम इसलिए इन्सान रखा गया कि तू अपनी प्रतिज्ञा को भूल गया।...........कतिपय कहते है:- इन्सान उन्सीयत और इस्तीनास से निकला है। इन्सान एक जाति होने से प्रेम और मुहब्बत का अंश इसमें आरोपित कर दिया गया है। इसलिए इसे इन्सान कहते हैं।

तफसीर आजमुत्ताफासीर, पारा १ पृष्ठ ८६

आयत उतरने का कारण

मुआलिम में है कि:- नज़लत फिल मुनाफेकीना अब्दुल्ला बिन उब्बय बिन सलोल व मातब बिन कसीर व ज़द्द बिन कैस व सहाबोहुम।

अर्थात्:— यह आयत मुनाफेकीन के विषय में उतरी। जैसे अब्दुल्ला बिन उबय्य सलोल और मातव बिन कशीर और जद्द बिन कैस और उनके साथी।

तफसीर मुआलिम, पृष्ठ १५

उक्त अर्थ ही तफसीर जलालैन पृष्ठ ५ और तफसीर मज़हरी पृष्ठ ३८–३९ में भी ऐसा ही अर्थ है।

मुनाफ़िक:– यह एक ऐसा गिरोह था, जिसका वास्तव में इस्लाम से कोई सम्बन्ध न था। प्रत्यक्ष में यह मुसलमान होना स्वीकार करते थे किन्तु भीतर ही भीतर पूरी शक्ति इस्लाम की जड़े उखाड़ने में लगाते थे।

उक्त आयत में खुदा व कयामत पर विश्वास रखने वालों को मुसलमान माना गया है । नमाज़–ज़कात एवं कुरआन के पूर्व उतरी पुस्तकों की कोई चर्चा नहीं की गई । मुनाफिकों अर्थात् यह गिरोह बदर के युद्ध की स्थिति देख कर आतंक से मुसलमान हो गया था किन्तु अन्तर्मन से कट्टर शत्रुता रखता था । इस आयत के सम्बन्ध में आजमुत्तफासीर ने एक रहस्यमय उल्लेख किया है, जो कि निम्न प्रकार है:—

हज़रत मुहम्मद कतिपय मुनाफिकों से अच्छी तरह परिचित थे, किन्तु उन्हें कत्ल नहीं करते थे । कत्ल नहीं करने का कारण यह कि जिसे हदीस बुखारी व मुस्लिम में वर्णन किया गया है । हजरत मुहम्मद ने हज़रत उमर से फरमाया :– मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि लोगों में यह चर्चा हो कि मुहम्मद अपने साथियों को कत्ल कर देता है, क्योंकि जो एहराबी आसपास है,उन्हें यह तो ज्ञात न होगा कि इन मुनाफिकों को पोशीदा कुफ्र (भीतर से काफिर होने के कारण) के आधार पर कत्ल किया गया है । उनकी दृष्ठि केवल बाहरी होगी । जब उनमें यह वात विख्यात हो जायगी कि हज़रत मुहम्मद अपने साथियों को कत्ल कर देते हैं, तो इस बात का भय है कि वे मुसलमान बनने से रूक न ज़ायें । .... हज़रत ईमाम मालिक मुनाफिकों को कत्ल न करने का यही कारण बताते हैं । .... इब्ने माजसून से एक कारण यह भी उद्धृत किया गया है कि आपकी उम्मत अर्थात मुसलमानों को ज्ञात हो जाये कि हाकिम अपने ज्ञान के आधार पर निर्णय नहीं कर सकता । करतबी का कथन है कि मुस्लिम विद्वानों में समस्त विषयों में मतभेद है किन्तु इस विषय में सबका मतैक्य है कि न्यायाधीश अपनी स्वयं की जानकारी पर किसी को कत्ल नहीं कर सकता । ईमाम शाफई ने

एक और कारण भी वर्णन किया है। आपका कथन है कि हज़रत मुहम्मद का मुनाफिकों के कत्ल नहीं करने का कारण उनका अपने ईमान को अपनी जुबान से जाहिर करना था। अर्थात- वह अपने आपको मुसलमान कहते थे। यद्यपि यह ज्ञातव्य था कि वह अन्तर्मन से मुसलमान नहीं हैं। इसका समर्थन हदीस बुखारी व मुस्लिम से भी प्रस्तुत किया जा सकता है। जिसमें कहा गया है मैं लोगों से लड़ूं, जब तक कि वह कलमा (ला इलाहा इल्लल्लाहे) न पढ़ें। जब वे पढ़ लें तो उन्होंने मुझसे अपने जानों- माल को बचा लिया और उनका हिसाब अल्लाह पर है। इसका तात्पर्य यह कि कलमा पढ़ते ही इस्लाम के सिद्धांत उन पर प्रभावशील हो जायेंगे। अब यदि उनका विश्वास भी इसी प्रकार है, तो कयामत के दिन स्वर्ग प्राप्त करेंगे अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा। इब्ने कसीर, भाग १, पृष्ठ ६१

निम्नलिखित आयत भी उपरोक्त आयत से सम्पृक्त है।

आयत :—

युखादेऊनल्लाहा वल्लजीना आमनू व मा यखदऊना इल्ला अनफुसहुम व मा यशओरून। कुरआन पारा १, आयत १०

अर्थः- चालबाजी करते हैं अल्लाह से और उनसे जो ईमान ला चुके हैं। (अर्थात-चालबाजी द्वारा ईमान को प्रकट करते हैं।) वास्तव में वह किसी के साथ भी चालवाजी नहीं करते सिवाय स्वयं अपने के और वह इससे अनभिज्ञ है।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १, पृष्ठ ५

यखादेऊनः- खदा धातु से निर्मित हैं। जिसका अर्थ हैं धोखा देना अर्थात बाहर कुछ करना और दिल में दुसरी बात छुपा रखना।

बयानुलकुरआन पारा १, पृ. २५

तफसीर आजमुत्तफासीर पृष्ठ ८९ पर उपरोक्तानुसार ही खदा धातु का अर्थ किया है। यह विशेष है कि आम परिभाषा में खदा बुरी बात छुपाने और उसके स्थान पर अच्छी बात प्रकट करने को भी कहते हैं और गर्दन की दो नाड़ियों को भी कहते हैं तथा साथ ही फिसाद के हेतु भी प्रयुक्त होता है। यखदेऊन् को नाफ़ेअ और अबू उमर और इब्ने कसीर युखादेऊना पढ़ते हैं और कई कुरआन पाठक युखदेऊना भी पढ़ते हैं। इसी प्रकार का धात्विक अर्थ तफसीर इब्ने कसीर पृ. ६० पर भी किया गया है। यशओरून:- शार (बाल) धातु से निर्मित है और इसका बहु वचन अशआर होता है। किसी वस्तु को उस चरम सीमा तक प्राप्त करना कि अभिप्राय यह हो कि बाल की खाल तक पहुँच जाये और शेअ्र वास्तव में दकीक कलाम (सूक्ष्म कथन) को कहते हैं। तफसीर बयानुलकुरआन, भाग १, पृ. ३

कुरआन के लब्ध प्रतिष्ठित अनुवादक अब्दुलकादिर ने अपने अनुवाद पृष्ठ १३५ पर लिखा है कि:—युखादेऊनल्लाहा का अर्थ है मुनाफिक अल्लाह को धोखा देते हैं और अल्लाह धोखा देने वाला है उनको।

तफसीर मज़हरी पृष्ठ ३९ में लिखा है कि:- अल्लाह को धोखा देने से तात्पर्य यह कि वह हज़रत मुहम्मद को धोखा देते हैं .... या यों कहो कि मुनाफिकों द्वारा रसूल के साथ जो व्यवहार करना अर्थात खास खुदा के साथ करना हैं,क्योंकि रसूल (हज़रत मुहम्मद) धरती पर खुदा का प्रतिनिधि और आगेवान होता है।

हमारी दृष्टि में विचारणीय है कि उक्त आयत में खुदा और मुसलमानों का वर्णन है। जब कि रसूल हज़रत मुहम्मद का

किञ्चित भी उल्लेख नहीं। अन्तोत्गत्वा भाष्यकार का यह समाधान कहां तक और कैसे उचित है ? भाष्यकारों के इस कथन का स्वयं कुरआन में उल्लेख है। आयत यह है:– इन्नल मुनाफेक़ीना युखादेऊनल्लाहा व हुआ खादे ओहुम।

कुरआन पारा ५ रकू २०/१७

अर्थ:–वास्तव में मुनाफिक धोखा देते हैं अल्लाह को और अल्लाह फरेब देने वाला है उनको। कुरआन, पृष्ठ १३५.
इसी प्रकार का अर्थ मलिक दीन मुहम्मद वाले कुरआन पृष्ठ १३६ पर भी है।

तफसीर आजमुत्तफासीर ने तफसीर फ़ैजी से उद्धृत किया है : अर्थात मुनाफिक अपनी धोखाधड़ी के कारण अपने विचारानुसार खुदा या रसूल और ईमान वाले लोगों को, जो अल्लाह के आज्ञाकारी हैं, को धोखा देते हैं। फ़रेब का वास्तविक अर्थ यह है कि व्यक्ति बुरी बात को छुपा कर उसके विपरीत प्रदर्शन करे। तात्पर्य यह कि मुनाफिकों का खुदा के साथ यह व्यवहार कि इस्लाम को जुबान से प्रकट करते और कुफ्र को दिल में छुपाते हैं। अल्लाह का उनके साथ यह व्यवहार कि मुनाफिक यथार्थ में उसके ज्ञान में नर्कगामी हैं। इस पर भी मुसलमानों के एहकाम (विशेषाधिकार) प्रभावित कर दिये।

तफसीर आजमुत्तफासीर पृष्ठ ९१-९२

अगली आयत है:–

फी कुलूबेहिममरजुन फज़ादाहोमुल्लाहो मरज़ा व लहुम अज़ाबुन अलीमुम्बेमा कानू यक्ज़ेबून।

कुरआन पारा १, आयत ११

अर्थः—उनके दिलों में भयंकर रोग है, सो अल्लाह ने उनके रोग में अत्याधिक वृद्धि कर दी है और उनके लिये बड़े कठोर दण्ड हैं, क्योंकि वह झूठ बोला करते थे। इब्ने कसीर, पृ. ६० कुरआन के प्रारंभिक कतिपय पाठक यक्ज़िबूना को योकज़्ज़िबूना भी पढ़ते हैं।

इब्ने कसीर, पृष्ठ ६१

कुरआन में एक आयत यह भी है:-

व अम्मल्लजीना फी कुलूबेहीम मरज़ुन फ़ज़ादतोहुम रिज्सन इला रिज्सेहिम। कुरआन पारा ११, रकू १६.१

अर्थः– जिन लोगों के दिलों में रोग है। अल्लाह उनकी गन्दगी पर और गन्दगी बढ़ा देता है।

कुरआन पारा ११ पृष्ठ २७८

कुरआन मलिक दीनमुहम्मद पृष्ठ २८१-८२

हम पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि प्रत्येक नगर मे हकीम–वैद्य और डाक्टर होते हैं। उनके प्रयास यह होते हैं कि ऐसी औषधियों का प्रयोग किया जाये कि रोगी, रोग से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हो, वह इसे अपना कर्तव्त और धर्म मानते हैं। कतिपय वैद्य-हकीम और डाक्टर इसके अपवाद भी होते हैं कि आर्थिक लोभ से वशीभूत हो वह रोग को लम्बा कर देते हैं, किन्तु ऐसा कोई नहीं होता कि साधारण ज्वर के रोगी को ऐसी औषधि दे कि उसका ज्वर क्षय का रूप ग्रहण कर ले। ऐसा हकीम–वैद्य और डाक्टर या कुछ भी समझिये, केवल कुरआन ए करीम में ही दिखाई दिया कि ज्वर के रोगी को भयंकर क्षय में परिवर्तित कर दे। इसका यही उपचार और औषधि है। आश्चर्य यह है कि रोगी उसके पास उपचार हेतु आना चाहे या न चाहे वह तो प्रत्येक रोगी पर अपना प्रयोग कर ही देता है।

ऐसी ही निकृष्ट और अगुणकारी औषधि के माध्यम से कुरआन का खुदा करोड़ों लोगों को रोगी बना कर नर्कगामी बनाता है, और सर्वाधिक आश्चर्य की बात यह है कि रोग भी उसी की कृपा है। कुरआन स्वयं कहता है:-

लो शा अल्लाहो जअलाकुम उम्मतंव्वाहिदतांम् व लाकियुज़िल्लो मंय्युशाओ व यहदी मंय्युशाओ ।

कुरआन पारा १४ रकू १३/१६

अर्थः- यदि अल्लाह चाहता तो तुमको अवश्य ही एक समुदाय के रूप में बना देता किन्तु वह जिसको चाहे पथभ्रष्ट कर देता है, और जिसको चाहता है, उसका मार्ग दर्शन करता है।

कुरआन, पारा १४ पृष्ठ ३७६

बारम्बार कुरआन द्वारा उक्त प्रकार की घोषणा यह सिद्ध करती है कि लोगों की पथ-भ्रष्टता और दिग्भ्रमित होने में कारण अल्लाह ही एकमेव निमित्त मात्र है। अर्थातः-मुआविया व हज़रत अली में वैमनस्यता, विष द्वारा हसन की मृत्यु और हुसेन की निर्मम हत्या तथा सम्प्रदाय शिया व सुन्नी में परस्पर मतभेद तथा विरोधाभास और बैर स्वयं अल्लाह ताला की ही देन व कृपाफल है। उक्त दोष-निवारण हेतु वर्तमान काल में आधुनिक लेखकों द्वारा अनेकानेक पुस्तकों की रचना कर जन साधारण को इस विषय से दिग्भ्रमित किया जा रहा है। हमने भी अनेक हिन्दी पुस्तकों का अवलोकन किया है। जिनमें एक पुस्तक श्री अतीकएहमद कामिल का अनुवाद है। जिसमें अल्लाह का सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, अव्यक्त, सर्वव्यापक और विभिन्न विशेषणों व अलंकारो से विभूषित कर उल्लेखित किया है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक भ्रामक बातें लिखी हैं। कुर-

आन के सम्बन्ध में लोगों को बहकाने व मूल वस्तु से दिग्भ्रमित करने हेतु कुरआन के विभिन्न हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किये जा रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं को विशेष रूप से धोखे में डाला जा सके। ऐसी स्थिति वास्तविकता का यथार्थ ज्ञान होना परमावश्यक है। जैसे कुरआन की यह निम्न आयत है:-

वा यफ़अलुल्लाहो मा यशाओ

कुरआन पारा १३, रकू ४/१६

उक्त आयत की व्याख्या में तफसीर मज़हरी का कथन है कि:- उल्लाह जो कुछ चाहता है, करता है। किसी को ईमान की सामर्थ्य देता है, और किसी को ईमान की सामर्थ्य से वंचित रखता है।.... ....उस पर कोई आक्षेप नहीं किया जा सकता। हज़रत अबू दरदा का कथन है कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया कि अल्लाह ने आदम को उत्पन्न किया। उत्पन्न करने के पश्चात उनके दाहिने कंधें पर हाथ मारा और उनकी गौरी सन्तान बाहर आ गई। अर्थात्—वह चींटियों के समान थी। और बांये कंधे पर हाथ मारा तो कोयले जैसे रंगवाली सन्तान बाहर आ गई। तब फरमाया कि दाहिने ओर वाली सन्तान स्वर्गगामी है, मुझे परवाह नहीं और जो सन्तान बांए कंधे वाली थी, उसके हेतु कहा कि यह नर्कगामी है, और मुझे परवाह नहीं। हज़रत उबय्य बिन काब का कथन है कि हजरत ने फरमाया कि यदि अल्लाह समस्त भूमि और आसमान वालों को अज़ाब (पीड़ा) दे, तो वह अज़ाब दे सकता है, और ज़ालिम (अत्याचारी) नहीं होगा।

तफसीर मज़हरी, पारा १३, पृ. ३०५-६

यह है इस्लाम की मान्यता अपने अल्लाह के विषय में कि वह जिसे चाहे जितनी पीड़ा (अज़ाब) दे, न तो उसे कोई

रोकेगा हां और न कोई उसे ज़ालिम (अत्याचारी) ही कह सकता है। इससे पूर्वोक्त आयत में हज़रत मुहम्मद को डांटा गया था कि तू क्या लोगों को जबर्दस्ती मुसलमान बनाना चाहता है ? क्योंकि अल्लाह की सामर्थ्य और इच्छा के बिना कोई मुसलमान नहीं हो सकता और खुदा काफ़िरों को मुसलमान नहीं बनाना चाहता। इस पर भी अल्लाह के नाम पर अत्याचार करने हेतु कुरआन में कैसी निर्मम आज्ञाएं प्रसारित की, उसका उदाहरण निम्न आयत है :-

फयेज़न्सलख़ल अश्होरूल्हुरोमो फ़क्तोलूल्मुशरेकीना हैसो व ज़त्तमूहुम व ख़ुज़ूहुम व ह सरूहुम वक्ओदूलहुम कुल्ला मर्संदिन फ़ईनताबू व अकामुस्सलाता व आतुज़ज़काता फख़ल्लू सबीलहुम।

कुरआन पारा १०, रकू १/७

अर्थ:-जब हराम (हुरमत-प्रतिष्ठा) के महिने बीत जाएं। इन चार महिनों के पश्चात (जिनमें युद्ध वर्जित है) मुशरिकों से युद्ध करो और जहां भी पाओ बन्दी बनाओ............ उनके किलों को घेरो, हर घाटी में उनकी ताक में रहो, उनको अपनी ज़द (पकड़) में लाकर मारो। अर्थात् यही नहीं, मिल जाएं तो झड़प हो जाएं, अपितु स्वयं आक्रमण करो, उनके मार्ग अवरूद्ध कर दो, और उन्हें विवस कर दो कि इस्लाम ग्रहण करें या युद्ध करें। और इसीलिए फरमाया कि यदि वह तोबा (पश्चाताप) कर लें, नमाज के प्रति दृढ़ हों और ज़कात (अनिवार्य दान) देने लगे तो निसंकोच उनके मार्ग खोल दो। उन पर से तंगियां (रूकावटें) उठालो.....................सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में है कि:- रसूललिल्लाह (हज़रत मुहम्मद) फरमाते हैं कि मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से जहाद (युद्ध जारी (प्रारम्भ) रखूं। जब तक वो यह साक्षी न दे कि खुदा के अतिरिक्त कोई

और पूज्यनीय नहीं और मुहम्मद अल्लाह का रसूल (दूत) है। नमाज़ों को पढ़े और ज़कात दे ।

इब्ने कसीर, पारा १०, पृष्ठ ३३

पाठक बन्धुओं ! हम अपने क्रमबद्ध मूल विषय से किञ्चित परे हो गये थे और एक ज़हाद की आयत साक्षी रूप में क्रम के मध्य में आ उपस्थित हुई, सो उसकी चर्चा भी अनिवार्य रूप से करना पडी । अब हम पुन: अपने मूल विषय से तारतम्य स्थापित करते हुए कुरआन की निम्न आयत प्रस्तुत करते हैं ।

आयत :– व मंय्युजल्लेलित्लाहो फमालहू मिन हाद व मंय्यहदिल्लाहो फ़मा लहू मिम्मुजिल्ल ।

कुरआन पारा २४ रकू ४/१

अर्थ:–अल्लाह जिसे पथभ्रष्ट करे, कोई उसका पथ–प्रदर्शन नहीं कर सकता और अल्लाह जिसका पथ प्रदर्शन करें, कोई उसे पथभ्रष्ट नहीं कर सकता ।

कुरआन, पारा २४, पृ. ६४४

ऐसी ही एक और आयत:—

व मंय्यहदिल्लाहो फहुवल्मुहतद् व मय्युज्लिल फलन तजेदा लहू औलेया आ मिन दूनेही । कुरआन पारा १५, रकू ११/११

अर्थ.–और अल्लाह जिसे सन्मार्ग दिखाए वही है मार्ग पाने वाला और जिसे पथभ्रष्ट करे उसके लिए कदापि कोई मित्र प्राप्त नहीं होगा उसके अतिरिक्त ।

कुरआन पृष्ठ ३९९ तफसीर हक्कानी में उक्त आयत की व्याख्या में लिखा है कि:— मेरे रसूल होने की साक्षी स्वयं

अल्लाह दे रहा है, सो यह पर्याप्त है। रही हिदायत (सन्मार्ग) सो उसके (अल्लाह) हाथ है। जिसको बचाता है, वही हिदायत पर आता है और जिसे अज़ल (प्रारम्भ) से ही गुमराही (पथभ्रष्टता) नसीब (भाग में) है, उसको कौन हिदायत (सन्मार्ग) कर सकता है। न इन्सान न फरिश्ता ?

तफसीर हक्कानी पारा १५, पृ. ६२

यदि कोई भ्रांति उत्पन्न करें कि अल्लाह तो उनको ठीक कर सकता है, किन्तु इसके विपरीत कुरआन की निम्न आयत यह कह सकती है कि इनको सन्मार्ग पर लाने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता क्योंकि इन्हें उत्पन्न नर्क हेतु ही किया गया है।

आयत—

व लक़द जराना लेजहन्नमा कसीरम्मिनल जिन्नेवल इन्सेलहुम कुलूबुल्ला यफ़क़हूना बिहा व लहुम अयनुल्ला युब्सिरूना बिहा व लहुम आज़ानुल्ला यस्मऊना बिहा ओलाएका कलअन्आमे बलहुम अज़ल्लो ओलाएका हुमुलगाफ़िलून।

कुरआन पारा ६ रकू २२/१२

अर्थः- निसन्देह हम (खुदा) ने अत्यधिक जिन्नों और मनुष्यों को नर्क हेतु ही उत्पन्न किया। उनके पास हृदय हैं, पर वह समझते नहीं, आँखें हैं पर देखते नहीं, कान हैं पर सुनते नहीं। वह लोग पशुओं के समान है, अपितु उनसे भी अधिक भूले हुए हैं। यह वही लोग है जो मदहोश हैं। कुरआन पारा ९ पृष्ठ २३३--३४

उक्त आयत के सम्बंध में तफसीर मज़हरी में हदीस सहीह मुस्लिम से उद्दरण किया गया है कि-- हज़रत आयशा का कथन है कि रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि अल्लाह ने स्वर्ग को उत्पन्न किया और

उसमें रहने वाले अधिकारी भी उत्पन्न कर दिये। जब कि वह हज़रत आदम की पीठ में ही थे और नर्क को उत्पन्न किया और उसमें प्रविष्ट होने वाले अधिकारी भी उत्पन्न किए। जब कि वह अपने बापों (पिताओं) की पीठ में ही थे। अर्थात वह संसार में आए ही नहीं थे। (इस हदीस में मनुष्यों को आदम की पीठ में से उत्पन्न होना दर्शाया किन्तु जिन्न किसकी पीठ में से उत्पन्न हुए? यह कोई चर्चा या उल्लेख नहीं।

आगे इसी तफसीर मज़हरी में है कि—हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस ने वर्णन किया कि एक दिन हज़रत मुहम्मद अपने दोनों हाथों में दो लेख (तहरीरें) लेकर निकले और फरमाया कि जानते हो, यह दोनों लेख क्या है? हमने निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम कुछ नहीं जानते। आप ही वर्णन कीजिए। तब हुजूर ने दाहिने हाथ के लेख की ओर संकेत कर फरमाया कि यह लेख सृष्टि के पालनकर्ता की ओर से है। इसमें स्वर्गगामियों, उनके पिताओं और उनके वंशों के नाम अंकित है. और अंत में इसे समाप्त कर दिया गया है। भविष्य में इसमें न कोई न्यूनता ही होगी और न अधिकता ही फिर बाँए हाथ के लेख की ओर संकेत करते हुए फरमाया कि यह सृष्टि के पालनकर्ता की ओर से है। इसमें नर्कगामियों, उनके पिताओं और उनके वंशों के नाम अंकित हैं, और इसे अन्त में समाप्त कर दिया है। भविष्य में न कोई वृद्धि होगी और न कोई कमी। मित्रों ने निवेदन किया कि ऐ रसूले खुदा! फिर मनुष्यों के कर्मों का क्या उद्देश्य है? जबकि स्वर्ग व नर्क में जाने वालों का प्रकरण ही समाप्त हो चुका। रसूल ने फरमाया कि सीधी चाल चलते रहो, स्वर्ग में जाने वाले का अन्त स्वर्ग में रहने वाले के कर्मों पर होगा। चाहे उसने जीवन में कोई कैसा भी कर्म किया

हो और नर्कवासियों के कर्मों पर नर्कगामियों का अन्त होगा। चाहे उसने अपने जीवन में कैसा भी कर्म किया हो। फिर हुजूर ने अपने हाथों से संकेत कर दोनों लेखों को फेंक दिया। फिर फरमाया कि तुम्हारा रब्ब (खुदा) बन्दों (मनुष्यों) से निर्णय से निवृत हो गया। एक समुदाय स्वर्ग में और एक समुदाय नर्क में कर दिया गया।

तफसीर मजहरी पारा ६, पृष्ठ ४२८-२९

पाठकवृन्द ! आपने देखा कि भोले-भाले जन साधारण को मूर्ख बनाने व भ्रमित करने हेतु क्या-क्या और कैसे-कैसे पाखण्ड करने व रचने पड़े ? संसार के समस्त मनुष्यों के, उनके पिताओं तथा वंशों की सूचियां बन गईं और जिनमें कभी भी भविष्य में कोई परिवर्तन अर्थात वृद्धि या न्यूनता नहीं हो सकेगी। वह सूचियां भी ऐसे आकार-प्रकार की, कि हजरत मुहम्मद के दोनों हाथों में आ गईं। यह कैसे बनी होंगी और कैसे लिखी गई होंगी ? मनुष्यों व जिन्नों से नर्क भरने हेतु उनका निर्माण हो गया। स्वर्ग वाले स्वर्ग में और नर्क वाले नर्क में ही जायेंगे। यह पूर्व निश्चित है। जिसमें कोई परिवर्तन नहीं। वाह ! क्या व्यवस्था है ? अल्लाह के उक्त निर्णय की पुष्टि हेतु कुरआन में अगली आयत है। जिससे सिद्ध है कि अल्लाह का निर्णय दृढ़ है। आयत :-

व लौ शेना ल आतेना कुल्ला नफ्सिन हुदाहा वा लाकिन हक्कल्कौलो मिन्नी ल अमलअन्ना जहन्नमा मिलनजिन्नते वन्नासे अज्मईन।

कुरआन पारा २१, रकू २/१५

अर्थः-यदि हमें (अल्लाह को) स्वीकार होता तो हम प्रत्येक मनुष्य को उसकी हिदायत (सन्मार्ग) प्रदान करते, परन्तु मेरी यह बात

प्रमाणित हो चुकी है कि मैं (अल्लाह) नर्क को जिन्नों और मनुष्य से भरूंगा ।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा २१, पृष्ठ ६४

नर्क में अल्लाह का पांव

अन्तोगत्वा यह नर्क क्या बला है ? जिसकी अल्लाह तआला को इतनी अत्याधिक चिन्ता है । कुरआन में आयत है:-

यौमा नक़ूलो लिजहन्नमा हलिम्तलाते वा तक़ूलो हलमिम्मज़ीद।

कुरआन पारा २६ रकू ३/१७

अर्थ:-जिस दिन कि हम (अल्लाह) नर्क से कहेंगे कि तू भर गई ? नर्क उत्तर देगा कि अभी कुछ और भी है ।

उक्त आयत के इस अर्थ के आगे इब्ने कसीर ने अपनी व्याख्या में लिखा है कि:-चूं कि अल्लाह तआला नर्क से वचन-बद्ध है कि वह उसे भर देगा । अत: प्रलय (कयामत) के दिन जो जिन्न और मनुष्य इसके भागी होंगे, उन्हें इसमें डाला जाएगा और अल्लाह नर्क से पूछेगा कि अब तो तू भर गई ? और उत्तर में नर्क कहेगा कि यदि कुछ और अपराधी शेष हों तो उन्हें भी मुझमें डाल दो । सहीह बुखारी में इस आयत की व्याख्या में यह हदीस है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया कि नर्क में पापी डाले जाएंगे और वह निरन्तर मांग करती रहेगी । यहां तक कि अल्लाह तआला अपना पांव उसमें रखेगा । तब वह (नर्क) कहेगी बस........ ....बस ।

(हदीस बुखारी में इस विषय में दो हदीसें हैं । एक हदीस में शब्द कदम और दुसरी में रिज़ल है । प्रथम कदमयुक्त हदीस के

विषय में मुसलमान विभिन्न भ्रान्तियां फैलाते हैं । अतः दुसरी हदीस उद्धृत है ।) हदीसः– फअम्मन्न से फला तम्लीओ हृत्ता यज़ओ रिज्लहू फतकूलो कत कत । (तजरीदे बुखारी, प्रकरण तफसीरे कुरआन, हदीस क्रमांक ५८८, पृष्ठ २९६)

अर्थः- किन्तु नर्क नहीं भरेगा जब तक खुदा अपना पांव उसमें न रखेगा । तब वह कहेगी बस ··· बस और भर जाएगी । आगे लिखा गया है किः— अल्लाह स्वर्ग और नर्क दोनों से कहेगा कि तुम दोनों सम्पूर्ण भर जाओगे किन्तु नर्क नहीं भरेगा यहां तक कि अल्लाह अपना पांव उसमें रखेगा । तब वह कहेगी बस बस और उस समय भर जाएगी । फिर उनके समस्त जोड़ सिमट जायेंगे । इब्ने कसीर, पारा २६, पृ. १०२

उक्त आयत का स्पष्ट आशय यह है कि खुदा नर्क को भरने का अपना वचन पूर्ण करने में विवश रहा और हार कर उसे अपने स्वयं का पांव उसमें रखकर उसे (नर्क) भरना पड़ा । कुरआन के अपने इस सत्य को सिद्ध करने हेतु अब और कोई अन्य युक्ति या प्रमाण की आवश्यकता नहीं रही कि ससार के मनुष्यों को पथभ्रष्ट करने, कुमार्गी बनाने, दिग्भ्रमित करते एवं धर्महीन काफ़िर बनाने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व स्वयं अल्लाह का ही है । अल्लाह अपने इस कृत्य को कुरआन में बारम्बर स्पष्ट शब्दों में स्वीकारता है, क्योंकि इस सत्य-तथ्य को स्वीकारे बिना अल्लाह का कार्य चल ही नहीं सकता क्योंकि वह अपनी स्वय की इच्छा-पूर्ति हेतु नर्क की रचना जो कर बैठा । क्या विश्व का कोई भी विवेकशील मनुष्य इस बात को स्वीकार करने को तत्पर होगा कि जब अल्लाह जिन्नों और मनुष्यों से भी नर्क की पूर्ति नहीं कर सका तो उसने विवश होकर या पराजित हो अपना

ही पांव नर्क में डाल दिया। तब कहीं जाकर नर्क की पूर्ति हुई। कैसा आश्चर्य है ? अगली आयत:—

व इजा कीला लहुम ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्जे कालू इन्नमा नह्नो मुस्लेहून। अला इन्नाहुम हुमुल्युफ्सेदूना व लाकिल्ला यश्औरून।

कुरआन पारा १ आयत १२-१३

अर्थः–जब उन्हें कहा जाता है कि भूमि पर फ़साद (उपद्रव) मत करो, तो कहते हैं कि हम तो सुधार व मेलजोल करने वाले है। याद रखो ! निसन्देह यही लोग उपद्रवी हैं किन्तु इस बात का ज्ञान नहीं रखते।

उक्त आयत के इस अर्थ के आगे इब्ने कसीर में इब्ने ज़रीर का उद्धृण है कि इन मुनाफ़िकों द्वारा उपद्रव उत्पन्न करना इस प्रकार है कि यह भूमि पर ईश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करते, कुरआन के निर्देशों को न स्वय मानना और न अन्य को मानने देना। खुदा की अनिवार्यता को निरर्थक मानना। अल्लाह तआला के सच्चे धर्म में संदेह करते व मिथ्यापूर्ण विचारों से प्रेरित थे। मुसलमानों के सन्मुख इस्लाम को स्वीकारते किन्तु उनके हृदय अल्लाह और रसूल के प्रति शकास्पद थे। अवसर मिलने पर अल्लाह के शत्रुओं को सहायता व रक्षा करते थे। ऐसी कुटिल और उत्पाती कार्यवाही करते हुए भी यह स्वय अपने आपको शान्तिप्रिय और सबके हितैषी प्रकट करते थे।

आगे व्याख्याकार ने लिखा कि काफ़िरों से मित्रता करना व रखना भी कुरआन के अन्तर्गत उत्पात है।

तफ़सीर इब्ने कसीर, पारा १, पृ. ६२-६३

तफसीर इब्ने कसीर की उक्त सम्पूर्ण व्याख्या का एक ही सार है कि वह फ़साद की परिभाषा यह मानते हैं कि–जो इस्लाम और उसके सिद्धांतों के सन्मुख नतमस्तक न हो, वह प्रत्येक जन फ़सादी (उत्पाती) है और उपद्रव करता है।

कुरआन व इस्लाम की इस घोषणा के पश्चात कि मुसलमानों को सन्मार्ग पर न मानने वाला प्रत्येक व्यक्ति उत्पादी है। यह ज्ञान होना आवश्यक है कि यह द्वेष व शत्रुता परस्पर क्यों और कैसी हुई ? इसका मूल कारण क्या है ? इस विषय में कोई विवाद नहीं कि अरब के प्रतिष्ठित-सम्भ्रात व विवेकशील जन कट्टर मूर्तिपूजक थे और हज़रत मुहम्मद इस प्रथा व परम्परा को नहीं मानते थे। अरब के दोनों पक्ष अपने-अपने विचारों के प्रति दृढ़ थे। जब हज़रत मुहम्मद ने अपनी निष्ठानुसार मूर्तिपूजा के विरूद्ध प्रचार कार्य प्रारम्भ किया तो मूर्तिपूजक पक्ष में अत्याधिक हलचल उत्पन्न हो गई और उन लोगों ने इस विषय में कतिपय उपाय किये जो कि निम्नांकित हैं।

(१) एक दिन हज़रत मुहम्मद काबा में बैठे थे कि उनके पास ही कुरेश के प्रतिष्ठित सरदारों की एक विराट गौष्ठि हो रही थी। उसमें यह प्रस्ताव आया कि कैसे मुहम्मद को।प्रतिमा निन्दा। से रोका जाए ?...............अत्यन्त वाद विवाद के उपरान्त यह निश्चय हुआ और उसके अनुसार अतबा बिन रबीआ ने हज़रत मुहम्मद के पास जाकर निवेदन किया कि ऐ मेरे भाई के बेटे ! तू अपनी योग्यता तथा वंश परम्परा की श्रेष्टता के कारण अद्वितीय है। अब तूने जाति में मतभेद उत्पन्न कर दिया है और परिवार में द्वेष और फूट का बीज बोया गया है, क्योंकि तू हमारे देवी-देवताओं पर शक्तिहीनता का आरोप लगाता है। हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तुम गम्भीरता से हमारी बात पर विचार

करो और फिर उसे स्वीकारने या नकारने का तुम्हें अधिकार है। हज़रत मुहम्मद ने कहा कि ऐ वलीद पिता ! तेरा कहना मैं सुनता हूँ। अतबा ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे ! यदि तू इस कार्य से कुछ धनोपार्जन चाहता है, तो हम तेरे लिए इतना धन एकत्रित कर देंगे कि हम में से किसी के भी पास न हो और यदि तुझे प्रतिष्ठा अथवा उच्च पद की इच्छा है, तो हम तुझे अपना सरदार सर-आंखों पर बनाना स्वीकार करते हैं, इत्यादि। इसके उत्तर में हजरत मुहम्मद ने कहाकि मुझे खुदा से वही (सदेश) आती कि खुदा एक है। मूर्तिपूजा पर मेरा विश्वास नहीं, इत्यादि बहुत बातें हुई। अन्त में अतबा बिन रबीआ ने कहा कि मुझे जो कुछ तुझे समझाना था, समझा दिया। इसमे जो कुछ तुझे भला मालूम हो, उस पर चल।

मुकद्दमा ए तफसीररूल फुर्कान, मिर्ना हैरत, पृ. ३५०

(२) ज्यों-ज्यों मक्का में राग-द्वेष के वातावरण की वृद्धि हो रही थी, त्यों-त्यों उसे देख कर अबू तालिब (हज़रत मुहम्मद के चाचा व पालक) चौकन्ने व सावधान हो रहे थे। उन्होंने अत्यन्त ही दुखी होकर खिन्नतापूर्वक अपने भतीजे मुहम्मद से कहा- ऐ मेरे भतीजे ! सुनो। कुरेशियों का क्रोध अवश्य ही मेरी हानि का कारण बनेगा और स्थिति यहां तक पहुँचेगी कि मैं तेरा पालन पोषण भी न कर सकूंगा। अल्लाह के हेतु इन बातों को रोक और नये धर्म का इतनी उग्रता से प्रचार न कर। ऐसा न हो कि हाशम व मुतलब की निर्दोष सन्तान पर कोई भयंकर आपत्ति डाल दे। इत्यादि। इसका प्रत्युत्तर यह प्राप्त हुआ कि खुदा के दीन का प्रचार मैं जीवन भर करूंगा।

मुकद्दमा ए तफसीरूल फुर्कान, मिर्जा हैरत पृ. ३५[illegible]

कुरेश में अबू लहब अत्याधिक प्रतिष्ठित व धनाढ्य व्यक्ति था। उसके और उसकी पत्नि के विरूद्ध एक अत्यन्त ही कठोर शब्दोंयुक्त विषकारी खुदाई आयत मुहम्मद साहिब ने प्रस्तुत की। जिसमें अबू लहब की पत्नि उम्मे ज़मील के विरूद्ध अत्याधिक निन्दात्मक शब्दों का प्रयोग है। उसे **मिर्ज़ा देहलवी** के शब्दों में पढ़िये :—

उम्मे ज़मील, अबू लहब की पत्नि और आपकी (हज़रत की) चाची हज़रत मुहम्मद के घोर शत्रुओं में से एक थी। कुरआन मजीद ने उसके विषय में निर्णय कर दिया। आयत :—

तब्बत यदा अबीलहबिंव्वातब्ब् मा अगना अनहो मालेहू व मा कसब। सयस्ला नारन ज़ाता लह बिंव्वमरातोहू हम्मालतल्हतब फी जीदेहा हब्लुम्मिसद्।

कुरआन पारा ३० रकू १/३६

अर्थात:- अबू लहब के दोनों हाथ नष्ट हुए। वह स्वयं भी नष्ट हुआ। न तो उसकी सम्पत्ति ही उसके काम आई और न उसकी कमाई। वह अति शीघ्र ही भड़कती हुई लपटें निकलने वाली अग्नि में प्रविष्ट होगा और उसकी पत्नि भी लकड़ियों के बोझ उठाने वाली है। उसकी गर्दन में खजूर की बंटी हुई रस्सी होगी। मुकद्दमा ए तफ़लीरूल फुर्कान, मिर्ज़ा हैरत पृ. ३३६

इब्ने कसीर में है कि हज़रत अरवह फरमाते हैं कि खजूर की रस्सी से तात्पर्य नर्क की शृंकला से है।

इब्ने कसीर, पारा ३०, पृष्ठ ६१

चाची का स्थान और महत्व माता सदृश्य होता है। उसके हेत् ऐसे क्रूर और निर्मम शब्दों का प्रयोग कहां तक धर्मोचित एवं मानवतायुक्त है ? कोई जन साधारण, सभ्य व्यक्ति कभी भी ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकता, किन्तु इन शब्दों को खुदा के नाम से प्रयोग किया गया है। क्या आवश्यक है कि अल्लाह ऐसे असभ्य और लज्जास्पद शब्दों का प्रयोग कर राग-द्वेष की अग्नि को और भी प्रज्वलित करे अथवा भड़काये।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद मूर्तिपूजा खंडन के क्षेत्र से भी आगे बढ़ कर व्यक्तिगत निन्दा–भर्त्सना व कुत्सित शब्द-युक्त भाषा प्रयोग पर उतर आए। इस पर कुरैश ने एक और उपाय सोचा। जो कि सभ्य और सज्जन लोग सोचा करते हैं। वह उपाय यह कि:–

कुरैश का एक शिष्ट मंडल हज़रत मुहम्मद के पालक अबू तालिब के पास गया (यह घटना तबरी, इब्ने असीर और इब्ने हशाम ने वर्णन की है।) और जाकर कहा कि सुन अबू तालिब ! हम तेरी वृद्धावस्था और श्रेष्ठ पद के कारण तेरी बड़ाई करते हैं, परन्तु तेरा यह सम्मान हमारे हेतु एक सीमा तक ही है। हम इससे और अधिक धैर्य नहीं रख सकते हैं। हम अपने देवी–देवताओं की निन्दा तेरे भतीजे मुहम्मद के मुंह से नहीं सुनना चाहते। हमारी सहन शक्ति समाप्त हो गई है। अब हम अपने पूर्वजों की बुराई पर मौन नहीं रह सकते। अब हमारा तुमसे यह कहना है कि क्या तू अपने भतीजे को इन बातों से रोक सकता है ? या तेरा भी विचार उसी के साथ एक होकर रहने का है ? अब हम युद्ध करने हेतु उद्यत हैं। अपनी तलवार को कदापि म्यान में वापिस नहीं रखेंगे। जब तक हम मे से कोई भी एक समुदाय एकदम नष्ट न हो जायें। यह बात

कह कर वह लोग चले गये। इस पर अबू तालिब ने हज़रत मुहम्मद को बुलाया और कुरैश के क्रोध व अन्तिम निश्चय के विचारों का पूर्णतः वर्णन किया और कहा कि मेरी तो यह सम्मति है कि समय व स्थिति को भी देखना चाहिये। उसे देखते हुए उचित प्रतीत होता है कि जब स्थिति तलवार की सीमा तक आ पहुँची है, तो प्रचार बन्द कर देना चाहिये। इस पर हज़रत मुहम्मद ने कहा कि ऐ चाचा ! सुन लो, मैं खुदाई आज्ञा के पालन से कदापि विमुख नहीं हो सकता। चाहे मेरा सर्वनाश भी हो जाए...... इत्यादि। यह कह कर हज़रत मुहम्मद चल पड़े। अबू तालिब ने हज़रत मुहम्मद को बुलाया और कहा कि तेरा जो जी चाहे कर व कह, मैं तुझे कभी त्यागने वाला नही हूं। इसके पश्चात फिर कुरैश अबू तालिब के पास चले गये और कहा कि या तो आप अपने भतीजे को रोकें अन्यथा युद्ध हेतु तत्पर हो जायें। साथ ही यह सम्मत्ति भी दी कि आप कुरैश वश से किसी नवयुवक को लेकर अपना दत्तक पुत्र बना लें ताकि तुम्हें अपने भतीजे की आवश्यकता न रहे। इस बात को अबू तालिब किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकते थे। अन्त में अबू तालिब ने अपने आपको अति दुखी व चारों ओर से शत्रुओं से घिरा पाकर बनी हाशिम व बनी मुत्तलक से फरियाद की और कहा कि यह विरोधी कबीले तुम्हारे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति पर आक्रमण करना चाहते हैं, और उसकी हत्या हेतु उद्यत हैं। अत्यन्त लज्जास्पद बात है कि तुम मौन साध कर देख रहे हो और उसे बचाने का उपाय नहीं सोच रहे। यह सुन कर सब सहायतार्थ तत्पर हो गये, किन्तु अबू लहब ने साथ नहीं दिया।

मुकद्दमाऐ तफसीरूल फुर्कान, मिर्ज़ा हैरत, पृ. ३५२

युद्ध किसने प्रारम्भ किया ?

उपरोक्त समस्त उद्धृण आपने भलीभांति पढ़ लिये हैं। अव आप आगे यह पढ़ें कि युद्ध कैसे और किसने और किसलिए प्रारम्भ किया गया। युद्ध प्रारम्भ करने के विषय में तफसीर मज़हरी में लिखा है कि:—

बदर युद्ध के दो मास पूर्व अरबी तिथि जमादिउल आखिर हिजरी २ में हज़रत मुहम्मद ने फूफी के बेटे (भाई) अवदुल्ला बिन जहश को कुछ साथियों सहित एक गुप्त आज्ञा पत्र देकर रवाना किया और कहा कि दो दिनों की यात्रा के पश्चात इस आज्ञा पत्र को खोलना। .... आज्ञा पत्र में लिखा था कि जिस समय बत्ने नखला में पहुँचो तो कुरैश काफिलों (व्यापारी समूह) की प्रतीक्षा करो। आशा है कि माल तुम्हारे हाथ लगे और उसे तुम हमारे पास लाओ। ....जव यह लोग बत्ने नखला में पहुँचे तो अभी यह लोग ठहरे भी न थे कि इतने में कुरैश काफिला दिखाई दिया। जब काफ़िले वालों से इन मुसलमानों को देखा तो भयभीत हो गए। यह देख कर अब्दुल्ला बिन जहश ने कहा कि यह लोग तुमसे भयभीत हो गये हैं। तुम एक काम करो कि अपने समूह में से एक व्यक्ति का सिर मूंड कर उनके पास भेज दो ताकि उन्हें सन्तोष हो जाये। (इसका अभिप्राय यह कि उन महिनों युद्ध करना धार्मिक निषेध है। उस दिन उस माह का प्रथम दिन था। उस दिन मुसलमान सिर मुंडा लेते थे। जिसका अर्थ होता कि अव वह युद्ध नहीं करेंगे।) उक्त निश्चयानुसार अकासा का सिर मूंड कर काफ़िले की ओर भेज दिया गया। जव अकासा काफिले वालों के पास पहुँचा तो वह निर्भय हो गए। जव उनको निर्भय देखा तो मुसलमानों ने उन पर आक्रमण कर

दिया। वाकद बिन अब्दुल्ला सहमी ने उमरू हज़रमी को तीर मार दिया। उस्मान बिन अब्दुल्ला बिन मुगीरा और हक़म बिन कैसान को कैद कर लिया। नौफ़ल भाग गया। तब उन दोनों बन्दियों तथा सामान लदे ऊंटो को लेकर हज़रत के पास आये।
तफसीर मज़हरी, पारा २, पृ. ४३१ से ३३

युद्ध का प्रारम्भ स्वयँ हज़रत मुहम्मद ने किया और वह भी छलपूर्वक कि पहिले अपने व्यक्ति का सिर मूंड कर कुरैशों को निर्भय व असावधान कर दिया और फिर धोखे से अचानक उन पर आक्रमण करके एक शान्तिप्रिय और निश्चिन्त व्यापारी समूह को लूट लिया। यह है इस्लाम और उसकी ईमानदारी !

इससे पूर्व जिस आयत में जिस फ़साद (उपद्रव) का वर्णन है। उसका रूप क्या और कैसा है ? यह पाठकों को भलि भांति पूर्ण रूपेण ज्ञात हो ही गया। अब इस आयत पर मुआलिमुत्तंजील का अर्थ भी पढ़ने योग्य है ? लिखा है कि:-

मुनाफ़िकों को यहूद भी कहा गया है। वह काफ़िर लोग लोगों को कुरआन व हज़रत मुहम्मद पर ईमान (विश्वास) लाने से रोकते हैं और उन्हें आदेश है कि हज़रत मुहम्मद व इस्लाम पर ईमान लाने में बाधा डाल कर भूमि पर उपद्रव न खड़ा करो मुआलिमुत्तंजील, पृष्ठ १५

कुफ़्र अत्याधिक कठोर है। धर्म में उपद्रव उत्पन्नकारक हैं। (यहां भी कुफ़्र को फ़साद कहा गया है।)

तफसीर हक्कानीं में है कि :- बदर युद्ध अत्याधिक प्रसिद्ध है। यह भी युद्ध नहीं अपितु काफ़िला लूटने के विचार से ही गये थे। हिज़रत की अगले वर्ष रमज़ान के महिने में हज़रत मुहम्मद

साहिब को यह सूचना मिली कि अबू सुफ़यान एक यात्री समूह लेकर शाम से मक्का की ओर आ रहा है । जिसमें व्यापारिक सम्पत्ति है । हज़रत मुहम्मद ने लोगों को उद्यत किया । यद्यपि लोगों में इस बात की प्रसन्नता थी कि काफ़िला लूटा जायेगा, क्योंकि इसमें लाभ व सुविधा दोनों थे, किन्तु अल्लाह को यह स्वीकार था कि कुफ़्फ़ार का वैभव नष्ट करें ।

तफसीर हक्कानी पारा ३, पृष्ठ ३७

इब्ने कसीर में काब का कथन है कि रसूलिल्लाह कुरैश के एक काफ़िले हेतु मदीना से निकले थे। वहां खुदा की इच्छानुसार खुदा के शत्रुओं से मुठभेड़ हो गई।

तफसीर इब्ने कसीर पारा ११, पृष्ठ २६

मवाहेबुर्रहमान पारा ३ में और मुगाजियुस्सादिका पृष्ठ ११ में है कि यह ग़ज़वा (वह युद्ध जिसमें स्वयं हज़रत लड़ने जायें) युद्ध उद्देश्य से नहीं था। अपितु काफ़िरों का एक समूह शाम से आ रहा था और हज़रत मुहम्मद ने कहा कि इस काफिले को रोको।

उपरोक्त समस्त उद्धृणों और विवरणों से यह सत्य स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो गया कि वास्तव में उपद्रवों और युद्ध का दायित्व किस पर है ? और पाठकों को यह भी ज्ञात हो गया कि फ़साद और युद्ध का प्रारम्भ किसने किया ? आगे यह आयत है—

व इज़ा कीला लहुम आमिनू कमा आमनस्सफाहाओ कालू अनोमिनो कमा आमनस्सुफहाओ। अला इन्नहुम हुमस्सुफहाओ व लाकिल्ला यालमून ।   कुरआन पारा १, आयत १३

अर्थः– और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी ऐसे ही ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं, तो कहते हैं कि क्या हम ईमान लायेंगे । जैसे कि यह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं । याद रखो, निसन्देह यही मूर्ख हैं, किन्तु वह इसका ज्ञान नहीं रखते ।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ६३

आजमुत्तफासीर में लिखा है कि:– वह कहते हैं कि मुसलमानों में इतनी बुद्धि भी नहीं थी कि यदि प्रतिपक्ष को प्रभुत्व प्राप्त हुआ तो फिर न इधर के रहेंगे, न उधर के.......... स्वर्ग तथा नर्क एक काल्पनिक ढकोसला है और हूरो कसूर (अप्सराएं–भव्य भवन) की बात मिथ्या जान पड़ती है । बुद्धियुक्त बात तो यह है कि प्रत्यक्ष में तो शरअ (इस्लाम–धर्मशास्त्र) की आज्ञा माननी चाहिये । ताकि मुसलमानों की लूटमार से मुक्त रहें जो इस समय प्रभुत्व रखते हैं । कुछ सांसारिक लाभ भी प्राप्त हो और दुसरे पक्ष के लोगों को भी सन्तुष्ट रखना चाहिए ताकि समय परिवर्तन के अवसर पर उनकी सहानुभूति काम आये ।

आजमुत्तफसीर, पारा १, पृ. ६५-६६

उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त मुनाफिक मुसलमानों को बुद्धिहीन समझते थे और इसके प्रमुख तीन कारण थे ।

(१) वह मूर्खता और नीचताई में इतने लिप्त थे कि अपने विश्वासानुसार कुमार्ग को सुमार्ग और उत्पात को मेलजोल समझते थे और यह स्पष्ट है कि जो व्यक्ति कुमार्ग को सुमार्ग समझेगा वह अवश्य ही सुमार्ग को कुमार्ग समझेगा । (२) चूंकि अधिकांश मुसलमान पराश्रित–भिक्षुक और दास तथा सेवक भी थे । जैसे–बलाल-खबाब और सुहेब आदि । और यह मुनाफिक लोग सम्पत्तिवान और जागीरदार थे । अतः वह मुसलमानो को

निर्धन तथा सम्मानहीन होने के परिणामस्वरूप बुद्धिहीन कहा करते थे । (३) मुनाफिकों की निष्ठा यह थी कि हज़रत मुहम्मद के सिद्धांत असत्य है और मिथ्या बातों पर विश्वास करने वाले मूर्ख और नीच होते हैं । इस कारण यह लोग भी सफीह (नीच) ही है ।
आजमुत्ताफासीर, पृ. ६

अब कुरआन और मुनाफिकों के कथन का समन्वय कीजिए कि कुरआन की दृष्टि में अल्लाह व उसके रसूल तथा कुरआन को नहीं मानता वह मूर्ख हैं, और जिनको मुनाफिक कहा गया है, उस समुदाय की मान्यता है कि स्वर्ग-नर्क-अप्सराएं और भव्य भवन इत्यादि मिथ्या और काल्पनिक बातों पर विश्वासकर्ता बुद्धिहीन तथा मुहम्मद की लकीर के फकीर हैं। ऊपर मुस्लिम व्याख्याकारों ने स्वयं लिखा कि मुनाफिक लोग प्रतिष्ठित–धनाढ्य और जागीरदार थे तथा मुसलमान पराश्रित भिक्षुक दास और सेवक आदि थे । मुनाफिक लोग प्रत्यक्ष इस्लाम के सिद्धांतों और मान्यताओं का खंडन करते थे किन्तु आंतक में वशीभूत हो मुसलमान सदृश्य हो समय को महत्व और मान्यता देते थे ।

कुरआन की अगली आयत:-

व इज़ा लकुल्लज़ीना आमनू कालू आमन्ना व इज़ा खलौइला शयातीनेहिम, कालू इन्ना मअकुम इन्नमा नहनो मुस्तहज़िऊन अल्लाहो यस्तहजिओ बेहिम व यमुद्दोहुम फीतुग्यानेहिम यामहून
कुरआन पारा १ आयत. १५-१

अर्थ:-और जब वह मुनाफिक, मुसलमानों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम मुसलमान है और जब अपने शरारती सरदारों के पास

एकान्त में पहुँचते तो कहते है कि हम निसन्देह तुम्हारे साथ हैं। हम तो केवल हँसी करते हैं और अल्लाह भी उनके साथ हंसी करता है तथा उनको ढील देता चला जाता है और वह अपनी अवज्ञा को स्थिति में चिन्तित और दिग्भ्रमित हैं।

इब्ने कसोर, पारा १, पृष्ठ ६४

उक्त प्रकरण में कुरआन हज़रत मुहम्मद मे समकालीन कतिपय लोगों की स्थिति का वर्णन कर रहा है। पूर्व में भी ऐसा ही किया है। वर्णन यह है कि कतिपय लोग तो स्पष्ट काफ़िर थे। कुछ कहते थे कि हम मूर्ख और बुद्धिहीन नहीं कि मुसलमान हो जाएं। कतिपय ऐसे भी थे कि जो ऊपर से मुसलमान थे और अन्तर से मुनाफ़िक थे। कुछ भय और आंतक के कारण अपनी जान व माल की सुरक्षा हेतु स्वयं को मुसलमान कहते थे। ऐसे सभी लोग मुसलमानों के साथ ही रहते थे। इसलिए ऐसे लोगों को मुसलमान भलिभांति जानते थे। इस कारण ऐसी आयतें बन जाती थी कि लोगों पर यह प्रभाव हो कि अल्लाह ऐसे समस्त मनुष्यों को जानता है। इस आयत में मुनाफिकां के सरदारों को शैतान कहा है। अपमानजनक और अपशब्दों का प्रयोग तो हज़रत मुहम्मद की प्रकृति और स्वभाव में था। कुरआन इस प्रकार को कुत्सित भाषा से ओत-प्रोत है। शैतान शब्द निश्चयात्मक अत्याधिक अपशब्द और गाली समझा जाता था। यह समझ में नहीं आता कि सुधार हेतु अल्लाह को अपने बन्दों के प्रति ऐसे कठोर और असह्‌य शब्दों के प्रयोग की क्या आवश्यकता थी? आयत में प्रयुक्त शब्दों के अर्थः-

खलौ-युग, निवास स्थान। शैतान-भलाई और दया से दूर रहना। (शतन धातु से निर्मित)। इस्तहज़ा-हल्कापन (सामान्य अर्थ में हँसी-दिल्लगी के रूप में बुरी बात को गुप्त रखकर हाँ मेंहाँ मिलाना)

मद्द-अधिकता (अधिकतर बुराई में प्रयुक्त होता है) तुग़यान-निश्चित सीमा से आगे बढ़ना (घमंडी-विद्रोही) यामहून-असम-जसता, भ्रमित (अमा धातु से निर्मित)

आजमुत्तफासीर, पृष्ठ ६६
बयानुलकुरआन, पृष्ठ २

शाने नज़ूल (उतरने का कारण)

उक्त आयत के उतरने का कारण आजमुत्ताफासीर में य है कि:-अब्दुल्ला बिन उबय्य मुनाफिक का सरदार और उसके मित्र एक दिन बाजार चले जा रहे थे। सामने से मुहम्मद साहिब के मित्रों का एक दल आ रहा था। इब्ने उबय्य ने अपने साथियों से कहा देखो मैं इन मूर्खों को तुमसे कैसे टालता हूं। अभी यह दल उनसे कुछ दूर ही था कि अब्दुल्ला ने दूर से झुक कर हज़रत अबी बकर का हाथ थाम कर उसकी बहुत प्रशंसा की। इसी प्रकार हज़रत उमर की और ऐसे ही हज़रत अली की प्रशंसा की..............जब यह मुसलमानो का समूह गुज़र गया तो अब्दुल्ला ने अपने साथियों से कहा कि तुमने देख लिया कि मैंने कैसे भ्रम में डाला। इस पर यह आयत उतरी।

आज़मुत्ताफासीर, पारा १ पृष्ठ ६८ ६६

मुनाफिक्कों के मुकाबिले पर स्वयं खुदा

जब मुनाफिक मुसलमानों को मूर्ख और बुद्धिहीन कहते हैं तो मुसलमानों के वकील (पैरवीकार) के रूप में खुदा उनको मूर्ख कहता है और जब मुनाफ़िका ने कहा कि हम तो उपहास करते हैं, तो प्रत्युत्तर में अल्लाह ने भी कहा कि मैं भी उनका उपहास करता हूं। अर्थात:-खुदा आमने सामने प्रत्यक्ष शब्दों में

आदान-प्रदान करता है। संसार में लिप्त संसारी लोगों में नित्य प्रतिदिन ऐसे वाद-विवाद और चर्चाएं होती ही रहती है, और इनकी सीमा निर्धारण करना सम्भव नहीं। किन्तु स्वयं अल्लाह को इन प्रसंगों में घसीटना क्या उसके पद को घटाना नहीं है ? क्या खुदा को इतना सस्ता बना देने से खुदा का सम्मान और प्रभाव बढ़ता है ? कदापि नहीं। हज़रत मुहम्मद ने अपनी स्वयं की प्रतिष्ठा और प्रभुता की वृद्धि हेतु खुदा को इन प्रसंगों में उल्लेखित कर कोई श्रेष्ठ या महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया। अल्लाह (ईश्वर) के भक्तों और प्रशंसकों को, जो सृष्टि के आदिकाल से वर्तमान में आज तक चले आ रहे हैं। (इस्लाम) तो केवल मध्यावधि में निर्मित मात्र है।) अल्लाह और बन्दों (ईश्वर और भक्तों) का सिलसिला तो अनादि और अन्तहीन हैं। हज़रत मुहम्मद की इस कारगुज़ारी से अल्लाह के भक्तों के श्रद्धायुक्त, हृदयों को कितनी गहरी और सांघातिक चोट लगती है। जबकि वह अपने इष्टदेव की किसी स्वार्थी और संसारी व्यक्ति द्वारा मिट्टी पलीत करते हुए देखते हैं। ईश्वर प्राणीमात्र के कल्याण हेतु कार्य करता है, न कि स्वयं अपने ही द्वारा निर्मित प्राणियों के साथ कुश्ती लड़ने हेतु लंगर-लंगोटे कसता रहता है। मज़हरी ने इसका समाधन इस प्रकार करने की चेष्टा की है:— (अल्लाह) उनके साथ ठठ्ठा (उपहास) करता है। अर्थात उन्हें ठठ्ठा करने का बदला देता है। शाब्दिक प्रतियोगिता हेतु उपहास करने के दंड का उपहास के साथ तुलना की गई है। मज़हरी पारा १ पृ. ४४ भला बताईये कि क्या उपहास करने का दण्ड भी उपहास ही होता है ?

खुदा के उपहास

अल्लामा बगवी ने इब्ने अब्बास से उद्धृत किया है कि अल्लाह तआला का उपहास करना यह है कि कयामत के दिन

उनके हेतु स्वर्ग का एक द्वार खोल दिया जाएगा : जब वह उस द्वार तक पहुँचेंगे तो वह तुरन्त बन्द कर दिया जाएगा और उन्हें अग्नि की ओर धकेल दिया जायेगा। अल्लाह द्वारा उपहास करने सम्बन्धी एक और अन्य वर्णन उद्घृत है कि कयामत के दिन मोमिनीन हेतु एक प्रकाश उत्पन्न किया जाएगा। जिसके प्रकाश में पुल सिरात पर चलेंगे। जब मुनाफ़िक लोग उस प्रकाश तक पहुँचेंगे तो उनके और मोमिनीन् के मध्य एक आवरण बाधक हो जाएगा।

मजहरी में कुरआन का यह प्रमाण भी उद्धृत किया है:-फ़ज़ुरेब बैनाहुम बेनुरिल्लहू बाब। (पारा २७ रकू २/१८)

अर्थात:- फिर बना दी जाएगी उनके मध्य एक दीवार जिसका एक द्वार होगा।

इस प्रकार मजहरी में अल्लाह द्वारा उपहास किये जाने के अनेकानेक कथन व उद्धृण सम्मिलित है।

तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ठ ४४-४५

अल्लाह उनसे उपहास करता है। अर्थात उनके कृत्यों के अनुसार उनके साथ व्यवहार करता है और ढील देता है। अभिप्राय यह कि अल्लाह ने उन्हें एक अवधि तक ढील दे रखी है। उनकी सरकशी (उच्छृंखलता) सीमोल्लंघन करने की है। स्थिति यह है कि वह चिन्तित और परेशान फिरते हैं। अर्थात अल्लाह तआला ने उनके मन और आत्मा की आँखों को अंधा कर दिया है।

(तफसीर फ़ैजी) आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १०१

जिस आयत के सम्वन्ध में यहां चर्चा है। उसमें जिन मुनाफिकों और काफ़िरों का वर्णन है, कि वह मुसलमानों के पास आते हैं तो भय के मारे अपने आपको मुसलमान कहते हैं व जब अपने समुदाय में जाते हैं, तो पुन: अपने मत की पुष्टि करते हैं और कहते हैं कि हम तो मुसलमानों से उपहास करते हैं। हम पूर्व में अनेक सबल प्रमाणों से यह सिद्ध कर चुके हैं कि अल्लाह की ईच्छा के बिना कोई ईमान नहीं ला सकता। फिर यह भी तो वही लोग हैं, जो कि नर्क हेतु ही उत्पन्न किये गये हैं। यदि ऐसा है तो फिर वह ईमान ला ही कैसे सकते हैं ? कुरआन तो अकारण ही इन मुनाफिकों को अपराधी और दोषी कह कर जन साधारण को भ्रमित कर रहा है।

इस्लाम का प्रारम्भिक काल

पूर्वोक्त वर्णित आयतों से यह स्पष्ट हो गया कि अपने प्राणों और सम्पत्ति की रक्षा हेतु लोग ला इलाहा का कल्मा पढ़ कर मुसलमान होने पर विवश हुए थे। हज़रत मुहम्मद द्वारा उस समय में घोषणा ही यह थी कि (जिसे ऊपर लिख आये हैं।) जिसने कल्मा पढ़ लिया, उसने अपने प्राण और सम्पत्ति की सुरक्षा कर ली क्योंकि अल्लाह का आदेश है कि जो कल्मा न पढ़े उसे मौत के घाट उतार दिया जाये। उस समय लोग कितने भयग्रस्त और आँतकित थे कि दिखावे मात्र हेतु कल्मा पढ़ लेते थे किन्तु अपने अन्तर्मन में अपने स्वयं के धर्म पर ही आस्था और विश्वास रखते थे। कुरआन की अगली आयत:-

व ओलाएकल्लाज़ी नश्तरा बुज़्ज़ालालता बिल्हुदा फ़ मा रबें-हत्तेजारतोहुम व मा कानू मुहतदीन।

कुरआन पारा १ आयत १७

अर्थ:-यह वही लोग हैं, जिन्होंने सन्मार्ग के बदले कुमार्ग को क्रय कर लिया। अतः उनका यह व्यापार उनके हेतु लाभदायक नहीं हुआ और वह मार्ग-प्राप्तकर्ता नहीं हुए।

तफसीर मज़हरी, पारा १, पृ. ४..

सन्मार्ग पर चलने और न चलने के सम्बन्ध में हमने कुरआन की अनेकों आयतों द्वारा प्रबल रूप से यह प्रमाणित कर दिया है कि ईमान लाना व सन्मार्ग प्राप्त करना मनुष्यों के अधिकार में कदापि न रहा। स्वर्ग और नर्क हेतु प्राणियां की उत्पत्ति का सिद्धान्त इस सत्य की पुष्टि करता है। स्वयं अल्लाह द्वारा विशेष रूप से उत्पादित प्राणियों हेतु यह कथन कि उन्होंने घाटे का व्यापार कर सुमार्ग के बदले कुमार्ग क्रय कर लिया है, क्या अर्थ रखता है? या तो अल्लाह का वह पूर्वोक्त कथन सत्य हो सकता है या फिर यह कथन? दोनों कथनों के सत्य होने के तो कोई तात्विक-धात्विक व तार्किक आधार ही नहीं।

कुरआन के लेखक-प्रणेता-संग्राहक या कोई भी हो, उसे कम से कम एक निश्चयात्मक और निर्णयात्मक दृष्टि और सिद्धान्त प्रतिपादित करना चाहिए था, ताकि संसार के मनुष्य अपने स्वयं और अपने निर्माता व पालनकर्ता के शब्दों के प्रकाश में अपना जीवन एवं उद्देश्य निश्चित करने व उसे निर्वाह हेतु उस सन्मार्ग पर चलने हेतु स्पष्ट प्रकाश प्राप्त करते, किन्तु कुरआन के शाब्दिक घटाटोप अंधकार में बेचारा मानव विवश है, जायें तो जायें कहां और किधर? कुरआन की इतनी घोर संदेहजनक स्थिति स्पष्ट होने पर भी मुसलमान भाष्यकार कुरआन व हज़रत मुहम्मद को निर्दोष और निष्कलंक प्रमाणित करने हेतु समस्त अपराध व बुराईयां बेचारे काफ़िरों-यहूद-ईसाईयों और मुनाफ़िकों पर ही थोप रहे हैं।

इब्ने कसीर में है कि इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद और कुछ अन्यान्य लोग कहते हैं कि उन्होंने हिदायत के बदले गुमराही (पथ भ्रष्टता) ले ली। हज़रत अब्दुल्ला कहते हैं कि उन्होंने ईमान के बदले कुफ़र स्वीकार किया। मुज़ाहिद कहते हैं कि वह सुमार्ग के अपेक्षा कुमार्ग को पसन्द करते हैं।

इब्ने कसीर, पारा १, पृष्ठ ६५

कुरआन की अगली आयत:-

मसलोहुम कमसलिल्ला जिस्तौकदा नारन फ़लम्मा अज़ाअत मा होलहू ज़हबल्लाहो बेनूरेहिम व त र क हुम फ़ी ज़लोमातिल्ला युब्सेरून। सुम्मुम्बुक्मुन् उमयुन फहुम ला यर्जेऊन।

कुरआन, पारा १ आयत १८-१९

अर्थ:-उनकी स्थिति उस व्यक्ति की स्थिति के सदृश्य है, जिसने कहीं अग्नि प्रज्वलित की हो। फिर जब उस अग्नि से उसके चहुँ ओर का वातावरण व वस्तुएं प्रकाशमय हो गई तो अल्लाह ने उसका आलोक छीन लिया और उनको अंधेरे में छोड़ दिया। जिसके कारण न कुछ देख सकते हैं तथा बहरे-गूंगे व अंधे हैं। अतः यह सन्मार्ग पर नहीं आ सकते।

इब्ने कसीर, पारा १ पृ॰ ६६

इब्ने कसीर में है कि राज़ी का कथन है कि उपमा अत्यंत ही उचित व उपयुक्त है। प्रथम तो उन मुनाफ़िकों को ईमान का प्रकाश प्राप्त हुआ और फिर उनके निफ़ाक (फूट) से वह लुप्त हो गया।

(आयत में निफाक का कोई उल्लेख तक नहीं है। यह तो जनाब राज़ी साहिब की अपनी अनोखी सूझबूझ

मात्र ही है। इससे उनकी ईमानदारी स्पष्ट हो जाती है, क्योंकि आयत में केवल आलोक होने व अल्लाह द्वारा उसे लुप्त किए जाने का ही वर्णन है।)

किन्तु आगे इब्ने ज़रीर ने इमाम राज़ी के विपरीत लिखा कि-जिन लोगों के विषय में दृष्टांत दिया गया है, उन्हें किसी समय भी ईमान प्राप्त नहीं हुआ था, क्योंकि खुदा का आदेश आ चुका है कि **"मा हुम बे मौमिनीन्"** अर्थात वह कदापि मौमिन नहीं है।......................कतिपय लोग कहते हैं कि आयत की भाषा इस प्रकार है:- **मसलो किस्सतेहिम कमसले किस्सतिल्लजीनस्तौकदू नारन"** अर्थात उनके साथ घटित घटना की तुलना उन लोगों के साथ घटित हुई घटना से की जा सकती है, जो अग्नि प्रज्वलित करें।..................आयत में **अल्लज़ी** (एकवचन) **अल्लज़ीना** (बहुवचन) के रूप में आया है। अल्लाह तआला उनका आलोक ले गया। इसका तात्पर्य यह है कि जो प्रकाश उनको लाभप्रद था, वह उनसे ले लिया और जिस प्रकार अग्नि बुझ जाने के पश्चात उष्णता-धुंआ व अंधकार शेष रह जाता है। उसी भांति उनके पास हानिप्रद वस्तुएं अर्थात शंका अधर्म और द्वेष रह गए। परिणामस्वरूप न तो वह सन्मार्ग को स्वयं देख सके और न दुसरों की भली बातें सुन सकें और न किसी से कोई भला प्रश्न ही कर सके। ऐसी स्थिति में भले व सन्मार्ग पर उनका लौट कर आना असम्भव हो गया। इसके समर्थन में व्याख्याकारों के कथन सुनिये:- हज़रत इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद और हज़रत मुहम्मद के अन्य मित्रगण कहते हैं, (हुज़ूर) के मदीना आने के पश्चात कुछ लोग इस्लाम में आये किन्तु पुनः मुनाफिक बन गए। उनका दृष्टान्त उस व्यक्ति के सदृश्य है, जो अंधकार में है, फिर अग्नि प्रज्वलित कर प्रकाश प्राप्त करे और आसपास की भलाई-बुराई देखने लगे और ज्ञात

करे कि इस मार्ग में क्या-क्या है ? कि अकस्मात अग्नि बुझ जाये प्रकाश जाता रहे । तब यह ज्ञान नहीं हो सकता कि किस मार्ग में क्या-क्या है ? इसी प्रकार मुनाफ़िक्र शिर्क (मूर्ति पूजा) और कुफ़्र (अधर्म) के अंधकार में है । फिर इस्लाम ग्रहण कर भलाई बुराई अर्थात हलाल-हराम आदि को देखने लगे और पुनः इस्लाम को त्याग कर पृथक हो गये और हराम व हलाल की अच्छाई व बुराई में कोई परख नहीं रही ।

इब्ने कसीर, पारा १, पृष्ठ ६६-६७

मौलाना साहित्र ! अग्नि स्वयं बुझ नहीं गई अपितु अल्लाह द्वारा बुझा कर काफ़िर बनाने का एकमेव षडयंत्र है । यह सब आयत के मूल स्वर के विपरीत रक्षात्मक कपोल कल्पना मात्र ही कही जाएगी । इस विषय में विश्वविख्यात मुस्लिम विद्वान अबू मुहम्मदअली बिन एहमद बिन हज़म इन्दलसी ने अपने ग्रन्थ 'अल मिललो वन्नहल' भाग २ में इसको सिद्ध करने हेतु कुरआन के प्रमाण देते हुए स्पष्ट करने का एक प्रयास किया है कि अल्लाह ही सबको पथभ्रष्ट करता है । लेखक का कथन है कि हर कार्य का कर्ता अल्लाह है । इस सम्बन्ध में 'अलमिललो वन्नहल' भाग २ में हैं कि:-

इस्लाम में एक मोतजला सम्प्रदाय है, उनके प्रतिवाद में अहले सुन्नत जमाअत का सिद्धांत पुष्ट किया है तथा मोतज़ला का खंडन किया है । इस सिद्धांत की सिद्धि हेतु कि सब कर्मों का कर्ता अल्लाह ही है । अपने पक्ष का समर्थन करते हुए एक युक्ति मोतज़ला के सन्मुख प्रस्तुत की, जो कि यह है:-

हम मोतज़ला से प्रश्न करते हैं कि बताओ ! क्या अल्लाह काफ़िर को कुफ़्र और फ़ासिक को फ़िस्क से रोकने पर, जो उसे

गाली दे, उसकी वाणी को मौन करने, उनके दिल पर गुज़ारने पर जिन्होंने उसके पैग़म्बरों की हत्या की। उन हत्याओं को रोकने की शक्ति रखता है? या इन कामों में असमर्थ है। यदि मोतज़ला प्रत्युत्तर में कहे कि वह इनमें से किसी भी कर्म को रोकने में समर्थ नहीं, तो स्पष्ट ही उन्होंने अल्लाह के निकम्मेपन को प्रमाणित कर दिया और यह विवादरहित है कि कुफ़र और उसकी सत्ता की अवहेलना, उसकी कमी और उसकी शक्तिहीनता को प्रमाणित कर उसकी (अल्लाह की) शक्ति को सीमित करना है तथा उसकी सृष्टि को अपूर्ण मानना है एवं स्पष्टतया ही उसका विरोध करना है। क्योंकि वह लोग इस पर तो विश्वास करते हैं कि कुफ़र और फ़िस्क की शक्ति अल्लाह तआला ने विरोधियों को दी। परिणामस्वरूप वह अपशब्दों का प्रयोग व पैगम्बरों की हत्या करते हैं।

यदि मोतज़ला यह कह दें कि अल्लाह उन लोगों को उन सब कार्यों से रोकने की सामर्थ्य रखता हैं, तो उन्होंने निसंकोच स्पष्टतया इस बात को स्वीकार कर लिया कि वह अल्लाह कुफ़्फ़ार के कुफ़र पर बने रहने का आकांक्षी है। वही काफ़िर और कुफ़र को सुरक्षा देने वाला है। साथ ही उस युग का निर्माता है, जिसमें काफ़िर अपने कुफ़र पर और फ़ासिक अपने फ़िस्क पर निर्वाह का अवसर पाता है।

हमारा कथन भी यही है कि वह (अल्लाह) उपरोक्त समस्त कार्यों व कारगुज़ारियों से प्रसन्न नहीं हैं, जिसकी उसने इच्छा की। हमको यह स्वीकार है, किन्तु हम मुअतज़ला पर दुहराते हैं और कहते हैं कि चूंकि तुम इसे नहीं मानते व पसन्द भी नहीं करते और यह मानते हो कि वह रोकने पर समर्थ हैं, तो फिर वह तुम्हारे विचार में उस वस्तु पर कुपित होता है

जिसे उसी ने स्थाईत्व दिया और उसी से असन्तुष्ट होता है, जिसको वह स्थिर रखता है और उसे परिवर्तित नहीं करता। साथ ही उसे ही स्थाई रखता है, जिससे वह स्वयं सन्तुष्ट नहीं.... हम प्रत्यक्ष रूप में जानते हैं कि जो किसी कार्य को रोकने में असमर्थ है और उसने रोका भी नहीं तो उसकी सत्ता व अस्तित्व को भी विचारा · वह यदि किसी से उसके अस्तित्व को न विचारता तो अवश्य उससे रोक देता और कदापि उसे करने न देता ... हम यह कहते हैं कि अल्लाह जो चाहता है, करता है और उपरोक्त कार्य, व जो कुछ वह करता है, वह सब खुदाई (ईश्वरीय) हिकमत–न्याय तथा सत्य है। उससे उसके कृत्य को पूछा नहीं जा सकता और लोगों से पूछा जायगा। अतः स्पष्टतया मोतज़ला का यह कथन असत्य हो गया कि अल्लाह ने कुफर या फ़िस्क गाली देने वाले अथवा पैगम्बरों की हत्या आदि कार्यों का विचार नहीं किया। यदि वह इसके होने का आकांक्षी न होता तो अवश्यमेव उसे रोक देता। जैसा कि उसने प्रत्येक वस्तु को रोक दिया, जिसके होने का वह आकांक्षी नहीं था। इसके समर्थन में इस कथन पर सारी उम्मत (जाति) का मतैक्य होना पर्याप्त है। जो अल्लाह ने चाहा, हुआ और जो उसने नहीं चाहा नहीं हुआ। इस सम्बन्ध में यह एक और हदीस भी है:-

व माशाअल्लाहो काना व मा लम यशाआलम यकुन

अर्थ:-जो अल्लाह ने चाहा वह हुआ, जो नहीं चाहा नहीं हुआ। यह कथन अपनी लोकप्रियता हेतु इसका प्रमाण है कि जो कुछ सृष्टि में हुआ या होगा, चाहे वह कोई भी वस्तु हो, तो उसे अल्लाह ने चाहा और जो कुछ नहीं हुआ व नहीं होगा, तो उसे अल्लाह ने नहीं चाहा। आगे आयत है:-

लेमनशाआ मिन्कुम अंय्यस्तकीम् व मा तशाऊना इल्ला अंय्यशा

अल्लाहोरब्बुल आलमीन् ।

(कुरआन पारा ३० सूरत तकवीर)

अर्थः-यह कुरआन उस व्यक्ति के हेतु शिक्षा है, जो तुम में से उचित होना चाहे और तुम नहीं चाहोगे अतिरिक्त इसके कि पालनकर्ता अल्लाह चाहे ।

इस आयत में कुरआन ने स्पष्ट रूप में यह स्पष्टीकरण कर दिया कि कोई मनुष्य अल्लाह की भक्ति व दृढ़ता नहीं चाहेगा अतिरिक्त इसके कि जब तक अल्लाह स्वयं उसकी भक्ति और दृढ़ता नहीं चाहे । आगे फिर एक और आयतः-

व मा जअल्ना अस्हाबन्नारे इल्ला मलायकतन व मा जअल्ना इद्दतहुम इल्ला फित्नतुन........(से)........यहदि मंय्यशाहो (तक)

(कुरआन पारा २६ रकू १/१५)

अर्थः-हम (अल्लाह) ने नर्क का प्रबन्धक केवल फरिश्तों को ही नियुक्त किया है और उनकी संख्या केवल काफिरों को आपत्ति में डालने हेतु ही निश्चित की है । (अर्थात-ताकि वह यह आक्षेप करें कि इस संख्या में न्यून या अधिक क्यों नहीं ? इसी अवज्ञा के कारण वह दुख के अधिकारी बनें ।) किताब वाले (यहूद व ईसाई) विश्वास करें और मुसलमानों के ईमान में वृद्धि हो और मुसलमान व किताब वाले शंका न करें । ताकि मुनाफ़िकीन व काफ़िर जो दिलों के रोगी हैं, यह कहे कि इस उदाहरण से अल्लाह का क्या प्रयोजन है ? इसी प्रकार अल्लाह जिसे चाहे पथभ्रष्ट करता है और जिसे जाहे, उसे सन्मार्गी बनाता है ।

यह आयत निर्णयात्मक अभिलेख है कि अल्लाह ने नर्क के फरिश्तों की संख्या काफिरों की आपत्ति व संकट हेतु निश्चित

की है, कि वह लोग यह कहें कि अल्लाह का इस व्यवस्था से क्या अभिप्राय है। अल्लाह ने सूचित किया है कि उसने (अल्लाह ने काफ़िरों को संकटग्रस्त और पथभ्रष्ट करने की इच्छा की, तो वह पथभ्रष्ट हो गए। अल्लाह ने उन्हें दिग्भ्रम करने का विचारा और उसी का आदेश दिया, जैसा कि उसने मुसलमानों का मार्गदर्शन करने का उपाय व विचार किया। पृष्ठ ३८३

कुरआन की एक और आयत:-

वा लोशाआ रब्बोका आमना मन् फिलअर्ज़ कुल्लोहुम जमीआ ....। कुरआन पारा ११ रकू १०/१५

अर्थात:—यदि आपका ख़ुदा चाहता तो समस्त पृथ्वीवासी अवश्य ईमान ले आते, तो क्या आप (हजरत मुहम्मद) लोगों को विवश करेंगे ताकि वह मुसलमान हो जायें। किसी भी व्यक्ति हेतु यह सम्भव नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा बगैर ईमान लावे। अल्लाह उन पर नजासत (गन्दगी) स्थायी रखता है, जो कि बुद्धिहीन हैं।.... ....स्वयं अल्लाह ने इस पर स्पष्टिकरण किया है, कि यदि वह चाहता तो समस्त जिन्न और मनुष्य ईमान ले आते। ....अत: निश्चयात्मक रूप से यह सिद्ध हो गया कि अल्लाह तआला ने स्वयं यह नहीं चाहा कि पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईमान लाये। क्योंकि इसमें किञ्चित शंका नहीं। अतएव निश्चयात्मक रूप से उस (अल्लाह) ने उन लोगों से ईमान का विरोध ही चाहा और अवश्य ही वह कुफ़र और फ़िस्क है। .... अतएव अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि उसकी आज्ञा के बगैर कोई ईमान नहीं लाता। पृ. ३८७

.... हम भलिभांति जानते हैं कि अल्लाह का यह क़थन सत्य है कि **व मा काना लेनफ्सिन अन्तोमिना इल्ला बेइज़निल्ला** अर्थात:- किसी भी व्यक्ति के लिये यह सम्भव नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना ईमान लाये। जिसको अल्लाह ने ईमान

का वचन नहीं दिया, तो उस (अल्लाह) ने (उसके हेतु) यह नहीं चाहा कि वह ईमान लाये। जब कि उसने यह नहीं चाहा कि वह ईमान लाये, तो निसन्देह ही उस (अल्लाह) ने यह चाहा कि वह काफ़िर रहे। पृ. ३८८

उपरोक्त सिद्धान्त की पुष्टि हेतु अल्लाह यूसुफ के कथनानुसार करता है। यूसुफ का कथन है कि:—

वा इल्ला तसरेफो अन्नी कैदहुन्ना असबो एलैहिन्ना वा अकुमिनल जाहेलीन। कुरआन, पारा १२ रकू ४.११

अर्थः— यदि तू ही (ऐ खुदा) मुझसे इन स्त्रियों की चालवाजी नहीं बदलेगा, तो मैं इनकी ओर आकर्षित हो बुद्धिहीन हो जाऊंगा। फलतः अल्लाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर उन स्त्रियों की चालबाजी को परिवर्तित कर दिया। पृष्ठ ३८८

उपरोक्त विषय को अग्रेसित करते हुए 'अल्मिललो वन्नहल' में पृष्ठ क्रमांक ३८६–६० में जिन आयतों पर चर्चा है। वह आयतें हम पूर्व में उद्धृत कर उन पर लिख चुके हैं। अतः उन आयतों से आगे की आयतों का आगे वर्णन कर रहे हैं। पढ़िये:—आयतः—

व लो शा अल्लाहो मक्तताललाजीना (से) लाकिन्नल्लाह यफअलो मा यूरीद (तक) कुरआन पारा ३ रकू ३३।१

अर्थः—यदि अल्लाह चाहता तो इसके पश्चात् जब कि उनके पास प्रकटतः निशानियां आ चुकी। उनके अनुसरणकर्ता लोग युद्ध न करते, किन्तु उन्होंने पारस्परिक विरोध किया। फिर उनमें से कुछ मौमिन और कुछ काफिर हो गये। यदि अल्लाह चाहता तो यह लोग युद्ध न करते किन्तु अल्लाह जो चाहता है वही करता है। अल्लाह ने स्पष्ट किया कि यदि वह (अल्लाह) चाहता तो यह लोग युद्ध न करते। अतएव यह स्पष्टतः अनिवार्य हुआ कि उसने चाहा और इच्छा की, कि यह

लोग युद्ध करें। युद्धकर्ताओं के युद्ध करने में निसन्देह पथभ्रष्टता है। अतएव वे अपनी वाणी की प्रामाणिकतानुसार अल्लाह ने पथभ्रष्टता होना और उसका अस्तित्व चाहा। पृष्ठ ३९१

कुरआन की एक और आयत:-

व मंय्यरेदिल्लाहो फित्नतहू फलन्तम्लिका लहू मिन्नलाहे शयअन। इत्यादि। कुरआन पारा ६ रकू ६।१०

अर्थात्:-और अल्लाह जिसे फ़ितने (आपत्ति) में डालने की इच्छा करे, तो आप कदापि उसके लिये अल्लाह पर कोई काबू नहीं रखते। अल्लाह ने स्पष्ट किया है कि उसने फ़ितने में (संकटग्रस्त) पढ़ने वालों के हेतु फ़ितने (संकट) में ग्रस्त करने की आकांक्षा की। वह लोग कुपफार हैं··········इस पर नस (स्पष्ट प्रमाण) है कि अल्लाह ने कुपफ़ार से कुफ़्र होने की इच्छा की। पृष्ठ ३९१

एक और आयत:-

उलाए कल्लाएज़ीना लम्युरेदिल्लाहो अंय्यातहहेरा कुलूबहुम लहुम फिद्दुनिया ख़िज्युं व्वलहुम फ़िल्आख़ेरते अज़ाबुन अज़ीम।

कुरआन, पारा ६ रकू ६।१०

अर्थः-यह वह लोग हैं, कि अल्लाह ने उनके दिलों को पाक (हृदयों को पवित्र) करने का विचार नहीं किया। उनको संसार में तिरस्कृत और कयामत (न्याय) के दिन घोर पीड़ा देगा।

इस प्रकरण में यह अत्याधिक स्पष्ट है कि अल्लाह ने काफ़िरों के दिलों को पवित्र करने की ईच्छा नही की। पृष्ठ ३९१

एक और आयत:-

व लो शा अल्लाहो लजमअहुम अल्लहुदा··············इत्यादि।

कुरआन पारा ७ रकू ४।१०

अर्थः–यदि अल्लाह चाहता, तो उन सबको हिदायत (सन्मार्ग पर एकमत कर देता । इससे प्रकट है कि अल्लाह ने सबको सन्मार्ग दिखाने की इच्छा नहीं की, तो स्पष्ट है कि कुफ़र की इच्छा की जो सन्मार्ग के प्रतिकूल है । पृष्ठ ३६

(आगे आयत है, जिसे हम पूर्व में लिख चुके हैं, उसका अर्थ यहां पढ़िये ।)

.........और यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को सन्मार्ग प्रदान करते परन्तु मुझसे यह कथन सिद्ध हो चुका है कि मैं (अल्लाह) अवश्यमेव नर्क को मनुष्यों और जिन्नों से भरूंगा ।

परन्तु उस (अल्लाह) का यह कथ्य सत्य है कि वह लोग अवश्यमेव कुफ़र (कुमार्ग) करेंगे और नर्कगामी बनेंगे ।

हज़रत इब्राहीम का कथन है कि 'ल इल्लम यह दें रब्बील अकुनन्ना मिनल कोमिज्जालीन' अर्थात्–यदि मेरे रब (ईश्वर) ने मुझे हिदायत (शिक्षा) न की, तो मैं अवश्य गुमराहों (पथभ्रष्टों) की जाति में हो जाऊंगा । पृष्ठ ३६२

आगे हैः—'व लौ शा अल्लाहो मा अशरकू'.........।

अर्थः—यदि अल्लाह चाहता, तो यह लोग शिर्क (मूर्ति पूजा) न करते । अतएव बिना किसी दबाव के यह सिद्ध हो गया कि अल्लाह तआला ने चाहा कि यह लोग शिर्क (मूर्तिपूजा) करें क्योंकि उस (खुदा) ने स्पष्ट किया कि यदि वो चाहे तो यह लोग शिर्क न करें, तो वह लोग मूर्तिपूजा न करते । पृष्ट ३६३

आगे आयत का यह अर्थ है किः–कुछ लोग कुछ लोगों को चिकनी चुपड़ी बातों से धोखा देते हैं, और यदि अल्लाह चाहे तो यह लोग ऐसा नहीं करते अर्थात् धोखा नहीं देते । पृ. ३६

आगे आयत है :—

व कज़ालेका ज़य्यना ले कसीरूम्मिनल मुशरेकीना कतला औला देहुम (से) या फअलूहो (तक) । कुरआन पारा ८ रकू १६

अर्थ:-और इसी भांति उन मुशरिकों के देवत:ओं ने उनकी सन्तान का वध प्राय: रूचिकर वना दिया ताकि वह उनकी बलि दे, और यदि वह (अल्लाह) चाहता तो वह ऐसा नहीं करते। अल्लाह ने इसे और भी स्पष्ट कर दिया कि यदि वह नहीं चाहता कि कतिपय लोग कुछ लोगों से झूठी बातें धोखा देने हेतु न बनायें, तो वह न बनाते। यदि वह (अल्लाह) चाहता कि परस्पर एक-दुसरे के धर्म को खराब न करें और न अपनी सन्तान की बलि देवें, तो न कोई किसी का धर्म ही बिगाड़ता और न कोई अपनी सन्तान की बलि ही देता। अत: प्रमाणित हो गया कि अल्लाह ने चाहा कि उनका धर्म बिगड़ जाये और उनकी सन्तान की बलि हो।

आयत:-व लौ शा अल्लाहो लसल्लतहुम अलैकुम्।
अर्थ:-और यदि अल्लाह चाहता तो उन लोगों को अवश्यमेव तुम पर प्रभावशील कर देता। अत: सिद्ध हो गया कि काफ़िरों ने जिन पैगम्बरों और भले मनुष्यों की हत्याएं की, अल्लाह ने ही उनके हाथों को बलिष्ठ और दृढ़ बनाया। पृष्ठ ३९३-९४

अल्मिलली वन्नहल

इसके आगे इस पुस्तक के लेखक ने कुरआन की जो आयतें लिखी है, उन आयतों को हम अपनें इस ग्रन्थ में अन्यत्र लिख चुके हैं। अत: यहां केवल संक्षिप्त अर्थ लिखना ही पर्याप्त है।

अर्थ:-अल्लाह जिसको सन्मार्गी बनाना चाहता है, उसका हृदय इस्लाम के हेतु खोल देता है और जिसे कुमार्गी बनाना चाहता है उसका हृदय संकुचित कर देता है।........इत्यादि।

आगे एक और आयत है जिसका अर्थ है :-

यदि आपका रब्ब (अल्लाह) चाहता तो समस्त लोगों में मतैक्य कर देता और यह सदैव परस्पर मतभेद में लिप्त रहेंगे।

आगे की और आयतें:-

वादो ऊलाहुमा बअस्ना अलैकुम इबादल्लना उली बासिन शदी-दीन......... से। वलेयदखुलुल मस्जिदा कमा दखलूहो अव्वल मर्रातीन.........इत्यादि। कुरआन पारा १५ रकू १

अर्थ:-हम (अल्लाह) ने तुम पर अपने ऐसे बन्दो को भेजा जो कि अत्यधिक शक्तिशाली और युद्ध कुशल थे। अतः वह नगर में घुसे और पूर्व निश्चयानुसार मस्जिद अक्सा में प्रविष्ठ हों जिस प्रकार कि वह पूर्व मैं पहली बार प्रविष्ठ हुए थे।

उपरोक्त वर्णन पर अल्लाह ने स्पष्टिकरण किया है, कि उसी (अल्लाह) ने काफिरों को मुसलमानों को लूटने हेतु भड़काया और उसी (अल्लाह) से इन लोगों को पहुँचाया, जो मस्जिद अक्सा में प्रविष्ट हुए। जब कि उस मस्ज़िद में प्रवेश होना अल्लाह की अप्रसन्नता का सूचक है। अतएव यह निश्चय प्रमाणित हैं कि प्रत्येक को अल्लाह ने उत्पन्न किया और उस होने की इच्छा की। पृष्ठ ३६

उक्त सन्दर्भ में एक ऐतिहासिक घटना भी विख्यात है जो कि हम अपने पाटकों के ज्ञातव्य हेतु तफसीर इब्ने कसीर से उद्धृत कर रहे हैं:—

बाबुल का बादशाह बख्तेनसर जब शाम देश पर विजयी हुआ। उसने बैतुल मुकद्दस को खण्डहर बना कर वहां के निवासियों की हत्या कर दी। फिर दमिश्क पहुँचा और वहां पर नृशंसनीय हत्याएं प्रारम्भ कर दी। वहां उसके हाथों ७० हजार मुसलमान मौत के घाट उतरे। उल्मा और हाफिज़ों (विद्वानों और कंठस्थकर्ताओं) को और समस्त सभ्य व प्रतिष्ठितजनों को निर्दयतापूर्वक संहार कर दिया और तौरेत के कंठस्थकर्ताओं में कोई भी शेष नहीं रहा।....इत्यादि।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १५, पृष्ठ

एक और आयत:—

अलम् तरा इल्ललज़ी हाज्जा इब्राहीमा फ़ी रब्बेही अनअता हुल्लाहुल्मुल्का। कुरआन, पारा ३ रकू ३५।३

अर्थ:—क्या तुमने उस व्यक्ति की ओर ध्यान नहीं किया, जिसने इब्राहीम से उसके अल्लाह के विषय में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे देश प्रदान किया।

यह इस वर्णन पर नस (विश्वस्त प्रमाण) है कि अल्लाह ने उस काफ़िर को प्रदान किया। अतएव यह सिद्ध हो गया कि अल्लाह ने उसे देश देने का कृत्य किया और उसे ईमानदारों पर शासक बनाया। उम्मत (इस्लाम) में किसी को भी इसमें विरोध नहीं। अलमिललो वन्नहल भाग २, पृ. ३९५-९६

मुसलमानों के विरूद्ध काफिरों की मदद।

मुसलमानों के विरूद्ध काफिरों की मदद अर्थात् विजय में अल्लाह का सहयोग, में अलमिल्लो वन्नहल का लेखक यह प्रमाणित करने का प्रयास करता है कि प्रत्येक कर्म का कर्ता अल्लाह है। काफ़िर जो विजय या सफलता प्राप्त करते हैं, उसमें भी अल्लाह की ही प्रेरणा व सहायता थी। इस एक सूक्ष्म और महत्वपूर्ण विषय में आप देखेंगे कि अल्लाह जिस कार्य को हीन समझता है, उसे ही करने की आज्ञा प्रदान कर देता है और अत्यावश्यक कार्यों से रोक भी देता है तथा रूक जाने पर फिर दण्ड भी देता है। नर्कगामी भी बनाता है। यह एक विचित्र बात है। आगे देखें:—

हम इस विषय में मोतज़ला पर प्रश्न करते हैं। जिस पर सृष्टि के प्रारम्भ से हमारे समय तक अल्लाह की सहायता प्राप्त हुई, जो मुशरिकों और अत्याचारी व नृशंस शासकों को दी गई।

उन लोगों का जो प्रभुत्व और सत्ता ऐसे लोगों पर प्रदान की गई जो कि मुसलमान और प्रतिष्ठित थे। जिनसे यह लोग दूर रहे और ऐसे लोगों को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जिन्होंने मुसलमानों की हत्याओं का विचार किया और उनमें तड़पड़ाहट उत्पन्न करने का कसद (प्रयास) किया। उन लोगों को सफलतापूर्वक सहायता प्राप्त होती रही। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह तआला ही इसका कर्ता है। और जो सम्मानित व प्रतिष्ठित लोगों के शत्रुओं की मृत्यु और उनके शत्रुओं के मुकाबिले पर उनका समर्थन है, उससे मोतज़ला का छुटकारा नहीं कि अल्लाह तआला ने ही इसके होने का विचार किया था। जब कि अल्लाह ने फ़रमाया है:-

व लाकिन करेहल्लाहो अम्बे आसाहुम फसब्बतहुम व कीलकओदू मअल्काएदीन। कुरआन पारा १० रकू ७।

अर्थः-ज़हाद (धर्म-युद्ध) से जी चुराने वालों का भेजना अल्लाह को अंगीकार न था। इसलिए उन्हें रोक दिया और कह दिया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे रहो, तुम ज़हाद में मत जाओ।

अल्लाह तआला ने इस पर ऐसी निर्विवाद स्पष्टोक्ति की कि जो अन्य किसी ताविल (अन्य अर्थ) का भी एतमाल (गुञ्जाइश) नहीं रखता कि अल्लाह ने यह अंगीकार नहीं किया कि मुनाफ़िक इस ज़हाद में सम्मिलित हों। जब कि रसूल (हज़रत मुहम्मद) के साथ रवाना होना अल्लाह ने उन पर अनिवार्य कर दिया था किन्तु अल्लाह ने इसे ही अंगीकार न किया, जिसके होने का विचार किया और उस (अल्लाह) ने इस पर स्पष्टी की कि उसने उन लोगों को ज़हाद में जाने से रोक दिया। फिर वह उनके रूक जाने के कारण अज़ाब (संकट) करेगा। जिसके

सम्बन्ध में उस (अल्लाह) ने सूचना दी कि यह उसी (खुदा) का कृत्य है। उसने स्पष्ट कर दिया और कह दिया कि बैठने वालों के साथ बैठें रहो।............अतः सिद्ध हो गया कि अल्लाह ही ने उनको बैटने हेतु उत्पन्न किया। जो उसको क्रोधित करने वाला और अप्रसन्नता का हेतु है। पृ. ३९६-९७

उक्त गोरखधंधे को सुलझाने के प्रयास में अनेक हदीसकारों भाष्यकारों और कई मुस्लिम विद्वानों ने आज तक सहस्त्रों पृष्ठ काले कर कर इस उलझन को सुलझन में परिवर्तित करने का असफल प्रयास किया है, किन्तु चोर को कहे चोरी कर और शाह को कहे जागते रह' वाली लोकोक्ति कैसे सिद्ध हो ? क्या सत्यानुयाई सज्जनों की समझ में ऐसा अल्लाह या खुदा न्याय-कर्ता-सत्यप्रिय और लोक हितकारी हो सकता है ? जो एक ओर एक आदेश दे और दुसरी ओर उसे पूर्ण अथवा क्रियान्वयन में रोक लगा दे और प्रथमादेश क्रियान्वित न होने पर अपने अनुयाईयों अथवा अपने बन्दों को सदैव के लिए कठोर दण्ड देकर घोर संकटग्रस्त कर दे। अन्तोत्गत्वा यह खुदा कैसा खुदा ?

आगे लिखी है। आयत:--

व ला तोजिब्का अमवालोहुम व औलादोहुम इन्नमा युरीदुल्लाहो अंय्यो अज़िबाहुम बेहा फिद्दुनिया व तज्हका अन्फुसोहुम व हुम काफ़ेरून। कुरआन पारा १० रकू ११।१७

अर्थः-ऐ नबी ! आपको काफ़िरों की सम्पत्ति व उनकी सन्तानों की बढ़ोतरी देख कर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। और न यह समझना चाहिए कि अल्लाह उनसे सन्तुष्ट है, इस हेतु उन्हें प्रतिष्ठा दी गई है। अपितु अल्लाह का मात्र यह विचार है कि उन पर इसी आधार पर दुनियां में अज़ाब (संकट) करें।

(अर्थात्--उसके हेतु ईमान न लायें और जहाद (धर्म युद्ध) में पराजित हों) और कुफ़र की स्थिति में ही मरें। (ताकि कयामत (न्याय दिवस) पर भी उन पर भयंकर संकट हो) यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अल्लाह ने यह इरादा किया कि वह लोग काफ़िर होने की हालत में ही मरें और अल्लाह ने उनके कुफ़र का इरादा किया। पृष्ठ ३६

आगे आयत है :-

लैसा अलैका हुदाहुम व लाकिन्नल्लाहो यहदी मंय्यशाओ।

अर्थः--आप (हज़रत मुहम्मद) के जुम्मे उनकी हिदायत (सन्मार्ग) नहीं हैं, किन्तु अल्लाह जिसको चाहता है, हिदायत करता है। अलमिलली वन्नहले भाग २ पृ. ४१

उक्त वर्णित व इनके पूर्वांकित आयतों में आपने देख लिया कि खुदा के रसूल अर्थात हज़रत मुहम्मद, जो कि अल्लाह के पैगम्बर भी हैं किसी व्यक्ति को हिदायत (सन्मार्ग) नहीं कर सकते। वह तो केवल मध्यस्थता अथवा सन्देहवाहक का ही कार्य कर सकते हैं।

हमने प्रारम्भ से ही इस विषय पर बहुत-कुछ लिखा कि समस्त कर्मों का कर्ता-धर्ता तो एकमेव अल्लाह या खुदा ही है किन्तु यह आवश्यकता अनुभूत हुई कि इस विषय पर किसी एक मुस्लिम विद्वान के विचार भी प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत किये जायें जो कि आपके सन्मुख हमने जनाब अबू मुहम्मदअली बिन अहमद बिन हज़म, इन्दलसी द्वारा लिखित और मौलाना अब्दुल्ला अमादी द्वारा अनुवादित "अलमिलली वन्नहले" से सामग्री प्रस्तुत की है।

उक्त विषय में जो प्रमाण हम पूर्व में लिख चुके हैं, यदि

वह पुनः आ गये हैं, तो वह हमारे प्रमाणों के समर्थन हेतु ही पुनः दुहराये गये समझना चाहिए :

अतः उक्त विषय में इतने अत्याधिक प्रमाण आपके सन्मुख हैं कि आपके सन्मुख यह स्थिति पूर्णरूपेण स्पष्ट हो गई कि मनुष्य जो कर्म या कृत्य करता है, वह सब अल्लाह ही करता है। मनुष्य के अधिकार में कुछ नहीं है। ईमान लाना, कुफ्र पर रहना आदि सब खुदा के ही अधीन हैं। इस स्थिति में सृष्टि में जो भी कुछ भला या बुरा होता है, उसका कर्ता-धर्ता, कुरआन और इस्लाम के सिद्धान्तानुसार एकमेव खुदा ही हैं। सत्यान्वेषी और विवेकीजन ऐसे तत्व को खुदा कदापि नहीं स्वीकार कर सकते ? यह चिन्तन का विषय है। इस विषय को समाप्त करने के पूर्व एक और आयत प्रस्तुत है, जिसमें मुशरिकों द्वारा यह आरोपित किया गया है कि यदि अल्लाह न चाहता तो हम शिर्क (मूर्तिपूजा) न करते। उद्धृत पुस्तक के लेखक ने आगे लिखा है कि:-

हमारे कथन की सत्यता स्पष्ट हो गई। संसार में जो कुछ शिर्क (मूर्ति पूजा आदि) ईमान, हिदायत और गुमराही है। उन सबका होना अल्लाह ने चाहा और अल्लाह ही ने इन सब अमूर (घटनाओं) के होने की इच्छाएं की। अल्लाह तआला उन (काफिरों) के इस कथन से 'यदि अल्लाह चाहता तो हम शिरक़ न करते' क्यों कर इन्कार कर सकता है, जब कि अल्लाह ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप में स्वयं ही सूचित किया है। आयतः-

इत्तबे मा उहेया इलैका मिलरब्बेका ला इलाहा इल्ला हुवा वारिज़ अनिल मुशरेकीन व लौ शा अल्लाहो मा अशरकू।
अर्थातः-ऐ नबी (हज़रत मुहमम्मद) ! आप उस वही (ईश्वरीय संदेश) का अनुसरण कीजिये जो आपके रब्ब (ईश्वर) की ओर

से भेजा जाता है, जिसके अतिरिक्त कोई पूज्यनीय नहीं और मुशरिकों से पृथक रहो। और यदि अल्लाह चाहता तो यह लोग शिरक न करते। निश्चयात्मक हमारे कथन की सच्चाई आलोकित हो गई कि अल्लाह ने उन (काफिरों) के इस कथन का खंडन नहीं किया। जो उन (काफिरों) ने कहा था कि "यदि अल्लाह चाहता तो न हम शिरक (मूर्ति पूजा इत्यादि) करते और न हमारे बाप-दादा और न हम उसके बिना कोई वस्तु हराम (निषिद्ध) करते।"

अलमिललो वन्नहल भाग २ पृष्ठ ४०

उपरोक्त वर्णित विषय में जो कुछ हमने लिखा है, उसकी पुष्टि एवं प्रमाणिकता हेतु उपरोक्त उद्धृण पर्याप्त है। इस विषय में और भी बहुत कुछ सप्रमाण लिखा जा सकता है किन्तु पुस्तक के आकार-प्रकार की वृद्धि की आशंका में यहीं समाप्त कर हम अपने गन्तव्य की ओर अग्रेसित होते हैं।

कुरआन की अगली आयतें:—

औ कसय्ये बिम्मिनस्समाए फीहे जुलुमातुंव्वरादुंव्वबर्क। यजअलूना असाबेअहुम फी आज़ानेहिम्मेनस्सवाएके हजरलमौते वल्लाहो मुहीतुम्बिलकाफेरीन। यकादुल बर्कों यख़तफो अब्सारहुम कुल्लामा अज़ाआलहुमशौ फीहे व इज़ा अजलमा अलैहिम कामू व लौ शा अल्लाहो लज़हबा बेसम्एहिम वा अब्सारेहीम इन्नल्लाह अला कुल्ले शैईन कदीर। कुरआन पारा १ आयत १६-२०

अर्थः—अथवा मुनाफिकों (धर्म-विरोधियों) का उदाहरण ऐसा है जैसे आकाश से वर्षा हो। उसमें अंधकार भी हो, गर्जन भी हो, बिजली भी हो और लोग उस पर चल रहे हैं। वह बिजली की कड़क के कारण अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस लेते हैं

अल्लाह काफिरों को घेरे में लिये हुए हैं। बिजली की यह स्थिति है कि ज्ञात होता है कि अभी अभी उनकी दृष्टि ले ली जाये। जहां बिजली का प्रकाश हुआ कि उसके आलोक में चलना प्रारम्भ किया और जब उन पर अंधेरा हुआ कि फिर खड़े के खड़े रह गए। यदि अल्लाह चाहता तो उनके कान और आँखें सब छिन लेता। निसंदेह अल्लाह समस्त भांति सब वस्तुओं पर सामर्थ्यवान है।

इब्ने कसीर, भाग १, पृ. ६८

यह दुसरा उदाहरण है, जो दुसरी प्रकार के मुनाफिकों हेतु वर्णन किया गया है। यह वह जाति है, जिन पर सत्य प्रकट हो जाता है और फिर कभी सन्देहयुक्त हो जाते हैं, तो शंकास्पद स्थिति में उनका उदाहरण वर्षा के सदृश्य है। अंधेरे से अभिप्राय सन्देह की स्थिति, कुफ़र व निकाफ़ याने फूट परस्ती से है। गरज, जो अपनी भयानक आवाज़ से दिल कँपा देती है। ऐसी ही स्थिति मुनाफिकों की है। उसे सदैव भय-आतंक-घबराहट और विक्षुब्धता ही रहती है। एक स्थान पर यह भी अर्थ है कि वह प्रत्येक आवाज को अपने ही हेतु समझते हैं। दुसरे स्थान पर है कि वह अल्लाह की शपथें ले ले कर कहते हैं कि वह तुम में से हैं, परन्तु वास्तव में वह शक्तिहीन व भयग्रस्त लोग हैं। यदि वह सुरक्षात्मक कोई मार्ग देख लें तो निश्चित ही वह उसमें एकत्रित हो प्रविष्ट हो जाएं। विद्युत से उपमा नूरे ईमान (विश्वास का प्रकाश) की दी है, जो उनके दिलों में किसी समय चमक उठता है तो वह उस समय मृत्यु के भय से अपनी उंगलियां अपने कानों में ठूंस लेते हैं, परन्तु उन्हें कोई लाभ न होगा। यह तो अल्लाह तआला की सामर्थ्य व इच्छा के अन्तर्गत है। ....किन्तु इन काफिरों को झूठलाने के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं है और अल्लाह तआला भी उन्हें उनके पीछे से घेर

रहा है। बिजली का आँखों का उचक लेना, उसकी शक्ति व कठोरता है और मुनाफ़िकों की दृष्टिहीनता, उनके ईमान की निर्बलता है।

इब्ने अब्बास का कथन है कि कुरआन की सुदृढ़ आयतें इन मुनाफ़िकों की वास्तविकता प्रकट कर देगी और इनके गोपनीय दोष भी प्रकट कर देगी और अपने प्रकाश से उन्हें भौंचक्का कर देंगी। उन (मुनाफ़िकों) का प्रकाश पर चलना अर्थात सत्य से परिचित हो इस्लाम का कल्मा पढ़ना है, और अन्धकार में ठहरना अर्थात कुफ़्र की ओर लौट जाना है।

इब्ने कसीर, भाग १, पृष्ठ ६...

उक्त विषय में तफसीर मज़्हरी में है कि—

अली व इब्ने अब्बास और अन्य व्याख्याकारों का कथन है कि 'रअद' फरिश्ते का नाम है, जो बादल को चलाता है, बर्क (बिजली) आग के कोड़े की चमक है। फरिश्ता उस कोड़े से ही अब्र (बादल) को चलाता है। कतिपयों का कथ्य है कि यह आवाज़ बादल को दूर करने की है, और कुछ ने कहा है कि यह आवाज़ फरिश्ते की तस्बीह (भक्ति) की है। मुजाहिद ने फरमाया कि 'रअद' फरिश्ते का नाम है और उसके स्वर को भी 'रअद' कहते हैं।

मज़हरी, पारा १, पृष्ठ ...

उक्त विषय में उपरोक्तानुसार ही मुआलि मुत्तंज़ील पृष्ठ १७ और तफसीर जलालैन, पृष्ठ ५ पर भी व्याख्याएं की गई हैं। इस पर हाशिये में टिप्पणी है कि इसमें द्वितीय कोटि के ही मुनाफ़ेकीन हैं। प्रथम वह कि जो ऊपर से मुसलमान और भीतर से काफ़िर थे, और यह है कि प्रकाश होने पर मुसलमान हो गए और जब अंधकार छाया तो काफ़िर अर्थात कभी कोई

बात सुहाई तो मुसलमान बन गए अन्यथा पुनः जैसे के तैसे काफ़िर ही रहे।

अब प्रश्न यह है कि क्या यह हेराफेरी भी उनमें अल्लाह की इच्छानुसार ही होती थी या वह ऐसा नहीं चाहता और उसकी बेखबरी (अज्ञानता) में ही होती थी ? यह तो नितान्त असम्भव है कि उस (अल्लाह) के ज्ञान के अभाव में संसार में कुछ घट जाए तो इन आयतों को देखते हुए कि काफ़िर कभी ईमान नहीं लाएंगे । इसी आयत के आदेश के सर्वथा विपरीत ईमान भी ले आए, तो पूर्वोक्त आयतानुसार अल्लाह उनके प्रकाश को अचानक ले गया और वह लोग अंधकार में भटक गए। जब वह एक बार ईमान ले आए तो पुनः काफ़िर कैसे हो गए ? क्योंकि कुरआन बार-बार यह दुहराता है कि अल्लाह जिसका मार्गदर्शन कर दे वह कभी भी पथभ्रष्ट हो ही नहीं सकता।

इस प्रकार के विभिन्न वैचित्र्य वाक्जालों से कुरआन भरा पड़ा है । जिसमें किसी भी शंका का सत्य समाधान और किसी भी प्रश्न का कोई सन्तोषप्रद उत्तर नहीं । विविध भाष्यकारों ने मात्र विभिन्न अटकलें लगा कर ही काम चलाऊ कागज़ी खानापूर्ति कर जन साधारण को जैसा-तैसे समझाने अथवा मूल विषय से भ्रमित करने का मात्र प्रयास ही किया है। वास्तविकता और यथार्थ तो कहीं नहीं । मनघड़न्त कहानियों लोकोक्तियों-दंतकथाओं के आधार पर विचारों में शब्दजालिक उलझनें उत्पन्न कर जन साधारण को, खुदा व उसके तथाकथित आदेशों के नाम पर सीधे-साधे, धर्मभीरू, अंधविश्वासी व अज्ञानी लोगों को इस्लास का ज़ामा (शान्ति व मैत्री का आवरण) डाल कर मुसलमान बना डालने व उनको अपनी सीमा (बाड़े) में रोके रखने व अमुस्लिमों से मुसलमानों को श्रेष्ठ एवं लाभदायक स्थिति में सिद्ध करने का यह एक चमत्कारिक प्रयोग

मात्र है। इसी हेतु अपनी सत्ता–प्रतिष्ठा और स्थाईत्व बनाये रखने के लिये एक कपोल कल्पित अल्लाह (ईश्वर) व उसके द्वारा उच्चारित करवाई गई यह विभिन्न प्रकार की भाषाए (आयतें) जो कि एक-दुसरी से संगति नहीं करती है। अल्लाह या खुदा लोगों को पथभ्रष्ट करता है, उन्हें नर्कगामी बनाता है, बिना किसी कारण वह निर्दोषों को पीड़ाएं देता है। वेचारे मनुष्यों की यह वीभत्स और भयंकर दुर्दशा कुरआन और इस्लाम का यह अल्लाह या खुदा ही कर सकता है, गत १३ सौ से अधिक वर्षों से करता आ रहा है और परमात्मा ही जानता होगा कि भविष्य में और कब तक करता रहेगा या इससे मनुष्यों को मुक्ति भी मिलेगी या नहीं ? क्योंकि आज तक विश्व के किसी भी अन्य धर्म संस्थापक या उसके उपास्य ने इस प्रकार की कोई कल्पना तक नहीं की। मनुष्य के अपने कर्मों के कर्मफल पर ही मनुष्य को हानि, लाभ, मान-अपमान व भलाई–बुराई होते हैं। इसीलिए मुंसलमानों के वड़े विद्वान, विचारक, कवि और इस्लाम के महान ज्ञाता डाक्टर श्री सर मुहम्मद इक़लाब ने कहा है कि:-

अमल से ज़िन्दगी बनती है, जन्नत भी जहन्नुम भी;
यह ख़ाकी अपनी सीरत में, न नूरी है, न नारी है।

पाठक बन्धुओं ! हमारा मात्र यह अनुरोध है कि इस्लाम के मूल सिद्धान्तों और तथाकथित ख़ुदाई वाणी (कुरआन) पर "अलमिललो वन्नहल" द्वारा प्रेषित उपरोक्त उद्दरण विचारने योग्य है।

अगली आयत:-

या अय्योहन्नासोबोदू रब्बाकोमुल्लाज़ी खलक़कुम वल्लाज़ीना मिन क़ब्लेकुम ल अल्लाकुम तत्तकून, अल्लाज़ी ज़अला लकोमुलअर्ज़

फ़िराशव्वस्समाआ बेनाअंव्व अन्ज़ला मिनस्समाए मा अन फ़ अख़रजा बेही मिनस्समराते रिज़्क़ल्लकुम फ़लातजअलू लिल्लाहे अन्दादंव्व अन्तुम तालमून् । कुरआन पारा १, आयत २२-२३

अर्थः- ऐ मनुष्यों ! अपने पालनकर्ता की भक्ति करो । जिसने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न किया । कोई अचरज नहीं कि सम्भवतः तुम नर्क से बच जाओ । वह पवित्र शक्ति ऐसी है, जिसने तुम्हारे हेतु भूमि को बिछौना और आसमान को छत बनाया और फिर आसमान से पानी बरसाया । फिर उस पानी के माध्यम से तुम्हारे भोजन हेतु फलों को उत्पन्न किया, जो कि अज्ञात में थे । अतः तुम खुदा के समकक्ष और किसी को मत समझो । और तुम जानते हो ।

इब्ने क़सीर, पारा १, पृष्ठ ७०-७१

शाब्दिक अर्थः- इबादत का वास्तविक अर्थ अति नम्रता और दीनता के हैं, किन्तु कुरआन में जहां कहीं इबादत शब्द प्रयुक्त हुआ है, वहां अद्वैत (एकमेव खुदा) से ही अभिप्राय है । खल्क के अर्थ प्रारब्ध और परिमाण हैं तथा (दुसरा अर्थ) उत्पन्न करना या अविष्कार है व प्रारम्भ करना भी है । लअल्ला का अर्थ होने और न होने में दोनों स्थितियों में प्रयुक्त हो या असमंजसता । अंदाद नद का बहुवचन है इसका अर्थ सदृश्यता व उदाहरण से हैं । आजमुत्तफ़ासीर पारा १, पृ० ११२

उक्त आयत की व्याख्या मज़हरी में इस प्रकार हैः-

ऐ लोगों ! यह सम्बोधन समस्त मनुष्यों हेतु है । चाहे वह उस समय उपस्थिति हो या बाद में होने वाले हों, क्योंकि रसूलिल्लाह की शरीअत (धर्मशास्त्र) हज़रत मुहम्मद के समय से लेकर कयामत (प्रलय) तक पैदा होने वाले मनुष्यों तक से सम्बन्धित है ।

हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है कि कुरआन में जहां कहीं भी 'या अय्योहन्नासो' सम्बोधन आता है, उससे तात्पर्य मक्का निवासियों से हैं और जहां कहीं 'या अय्योहल्लज़ीना आमनू' कहा जाता है, वहाँ मदीनावासियों से अभिप्राय है क्योंकि मक्कावासियों में अधिकांश काफ़िर थे और मदीना-वासियों में मुसलमानों का बाहुल्य था। .... और इबा-दत (भक्ति) की आज्ञा मौमिन और काफ़िर (मुसलमान और गैरमुस्लिम) सभी को एक समान है। अन्तर केवल यह है कि काफिरों को ईमान लाने, (अर्थात मुसलमान बनने) के पश्चात है, क्योंकि ईमान (विश्वास) इबादत [भक्ति] की शर्त है। हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि कुरआन में इबा-दत (भक्ति) से अभिप्राय अद्वैत (एक ही खुदा) है। काफ़िरों को यह आज्ञा है कि तुम खुदा की एक्यता स्वीकारो और मुसलमानों को आदेश है कि तुम एक ही खुदा की मान्यता पर दृढ़ रहो। जिसने तुम्हें उत्पन्न किया। .... और उन्हें उत्पन्न किया जो तुम्हारे पूर्व में थे। .... सम्भवतः तुम बचो का दुसरा अर्थ यह किया कि इबादत के समय इस प्रकार की आशा रखो कि हमें अल्लाह तआला के अज़ाब (संकटों) से छुटकारा होगा। .... जिसने बना दिया तुम्हारे हेतु भूमि को बिछौना, जिस पर तुम ठहर सकते हो और आसमान का खेमा [तम्बू] लगा दिया और आसमान से पानी उतारा। फिर निकाला पानी के म:ध्यम से तुम्हारे हेतु भोजन और इसीं प्रकार वनस्पतियों का उत्पन्न होना अल्लाह की सामर्थ्य से है। .... सो न ठहराओ किसी और अन्य को अल्लाह तआला के समकक्ष। अभिप्राय यह है कि अल्लाह के ही समान किसी और अन्य की भक्ति न करो

लगो। .... वस्तुतः तुम जानते हो कि तुम विद्वान और बुद्धिमान हो।

तफसीर मज़हरी, पारा १, पृष्ठ ५७–५८

प्रश्न यह है कि संसार में जो व्यक्ति हज़रत मुहम्मद को ईश्वरीय दूत या सन्देशवाहक न स्वीकारता हो तो क्या उसकी भक्ति अल्लाह स्वीकारेगा ? भक्ति तो विश्व में इस्लाम के अतिरिक्त ईसाई--यहूदी--पारसी--हिन्दू एव अन्य सैंकड़ों सम्प्रदायों में दिन–रात प्रचलित है, क्या उन्हें इस्लाम के सिद्धान्तानुसार मुक्ति मिलना सम्भव है ? हज़रत मुहम्मद को अपना त्राता या मार्गदर्शक माने बिना क्या उनके हेतु स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे। भक्ति मार्ग में बिना इस्लाम को स्वीकारे जो भक्तगण कबीर--नानक--रैदास--दादू और अन्य सैंकड़ों भक्तजन हुए क्या इन सबको मुक्ति प्राप्त हो सकेगी ? और क्या कुरआन का अल्लाह या खुदा इन्हें स्वर्ग का अधिकारी स्वीकारेगा ?

इस वृहद प्रश्न का उत्तर यद्यपि उपरोक्त आयत में समाहित हैं, जो कि हमने तफसीर मज़हरी से हज़रत इब्ने अब्बास आदि के कथ्य उद्धृण कर प्रस्तुत कर दिये हैं, परन्तु कुरआन की एक और आयत प्रामाणिक स्वरूप में प्रस्तुत है, जिसमें इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट एवं दृढ़तापूर्वक प्राप्त होता है। प्रस्तुत है यह आयतः—

व मंय्यक्फुर बेही मिनलएहज़ाबे फ़न्नारो मौएदोह।

कुरआन, पारा १२, रकू २/२

अर्थः– और जो व्यक्ति दुसरे सम्प्रदायों में से इस [इस्लाम] को नकारेगा तो उनके हेतु ईश्वरीय आज्ञा नर्क का स्थान है।

अहज़ाब शब्द की व्याखया यह है कि इस्लाम के अतिरिक्त अन्य

समस्त सम्प्रदाय है। हज़रत अबू हुरैरा से वर्णित है कि रसूलि-ल्लाह ने फरमाया कि मुझे उस ज़ात (सत्ता) की सौगंध है, कि जिसके हाथ में मुहम्मद के प्राण हैं। इस उम्मत (इस्लाम) के निमन्त्रण में से जो कोई और जो यहूदी व ईसाई इस स्थिति में मरेगा कि जिस हिदायत (सन्मार्ग। को मुझे देकर भेजा गया है, वह उस पर ईमान नहीं लाया होगा, तो वह अवश्यमेव नर्क-गामियों में से होगा। (हदीस मुस्लिम की रवायत)

तफसीर मज़हरी भाग ६ पारा १२ पृ. ३४

उक्त आयत के पूर्वोक्त आयत के सम्बन्ध में तफ़सीर हक्कानी में है कि कुफ़्फार (गैरमुस्लिम) की भक्ति बिना ईमान के उचित नहीं।..........अर्थ यह कि ऐ काफिरां! भक्ति करो विश्वास लाकर, नमाज पढ़ो वज़ू कर के।............इस आयत में अल्लाह ने भक्ति को आज्ञा दो थो और अल्लाह के सन्मुख स्वी-कार और अस्वीकार होने वाली भक्ति का अन्तर केवल बुद्धि से नहीं हो सकता। इसमें नबी (पैगम्बर) और इलहाम (ज्ञान) की सख्त आवश्यकता है। जब तक कि नबी (दूत का दामन हाथ में न होगा कोई व्यक्ति इस अथाह समुद्र से पार नहीं हो सकेगा। .... और इसीलिए धर्मशास्त्र में यह निश्चित है कि मनुष्य कीं मुक्ति हेतु नबव्वत (पैगम्बरी) का मानना भी शर्त है। एकाकी तौहीद (खुदा को एक मान कर भक्ति करना) और प्राकृतिक नियमों का पालन मात्र हीं पर्याप्त नहीं।

तफसीर हक्कानी, पारा १, पृष्ठ ५३

एक और आयतः-

व मंय्यब्तग़े गैरलइस्लामे दीनन फ़ लंय्युक्बला मिन्हो व हुवा फ़िल आख़िरते मिनल्ख़ासिरीन।

कुरआन, पारा ३, रकू ६/१५

अर्थः-और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को स्वीकारेगा तो वह उससे स्वीकृत न होगा और वह कयामत (प्रलय) में नष्ट होने वालों में से होगा।

तफसीर इब्ने कसीर पृष्ठ ७८, तफसीर हक्कानी पारा ३ पृ. ७२, तफसीर मजहरी, भाग २ पृष्ठ २८५ और तफसीर मुवाहिबुर्रहमान पृष्ठ ३५१ से ५३ में लिखा गया है:- दीने खुदा (इस्लाम) के अतिरिक्त जो व्यक्ति किसी और मार्ग पर चलें, उसके कर्म और स्पष्ट शुभ कर्म कदापि स्वीकार न होंगे और वह न्याय के दिन हानियुक्त होगा। जैसे हदीस में हजरत मुहम्मद का आदेश है- जो व्यक्ति ऐसा कर्म करे, जिस पर हमारी आज्ञा न हो, वह मरदूद (तिरस्कृत) है। ....इस्लाम स्वीकार किये बिना किसी की भक्ति स्वीकार न होगी।

जब इस्लाम ग्रहण किए बिना किसी की भी मुक्ति संभव ही नहीं है, तो फिर उपरोक्त आयत में अल्लाह ने जो उपदेश व आदेश दिया है उसका क्या प्रयोजन है, वह निरर्थक है ? स्पष्ट ही उक्त आयत मात्र शब्द व्युह ही है । जिसके माध्यम से भोले भाले और धर्मभीरू मनुष्यों को बहकाया जा सकता है। क्योंकि शुभ कर्म का नाम सुन कर ही प्रत्येक ईश्वर भक्त और भावुक मनुष्य स्वयं प्रेरणा से ही नतमस्तक हो जाता हैं, किन्तु कुरआन और इस्लाम के नबी हज़रत मुहम्मद ने शुभ कर्म को साम्प्रदायिकता के गाढे रंग में रंग कर इस शब्द की सार्वभौमिकता व सम्पन्नता को नष्ट कर दिया और कह दिया कि हमारे द्वारा निर्देशित व प्रतिपादित कर्मों के अतिरिक्त अन्य समस्त कर्म हीन है, जो कि अल्लाह के द्वारा स्वीकृत न होंगे। क्योंकि कुरआन के भाष्यकारों एव हदीसों व कुरआन के माध्यम मे इस्लाम के मूल सिद्धान्तों से अपरिचित सामान्य ईश्वरप्रेमियों और विश्वासियों

को तो कुरआन का यह उपदेश सुनने मात्र में अत्याधिक रूचिकर ही रहेगा। उन्हें क्या पता है कि वास्तविकता और यथार्थ लोहे के चने के समान है, जो कि सरलता से नहीं चबाये जा सकते। इसके हेतु तो इस्लाम के धर्म-शास्त्रों के निर्देशानुसार ही स्वयं को एक अलग ढंग में ढालना पडेगा जो कि कुरआन में इस्लाम के लिये अंकित है।

इसी आयत में भूमि को बिछौना और आसमान को छत बनाने का भी उल्लेख है। जब कि आज वर्तमान युग में विज्ञान चरम सीमा पर है और आज का मनुष्य स्वनिर्मित यन्त्रों से करोड़ों मीलों की यात्रा सम्पन्न कर चन्द्रमा पर जा पहुँचा है व अन्यान्य ग्रहों की ओर यात्राओं की सफलता हेतु वैज्ञानिकों के प्रयास जारी हैं किन्तु इस्लाम और उसके ग्रंथ आज भी आसमान को छत ही बखान रहे हैं, जब कि व्योमयात्रियों को अपने नभ मार्ग में कहीं भी कोई छत नहीं मिली कि जिससे दुर्घटना से आशंकित होते। परन्तु कुरआन में अंकित आदेश आज तक मुसलमानों पर पूर्ण प्रभावशील और अखण्ड सत्ता स्थापित किये हुए हैं। क्योंकि उन्हें कुरआन के खुदा ने भयभीत कर रखा है कि यदि कुरआन के विपरीत कुछ भी कहोगे–सुनोगे या मानोगे तो काफ़िर हो जाओगे और फिर कयामत पर घाटे में रहोगे। इसी लिए आज भी मुसलमान विवश है, फिर विज्ञान भले ही चाहे जितने रहस्यों का उद्घाटन क्यों न करें। अगली आयतः–

व इन्कुन्तुम फ़ी रै बिम्मिम्मा नज्ज़लना अला अब्देना फातू बिसूरतिम्मिम्मिस्लिह। वदऊ शुहदाआ कुम्मिन्दुनिल्लाहे इन्कुन्तुम स्वादेकीन्। फ़ इल्लम तफ़अलू व लन तफअलू फत्तकुन्नारल्लती व क़ूदुहन्नासो व ल्हेज़ रातो ओइद्दत लिल्काफेरीन्।

कुरआन, पारा १, आयत २४-२

अर्थः–यदि तुम इस पुस्तक (कुरआन) के सम्बन्ध में असमंजस में हो, जो हम (खुदा) ने अपने विशेष भक्त (हज़रत मुहम्मद) पर उतारी है। फिर तुम इसके सदृश्य एक सीमित अंश (सूरत-तीन आयतोंतक) बना लाओ और अपनी सहायता हेतु उनको भी ले आओ जिनको तुमने अल्लाह के अतिरिक्त ढूंढ रखे हैं, यदि तुम सच्चे हो। यदि तुम यह कार्य न कर सके और कयामत (प्रलय) तक भी न कर सकोगे तो नर्क से बचते रहो, जिसका ईंधन और पत्थर हैं। जिसे काफिरों (अमुस्लिमों) के हेतु तैयार कर रखा है। इब्ने क़सीर पारा १ पृष्ठ ७४

उक्त आयत की व्याख्या में तफसीर इब्ने कसीर में है कि काफिरों (गैर मुसलमान) को सम्बोधित कर कहा कि हम अल्लाह ने जो पाक कुरआन अपने बन्दे (भक्त) हज़रत मुहम्मद पर उतारा है। यदि इसे तुम हमारी (अल्लाह की) वाणी नहीं मानते तो तुम और तुम्हारे सहायक सब सम्मिलित हो पूरा कुरआन तो नहीं केवल एक सूरत ही इस जैसी बना लाओ। जब तुम इसे नहीं कर सकते और इससे असमर्थ हो तो फिर इस कुरआन के ईश्वरीय वाणी होने में क्यों सन्देह करते हो?

तफसीर इब्ने क़सीर पारा १ पृष्ठ ७४

तफसीर कुरानुलअज़ीम पृष्ठ ४०, मुआलिसुत्तन्जील पृष्ठ १८ और तफसीर जलालैन पृष्ठ ६ पर भी उक्त आयत की व्याख्या उपरोक्त सदृश्य ही है।

इसी भाव की पुष्टि एवं समर्थन हेतु एक और आयतः—
अम यक़ूलु नफ्तराहो, कुल फातू बेसूरतिम्मिस्लेही वदऊ मनिस्त-तातुम्मिन दूनिल्लाहे इन कुन्तुम स्वादेकीन्।

कुरआन, पारा ११, रकू ४/६

अर्थः--क्या यह कहते हैं कि बाँध लिया है उस (कुरआन) को। कह (हज़रत) पस, ले आओ एक सूरत इसके समान और जिसको बुला सकते हो, बुलाओ अतिरिक्त अल्लाह के। यदि तुम सच्चे हो। कुरआन पारा ११ पृष्ठ २०

उक्त आयत की व्याख्या करते हुए तफ़सीर मज़हरी ने लिखा है कि क्या यह लोग यूं कहते हैं कि आप (हज़रत मुहम्मद) ने स्वयं (कुरआन) बना कर अल्लाह के नाम से प्रस्तुत कर दिया। आप (हजरत मुहम्मद) कह दीजिये कि फिर तुम भी इस जैसी एक सूरत ही बना लाओ। जो कुरआन के समान सुसंस्कृत और स्थिर अर्थयुक्त हो। तफसीर मज़हरी पृष्ठ ५०

पाठक बन्धुओं ! देखा आपने कि उक्त दोनों आयतें एक समान, एक ही स्वर में चुनौती दे रही हैं कि कुरआन के सदृश एक-एक सूरत ही वनाकर ले आओ, किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि इसी कुरआन के पारा १२ रकू २।२ में इस घोषणा व चुनौती का रूप परिवर्तित कर एक सूरत के स्थान पर दस सूरतें बना कर लाने की मांग कर दी गई है। ऐसा लगता है कि हज़रत मुहम्मद और कुरआन द्वारा दी गई चुनौती को समकालीन विवेकशील और बुद्धिजीवियों ने स्वीकारा होगा और कई लोगों ने एक-एक नवीन सूरत की रचना कर हज़रत मुहम्मद की उक्त चुनौती का प्रत्युत्तर दिया है। इस सामायिक संकट से बचने हेतु कुरआन में प्रयुक्त चुनौती भरी आयतों की भाषा में संशोधन एवं परिमार्जन कर डाला और उसी आयत को इस ढंग से कहा।

आयतः—

अम युकूलु नपतराहो कुल् फातू बेअशरे सुवरिम्मस्लेही मुफतरयातिव्वदऊ मनिस्ततातुम्मिन दुनिल्लाहे इन कुन्तुम स्वादेकीन,

कुरआन पारा १२ रकू २/२

अर्थः— क्या उस (हजरत मुहम्मद) के सम्बन्ध में यह कहते हो आपने उस (कुरआन) को स्वयं बना लिया है। (अल्लाह हज़रत मुहम्मद को कहता है कि) आप उत्तर में कह दीजिए कि यदि यह तेरा (हज़रत मुहम्मद का) बनाया हुआ है, तो तुम भी ऐसी दस सूरतें स्वयं बना कर ले आओ और अपनी सहायता हेतु अल्लाह के अतिरिक्त जिसको चाहो, बुला लो। यदि तुम सच्चे हो। तफसीर इब्ने कसीर, पारा १२ पृ. ७

यहां पहली सूरतों में लिखा गया था कि एक-एक सूरत बना कर लाओ, परन्तु इसमें लिखा गया है कि दस सूरतें बना कर लाओ। ईश्वर की वाणी में इतना अन्तर नहीं हो सकता है। ऊपर सूरत बक़र व सूरत युनूस के प्रमाण है। अतः यह देखना आवश्यक है कि सूरत बकर, युनूस और हूद में कौन सी सूरत पीछे उतरी, ताकि यह पता लग सके कि कौनसी सूरत पहले व कौन सी बाद में और कौन सी मध्य में उतरी मानी जाती है।

तफसीर इत्तिकान में इब्नुल फरीश की फज़ाएलुल कुरआन से लेकर जो कुरान की सूरतों का क्रम लिखा है, जो कुरआन के उतरने की शृंखला बताई गई है उसमें :- (१) युनूस (२) हूद और (३) बकर इत्तिकान पृ. १६ और बुरहाने जावरी के विख्यात कसीदा में पहले युनूस फिर हूद व फिर बकर पृष्ठ ६३ तफसीर इत्तिकान। उब्य्यन बिन काब के कुरआन में पहले बकर फिर नूसयु व फिर हूद पृष्ठ १७२ अब्दुल्लाह बिन मसऊद की कराअत में पहले युनूस फिर हूद और फिर बकर पृष्ठ १७३। वर्तमान कुरआन में पहले बकर फिर युनूस व फिर हूद है।

पहले दोनों प्रमाणों में युनूस पहले हूद उसके बाद और बकर उसके पीछे है। तीसरे प्रमाण में पहले बकर फिर युनूस फिर हूद है। चौथे प्रमाण में पहले युनूस फिर हूद और फिर

बकर है। और वर्तमान कुरआन में पहले बकर फिर युनूस और फिर हूद है।

वर्तमान कुरआन के सम्बन्ध में हम लिख चुके हैं कि इसकी जो शृंखला है वह कुरआन के उतरने क्रमानुसार नहीं हैं। और यह एक मान्य सिद्धान्त है। इसी प्रकार उब्य्य बिन काब का क्रम भी ठीक नहीं है। बाकी तीनों एक ही बात लिख रहे हैं कि युनूस पहले उसके पश्चात हूद और उसके उपरान्त बकर है। इससे यह सिद्ध हुआ कि पहले भी एक सूरत मांगी गई है पीछे भी एक सूरत माँगी गई है और बीच में १० सूरतें मांगी गई है। क्या इतना विरोधाभास ईश्वरीय वाणी में हो सकता है ? वास्तविकता तो यह है कि १० सूरतों की मांग मध्य में आती है। अब यदि १० सूरतों को बनाकर लाना प्रमाण माना जाता है तो एक सूरत बनाकर लाने वाली आयतें निष्प्रयोजन हो जाती हैं । और यदि एक-एक सूरत बनाकर लाना प्रमाण माना जाय तो दस सूरतों वाली आयत निरर्थक साबित होगी। कुरआन के मानने वालों के समक्ष यह कठिनाई है कि वे कुरआन की कौन सी आयत माने और कौन सी नहीं ? इस अवस्था में कुरआन की इस आयत पर दृष्टि डालना चाहिये कि:-

'ला तब्दीला लेकले मोतल्लाहे।'

अर्थात्:-अल्लाह के वचनों में कोई परिवर्तन नहीं होता है परन्तु यहाँ तो स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। परन्तु कठिनाई यह है कि बीच वाली सूरत में १० आयतें बनाकर लाने को लिखा है। यदि पहली आयत में १० आयत बनाकर लाने की आज्ञा होती और पीछे एक आयत बनाकर लाने की आज्ञा होती तो यह माना जा सकता था कि १० आयतों के बदले एक आयत बनाकर लाने की आज्ञा प्रदान कर दी है। परन्तु यहां पर तो

मध्य में १० आयतें बनाकर लाने का आदेश दिया गया है। इस कारण कोई भी व्यवस्था सिद्ध नहीं होती।

यदि कहो कि आयत के आरम्भ में है कि:-"यदि तुमको शक है तो यह बात भी असत्य है। अरब वालों ने कब कहा था कि हमें सन्देह है। वे तो खुल्लमखुल्ला कुरआन को मोहम्मद साहब की वाणी और उपज कहते थे। उधर तो मोहम्मद सा. ने यह चुनौती दी कि एक सूरत, दस सूरत और एक सूरत बनाकर लाओ जो इसके समान हो। उधर नजर बिन हारस ने उत्तर दिया कि जिसको कुरआन ने स्वयं स्वीकार किया है।

"इज़ातुल्ला अलैहिम आयातुना कालू कद समेना लौ न शाओ लकुल्ना मिसला हाज़ा इन हाज़ा इल्ला असा तीरु-लअव्वलीन।

पारा ६ रकू ४/१८ सूरते इन्फाल

अर्थात्:-सुनी हमने तेरी वाणी (यद्यपि कुरआन कहता हैं कि काफिरों के अल्लाह ने कान बंद कर रखे हैं, फिर कैसे सुना) नजर बिन हारस ने और इसका उत्तर भी दे दिया कि यदि हम चाहें तो ऐसी वाणी बना सकते हैं। (परन्तु) यह तेरी वाणी नहीं है, पुराने लोगों के किस्से-कहानियां है। हमें भी यह किस्से याद है। तफसीर कादरी भाग १, पृष्ठ ३६५

हजरत मुहम्मद सा. की घोषणा का उत्तर नजर बिन हारस ने यह दिया कि यह सब पुरानी कहानियां हैं। हमें भी ऐसी कहानियां याद है। हम भी ऐसी कहानियां सुना सकते हैं। नजर बिन हारस ने केवल उत्तर ही नहीं दिये अपितु वह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने के लिये फ़ारस के शहरों में व्यापार करने गया और वहां से रुस्तमो इस्फन्दयार के मूल किस्से लिये और उनका अरबी भाषा में अनुवाद करके मक्का में ले आया

और कहने लगा कि यह कहानियां उनसे उत्तम है जो हजरत मुहम्मद पढ़कर सुनाया करते है ।

तफसीर कादरी पृष्ठ ३६१

हज़रत मुहम्मद साहब ने तो कहा था कि एक या दो सूरते बनाकर लाओ परन्तु नज़र तो कुरआन के आकार का ग्रन्थ बनाकर लाया और मक्का में आकर दावा किया कि मेरी कहानियां उत्तम है । केवल नजर ने ही नहीं जैसा कि हम आगे वर्णन करेंगे तथा कुरआन परिचय के प्रथम भाग में कर भी चुके हैं कि अनेकों ने इस चुनौती का सुन्दर उत्तर दिया । परन्तु मुस्लिम शासन होने पर सब मिट गये । पाठकों की जिज्ञासा पूर्ति के लिये हम नजर बिन हारस के उत्तर पर विचार करते हैं:-

इब्ने कसीर ने बहुत स्पष्ट लिखा है । उसी की भाषा सुनिये:-ऊपर लिखी आयत की व्याख्या करते हुए इब्ने कसीर ने लिखा:-यह नजर बिन हारस फारस देश की ओर गया था वहां के ईरानी बादशाहों व रुस्तम व इस्फन्दयार की गाथायें पढ़ आया था । जब वह लौटकर आया तो रसुलुल्लाह पैगम्बर बन चुके थे । जब हज़रत मो. लोगों को कुरआन सुनाते थे और जब हज़रत अपने प्रचार को समाप्त कर देते तो यह नज़र आ जाता और वह रानी-बादशाहों का इतिहास सुना कर कहता बताओ किसने अच्छी कहानियां लिखी है मैंने या मुहम्मद ने ?

तफसीर इब्ने कसीर पारा ९ पृष्ठ

नजर बिन हारस ने हजरत की नाक में दम कर दिया लोगों से पूछता कि बताओ किसकी कहानियाँ उत्तम हैं ? वह हज़रत मुहम्मद के पीछे-पीछे ही रहता और लोगों को अपनी कहानियां सुनाता ।

नज़र बिन हारस के ही नहीं और भी कई लोगों ने कुर-आन लिखे, जिनका प्रमाण हम आगे प्रस्तुत करेंगे परन्तु नज़र ने तो कमाल ही कर दिया कि कुरआन शरीफ को भी मुंह खोलना पड़ा कि उसकी वाणी में भी अवश्य कोई प्रभाव है, तभी वह अरबों को अपनी कहानियां सुना-सुना कर यह पूछने का साहस करता है कि बताओ किसकी कहानियां उत्तम है ? इससे स्वयं सिद्ध होता है कि उनमें उत्तमता अवश्य होगी ?

कुरआन-लेखक और मुसलमानो के इस आग्रह को देख कर हम आश्चर्य में है कि वह बारम्बार यह दुहराते हैं कि कुर-आन के समान कोई नहीं बना सकता। अन्य लोगों ने जो कुर-आन बनाये वह तो फिर विचार किया जायेगा। नज़र बिन हारस की घटना हमने लिखी परन्तु यह तो 'दीपक तले अंधेरे' जैसी ही बात है कि स्वयं कुरआन में जो दुसरे लोगों कीवाणियां है, आयतें हैं उसे मुसलमान दिन-रात पढ़ते हैं और उन्हें अनु-भव नहीं होता कि यह कुरआन में अन्य लोगों की वाणियां हैं। इस कुरआन में हज़रत उमर की, फरिश्तों की, शैतान की, मनुष्यों की, फिरऔन की, मूसा की व अन्य पैगम्बरों की अरब के काफिरों की जो वाणियां है। मुसलमान विद्वानों ने तो इसे परख कर स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है किन्तु साधारण मुसल-मान तो इन सबको खुदा की वाणी ही मानते और नित्य पाठ करते हैं और आंख मूंद कर इसके आगे नतमस्तक होते हैं। इससे बडा अंधकार और क्या हो सकता है ?

विद्वानों का क्या स्वयं अल्लाह तआला को भी दिखाई नहीं दिया कि एक पूरी सूरत के बराबर जो अन्यों की वाणी कुरआन में संग्रहित है, यह खुदा की वाणी नहीं है। हम विस्तार से इस विषय पर कुरआन परिचय के प्रथम भाग में प्रकाश डाल चुके हैं। पाठक स्वयं उसे पढ़ लें । परन्तु पाठकों की जानकारी हेतु

हम नज़र बिन हारस के कलाम (वाणी) के कुछ उद्दरण प्रस्तु
करते हैं:-
कालू कद समेअना लौ नशाओ लकुल्ला मिस्ला हाजा इन...
नज़र बिन हारस की यह आयत हम पूर्व में लिख चुके हैं, जो
कुरआन पारा ६ सूरत इन्फाल रकू ४।१८ हैं।

कुरआन में काफिरों का कलाम और देखिये:-
लन्नोमिना लका हत्ता तफ्जुरा लना मिनल अर्ज़ यम्बुअन
तकूना लका जन्नतुमिम्ननखी लिव्वंइन बिन फतुफज्जेरल अनहा
खेलालहा तफ्ज़ीरा। औ तुस्केतस्समाआ कमा जअम्ता अले
किसंफन औ तातैया बिल्लाहे वल मलाएकते कबीला।
यकूना लका बैतुम्मिन जुखरूफिन औ तरफा फिस्समाए।
लन्नोमिना लिरूकब्बेका हत्ता तोनज्जिलो अलैना किताबन
करअहो। कुरआन पारा १५ रकू १०

मुसलमान जन विचार करें कि यह कलाम (वाणी) खु
का है या मक्का के काफिरों का कलाम है। उपरोक्त आयतें कु
आन के ३० वें पारे की अन्तिम सूरतों से बड़ी है। अब हज़
उमर की आयत देखें:-

मनकाना उदुब्बुल्लिल्लाहे व मलाएकतेही व रूसुलेही वा जिब्री
व मीकाला फइन्नल्लाहा उदुव्वांल्लिलकाफ़रीन।
कुरआन पारा १ रकू १२

इसके पश्चात फ़िर काफिरों का कलाम है:-
मालेलहाजरंसूले याकेलुत्तआमा वा यम्शी फिल अस्वाके लौ
उन्ज़ेला इलैहे कन्जुन औ तकूनो लहू जन्नतय्याकुलो मिन्हा।
कुरआन पारा १८ रकू

शैतान की वाणी पढ़िए:-

रब्बे बेमा अग्वैतनी ल ओजय्येनन्नालहुम फिलअर्ज़ व ला उग़्वे-यन्नहुम अजमईन। इल्ला एबादका मिन्हुमुल्मुख्लेसीन।

कुरआन पारा १४ रकू ३/३

फिर शैतान ने कहा:-

काला अना खैरुम्मिनहो, खलक्तनी मिनन्नारिव्व खलक्तहु मिनतीन। कुरआन पारा २३ रकू ४/१३

उपरोक्त आयतें खुदा के अतिरिक्त काफिरों, नज़र बिन हारस, हज़रत उमर और शैतान के कलाम हैं। क्या इनमें और कुरआन की अन्य आयतें जिन्हें आप खुदा की वाणी मानते हैं, क्या अन्तर दृष्टिगोचर होता है? जो साधारण मुसलमान नित्य प्रतिदिन कुरआन का पाठ करते हैं, उन्हें तो यह भी खुदा का कलाम ही प्रतीत होता है। जब कुरआन में ही ऐसे अनेक उदाहरण हैं, तो फिर कुरआन के खुदा व मुसलमान अन्य लोगों से अरबी में सूरत बनाने की मांग क्यों कर रहे हैं? क्या उन्हें अपनी कुरआन नहीं दिखाई देती है, जो अन्यों को चुनौती देते हैं।

इस प्रकार की अनेक आयतों का उल्लेख हम कुरआन परिचय के प्रथम भाग में सविस्तार में लिख चुके हैं, यहां उनको दुहराना आवश्यक नहीं है।

अन्य कुरआनों के लेखक—

अस्वद अंसी

हज़रत मुहम्मद के अन्तिम हज्ज के पश्चात जब आप बीमार हो गए उसकी सूचना पाकर जो लोग इस्लाम त्याग गए

थे, उनका आगेवान (नेता) अस्वद अंसी था। वह बड़ा चमत्कारी और कहानी कहने में अत्याधिक प्रवीण था। बहुत मधुभाषी तथा गम्भीर था। उसके पास एक गधा था। जब वह गधे को कहता कि खुदा को नतमस्तक हो जा तो वह सिर झुका कर सिज़दा करता था। बैठने व खड़े होने को कहता तो उसकी आवाज पर बैठता-खड़ा हो जाता था। नज़रान निवासियों और कबीला मज़्ज़ह ने उसकी इस आज्ञानुवर्तिता को स्वीकार कर लिया। उसके वैभव की यह स्थिति थी कि विजय और प्रभुत्व उसकी प्रतिक्षा में ही रहते थे। यहां तक कि सम्पूर्ण देश उसके प्रभाव में आ गया। हज़रत मौत से ताइफ तक उत्तर में बहेरल से अमना और दक्षिण में अदन तक का मालिक बन गया। उसकी प्रतिष्ठा देख कर यमन के अधिकांश निवासी उसे पैगम्बर मानने लग गए। इस वैभव व प्रतिष्ठा को देख कर उसकी स्त्री ने आज़ाद से सम्पर्क कर फीराज़ से रात को सैंध लगा कर उसको कत्ल करवा दिया। अस्वद ने पैगम्बरी का दावा किया था। इसीलिए उसने अपनी वाणी (रचनाओं) को लिख रखा था। कुरआन के सदृश उसने अपनी पुस्तक का नाम "बुरहाने मुकद्दस" रखा था। उसकी एक आयत:–

वल्मायसाते मैसन वद्धारेसाते दर्सन येहिव्वूना जमअन वा फुराद अला कलाए सा बिज़िम्ब्वा वा सुफ़रिन।

अइम्मए तलबीस पृष्ठ ८ से ९

(गैलानी प्रेस लाहौर)

अस्वद की उक्त आयत कुरआन की इस निम्म आयत के सदृश है

वन्नाजेआते गरअन तन्नाशेआते नश्तन् वस्साबिहातेसब्हन

कुरआन पारा ३०

तलेहा अस्दी

यह तलेहा बनी असद के परिवार से था। इसने भी पैगम्बरी का दावा किया था। यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद को भी इसने अपने दीन (धर्म) की दावत (निमन्त्रण) दी थी। निमंत्रण ले जाने वाला अस्दी की फूफी का लड़का हयाल था। हज़रत मुहम्मद ने उत्तार में कहा था, तुम झूठे हो। इसका प्रत्युत्तार उसने यह दिया कि वह व्यक्ति झूठा हो सकता है, जिसको लाखों मनुष्य अपना पथ प्रदर्शक तथा मुक्तिदाता समझते हों?

अइम्मए तलबीस पृष्ठ १६

उसने भी कुरआन जैसी पुस्तक बना रखी थी। उसकी एक आयत निम्न है:—

वल्हमामे वल्यमामे वस्सरें वस्सामे कदजमना कब्लेकुम बिल्हवामे लयब्लोगन्ना मलेकेनलअराके वश्शामे।

अर्थ.– शपथ है पंछिओं व जगली जीवों की और तुर्मती की जो सूखी भूमि में रहती है, कि पिछले समयों में वर्षों से यह निश्चय हो चुका है हमारा देश(शासन)शाम व इराक तक बढ़ जायेगा।

अइम्मए तलबीस पृ. २६

कुरआन में भी उक्त प्रकार की आयतें हैं:—

वल्फजरे वालयालिन अर्शरिव्वश्शए वल्वतरे वल्लैले इज़ायसर।

कुरआन पारा ३० सूरत कमर

मुसैलमा बिन कबीर बिन हबीब

इस्लाम के प्रारम्भ में पैगम्बरी की घोषणा करने वालों में सबसे अत्याधिक और सफल अगुवा मुसैलमा था। इसने हज़-

रत मुहम्मद के समय एक सौ वर्ष से भी अधिक आयु में पै-म्बरी का दावा किया था। यह योग्यता, सुन्दरता व श्रेष्ठता दृष्टि में देश भर के लोगों में अधिक प्रतिष्ठित और उत्कृष्ट था वक्तृता अर्थात भाषण शक्ति में उच्च वक्ता, भाषा विज्ञान शिक्षा शास्त्री व देश के विद्वानों में अद्वितीय था । मुसैलमा भक्त कहते थे **फुरकाने मुहम्मदी** का चमत्कार भी मुसैलमा ही है। इसी प्रकार खुदा ने मुसैलमा पर भी एक सहीफ़ा (ईश्व-रीय ज्ञान) उतारा था, जो **फारूके अव्वल** के नाम से प्रसिद्ध है उसने भी बड़े-बड़े शिक्षा शास्त्रियों का मुंह बन्द कर दिया।

कहते हैं कि खुदा ने **हज़रत मुसैलमा** को एक और पुस्त **फारूके सानी** के नाम से प्रदान की थी। मुसैलमा के भक्त नमाज़ में भी **फारूके अव्वल** की आयतें पढ़ा करते थे । उसकी एक आयत:-

व कद अफलहा मन हन्यमा फी सलातिही व अतमल्मिस्की मिन मख्लातिही व हाता मिन बईरिही वा शातेही।

अर्थ:- उस व्यक्ति ने मुक्ति पाई जिसने अपनी नमाज ध्वनि पढ़ी और अपने थैले में से भूखे व निर्बल व्यक्ति को भोजन करा व अपने ऊंटों व बकरियों को रहने के स्थान पर ले आया।

अइम्मए तबलीस पृष्ठ

इस प्रकार के और भी वाक्य नमाज़ में पढ़ते । अइम्मए तबलीस के लेखक ने मुसैलमा की कुरआन के कुछ उदाहरण दिये हैं। प्रथम उद्धृण कुरआन पारा ३० सूरत आदियात के उदाहरण पर हैं। सर्वप्रथम सूरत आदियात देखें :-

वल आदेयाते जब्हन, वल्मूरेयाते कदहन फल्युगीराते सुब्हन फअ-सना बिही नकअन फबअस्लना बिही जम्अन, इन्नल इन्साना लेरब्बिही लकनूद, वा इन्नहू अला जालेकाल शहीद व इन्नहू लिहुब्बिलखैरे लशदीदा। अफला यालमो इजा बोसेरा माफिल-कुबूर। वा हुस्सैला मा फिस्सदूर। इन्ना रिब्बाहुम बेहिम योम-एजिल्ल खबीर। कुरआन पारा ३० सूरत आदियात

अर्थः—सौगन्ध है दौड़ने वालें घोडों की हांपकर, (दौड़ने में हांपने वाले) फिर आग लगाने वालों की पत्थर झाड़ कर, फिर गांव मारने वालों की प्रातः का, पस उठाते हैं साथ उसके गुवार को, पस बैठ जाते है उस समय उसकी कक्षा में, पस मनुष्य अपने पालनकर्ता हेतु अवश्य कृतघ्न हैं और वह इस बात पर अवश्य साक्षी हैं, और निसन्देह धन के मोह में अवश्य कठोर हैं, पस क्या वह नहीं जानता कि जब मूर्दों को कब्रों से उठाया जायेगा और उनके सीनों में जो कुछ है वह प्राप्त किया जायेगा, निसन्देह उनका पालनकर्ता अवश्य उस दिन का ज्ञाता है।

शाह अब्दुलकादिर

तनिक आयत की रचना और शपथों का तत्वज्ञान देखें, हांपे हुए, सुम्मों [कदमों] से अग्नि की ज्वालाए निकालने वाले, छापा मारने वाले, धूल उड़ाने वाले, पंक्तियों में घुस जाने वाले घोड़ों की सौगन्ध लेना क्या विश्वनियन्ता का कार्य है ? या किसी घोड़ों के पालक सईस का ?

इसके पश्चात आयत में मनुष्य का वर्णन आया तो धन और वैभव का मोह आ गया। फिर कब्रों से मुर्दे उठाने लगे और फिर हिसाब का खाता खोलकर न्याय के दिवस की चर्चा कर दी

कहीं की ईट, कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा। इसके मुकाबिले पर मुसैलमा की सूरत पढिये :—

वज्जारेआते जरअन वस्सालेआते हसदन वत्ताहेनाते तहनन वल्खावेजाते खब्लन वस्सारेदाते सरदनवल्लाकमाते लक्मन अहालतंव्वा सम्नन। लमुद फुज्जिल्तुम अला अहलिलवॉ वा मा सबक़ाकुम अहलिल्मुदरेरीक़्कुम फम्नअहो वल्माने फअदूहो तल्बागी फताबूहो। अइस्मए तलबीस पृष्ठ ३

अर्थः—सौगंध है खेती करने वालों की, और सौगंध है भूसा साफ करने वालों की, और गेहूँ को वायु में उड़ाने वालों की, और सौगंध है आटा पीसने वालों की और सौगंध है रोटी बनाने वालों की और सौगंध है सालन (शाक भाजी) बनाने वालों की और सौगंध है घी और तेल निर्मित ग्रास खाने वालों की, कि तुमको जंगल निवासी अरबों पर प्रतिष्ठा प्रदान की, और मिट्टी के मकान निर्माता (नागरिक) अब भी तुमसे श्रेष्ठ नहीं है। तुम अपनी रूखी-सूखी रोटी की रक्षा करो, निर्बल और दुखी को आश्रय दो, याचकों व भिक्षुओं को अपने पास ठहराओ।

कुछ भी हो मुसैलमा ने क्रम सर्वथा उत्तम रखा है और विषय का निर्वाह भी उत्तम और समझ में आने योग्य है। अब एक सूरत कुरआन की और एक सूरत मुसैलमा की आपके समक्ष प्रस्तुत है। निर्णय कीजिये कि इनमें कौन श्रेष्ठ है? समानता तो है ही, भाषा की श्रेष्ठता में तो मुसैलमा और भी आगे है। आगे कुरआन ने ऊंट हेतु और मुसैलमा ने हाथी हेतु आयतें लिखी है। प्रथम कुरआन की आयतः--

अफला यन्जेरूना इलल इब्ले कैफा खुलिक़त।

कुरआन पारा ३०

अर्थ:-- क्या तुमने नहीं देखी ऊंट की रचना को कि वह किस प्रकार उत्पन्न किया गया है ?

मुसैलमा की रचना:--

अल्फीलो मल्फीलो लहू ज़ुम्बुन व बीलुन वा खुर्तूमुन तबीलुन इन्ना जालेका मन खलका रब्बनल्ज़लील।

अर्थ:--हाथी, और वह हाथी क्या है ? उसकी दुम छुरी लगने वाली और सूंड लम्बी है । यह हमारे प्रतिष्ठित पालनकर्ता की रचना है ।

उक्त दोनों आयतों को तुलनात्मक देखें । इसके आगे 'अइम्मए तलबीस' का लेखक लिखता है कि 'रिसाला तुदआत' मिश्री में मुसैलमा का एक कलामे वही (ईश्वरीय वाणी) भी लिखी है । देखिये:--

सब्बेहिस्मा रब्बेकलआल्लज़ी यस्सिर अल्लहवला फखरजा मिन्हा नस्मतन, तस्आमिस्बैना अज्लाए व हशेया फमिन्हुम मंय्यमूतो व यदस् फिस्सुरा वा मिन्हुम मंक्यईसो वा यब्का इला अजलिव्वा मुन्तेहा । वल्लाहो यालमुस्सिर्रा वखफा व ला तुखफा अलैहिल आखिरते व लऊला । अजकुरूनेअमतल्लाहे अलैकुम वश्कुरूहा इज जअलश्श मसासेराजंव्वा लौसा सजाजंव्व जअला लकुम कबाशन व नआजंव्व दीबाजन मिन नेमते ही अलैकुम। इन्नाअखरजा लकुम मिनलअर्जे रूम्मानंव्वा इन बंव्वारीहानंव्वा हिन्ततंव्व ज़वाना वल्लैस्लुह्नामेसो वज्ज़बुल हमासा वल्क़ताता असीदो मिन रर्तबिव्वा ला यावर्सिव्वल्लैलुलअसहमो वद्धव्वुलअदलमो वलिजज़ अलअज्लमो वा मा इन्तहकत् असीदो

मिन महराम महरिमा व काना यकसदो बेज़ालेका नुसरत
असीदो अला खसुन्नतिन लहुम वश्शाआ वा अल्वानहा वा
अल्वानहा वा आज़नहस्सुदा वा अल्बानहा वश्शातस्सीदा व
वल्लनल अबयजो, इन्नहुल अज़्बुन महज । इन्ना आतेनकल
वाहेग फसल्ले लेरब्बेका व हाजरा इन मगजे कल्फा वो
न्नलमदे याते जरअन वल्मुब्देयाते जरअन वल्हसिदात हसद
वद्धारसाते कम्हन वत्ताहेनाते तहनन वल्खाबेजाते खब्जन वस्स-
रेदाते सरदन वल्लाकेआते लक्मन् लहमंव्वा सम्नन लक
फज्जलतोकुम अला अहलेल वबैर व मा सबकाकुम अहलल
दरे रफ़ीकाकुम फम्नअहो वल्मोतरो फावूहो वल्बाग़ी फनाव-
सूहो वश्शमसो व जुहाहा फी ज़ूहेहा वा मज़लाहा वल्लैला-
इजा अदाहा यत्लबोहा लयग़शाहा अदरकहा हत्ता अताह
वा अतफानूरा हा फमाहाहा वा कद हर्मलमज़्का फकाल
मालकुम ला तम्जऊना । अइम्मए तलबीस पृष्ठ ३

अल्लामा खैरूद्दीन अफन्दी अलवी भूतपूर्व वजीर तूनस ने
किताब अल्जवाबुल्फसीह में अब्दुल मसीह नसरानी का कथन
उद्धृत किया है कि मैंने मुसैलमा का पूरा मुस्हिफ़ (कुरआन) पढ़ा
है। जिससे पता चलता है कि उसने बहुत ही बड़ा ग्रन्थ तैयार
कर डाला था और उसका दावा यह था कि यह इलहामी
(ईश्वरीय) पुस्तक है। अइम्मए तलबीस पृष्ठ ३

लेखक ने आगे चलकर विस्तारपूर्वक मुसैलमा तथा मुसल-
मानों के युद्धों के वर्णन किये हैं। यह युद्ध कितने भयँकर हुए
और मुसलमानों की कितनी हानि हुई उस हेतु निम्नलिखित अंश
ही पर्याप्त है:-परन्तु मुसलमानों की इतनी बड़ी मात्रा में मौत के
घाट उतारा गया कि इससे पूर्व कभी इतनी बड़ी संख्या में जन-

हानि नहीं हुई। महाज़रीन, अन्सार व कारिओं की बहुत बड़ी संख्या युद्ध में मारी गई। अइम्मए तलबीस पृ. ३६

मुख़्तार अबू अबीद सक़फ़ी

यह वह मुख़्तार है, जिसने हुसैन के हत्यारे को मृत्यु के घाट उतारा था। तत्पश्चात इसने पैगम्बरी का दावा किया था। लिखा है कि मुख़्तार ने साहसनीय होकर अपनी पैग-म्बरी की घोषणा कर ही दी। अपने कागज-पत्रों पर मुख़्तार ने रसूलिल्लाह लिखना प्रारम्भ कर दिया। पैगम्बरी दावे के साथ ही मुख़्तार इस बात की भी घोषणा करता था कि खुदा खुद मेरे भीतर प्रविष्ट हो गया है और जिब्रील तो हर समय मेरे पास आते-जाते हैं। अइम्मए तलबीस पृष्ठ ७६

मुख़्तार ने कुरआन भी लिखा था। मुख़्तार के कार्य कलापों-गतिविधियों और स्थिति ने असामान्य उन्नति और ख्याति प्राप्त कर ली थी। जो उसने कुरआन के समकक्ष समा-नता के आधार पर प्रस्तुत किया अत्याधिक उच्चकोटि का था। जो भी उसके छन्द-शैली एवं वाक्य रचना को देखना चाहें वह अल्लामा अब्दुलकादिर की पुस्तक अल्फरक बैनल फरक के पृः ३४-३५ और किताबुद्दफात के पृष्ठ ६४ और ६५ देख लें। अइम्मए तलबीस पृष्ठ ८७

(पाठक बन्धुओं अत्यंत दुख है कि उक्त दोनों पुस्तकें हमें उपलब्ध न हो सकी। कहतें हैं कि मुख़्तार का कुरआन अत्याधिक महत्वपूर्ण भाषा में हैं।)

सालह बिन तरीफ बर्ग़वाती

इसने हिज़री १२५ के लगभग पैग़म्बरी का दावा किया था। इसका शासन उत्तरी अफ्रीका में बहुत बढ़ गया था।

उसके अत्याधिक नाम थे। भाषा वखरी में उसका नाम बा
था, जिसका अर्थ होता था अन्तिम पैगम्बर। सालह का क
है कि हज़रत मुहम्मद साहिब की भांति ही मुझ पर भी कुरआ
उतरता है। अतः उसके द्वारा प्रस्तुत कुरआन मे ८० सूरतें थी
सूरतों के नाम:-दीक, जमल, फील, आदम, नूह व मूसा आदि
अन्तिम सूरत गरायबुद्दुनिया थी, जिसमें अनगिनत रहस्य
तत्वज्ञान समाहित थे। अइम्मए तलबीस पृष्ठ १

इसी प्रकार पैगम्बरी के सैंकड़ों दावेदार हुए। जिन
गतिविधियां और घटनाए बड़ी विचित्र और रहस्यपूर्ण हैं।
सभी का उल्लेख आवश्यक नहीं। हां आपकी ज्ञानवृद्धि एवं संतु
हेतु इसी वर्तमान शताब्दी में पैगम्बरी की घोषणा करने वाले
नाम उल्लेखित है। जिनके कार्यकलापों से आप पूर्ववर्ती पैगम्ब
के जीवनवृतों का वास्तविक अनुमान कर सके प्रथम तो ब
उल्ला ईरानी और द्वितीय नाम है गुलाम अहमद कादियानी

वहाउल्ला ईरानी ने १९६५ में अपने नये वहाई धर्म
घोषणा की और शक्तिपूर्वक कहा की अब इस अन्तिम स
(युग) में मैं ही पथ प्रदर्शक और सन्मार्गदर्शक हूँ। मेरी आ
का पालन करो और ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक, जो किताबे अ
दत और दुसरी खुदाई पुस्तक, अलबयान है। यह बाब की पु
तक है, इसे मानो। वहाउल्लाह का निम्न उदाहरण प्रस्तुत है:

अल्लाज़ी अरसलाहू बेइस्मे अलिय्युन हुवा हक्कुम्मि
इन्दिल्लाहे वा अनाकुल्लो बे अमरेही लमिनल आलेमीन
कुल या कौमे फत्तबेऊ हुदुदल्लाहिल्लती फुरिज़तो फ़िलबया
मिल्लदुन अजीजु हकीम। कुल इन्नहूबिसुल्तानिरूसुले व कित
बुहू उम्मुलकिताब। इन अन्तुममिनल आरेफ़ीना कज़ाले

युज़क्केरो कुमुल्वर्काओ फ़ी हाज़स्सिजने व मा अलैहे इल्लल्ब-लागुमुल्बीन । कल्माते इलाहिया मिन लौहे अहमद पृ. १०५

अर्थः-और वह जिसे खुदा ने अली के नाम (हुसेनअली वहाउल्लाह) भेजा है। वह खुदा की ओर से सत्य है और निसन्देह सब उसकी आज्ञा पर कर्म करने वाले हैं। कह दे कि ऐ कौम ! अल्लाह की उन सीमाओं की आज्ञापालन करो । जो प्यारे और हिक-मतयुक्त खुदा की ओर से बयान (बाब की इलहामी पुस्तक) में अनिवार्य ठहराई गई है। कह दे-कि वह (वहाउल्ला) समस्त रसूलों का शहन्शाह हैं और उसकी पुस्तक उम्मुल-किताब (सब पुस्तकों की जननी) है। यदि तुम ज्ञानी हो तो तुम समझो । इसी प्रकार खुदा की यह बुलबुल बन्दीगृह में (वहाउल्ला जेल में थे) शिक्षा दे रही है और उस पर खुले हुए धर्म प्रचार के अतिरिक्त और क्या कर्तव्य है।

कल्माते इलाहिया पृष्ठ १०५

..................आगे वहाउल्ला ने लिखा कि 'इस लौह को पढ़ा करो। इस लौह के पाठकों हेतु सौ शहीदों का फल, फिर लोक परलोक की भक्ति का पद (दर्जा) निश्चित किया गया हैं।

कल्माते इलाहिया पृष्ठ १०८

जिस प्रकार इस्लाम ने घोषणा की, कि इस्लाम को न मानने वाला काफिर और फ़ासिद है। उसी प्रकार बहाई मत को न मानने वाला भी फासिद घोषित किया गया है। यथाः-

सो जब रहमान (खुदा) मलकूते बयान (वहाउल्ला) के साथ आ पहुँचा तो उसको अस्वीकृत कर दिया । सावधान ! फटकार (लानत) है उन पर अल्लाह की, जिन्होंने अत्याचार किया और उत्पात्तियों में सम्मिलित हो गए ।

कल्माते इलाहिया पृष्ठ ४

आगे कहा:-

हाज़ा किताबुम्मिल्लदल्लाहुल्मुहै मानुल्कयूम इल्लल्ला मिनहो जहरतुल इस्तकामतोल्कुबरा फी यौमे फी हिजतरल अपइराते। (सूरतुल अमीन)

अर्थः-सुस्थिर रहने वाले खुदा की ओर से पुस्तक उसके हेतु उत है। जिससे ऐसे दिन उच्चकोटि की स्थिरता प्रकट हुई, जिस बड़े-बड़े बुद्धिमान लोगों के दिल घबराए।

कल्माते इलाहिया पृष्ठ

इस युग की पुस्तक किताबे बयान

इस युग में किताबे बयान खुदा की पुस्तक हैं। उदाहरणा मूसा के काल में तौरेत, ईसा के काल में इंजील, हज़रत मुहम के काल में कुरआन और इस युग में किताबे बयान (की व स्थिति है।) किताब मुस्तताबे एकान, पृष्ठ १३

हज़रत मुहम्मद ने भी अपने पैगम्बरी दावों में कुछ इ प्रकार की भाषा प्रयोग की है।

बहाई मत ही सब पुराने-सड़े व गले मतों से उत्तम है पूर्व में बीते, अतीती सम्प्रदायों से पृथक यही (बहाई) केवल सम्प्रदाय एक ऐसा भव्य प्रासाद (भवन) निर्माण करने में सफ हुआ है, कि जिसे पूर्व के सड़े गले और दिवालिया मतों से परे शान भक्त, अच्छा है कि वह आयें और उस पर विचारपूर्व जांच करें। इससे प्रथम कि अत्याधिक युग बीत गये हैं।

बहाई उसूल पृष्ठ ४१

खुदा का कल्मे नस्ख़ (निरस्तीकरण)

खुदा ने अपने पैगम्बरी युग को समाप्त कर दिया और

अब अपनी सामर्थ्य का चमत्कार नई पद्धति से प्रत्यक्ष किया, संसार एक नवीन युग में प्रविष्ट हुआ। प्राचीन सम्प्रदायों का समय जाता रहा। उनके विभिन्न विश्वासों को खुदा ने उठा लिया। जो आदेश इस्लाम के ख़ुदा ने निरस्त कर दिये हैं, वह समस्त निष्प्राण और समाप्त प्रायः होकर रह गए हैं।

आफ़तावे ज़हूर पृष्ठ ३३

बहाउल्ला ने अनेक स्थानों पर लिखा कि कुरआन का समय अब गुजर गया है और मेरी पवित्र पुस्तक को ही मानो। साथ ही हज़रत मुहम्मद और इस्लाम के विषय में तो इतना मनघड़न्त लिखा है कि हम उसे ज्यों का त्यों यहां लिखना अप्रासांगिक समझते हैं, और अपने व पाठकों की समय रक्षा उचित समझते हैं।

अब मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने जो सम्प्रदाय स्थापित किया, पैगम्बरी का दावा किया और ज्ञान प्राप्ति के साधन बताए। उन पर किञ्चित विचार करना आवश्यक है ?:–

.....................इस समूह (सम्प्रदाय) में नबी (संदेश वाहक) का नाम पाने हेतु मैं ही विशेष किया (भेजा) गया हूँ। अन्य लोग इस नाम के अधिकारी नहीं हैं। (क़ादियानी मज़हब पृ. १११) उद्धृत। हकीकतुल वही, पृष्ठ ३९१

यह मुसलमान क्या मुँह लेकर दुसरे धर्मों के सन्मुख अपना धर्म प्रस्तुत कर सकते हैं, जब तक कि वह मसीहे मोऊद (मिर्ज़ा गुलाम अहमद) की सत्यता पर विश्वास न ले आये ? जो वास्तव में वही खतमुर्मुरसलीन (हजरत मुहम्मद) था, कि खुदाई वादे (ईश्वरीय वाक्य) के अनुसार दुबारा (पुनः) आखिरीन। (अंतवालों) में उपस्थित हुआ। वही पूर्वजों और

अतीतों हेतु गौरवान्वित है। जो आज १३०० सौ वर्ष पूर्व संसार हेतु कृपावन्त बन कर आया था। अब अपने प्रचार-प्रसार की पूर्ति द्वारा प्रमाणित कर दिया कि वास्तव में उसका आमंत्रण सब देशों और सम्प्रदायों हेतु था। (उद्धृत—अखबार अलफजल कादियाँ, भाग ३, क्र. ४१।२६ सितम्बर १९१५)

कादियानी मज़हब पृष्ठ ११५

और मैं खुदा के घर में खड़े हो कर यह शपथपूर्वक कहता हूं कि वह पवित्र वाणी जो मेरे ऊपर उतरती है, वह उसी खुदा की वाणी है। जिसने हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद पर अपनी वाणी उतारी। (एक गलती का इजाला(निराकरण)

कादियानी मज़हब पृष्ठ १२४

वह व्यक्ति जिसको मेरा निमन्त्रण (धर्म--सन्देश) मिला है और उसने मुझे नहीं स्वीकारा,वह मुसलमान नहीं है।(रिसाला जिकरूल हकीम, संख्या ४ पृ. २४ । कादियानी मजहब पृ. १३४

मिर्जा साहिब कहते हैं मुझे इलहाम (ज्ञान) हुआ है कि जो मनुष्य तेरी आज्ञा नहीं मानेगा और तेरी शिष्यता नहीं स्वीकारेगा वह खुदा और रसूल की अवहेलनाकारी और दोज़खी (नर्कगामी) है। (तबलीगे रिसालत, भाग ९ पृ. २७)

कादियानी मज़हब पृ. १३५

कुल मुसलमान जो हज़रत मसीह की शिष्यता में सम्मिलित नहीं हुए, चाहें उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद का नाम भी न सुना हो। वह काफ़िर और इस्लाम से बहिष्कृत है। (आईने ए सदाकत, पृष्ठ ३५) कादियानी मज़हब, पृष्ठ १३५

मैं उस खुदा की शपथपूर्वक कहता हूं, जिसके हाथ में मेरी जान है, कि उसी ने मुझे भेजा है और मेरा नाम नबी

रखा है। उसी ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से पुकारा है। उसी ने मेरी पहचान हेतु बड़े-बड़े चिन्ह प्रकट किये, जो ३ लाख तक पहुँचते हैं। (तत्तिमा-हकीकतुल वही, पृष्ठ ६८)

कादियानी मजहब पृष्ठ १०६

(मा । हमारा दावा है कि हम नबी और रसूल हैं। (उद्घृण मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी, अखबार अलहकम ६ मार्च १६०८)   कादियानी मजहब पृष्ठ १०६

तात्पर्य यह कि मिर्जा गुलाम अहमद पैगम्बर भी हैं और खुदा की वाणी भी इन पर उतरी। इसी प्रकार बहाउल्ला भी कहते थे। उक्त दोनों साक्षियों को लिखने का अभिप्राय यह है कि हमारे समकालीन पैगम्बर केवल तलवार को छोड़कर शेष उन्हीं मार्गों का अनुसरण किया, जो कि हज़रत मुहम्मद ने अपनाये थे और दोनों अपने-अपने फन में सफल हुए।

उक्त घटनाओं से पैगम्बर बनने की कला व उसमें सफलता पाने का रहस्य भलिभांति समझ में आ जाता है, कि पैगम्बर कैसे बनते हैं और वही (सन्देश) कैसे आती है ? आप कहेंगे कि हज़रत मुहम्मद अशिक्षित थे। जो लोग हज़रत मुहम्मद का जीवन चरित्र आद्योपान्त जानते हैं, वह कदापि इस बात को नहीं मान सकते कि वह अशिक्षित थे। इस सम्बन्ध में हम केवल एकमेव ही प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं। जिससे आप हज़रत मुहम्मद की शिक्षा-दीक्षा से भलिभाँति परिचित होंगे। प्रमाण:-

इब्ने हज़म ने लिखा है, खुदा की कसम ! मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलब बिन हाशम इसके प्रथम कि अल्लाह आपको नबव्वत (पैगम्बरी) से प्रतिष्ठित करें। रु.।

में अदनी नौजवानी के समय निसन्देह अल्प बुद्धिवालों के निकट भी अपनी कौम की लुगत (कोष) के सर्वाधिक विद्वान और आकर्षक वक्ता थे।

अलमिलको वन्नहल भाग २ पृष्ठ ४६७

हज़रत मुहम्मद की शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में उपरोक्त प्रमाण ही पर्याप्त है। परन्तु अब हम यह पूछते हैं कि मिर्जा गुलाम अहमद कितने पढ़े-लिखे थे? यह तो मात्र अदालत में एक उर्दू के कारकून (लिपिक) ही थे। हज़रत मुहम्मद की तो मातृभाषा अरबी थी। अतः उनके लिये अरबी में कोई पुस्तक तैयार कर लेना असम्भव नहीं था, किन्तु मिर्जा साहिब तो हिन्दुस्तानी ही थे और फिर उन्हें अरवी का उच्च साहित्यक ज्ञान इतना कैसे हो सकता था? तो क्या यह समझें कि जिस प्रकार मिर्जा साहिब की अरबी पुस्तकें लिखी गईं, वैसे ही कुरआन भी लिखा गया और इसी प्रकार वहाउल्ला भी फारसी भाषा के विद्वान अवश्य ही थे परन्तु अरबी भाषा की इतनी योग्यता नहीं थी कि किताबे अकदस जैसी बड़ी पुस्तकें लिख सकते। अतः जैसे किताबे अकदस भी बना ली गई है सम्भवतः वैसे ही कुरआन भी बन गया।

इतना लिखने के पश्चात अब हम इस आयत की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हैं। जिस पर हम यहां विवेचन कर रहे हैं। इस आयत का प्रथम चरण है कि:-

एक सूरत कुरआन के सदृश्य बना कर लाओ।

एक आयत और एक सूरत तो क्या कुरआन के सदृश्य एक से अधिक ग्रंथ निर्मित हो गये। यह ग्रंथ सब मुसलमानों की दृष्टिगोचर नहीं हुए और इससे अधिक यह कि नज़र बिन हारस तो

अपनी प्रतिभा की शक्ति से हज़रत मुहम्मद के पीछे-पीछे ही लगा रहा। जहां हज़रत मुहम्मद पढ़ते थे तुरन्त वहां अपना स्वयं का कलमा पढ़ कर नज़र श्रोताओं से पूछता था कि बताओ मेरी वाणी अच्छी है कि मुहम्मद साहिब की? कुरआन में गुम्फित अन्य लोगों की स्पष्ट वाणियां है, यह भी देख कर मुसलमान आँखें बन्द कर लेते हैं। यह है घोर अंधविश्वास-संकीर्णता व स्वार्थी दृष्टिकोण कि उन्हें अपने स्वयं के कोई दोष दिखाई ही नहीं देते।

आयत का दूसरा चरण है कि:—

डरो उस आग से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं।

उक्त सम्बन्ध में हम कुछ कहें, इसके पूर्व स्वयं कुरआन के ही सुप्रसिद्ध व्याख्याकारों के वक्तव्य पढ़िये।

इमाम राज़ी की सम्मति

अपने भाष्य में इमाम राज़ी ने लिखा कि:—

यदि कोई कहे कि सूरत का शब्द सूरत कौसर, सूरत असर, कुल या अय्युहलकाफिरून जैसी छोटी सूरतों पर भी लागू हैं और यह विश्वासपूर्वक ज्ञान है कि इस जैसी या इनके जैसी सूरत बना लेना सम्भव है। इसे मानवीय सामर्थ्य से परे कहना कोरी हठधर्मी हैं और निरर्थक पक्षपात है।

इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ७८

सर सैयद अहमद

कुरआन के सदृश्य सूरत बना लाओ, का तात्पर्य यह नहीं कि जो मुस्लिम विद्वानों व व्याख्याकारों ने समझा कि ऐसी आयत कोई नहीं बना सकता। यह कुरआन अल्लाह

की ओर से होने का कोई प्रमाण नहीं । बहुत से मनु
की वाणियां भी संसार में ऐसी है कि उनके सदृश्य सुसं
व सुरम्य वाणियां आज तक भी अन्य कोई दुसरी
नहीं हुई, किन्तु वह इस विशेषता के कारण अल्लाह की ओर
नहीं मानी गई । सूरतें क़सस में है कि कुरआन तथा तौरेत
दुसरी पुस्तक जो इनसे अधिक शिक्षाप्रद हो, बना लाओ। तौ
की भाषा सरस–सुन्दर तथा सुस्थिर नहीं । यहां समानता
अभिप्राय इन गुणों से भरी हुई से नहीं अपितु यहाँ समान
का तात्पर्यं शिक्षादायकता से है ।

तफसीर सर सैयद सा. पा. १ पृष्ठ २८

हम कहते हैं कि फ़ैजी की व्याख्या के सदृश्य आज
कोई व्याख्याकार, व्याख्या नहीं लिख पाया और सम्भव
भविष्य में भी कोई न लिख पाये, तो क्या इस कारण फ़ै
की व्याख्या को ईश्वरीय वाणी मान लिया जाये ? आगे
दुसरा चरण:-

आदमी और पत्थर नर्क का ईंधन है ।

यहां खुदा जिन्नों का उल्लेख करना भूल गया, क्योंकि खुदा
नर्क को जिन्नों व मनुष्यों से भरने का वचन दिया है । यहां जि
के स्थान पर पत्थर उल्लेखित हो गए । कुछ न कुछ कहना
लिखना ही मात्र उद्देश्य हो वहां अर्थ या उपयोगिता की चि
किसे ? भोले–भाले–अंधविश्वासी और धर्मभीरु लोग जिन
काम केवल ईमान लाना है, बिना कोई तर्क-वितर्क के वि
कर ही लेंगे । वाह............क्या............धर्मान्धता ?

पत्थर कौन से हैं ?

कुछ का कथन है कि गन्धक के पत्थर हैं, कुछ कहते हैं
प्रकार के पत्थर हैं । कुछ ने कहा कि पत्थर से अर्थ देव मूर्तियाँ

तफसीर मजहरी, पारा १ पृष्ठ ६०

आयत में 'इन' शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह शंकास्पद है, यहां क्यों प्रयुक्त हुआ है। इस सम्बन्ध में तफसीर मजहरी ने लिखा कि:-

'इन' शंकास्पद स्थिति पर प्रयोग में लाया जाता है। जैसे कोई कहे कि यदि जैद आया तो मैं भी आऊंगा। यहां पर जैद का आना शंकास्पद है। यह बात स्पष्ट है कि अल्लाह को किसी प्रकार की शंका नहीं तो इसी रीति में कथन के दो कारण हैं। एक तो यह कि उनके साथ उपहास करना उद्देश्य हो, जैसे कोई कहे कि मैं आपके पास इस सप्ताह में शुक्रवार को आऊंगा, तो दुसरा कहे कि यदि इस सप्ताह में शुक्रवार न आयें तो ? तो यह प्रयोग व्यंगात्मक है। इसी प्रकार कुरआन के सदृश्य आयत बनाने की असमर्थता खुदा को ज्ञात थी। अतः मात्र व्यंग व उपहास हेतु ऐसा कहा।   तफ़सीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ ६०

मौलाना ने कमाल कर दिखाया। 'इन' शब्द कहने से खुदा पर जो अज्ञान व अशिक्षा का दोष लगता था। उसे हँसी मज़ाक का आवरण ओढ़ा कर ढाँप दिया, परन्तु यह न सोचा कि खुदा सदृश्य सर्वोच्च सत्ता पर अज्ञान के दोष से भी अधिक इतने महत्वपूर्ण विधि विधान और निर्णय में हास-उपहास या व्यंग से कार्य करने में अत्याधिक दोष लगता है, किन्तु व्याख्याकार खुदा की भाषा को कहां छुपाएं ? कोई और उत्तर सूझा नहीं तो निग्रह स्थान की ही शरण लेना पड़ी।

इससे आगे लिखा कि 'यह आग किसके लिये है, तो उत्तर मिला कि काफिरों के लिये। अबू हुरैरा से वर्णित है कि रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि नर्क में सब से कम दुखप्रद वह व्यक्ति

होगा जिसे दो जूतियां और तस्में आग के पहिनाए जायेंगे
उसके कारण उसका मस्तिष्क ऐसा उबलता रहेगा जैसे भट्टी
चढ़ी हुई कढ़ाही में पानी उबलता है। हजरत मुहम्मद ने फ़
माया कि नर्क की आग एक हजार वर्षों तक धौंकाई गई
सूर्ख हो गई और फिर एक हजार वर्षों धौंकाई गई
सफेद हो गई । फिर एक हजार वर्षों तक धौंकाई
तो काली बन गई (कहीं राख ठंडी तो नहीं हो गई क्योंकि
रंग तो राख का ही होता है।) ऐसी आग से काफिरों को
भीत किया गया है। तफसीर मजहरी, पारा १ पृष्ठ

तफसीर हक्कानी ने इस आयत की व्याख्या में एक अ
धिक मनोरंजक बात लिखी है। आप लिखते हैं कि:-

यह पत्थर जिन्हें लोग पूजते है नर्क में जाएंगे। और जब हज़
मुहम्मद की पैगम्बरी का सूरज उच्च शिखर पर पहुँचा तो मूर्ति
में से आवाज़ें आया करती थी कि अब हमारी पूजा का
समाप्त हो गया। अतएव इस्लाम में दीक्षित होने से किञ्चित्
पूर्व जब हज़रत उमर एक मूर्ति पर बलिदान चढ़ाने गए तो
भीतर से मातमी (शोकपूर्ण) आवाज़ आई और कुछ एक क
हज़रत साहिब की स्तुति में सुनाई दी। इस कथानक को बै
ने दलायलुन्नबव्वत में वर्णन किया है। (बैहकी अधिक प्रा
णिक विद्वान माने जाते हैं, जिन पर शंका की गुन्जाइश
नहीं) अहले सुन्नत सर्वसमम्त सिद्धान्त है कि स्वर्ग और
अब भी मौजूद हैं। तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ

इब्ने कसीर ने लिखा कि पत्थरों को भूमि व आकाश
उत्पत्ति के साथ ही पहले आसमान पर उत्पन्न किया गया
मुज़ाहिद कहते हैं कि इन पत्थरों की दुर्गन्ध मूर्दों से भी अ
दुर्गन्धमय व खराब है। इब्ने कसीर, पृष्ठ

आजमुत्तफासीर में भी है कि:—यह मूर्तियाँ नर्क का ईंधन होंगी और नर्क खुदा व रसूल को न मानने वालों के हेतु हैं।

आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १२१

तफ़सीर जलालैन, कुरानुल अजीम, बैज़ावी और मुआलिम आदि ने भी यही अर्थ और व्याख्याएं की है। एक ओर तो कुरआन स्थान–स्थान पर कहता है कि यह पत्थर बेज़ान हैं, जड़ हैं, दुसरी ओर बैहकी लिखते हैं कि पत्थरों ने कविता-मय स्तुति की। हजरत मूसा के कपड़े उठा ले भागा। हज़-रत मुहम्मद से वार्ता–चर्चा आदि करते थे। पत्थरों की यह कैसी जड़ता और कैसी निर्जीवता ? वास्तव में जब मनुष्य मिथ्यापूर्ण दोषों और प्रपंचों में फंस जाता है, तो उसकी अपनी ही स्मरण शक्ति और मानसिक विवेक असुन्तलित होने के परिणाम स्वरूप वह स्वयं ही एक–दुसरो से आपस में विरोधात्मक बातें कहने या करने लगता हैं।

प्राणियों के सीमित कर्मों का नर्क में असीमित फल देने की बात तो ईश्वरीय न्याय के मस्तक पर ऐसा कलंक है, जिसका उत्तर तो कभी किसी कल्पना में भी नहीं ढूंढा जा सकता है। स्वर्ग–नर्क के किस्सों व कहानियों पर सर सैयद अहमद लिखते हैं कि:-बहिश्त-दोज़ख (स्वर्ग-नर्क) बहिश्त (स्वर्ग) के बाग नहरें मोती और सोने व चांदी की ईंटों के महल और दूध-शराब व शहद के समुन्द्र और स्वादिष्ट मेवे और सुन्दर नारियां व लौन्डे (युवक)..................यह सब समझने हेतु मनुष्य की शक्ति के अनुसार मिसालें हैं, (मात्र उदाहरण हैं) न कि बहिश्त (स्वर्ग) की हकीकत (वास्तविकता)

तफसीर सर सैयद, भाग १ पृष्ठ ३१

उक्त आयत के सम्बन्ध में सविस्तार और सप्रामाणिक अत्याधिक लिखा जा चुका है । अब हम एक नवीन सूरत की रचना कर इस प्रसंग को विराम देते हैं । प्रस्तुत है एक नवीन सूरतः–

या अय्यो हन्नासो लिमातन्सा वेरब्बेकल्कदीर व हुवल्लजी फ़तरा कुल्ला खलकन व बदअश्शमसा वल्लमरा वा खलक़ल्अर्ज़ा वन्नजूमा फिलजव्वे योसब्बहूना कुल्लौहुम फिस्समाए वा तव्वाकूना बाज़ोहम इलाबाज़िन वा हुवल्लाज़ी जअला जसदल्इन्साने मिन अज्ज़ा इलमादते, वा नफ़खा फीहे रूहिल्हयाते वा जअलहू अशरफ़ूल्म खलूकाते वा अय्यदोहू बिल्फहमेवज्ज़काए वा लअलहू बसीरूव्वा समाउन वा अलीमुन वा हुवा यफ़हमुल्हसनाते वस्सय्येआते वा हुवल्लज़ी योती कुव्वतुन्नुतके वल्कलामे वा युजय्यिनोहू बेनूरिल्अक्ले वा जअलहू मुख्तारन्ले फ़ैलेही अय्यामिलो अमलन उय्योमायशाओ वा योफ़ी अवरल्अमले बिमाहुम यक्सिबून, नज्जलाफ़िल उज्जैन् ।

अर्थः–ऐ मनुष्यों ! कैसे भूल गये हो, तुम अपने पालक और उत्पन्नकर्ता को, और वह, वही है जिसने सृष्टि की रचना की तथा सूर्य-चन्द्रमा और पृथ्वी को बनाया, और आकाश में सितारों की रचना की, वह सब के सब आकाश में भ्रमण करते हैं, और आपस में एक--दुसरे की परिक्रमा करते हैं, और ईश्वर वह है जिसने मानव-शरीर की रचना प्राकृतिक अणुओं से की, जिसमें प्राणदायक आत्मा (रूह) को फूंका और उसको सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ बुद्धि प्रदान की, देखने-सुनने और बोलने की शक्ति दी और उन्हें कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की, वह जो भी चाहे करें, अपने कर्मों के अनुसार ही वह शुभ-अशुभ फल प्राप्त करेगा ।

इस प्रकरण को यहाँ समाप्त करते हैं और नमूने के रूप में एक और आयत प्रस्तुत है। आयत:-

वा बश्शेरिल्लज़ीना आमनु वा अमेलुस्सालेहाते अन्नललहुम जन्नातिन तजरीमिब तहते हल्अन्हार कुल्लमा रूज़्कू मिन्हा मिन समरतिर्रिज़्कन कालू हाजल्लज़ी रूज़िक्ना मिन कब्ली वा उतूबेही मुतशाबिहा० वा लहुम् फ़ीहा अज़्वामुत्मतह हर-तुंव्व हुम फीहा खालेदून कुरआन पारा १ आयत क्र० २५

अर्थ:-और शुभ संवाद दो (ऐ रसूल) उन लोगों को जो खुदा द्वारा प्रदत्त शक्ति से मुसलमान बने हैं और उन्होंने शुभ कर्म किए कर्तव्यों और सुन्नतों को (रसूल निमित्त किये गये कर्मों का) पालन किया है और सुसमाचार का विषय यह है कि उनके निमित्त स्वर्ग में उपवन हैं, उसमें हर प्रकार के मेवे होंगे। उसके वृक्षों के नीचे नहरें बहती होगी या उनकी खिड़कियों के नीचे से जल-दूध-पाक शराब और शहद की नहरें बहती होंगी। उन स्वर्ग-निवासियों को जब वृक्षों के मेवे तथा (अन्य प्रकार का) भोजन दिया जायेगा तो वह कहेंगे, यह तो वही मेवा है, जो इससे पूर्व हमको संसार में खिलाया गया था, और मौमिनों के सामने संसार के मेवों के समान रूप-रंग में तो सदृश्य किन्तु स्वाद में उनसे भिन्न प्रकार के मेवे लाये जायेंगे, कारण कि संसार के समस्त मेवों का स्वाद स्वर्ग के एक ही मेवा में है और स्वर्ग में रहने वालों लोगों हेतु स्वर्ग में पवित्र व सुन्दर स्त्रियां समस्त सांसारिक दोषों व अपवित्रताओं से शुद्ध हैं तथा स्वर्ग निवासी लोग स्वर्ग के स्थायी रूप से रहने वाले हैं।

तफसीर कादरी, भाग १ पृष्ठ ८

हां आयत में युक्ति इस बात की है कि हिदायत हो या गुमराही दोनों ही अल्लाह की ओर से हैं एवं उसकी दैन पर

निर्भर हैं। उस पर किसी का, किसी अन्य का कोई अधिकार नहीं। हज़रत नवास बिन समआन ने कहा कि रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि कोई दिल ऐसा नहीं जो भगवान की चुटकी में न हो। वह सीधा करने को हो तो सीधा कर देता है और टेढ़ा करना चाहे तो टेढ़ा कर देता है।

तफसीर मज़हरी पारा ३ पृष्ठ १९

अब देखना यह है कि मनुष्य ईमान लाये किस पर? खुदा, रसूल और कुरआन पर। इसका स्पष्ट है कि यदि खुदा पर ईमान ले आए तो वह ईमानदार नहीं कहला सकता, क्योंकि खुदा को तो मूर्तिपूजक-ईसाई और यहूदी सभीं मानते हैं। विवाद तो केवल हजरत मुहम्मद को पैग़म्बर मानने पर है, साथही पैग़म्बर पर उतरा हुआ कुरआन भी विवाद में समाहित है। सारांश, यह कि हजरत मुहम्मद की पैग़म्बरी को मानने से ही ईमान की पूर्णता होती है। जैसा कि इस आयत की व्याख्या में तफसीरे मजहरी ने लिखा है:—

व मंय्यकफुर बिही'मिनल एहजाबे फन्नारो मोएदाह

अर्थात :—दुसरे सम्प्रदायों से जो व्यक्ति हंजरत मोहम्मद और कुरआन को अस्वीकार करेगा, तो नर्क उसके ठिकाने का स्थान है। आयत में 'अहज़ाब' शब्द है ज़िसकी व्याख्या भाष्यकार ने यह कि है कि, **मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य सारे सम्प्रदाय**।

हज़रत अबू हुरैरा का कथन है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया मुझे इस सत्ता की सौगन्ध है कि जिसके हाथ में मुहम्मद का जीवन है कि इस उम्मत (इस्लाम) की दावत (निमंत्रण) पर भी यदि कोई यहूदी या ईसाई मेरे ऊपर भेजी हुई ईश्वरीय वाणी पर विश्वास लाये बिना मर जायगा तो वह अवश्य ही नर्कगामी

होगा। हदीस मुस्लिम का यह प्रणाम मज़हरी ने १२ वे पारे में पृष्ठ ३४ पर उद्धृत किया है। आजमुत्तफ़ासीर में भी भाग १ पृष्ठ २५८ पर भी उद्धृत हैं कि इस्लाम के अतिरिक्त सभी दीन (धर्म) मन्सूख (निरस्त) हैं और पालन करने योग्य नहीं हैं।

शुभ कार्य क्या ?

शुभ कार्य-फराइज(वह काम जोखुदा की ओर से अनिवार्य हैं) सुन्नत—जो हजरत मुहम्द की ओर से बताये गये हैं, अर्थात जो इस्लाम के सिद्धांत हैं उन पर चलना। कहने का अभिप्राय यह कि शुभ कर्म वही हैं जिन्हें इस्लाम ने प्रतिपादित किया है। इस आयत पर युक्ति स्थापित करते हुए आजमुत्तफासीर भाग १ पृ. १२४ पर लिखा है कि यहां से यह सिद्धांत भो उद्भूत है कि शुभ कर्म (नेक काम) ईमान में सम्मिलित नहीं है। ईमान केवल हृदय से विश्वास को कहते हैं। इसी प्रकार मज़हरी पारा १ पृष्ठ ६२ में है कि इस आयत से यह प्रतोत हाता है कि कर्म ईमान से पृथक है। आयत में प्रयोग किये गये शब्द ईमान लाना व शुभ कर्म करना कितने सुहावने और लुभावने हैं। जिन्हें सुन या पढ़ कर प्रत्येक प्रभू भक्त जन नतमस्तक हो जाता है, परन्तु दुख इस बात का है कि ईमान और शुभ कर्मों को इस्लाम ने हज़रत मुहम्मद के आदेशों की सीमा में सीमित कर दिया। इन दो महान गुणों विश्वास और शुभ कर्मों से ससार में शान्ति-प्रेम सद्भाव-उन्नति और मानव-विकास के समस्त द्वार खुल सकते थे किन्तु इन्हीं शब्दों को इस्लाम के सिद्धान्तों के सीमित व पक्षपातपूर्ण परिधि में बन्दी बन जाने का दुष्परिणाम यह हुआ कि संसार में साम्प्रदायिकता–राग द्वेष–शत्रुता–अंधविश्वास–हत्या लूटमार और वैमनस्यता आदि का भयंकर वातावरण निर्मित हो गया। ईश्वर द्वारा स्वर्ग सदृश्य संसार कयामत(प्रलय) के पून

ही मानवीय रक्त से सरोबार हो गया और बैरभाव रूपी दो
भट्टी की भयंकर अग्नि में मनुष्य जीवित ही जलने लगा। नि
प्राणियों की हत्या, निरीह नागरिकों को शमशीरों और सं
पर टांगना, कुमारिकाओं व विवाहिता महिलाओं को निर्द
निर्ममता और निर्लज्जता से सरे बाजार खुले आम अमानु
कृत्यों का शिकार बनाना एक धार्मिक कृत्य माना जाने ल
जिसकी स्पष्ट घोषणा व समर्थन के प्रमाण कतिपय पुस्तकों
प्रस्तुत किये जाने लगे। हाय...... .. ..रे.............ईमान!
मनुष्यता की क्या दुर्दशा कर डाली ? धर्म के उच्चादर्शों,
कल्याण की महत्ती महत्वकांक्षाओं को मात्र सस्ती सत्ता
याने के कार्य में बाज़ारू सौदे के समान प्रयोग किया जाने ल
मनुष्य की स्वतन्त्रता-सुखमय जीवन-भगवद् दर्शन चिन्तन
स्वाध्याय तथा पवित्र कार्यों का विधि विधान व पालन स
और रक्तपिपासु मज़हबी कठमुल्लाओं के हाथों के खिलौने
बन कर रह गये। उन्हें सत्यता व प्राकृतिक नियमों से
सम्पर्क नहीं रहा। मानसिक दासता का भयंकर प्रमाण कुर
की यह आयत है:-

व मा काना लिमौमिनिंव्व ला मौमिनतिन इज़ा कज़ल्लाह
रसूलहू अमरन अंय्यकूना लहूं मुल्खियरतो मिन अमरेहि
मंय्या सिल्लाहा व रसूलहू फ़क़दज़ल्ला ज़लालम्मुबीना।

कुरआन पारा २२ रकू ५/२ सूरत अह

अर्थ:-किसी मुसलमान पुरुष या स्त्री को यह गुन्जाईश (सा
नहीं जब कि अल्लाह और उसका रसूल किसी कार्य की आज्ञा
तो उनको उस कार्य में स्वतन्त्रता है, और जो व्यक्ति खुदा
उसके रसूल का कहना न मानेगा वह साक्षात पथभ्रष्टता में

तफसीर इब्ने कसीर पारा २२ पृ

फिर कुरआन में अन्य स्थान पर भी है:—

अन्नबिय्यो औला बिल्मोमेनीना मिन अनफुसेहिम्

अर्थात:-नबी सलअम मौमिनों को अपनी जानों (प्राणों) से भी अधिक उच्चतम है। इब्ने कसीर पारा २२ पृ. १३

फिर आयत की व्याख्या में लिखा है कि यद्यपि यह आयत शाने नज़ूल की दृष्टि से विशेषता रखती है, परन्तु आदेशात्मक दृष्टि से यह सबके लिये समान हैं। खुदा और रसूल के आदेश के होते हुए न तो कोई विरोध कर सकता है और न उसे मानने न मानने का अधिकार किसी को ही शेष रहता है और न मत सम्मत व विचार का अधिकार और न अन्य किसी बात का। अर्थात जो आज्ञा खुदा (खुदा तो व्यर्थ ही घसीटा जा रहा है। वास्तव में तो मुहम्मद साहिब की ईच्छाओं व आंकाक्षाओं पर इस्लाम खड़ा किया गया है।) और रसूल की है, उसके विरूद्ध न तो किसी को कुछ भी करने-सोचने न समझने व न सम्मति देने का अधिकार है।

इब्ने कसीर पारा २२ पृष्ठ १४

फिर कुरआन में है कि:—

वा अतीउर्रसूला लअल्लकुम तुरहमुन

कुरआन पारा १८ रकू ७/१३

अर्थ:-रसूल की आज्ञा का पालनकरो ताकि तुम पर दया की जाये।

यह आयत रसूल की आज्ञा को और भी स्पष्ट करती है:-

मंय्युते इर्रसूला फक़द अता अल्लाहा

कुरआन पारा ५, रकू ११/८

अर्थ:-जो रसूल की आज्ञा का पालन करता है वास्तव में वह

अल्लाह की ही आज्ञा का पालन करता है।

तफसीर मज़हरी पारा ५ पृष्ठ १

इस आयत ने यह सर्वथा स्पष्ट कर दिया कि जो रसूल के मुंह से निकला वह सब प्रमाण स्वरूप है। फिर लिखा:-

फल्यहजरिल्लजीना युखालेफूना अन अमरेही अन तुसीबहुम फित्नतुन औ युसीबहुम अज़ाबुन अलीम।

कुरआन पारा १८ रुकू १५

अर्थात:--जो लोग रसूल की आज्ञा का विरोध करते हैं, उनको इस बात से डरना चाहिये कि उन पर कोई आपत्ति आ जाये या उन पर कोई भयंकर दुख पड़ जाये।

तफसीर हक्कानी पृष्ठ

इस आयत की व्याख्या में इब्ने कसीर ने लिखा:-

जो लोग रसूल की आज्ञा का, रसूल की सुन्नत का, आदेश का, रसूल के मार्ग का, रसूल की शरीअत का विरोध करेंगे, दण्डनीय होंगे। मनुष्यों की अपनी वाणी और कर्म रसूल हज़रत मुहम्मद की सुन्नतों और हदीसों से मिलाने चाहिए, जो उनके अनुकूल हो वह ठीक, जो अनुकूल न हो वह मरदूद (बहिष्कृत) किये गए। बुखारी व मुस्लिम में है कि हज़रत मुहम्मद फ़रमाते हैं कि जो मनुष्य ऐसा कर्म करे जिस पर हमारी आज्ञा न हो वह मरदूद (निष्काषित) है। गुप्त या प्रकट जो भी मुहम्मद के धार्मिक सिद्धान्तों के विरूद्ध करेगा। उसके हृदय में कुफ़र, फूट बिदअत (जो बात मुहम्मद के विरूद्ध हो) और बुराई का बीज बो दिया जाता है या उसे दुनियां में भयंकर पीड़ा (जैसे कत्ल व लूट आदि) या परलोक में नर्क मिलता है।

इब्ने कसीर पारा १८ पृष्ठ

आप कुरआन की निम्नलिखित आयतों व हदीसों को देखें कि शुभ कर्मों की क्या भयंकर दुर्गति बना दी गई है। जिससे ज्ञात होता है कि शुभ कर्मों का आदेश लोगों को अपनी ओर आर्कषित करने हेतु एक मायावी षडयन्त्र मात्र हैं।

मज़हरी ने कुरआन पारा ८ की आयत "अल्वज़नो योमए ज़िन निल्हक्क़" पर लिखा है कि 'और उस दिन ठीक-ठीक तौल होगी' (अब ठीक-ठीक के नमूने देखें) तिरमज़ी, इब्ने माज़ा, इब्ने हवान, हाकिम और बैहकी ने इब्ने उमर के उद्धरण से लिखा है और हाकम ने इसे सहीह कहा है। रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि कयामत के दिन मेरी उम्मत के एक व्यक्ति को लाया जायेगा और उसके ९९ वें कर्मों के पत्र खोले जायेंगे। हर कर्म-पत्र की लम्बाई दृष्टि की सीमा (जहां तक दृष्टि पहुँचे) तक होगी। अल्लाह उससे फरमायेगा कि इसमें किसी बात से आपको इन्कार है कि मेरे कर्म लेखकों ने कुछ तेरे कर्मों में न्यूनता व वृद्धि तो नहीं कर दी ? वह व्यक्ति उत्तर देगा कि मेरे स्वामी नहीं। अल्लाह फरमायेगा क्यों नहीं ? तेरी एक नेकी हमारे पास सुरक्षित है। आज तेरे ऊपर अन्याय नही किया जायेगा। उसके पश्चात एक पर्चा निकाला जायेगा। उस पर 'अशहदो अन ला इलाहा' (कलमा शहादत) लिखा होगा। वह व्यक्ति निवेदन करेगा कि मेरे मालिक ! इन दफ़्तरों (कागज़ों के ढेर) के सामने इस छोटे से पर्चे की क्या उपयोगिता सिद्ध होगी ? अल्लाह फ़रमायेगा तुझ पर अत्याचार नहीं होगा। अर्थात अन्याय नहीं होगा। फिर कर्मपत्रों के दफ़्तर एक पलड़े में और दुसरे पलड़े में वह छोटा सा पर्चा रख दिया जायेगा। फलतः 'कलमा शहादत' वाला पलड़ा भारी हो जायेगा। (यह है मनुष्य के कर्मों की वास्तविकता) यह है अच्छे और बुरे कर्मों का फल।

इमाम अहमद ने विश्वसनीय प्रमाण (सनदे हसन) के आधार पर कहा है कि रसूलिल्लाह ने फ़रमाया कि कयामत के दिन (न्याय हेतु) तुलाएं स्थापित की जायेंगी । फिर एक व्यक्ति को लाकर एक पलड़े में रख दिया जायेगा । जिसमें उसके कर्मों को गणना के साथ लिखा गया था । तराज़ू उसको लेकर झुक जायगी । परिणामस्वरूप उसको नर्क की ओर भेज दिया जाएगा । ज्यों ही उसकी पीठ फिरेगी, अल्लाह की ओर से एक घोषणा करने वाला ऊंची आवाज़ में घोषणा करेगा कि इसको वापिस ले आओ, इसका कुछ रह गया है । उसके लौटने पर एक छोटा सा पर्चा लाया जाएगा जिसमें 'ला इलाहा इल्लल्लाह' लिखा होगा । वह पर्चा दुसरे पलड़े में उस व्यक्ति के साथ रख जाएगा । तत्काल ही तराजू उस ओर झुक जाएगी । (यह कर्मों का जनाज़ा निकाला जा रहा है अथवा यह होली जलाई जा रही है ?) क्या मूल्य रहा मनुष्य के शुभ-अशुभ कर्मों का, जिसकी बारम्बार कुरआन दुहाई दे रहा है ।)

इसी प्रकार की एक और मनोरंजक घटना पाठकों के ज्ञातंव्य हेतु प्रस्तुत है:-

इब्ने अबी दुनियां ने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर का वक्तव्य उद्धृत किया है कि कयामत के दिन अल्लाह की ओर से हज़रत आदम के ठहरने हेतु एक विशेष स्थान होगा। जहां से आप खड़े-खड़े नर्कगामियों को देख रहे होंगे । इसी घटना के अवसर पर मुहम्मदी सम्प्रदाय के एक व्यक्ति को नर्क की ओर जाता देख कर पुकारेंगे अहदद ! मैं उत्तार दूंगा, ऐ मनुष्यों के पिता ! मैं यहाँ हूँ । हज़रत आदम कहेंगे कि तुम्हारे इस व्यक्ति को नर्क की ओर ले जाया जा रहा है। मैं यह सुनते ही शीघ्रातिशीघ्र फ़रिश्तों की ओर जाऊंगा और उनसे कहूंगा कि

अल्लाह के दूतों ! ठहर जाओ। फ़रिश्ते कहेंगे कि हम शक्तिशाली अल्लाह का जो आदेश होता है, उसके प्रतिकूल नहीं कर सकते.....................उद्धृत करनेवाला (रावी) कहता है कि जब रसूलिल्लाह निराश हो गए तो अपने बांए हाथ की मुठ्ठी में अपनी दाढ़ी को पकड़ कर खुदाई तख्त की ओर मुंह कर के निवेदन करो कि मेरे स्वामी ! तूने मुझसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुझे तेरे सम्प्रदाय के विषय में लज्जित न करुंगा। तत्काल वहां से आवाज़ आएगी कि हज़रत मुहम्मद का कहना मानो। तराज़ू के स्थान पर उस बन्दे को वापिस ले आओ। फिर मैं एक अंगुल भर सफेद पर्चा अपनी गोदी से निकाल कर '**बिस्मिल्लाह**' पढ़ कर तराज़ू के दाएं पलड़े में डाल दूंगा। जिसके कारण नेकियों का पलड़ा झुक जाएगा। तुरन्त आवाज आयेगी...............इसको स्वर्ग में ले जाओ। तब उस व्यक्ति ने हज़रत का पता पूछा तो हज़रत ने कहा कि मैं तेरा नबी मुहम्मद हूं। तेरी दो दरूद (हज़रत मुहम्मद पर रहमत भेजना) थी, जो तू पढ़ता था। संकट के समय तेरे काम आई।

तफसीर मज़ाहरी भाग ४ पारा ८ पृष्ठ २६८

ला इलाहा इल्लिल्लाह का महत्व

बज़ार और हाकम ने इब्ने उमर से वर्णित किया है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया कि हज़रत नूह ने अपने दोनों पुत्रों से कहा कि मैं तुमको 'ला इलाहा' के विश्वास और आज्ञा पालन का आदेश करता हूँ। क्योंकि सातों आसमानों और भूमि के मध्य जितनी सृष्टि है, यदि उस सबको एक ओर तराज़ू के पलड़े में रखा जाए और 'ला इलाहा' को दुसरी ओर पलड़े में रखा जाए तो यह 'ला इलाहा' का पलड़ा भारी होगा। इससे आगे

इसी प्रकार की दुसरी रवायत (उद्धृण) हज़रत मूसा के विषय में है, जिसमें सातों ज़मीने लिखी हैं ।

तफसीर मज़हरी भाग ४ पारा ८ पृष्ठ २

कर्मफल की समाप्ति

तज़रीदे बुखारी हदीस क्र. ८-१ भाग २ पृ. ३६४ पर है:-

अन अबी ज़रिन काला आतैतुन्नबियो सल्लअम व अलैहि सौबुन अबयज़ुन व हुआ नाएमुन सुम्मा आतेतोहूं व कद इस्तकं फ़काला मा बिन अब्दिन काला ला इलाहा इल्लिल्लाह सुम्म माता अला ज़ालेका इल्ला दख़लल्जन्नता, क़ुल्तो व इन ज़ना व इन सरक़ा काला व इन ज़ना वा इन सरका (सलासा मर्रतिन)

अर्थात:-अबू ज़र से उद्धृण है कि मैं नबी असलम की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप जग चुके थे । आपने फरमाया कोई भी ऐसा मनुष्य जो 'ला इलाहा इल्लिल्लाह' कहे और यहो कहता हुआ मर जाए तो वह अवश्य ही स्वर्ग में प्रवेश करेगा। मैंने पूछा कि यद्यपि वह चोरी और व्यभिचार करता रहा हो तो भी? (उत्तर में) आपने अपना उत्तर तीन बार दोहराया और कहा कि भले ही वह चोरी और व्यभिचार करता रहे, तो भी स्वर्ग में जाएगा ।

इसके पूर्व भाग में ऐसी ही एक हदीस और भी है:-

अन अबी ज़रिन रजीअल्लाहो अनहो काला रसूलिल्लाहे सलअम अतानी आतिन मिन रब्बी फ़अखरजी औ काला बश्शिरनी अन्नहूम्माता मिन उम्मती लायशरेको बिल्लाहे शैअन दखलल्जन्नता, कुल्तो व इन ज़ना व इन सरका काला व इन ज़ना व इन सरका । (जनाज़ों का वर्णन)

तज़रीदे बुखारी भाग १ हदीस क्रमांक ६१८ पृ. २

अबू ज़र रज़ीअल्लाह से उद्धृत है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया मेरे पास मेरे पालनहार की ओर से दूत आया। मुझे सन्देश दिया और मुझको शुभ सम्वाद सुनाया कि जो व्यक्ति मेरी उम्मत में से मर जाए इस स्थिति में कि अपने विश्वास में ईश्वर के साथ और कोई सम्मिलित न किया हो तो वह स्वर्ग में जाएगा। मैंने निवेदन किया कि यद्यपि उसने चोरी और व्याभिचार ही किया हो ? तो कहा कि यद्यपि चोरी करे या व्याभिचारी हो तो भी वह स्वर्ग मै जाएगा।

प्रथम हदीस को तफसीर मज़हरी भाग ३ पृष्ठ १३० ने प्रमाणस्वरूप लिखा है।

पापों के क्षमा हेतु कुछ आयतें

पापों के क्षमा होने के सम्बन्ध में कुरआन में अत्याधिक आयतें हैं। हम उदाहरणस्वरूप कुछ आयतें यहां दे रहे हैं। आपको उनसे ज्ञात होगा कि यह आयतें पाप वृद्धि की कितनी प्रेरणा व उत्तेजना देती है। जब मनुष्य को यह विश्वास हो जाय कि मेरे पाप क्षमा हो जाएंगे तो वह शुभ कर्म करेगा ही क्यों ? पापों के क्षमा होने का यह आश्वासन पाप करने की प्रेरणा ही है।

आयत:—

इन्नल्लाहा ला यगफिरो अंय्युश्रिका बेही वा यगफ़िरो मा दूना ज़ालेका ले मंय्यशाओ। कुरआन पारा ५ रकू ७/४

तफ़सीर मज़हरी की व्याख्या:—

खुदा शिरक (अन्य उपास्य) को क्षमा नहीं करेगा.......... .... परंन्तु शर्त यह है कि मुशरिक मृत्युपर्यन्त शिरक पर

विश्वासी रहा। परन्तु यदि शिरक से तौबा (पश्चाताप) कर और ईमान ले आया तो पूर्व में किये गये पाप तथा शिरक क्षमा कर दिया जाएगा। पापों से तौबा करने वाला निष्पाप की भाँति हो जाता है जैसे कि उसने कभी अपराध किया ही न था। कुरआन में है कि:-

कुललिल्लज़ीना कफ़रू इंय्यन्तहू युग़्फ़र लहुम्मा कद सलफ़
कुरआन पारा ९ रकू ४

अर्थात:—काफ़िरों से कह दो कि यदि वह कुफ़र का परित्याग कर देंगे तो उनके पूर्व में किये हुए कुफ़र के पाप भी क्षमा कर दिये जायेंगे और शिरक के अतिरिक्त अन्य पाप भी जिसके अल्लाह चाहेगा क्षमा कर देगा। दुसरे पाप छोटे या बडे, जान बूझ कर या भूल से किये हों, पाप करने वाला बिना तौबा किये ही मर जाये तो उनको क्षमा करना अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है।
तफसीर मज़हरी पारा ५ पृष्ठ

इब्ने कसीर ने इसकी व्याख्या में लिखा कि अल्लाह फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ! तू जब तक मेरी भक्ति करता रहेगा और मुझसे शुभ आशा रखेगा, तेरे पापों को मैं भी क्षमा करता रहूँगा (खुदा का नाम लेने पर कोई पाप नहीं रह पायेगा, वाह क्या उत्तम व्यवस्था है) ऐ मेरे बन्दे ! यदि तू सारी पृथ्वी भर पाप लेकर भी मेरे पास आएगा तो भी मैं (अल्लाह) क्षमाशील होकर तुझसे मिलूँगा किन्तु जब कि तूने मेरे साथ अन्य किसी को उपास्य देव के रूप में भागीदार न बनाया होगा।
इब्ने कसीर पारा ५ पृष्ठ

तौबा (पश्चाताप) के विचार मात्र से १०० हत्याओं का अपराध क्षमा हुआ।

यह घटना तजरीदे बुखारी में इस प्रकार है:-

अन अबी सईदिन..............अनिन्नबिय्ये..............काला काना फी बनी इस्राईला रजोलुन कुतेलातिस्सअतुंव्व तिस्ईना इन्सानन । सुम्मा ख़रजा यस्अलो फ अता राहे बन फसअलहू फक़ाला लहू हल मिन तौबतिन क़ाला ला फ़कत । ....इत्यादि लम्बी हदीस है। हम तज़रीदे बुखारी से इसका अनुवाद संक्षिप्त में दे रहे हैं:—

अबू सईद से उद्धृण है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि बनी इस्राईल के परिवार में एक व्यक्ति था । जिसने निन्यानवे व्यक्तियों की हत्याएं की थी। फिर वह जिज्ञासा लेकर निकला और एक राहिब (एक ईश्वर भक्त) के पास आकर उसने पूछा कि क्या मेरी तौबा (क्षमायाचना) स्वीकार हो सकती है ? राहिब ने उत्तर दिया कि नहीं। उसने राहिब की भी हत्या कर दी। फिर इसी बात की जानकारो हेतु निकला । एक व्यक्ति ने (शंका निवारण हेतु) एक गांव का पता बताया। तब वह गांव की ओर चला परन्तु रास्ते में ही मर गया । अतः मृत्यु के समय अपने हृदय से उस गांव की ओर खिसका तो उसके हेतु स्वर्ग व नर्क के दूत आपस में विवादाग्रस्त हो गए तो अल्लाह ने उस गांव की भूमि को आदेश दिया कि तू निकट हो जा और दुसरी ओर की भूमि को आज्ञा दी कि तू दूर हो जा। फिर फरमाया कि ऐ फरिश्तों ! भूमि को नापने। नापने पर (जिस गांव की ओर वह जा रहा था) एक बालिस्त कम निकली, इसीलिए खुदा ने उसे क्षमा कर दिया। (उत्पत्ति आरम्भ का वर्णन)

तज़रीदे बुखारी भाग २ हदीस क्रमांक २७२, पृ. १२५

क्या न्यायप्रणाली है ? खुदा तआला की कि १०० हत्या करने वाले नृशंस हत्यारे को भी सुरक्षा प्रदान करने हेतु योजना

बना कर उसे क्षमा कर दिया। इसी न्याय प्रणाली के आधार पर मुसलमानों को नृशंस हत्याएँ करने का भरपूर अवसर पा की इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं। क्योंकि खुदा ने उनको तौबः (पश्चाताप) चमत्कारिक उपहार प्रदान कर रखा है। एक और आयत:—

यग़फ़ेरो ले मंय्यशाओ व युअज्ज़ेबो मय्यशाओ

कुरआन पारा

अर्थात:—क्षमा कर देता है खुदा जिसे चाहता है और वह मुसलमान (होते) हैं और भयंकर पीडाएँ देता है जिसे चाहता है और वह मुशरिक (होते) हैं।

तफसीर कादरी भाग १ पृष्ठ

देशत्यागी व शहीद के सब पाप क्षमा

आयत:—

फ़ल्लज़ीना हाजरू व उख़रेजू मिन दियारेहिम वा उजू फी सबीले वा क़ातेलू वा कुतिलू ल उकफ्फेरन्ना अनहुम सय्येआतेहिम व उदखे लन्नहुम जन्नातिन तजरी मिन तहतिअल अनहार।

कुरआन पारा ४ रकू २०

अर्थात:—जिन लोगों ने देश त्यागे और अपने गांवों से निष्कासित किये गये और मेरी राह पर चलने के कारण उनको कष्ट दिए गए अर्थात मेरी भक्ति व मेरे दीन (धर्म) के रास्ते पर या मुझ पर विश्वास स्थापित करने के कारण (ऐसा हुआ) और (जो) मेरी आज्ञा पाकर लड़े व मारे गए। मैं अवश्यमेव उनके पापों को क्षमा कर दूंगा और उनको अवश्य ही ऐसे स्वर्ग में प्रवेश दूंगा जिनके वृक्षों के नीचे नहरें बहती होंगी।

मज़हरी पारा ४ पृष्ठ

हज़रत मुहम्मद ने इन नहरों वाले बाग-बगीचों का प्रलोभन व पापों को क्षमा कराने का आश्वासन देकर लोगों को लड़ने-मरने व देश त्यागने हेतु तत्पर कर लिया। उक्त प्रलोभन व आश्वासन लोगों का मनोबल बनाये रखने के विशेष साधन थे। पापों का क्षमा हो जाना और कपोल कल्पित स्वर्गों के सतरंगी प्रलोभन अरबों को अत्याधिक आकर्षित व लालायित करते थे। परन्तु ज्ञात होता है कि इन समस्त आयतों में कोई न कोई प्रतिवन्धात्मक आदेश सदैव रहा है, किसी में शिरक़ का, तो किसी में खुदा की ईच्छा का ? ऐसा लगता है कि ऐसी प्रतिबन्धात्मक (शर्तवाली) आयतों से मुसलमान जन सन्तुष्ट नहीं होते थे। इसी कारण एक आयत ऐसी भी बनाई गई कि समस्त जन उससे सन्तुष्ट हो गए। यहां तक कि इस आयत से सन्तुष्ट होकर कतिपय काफिर लोग भी मुसलमान हो गये। आयत यह है:-

कुल या इबादेयल्लज़ीना अशरफू अला अन्फुसेहिम ला तक्नतू मिर्रहमतिल्लाहे। इन्नल्लाहा यगि.फरज्जुनूबा जमीआ। इन्नहू हुवल्गुफ़ूरुर्रहीम। कुरआन पारा २४ रकू १/३

अर्थः-ऐ नबी ! मेरी (अल्लाह) ओर से कह दो कि पापी बन्दों (भक्तों) अल्लाह की रहमत (दया) से निराश न हो जाओ। क्योंकि खुदा सब पापों को क्षमा करता है। निसन्देह वह बड़ा क्षमा करने वाला दयालु है।

तफसीर हक्कानी पारा २४ पृष्ठ ६

कुरआन के व्याख्याकारों ने इस आयत में भी तौबा (पश्चाताप) को घुसेड़ दिया है। जब कि आयत में तो कही भी तौबा का संकेत मात्र तक नहीं है। आयत में बिना किसी

शर्त के पापों को क्षमा करने का वचन है। इसकी व्याख्या में इब्ने कसीर व मुआलिमुत्तन्ज़ील ने इस्राईल वंश के उस व्यक्ति का उल्लेख किया है। (हम पूर्व में लिख चुके हैं।) जिसने पूरे सौ व्यक्तियों की हत्याएँ की थी और तौबा भी नहीं कर पाया था किन्तु तौबा की जिज्ञासा एवँ कल्पना मात्र से इस्लाम और क़ुरआन के खुदा ने उसे स्वर्ग में स्थान देने हेतु अनोखा ढंग उत्पन्न किया कि जहां उसकी मृत्यु हुई थी, वहां की भूमि को ही आगे-पीछे हटने का आदेश देकर उसे, जो कि सौ व्यक्तियों के प्राणों का जघन्य हत्यारा था, को स्वर्ग का अधिकारी बना दिया। वाह रे रहमान व रहीम ? क्या..........क्या करामातें हैं तेरी रहमत की ? भयंकर व जघन्य पापी तक को बिना तौबा किये मिल गया तेरा जन्नत ? अब ऐसे में पाप करने से कोई क्यों डरे व बचे ? जब कि सौ व्यक्तियों के भयकर हत्यारे को भी स्वयं अल्लाह तआला अपने स्वर्ग में ले गए। यह अपराधों की खुली छूट नहीं हैं तो और फिर क्या है। इसी प्रकार मुआलिम में है कि:-

"दो व्यक्तियों में एक व्यक्ति सदैव भक्ति में रत रहता था उसने अपने पापी साथी से कहा कि अल्लाह तुझे कभी क्षमा नहीं करेगा। जब उन दोनों की मृत्यु हो गई तो अपराधकर्ता पापी व्यक्ति स्वर्ग में गया और भक्त व्यक्ति को नर्क मिला।

उक्त आयत के शाने नज़ूल (उतरने) में मुआलिम ने हमजा के हत्यारे वहशी को भी गिना है। उसका विवरण है कि वहशी के साथी इस शर्त पर मुसलमान बनने को तत्पर थे कि अल्लाह उनके समस्त पापों को क्षमा कर दें परन्तु कई आयतें उनको बताई गई जिनमें कोई न कोई शर्त (प्रतिबन्ध) अवश्य थी। फिर अल्लाह तआला की ओर से यह बिना शर्तवाली आयत

उतरना बताया गया तो वह मुसलमान बन गए क्योंकि इस आयत में किसी भी प्रकार का कोई भी प्रतिबन्ध (शर्त) नहीं था। किन्तु आयत से तो ऐसा प्रतीत हो रहा है, कि वह केवल मुसलमानों पर ही प्रभावित होती है, क्योंकि इसमें कहीं भी काफिरों मेरे बन्दे कह कर सम्बोधित नहीं किया गया है।

तफसीर हक्कानी में भी है कि "पाप छोटा हो या बड़ा कुफ़र हो या शिरक़ तौबा करने के पश्चात खुदा सबको क्षमा कर देता है।"

तौबा (पश्चाताप) की अमृतरूपी शीशी जेब में रखो व जी भर कर पाप करते-करते इस संसार को नर्क में परिवर्तित कर दो और मृत्यु के उपरान्त फिर भी स्वर्ग में स्थान सुरक्षित हैं ही। क्या चिन्तां है ?

इब्ने कसीर ने लिखा कि बन्दे को खुदा की कृपा से निराश नहीं होना चाहिए। पाप यद्यपि कितने ही बड़े और कितने ही अधिक क्यों न हों। खुदाई रहमत (ईश्वरीय दयालुता) का द्वार सदैव ही खुला रहता है और वह बड़ा ही विस्तृत है।

आगे कहा है:--'मंय्यामलो सूअन औ यज़्लमो नफ्सहू' अर्थात जो बुरा काम करे या अपनी जान (प्राण) पर ही अत्याचार कर बैठे, फिर अल्लाह से क्षमा मांगे तो वह अल्लाह को क्षमाशील दयालु पायेगा।

इब्ने कसीर पारा २४ पृष्ठ १४

अल्लाह का द्वार कितना विशाल है ? इसी सन्दर्भ में किसी कवि ने कहा है:—

रात को डूब पी और सुबह तौबा कर ली;
रिन्द के रिन्द रहे और हाथ से जन्नत न गई।

इब्ने कसीर में आगे है कि "रसूलिल्लाह फरमाते हैं—सौगन्ध है उस खुदा की, जिसके हाथ में मेरी जान हैं कि यदि तुम पाप करते–करते भूमि व आसमानों को भर दो, फिर अल्लाह से क्षमा मांगों तो वह अवश्यमेव तुम्हें क्षमा कर देगा। उस सत्ता की शपथ जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है। यदि तुम पाप न करो तो अल्लाह तुम्हें विनष्ट कर के उन लोगों को लाएगा जो पाप करें और क्षमा मांगे फिर अल्लाह उन्हें बख्शे (क्षमा करें)।

हज़रत अबू अय्युब अन्सारी ने अपने अन्तिम समय में फरमाया कि एक हदीस मैंने आज तक वर्णित नहीं की। मैंने स्वथ रसूलिल्लाह से सुना था कि यदि तुम पाप ही न करते तो अल्लाह ऐसी जाति को उत्पन्न करता जो पाप करती, फिर अल्लाह से क्षमा माँगती और अल्लाह उन्हें क्षमा प्रदान करता।

इब्ने कसीर दारा २४ पृष्ठ ६

इब्ने कसीर द्वारा वर्णित उक्त दोनों हदीसों का अनुवाद हमने दिया है, जो कि यथार्थ से नहीं है। वास्तविक हदीस हम नीचे उद्धृत कर रहे हैं। हदीस:—

अन अबी हुरैरता काला काला रसूलुल्लाह वल्लज़ी नफ़्सी बियदेही लौ लम तजनिबू ल ज़हबल्लाहो लकुम ल ज़ा आ कौमिन यज़नेबूना फ़यस्तरफ़ेरन्ना फयस्तरफेरन्ना फयग़फेरुल्लहु अन अबी हुरैरता काला काला रसूलिल्लाहे लौ इन्नाकुम ल लकुन जनूबुन यगफिरा हल्लाहो लकुम लजा अल्लाहो बे कौमिन लहुम जनूबुन यग़फिराहा लहुम।

सहीह मुस्लिम भाग ६ अरबी पृष्ठ ३५५, उर्दू
अनुवाद पृष्ठ २६५१।

मिश्कात भाग २ किताबुद्धावात बाव इस्ति-
ग़फार पृष्ठ २९६ (मुज़ाहिरे हक़)

तफ़सीर जलालैन ह्राशिया पृष्ठ ३९८ पर भी उपरोक्त आयत को वहशी पर ही लगाया है। क्या हदीसें हैं रसूल्लिाह की, खुदा को भी इस हेतु उत्तेजित और अभ्यस्त कर रखा है कि वह क्षमा अवश्य करे। यदि कोई पाप ही न करें तो अल्लाह पाप करने वाली प्रजा या जाति को उत्पन्न करेगा और फिर उसे क्षमा कर अपनी क्षमावृति की अभ्यस्तता या ईच्छा पूरी कर लें।

इस चर्चित आयत के सम्बन्ध में दो बातों का विशेष वर्णन आया है। एक ईमान और दुसरा शुभ कर्म। ईमान (विश्वास) लाने को तो इस्लामी सम्प्रदाय ने हज़रत मुहम्मद की दासता में लपेट कर अंधविश्वास के गहरे अंधकूप में पटक दिया गया और शुभ कर्मों को इस्लाम की चहार-दीवार (परकोटे) के बन्दीगृह में कैद कर तौबा (पश्चाताप) की कब्र में हमेशा-हमेशा के लिये ही दफन कर दिये। बस यही है। इस्लाम व कुरआन के ईमान व शुभ कर्मों की वास्तविक कहानी। यह ईमान व कर्मवाद का विषय अत्याधिक गहन है। जिसका एक पक्ष आपने यहां देखा व इसका अन्य एक और उत्तर पक्ष विस्तारपूर्वक आगामी आयत "वत्तकू यौमल्ला" की व्याख्या में आपको दृष्टिगोचर होगा। जिस आयत की हम यहां चर्चा कर रहे हैं, उसकी एक बात और यह शेष रह गई, वह है विभिन्न स्वर्ग, जिसके भुलावे या छलावे में इस्लाम पथभ्रष्ट हुआ है। इसका भी किञ्चत चित्रण मिर्ज़ा हैरत देहलवी के शब्दों में निम्न प्रकार है। मिर्ज़ा साहिब लिखते हैं कि:—

कुरआन में विभिन्न स्थानों पर स्वर्ग का वर्णन है। सुन्दरता दिखाई गई है। जिसके द्वारा मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ और आनन्दयुक्त विचारों को सीधे-साधे वाक्यों में दर्शाया है। नहरों का बहना, हरे-भरे उद्यानों का रहना, मेवायुक्त के फल खाना, हीरे जवाहिरात की इतनी अधिकता होना उनके बिस्तर बनाये जाएंगे, सुन्दर और मनमोहक दास-दासि की हर समय उपस्थिति' इत्यादि। यह समस्त वर्णन जिससे एक उच्च विचार के व्यक्ति को उच्च भावनाएँ और श्रे सुखों के भाव भी उत्पन्न हो सकते हैं।

हम यह उचित समझते हैं कि कुरआन और हदीसों वर्णित स्वर्ग और उसके उत्तम साधनों का वर्णन संक्षिप्त रूप लिख दें। उस स्वर्ग की स्थिति पर दृष्टिपात करते समय मुझे सुख व आराम की झलक अवश्य ही होगी। उन्हें सीलवन्द की शराब पिलाई जाती होगी। वह लाल याक़ूत (अमूल्य प के तख्तों पर निर्मित स्फटिक के तम्बुओं में बैठे होंगे। तम्बुओं में हरे छपे हुए बिछौने होंगे, और वह तम्बू शराब शहद की नहरों के किनारों पर खड़े किए जायेंगे। सेवकों किशोरों से भरे, ग़ौरी-गौरी स्त्रियां, जिनकी बड़ी-बड़ी होगी। उनसे सुसज्जित सभ्य और सुन्दर-सुन्दर अप्सराओं भरे यह तम्बू सजाये गये होंगे। वह अप्सराएँ याक़ूत व मूं समान सुन्दर व आकर्षक होगी। इन अप्सराओं को स्वर्ग में वाले लोगों के पूर्व अन्य किसी ने भी देखा ही नही होगा उनमें से जब कोई अप्सरा इठलाती चलेगी तो उसका दा (आँचल) सत्तर हजार किशोर उठायेंगे। उन पर सफेद चादरें ऐसे शोख़ (आकर्षक) रंग की होगी, जिन्हें देख कर आं में चकाचौंध उत्पन्न हो जाए। उन पर मोती या मूंगे जड़े हों उनके मस्तक पर मुकुट (ताज) होगे। आंखों में लाल डोरे

मोहक व आकर्षक पुतलियां होंगी। वह लअल (रत्न) के भव्य प्रासादों (महलों) मे पर्दानशीन नतदृष्टि रखने वाली होंगी। उनके भवन स्वर्ग के उद्यानों के मध्य होंगे। फिर उन स्त्रियों और पुरुषों मे शराब के दौर चलेंगे। जिन प्यालों में शराब पिलाई जायेगी, उन प्यालों को वह किशोर उठाये होंगे, जिनका रूप बिखरे मोतियों के सदृश्य साफ-सुथरा और चमकदार होगा। खुदा की ओर से नित नये उपहारों से उनका स्वागत किया जायेगा। वह सदैव अनन्तकाल तक स्वर्ग में ही रहेंगे। नहरों में से दूध-शराब तशा शहद पीयेंगे। उन नहरों की भूमि चांदी की होगी। वहां के कंकर मूँगे के और मिट्टी कस्तूरी की होगी। जो आबखोरे (पानी पीने के पात्र) पानी पीने को मिलेंगे उनमें मोती-लाल और मूँगे जड़े होंगे। उन पात्रों में शराब स्पष्ट दृष्टिगोचर होगी। उन पात्रों को ऐसे दास उठायें होंगे जिनके मुँह चमक-दमक में सूर्य के सदृश्य होगे। स्वर्ग में एक उद्घोषक आकर घोषित करेगा कि ऐ स्वर्ग के निवासियों! तुम्हें ऐसा स्वास्थ्य दिया गया है कि तुम कभी अस्वस्थ ही न होओगे। तुम्हें ऐसा जीवन दिया गया है कि तुम कभी मरोगे नहीं। तुम्हें वह यौवन (जवानी) दिया गया है कि कभी वृद्धावस्था नहीं आयेगी। तुम्हें वह दौलत (सम्पति) दी गई है कि कभी निर्धन ही नहीं होओगे।

रसूले सल्लअम ने फ़रमाया कि दो स्वर्ग रजत (चांदी) के होंगे। उनके बर्तन और समस्त वस्तुएँ चाँदी की होगी और दो स्वर्ग समस्त वस्तुओं सहित स्वर्ण के होंगे और खुदा का साक्षात दर्शन होगा। स्वर्गनिवासियों के केश (बाल) कभी उलझेंगे नहीं। उनमें सदैव तेल पड़ा दृष्टिगोचर होगा। अदन के स्वर्ग में मोती के महल हैं। प्रति महल में सत्तार गृह सुर्ख लाल के और हर घर में सत्तार हजूरे (स्वागत कक्ष) हरे जमुर्रद

(अमूल्य पत्थर) के होंगे और हर हजूरे में तख्त और फर्श सत्तार विछौने हरे रंग के बिछे हुए होंगे ओर हर फर्श पर बीबी हूरों (अप्सराओं) में से बैठी है। हर हज़ूरे मे सत्तर रखान (भोजन के आसन) पर सत्तार प्रकार का भोजन है। हजूरे में सत्तार लौंडियां (दासियां) हैं और मौमिनों (मुसलमान) को इतनी शक्ति प्रदान कर दी जायेगी कि उन सभी से बनाये रखें। स्वर्ग में जो नहरें हैं वह कस्तूरी के टीलों व पहाड़ियों से निकलती हैं। स्वर्ग में जो आभूषण मिलेंगे वह संसार के समस्त आभूषणों से श्रेष्ठ होंगे। स्वर्ग में एक वृक्ष ऐसा है कि यदि कोई सवार (घोड़े का) उसकी छाया में सौ वर्षों भी चले फिर भी उसकी छाया समाप्त नहीं हो। स्वर्ग में वृक्ष हानिकारक भी है। वह बेरी का वृक्ष है। खुदा ने दिया है कि उसके हर शूल के स्थान पर फल लगा देगा। निवासियों के वस्त्र मेवों (फलों) में से निकला करेंगे। स्वर्ग प्रवेश पाने वालों का रूप पूर्णमासी के चन्द्रमा सदृश्य होगा। वहां पर न थूकेंगे, न छीकेंगे और न शौच व लघुशंका निवृत्ति ही करेंगे। उनके बर्तन व बालों की कंघियां सोने-चांदी की होगी। पसीने में कस्तूरी की सुगन्ध आयेगी। प्रत्येक हेतु पत्नियां होगी। जिनकी पिण्डलियों का मांस सुन्दर और होने के कारण स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा।

हजरत ने फरमाया कि स्वर्ग निवासियों के मुकुट ऐसे कि उनमें से साधातण मोतियों की आभा पूर्व से पश्चिम तक आलोकित कर देगी। स्वर्ग वालों का तम्बू पोला (खोखला) होगा। उसकी ऊँचाई बीस कोस होगी। उसके प्रत्येक कोने मौमिन (मुसलमान) की गृहिणी होगी, जिसे अन्य बीवीयां (पत्नियां) न देखेंगी। तम्बू पीले मोती का होगा। उसकी

चौड़ाई एक फरसख होगी और उसके चार हजार स्वर्ण--द्वार होंगे।

यहूद के एक विद्वान ने हज़रत मुहम्मद से प्रश्न किया कि स्वर्ग निवासियों का प्रथम भोजन क्या होगा। हज़रत ने फरमाया कि मछली के जिगर के कबाव, उसके पश्चात उनका आहार स्वर्ग का बैल होगा। पानी सलसबील के चश्मे से आएगा।

किसी के द्वारा पूछे जाने पर हज़रत ने फरमाया कि स्वर्ग निवासियों में से प्रत्येक व्यक्ति में सौ–सौ व्यक्तियों के समान खाने-पीने व ऐश करने की शक्ति होगी। हज़रत ने फरमाया कि उनको लघुशंका व शौच आदि नहीं होगा। उनके शरीरों से मुश्की सुगन्ध का पसीना बहेगा और उदर स्वच्छ हो जाएगा। हज़रत ने फरमाया ज्यों ही तू पक्षी को देख कर उसकी कामना करेगा तत्काल वह तेरे सम्मुख ज़िबह (वध) होकर व भून कर आ जाएगा। स्वर्ग में कतिपय पंछी बख्ती ऊँट जैसे होंगे। स्वर्ग निवासियों हेतु सत्तर प्यालों का दौर प्रचलित रहेगा और प्रत्येक प्याले में नवीन प्रकार का भोजन होगा।

स्वर्ग निवासियों को चांदी के रंग सी एक शराब मिलेगी और वह ऐसी होगी कि यदि कोई सांसारिक व्यक्ति उसमें अपना हाथ डाल कर निकालें तो वह इतनी मात्रा में सुगन्धयुक्त हो कि कोई जीवित प्राणी ऐसा न हो, जो उसकी सुगन्धि से प्रभावित न हो जाए।

हज़रत ने फरमाया कि उनके रूप पर्दों में से स्पष्ट दिखाई देंगे और उनके आभूषण का साधारण मोती भी पूर्व से पश्चिम तक को आलोकित कर देगा। उनके पास सत्तर वस्त्र होंगे, जिनसे मनुष्य की दृष्टि पार हो जाए। यहां तक कि उनकी पिण्डलियों का गूदा भीतर से ज्ञात होगा।

प्रत्यक्ष साक्षी

हज़रत ने फरमाया कि मे राज (स्वर्ग-प्रस्थान) की रा
में स्वर्ग के एक स्थान पर पहुँचा । वहां ज़मुर्रद (हरित रत्न)
और सूर्ख लाल (रक्तिम-रत्न) के तम्बू खड़े थे। वहां
स्त्रियों ने खुदा की आज्ञा लेकर मुझे अस्लामो अलैकुम कहा।

एक व्यक्ति के यह पूछने पर कि स्वर्ग निवासी क
सम्भोग करेंगे ? हज़रत ने फरमाया कि स्वर्ग निवासी प्र
व्यक्ति में इतना पौरूष होगा जितना तुम सत्तार व्यक्तियों
होता है।

स्वर्ग निवासियों में सबसे निम्न श्रेणी का व्यक्ति
होगा कि उसके साठ हजार सेवक होंगे । प्रत्येक सेवक का
वह होगा जो अन्य का न होगा। हज़रत ने फरमाया कि
व्यक्ति ५०० अप्सराओं ४ हजार कुमारिकाओं और ८ ह
पुरूषों से सम्पर्क कर चुकी विवाहिता स्त्रियों से निकाह (शा
करेगा। और उनमें से प्रत्येक से इतना मुआनिका (सम्भोग
करेगा जितना दुनिया में जिया होगा।

हज़रत ने फरमाया-स्वर्ग में एक बाज़ार होगा।
स्त्रियों-पुरूषों के अतिरिक्त और किसी अन्य वस्तु के क्रय-वि
की व्यवस्था नहीं होगी। अतः जब कोई व्यक्ति किसी सुन्दर
की कामना करेगा तो वह उस बाजार में जाएगा, जहां बड़ी-
आंखों वाली अप्सराएँ एकत्रित हैं । वह इतने ऊँचे स्वर
कहती है कि इतना किसी ने न सुना होगा। आवाज यह है
सदा स्थायी हैं, हम कभी विनाश को प्राप्त नहीं होंगी....
........मुबारिक है वह व्यक्ति जो हमारा है और हम उसके
(इस प्रकार के अश्लील वेश्याओं के बाजारों की तो हदीसों
अत्याधिक चर्चा है।)

स्वर्ग में गायक अप्सराएं हैं ।

रसूलिल्लाह ने फरमाया कि सुनो, कोई है, जो स्वर्ग की तैयारी करे..........स्वर्ग स्थाई भवन हैं, नहरें बहती हैं, वृक्षों में पके-पके फल लगे हुए हैं, सुन्दर और रूपवती पत्नियां हैं। आनन्ददायक और उत्तम पदार्थ सदैव रहेंगे। लोगों ने कहा—या रसूलिल्लाह ! हम हैं, उसकी तैयारी करने वाले। फिर कहा-कहो यदि खुदा चाहे तो। फिर हज़रत ने ज़िहाद (धर्म युद्ध) का आदेश दिया।

एक व्यक्ति ने हज़रत से पूछा कि स्वर्ग में घोड़ा भी है ? हज़रत ने कहा यदि घोड़ा तुझे पसन्द है तो तुझे सूर्ख याक़ूत का घोड़ा मिलगा। तू स्वर्ग में जहां भी चाहेगा वह तुझे लिये उड़ता फिरेगा।

एक व्यक्ति ने स्वर्ग में ऊँट होने सम्बन्धी प्रश्न किया तो हज़रत ने कहा—खुदा के बन्दे (भक्त) ! ज़ब तू स्वर्ग में प्रवेश करेगा। जिस वस्तु की तू कामना करेगा तुझे वह प्राप्त होगी। हज़रत ने फरमाया कि स्वर्ग निवासी का मन चाहेगा तो उसके सन्तानें भी होगी। उनकी उत्पत्ति ऐसी होगी कि एक घड़ी में जवानी आ जाएगी। हज़रत ने फरमाया कि स्वर्ग निवासियों को दाढ़ी—मूंछे नही होगी। स्वस्थ व चंचल, सुरमा लगाये हुए तैंतीस वर्ष की आयु के होंगे। उनकी उत्पत्ति हज़रत आदम के सदृश्य होगी और उनकी लम्बाई—चौड़ाई सात—सात हाथ की होगी।

हज़रत ने फरमाया-स्वर्ग निवासियों में सबसे निम्न वह होगा, जिसके पास ८० हजार सेवक, ७२ पत्नियाँ होगी और उसके हेतु सब्ज (हरित) रंग के जवाहर तथा मोतियों का तम्बू खड़ा किया जाएगा कि वह ज़ाविया और मिनहाद के मध्य आ जायें,

और उनके मस्तक पर मुकुट होगा। उसमें निम्न श्रेणी का मो
ऐसा होगा जो पूर्व से पश्चिम तक को आलोकित कर देगा।

हज़रत ने कहा-मैंने स्वर्ग को देखा कि उसके अनार इ
बड़े-दड़े हैं कि जैसे बैठक कसा हुआ ऊंट। उसके पक्षी व
ऊंट के समान भव्य आकार के हैं। मैंने उसी (स्वर्ग) में
दासी को देखा, उससे पूछा कि तू किसकी है? उसने उत्तर दि
ज़ैद बिन हरसा की। स्वर्ग की दूधिया नहरों के दूध का स
नहीं बदलता, जिन्हें मनुष्यों ने साफ नहीं किया। शराब है....
........फलों की स्थिति खुदा ही जानता है। स्वर्गवालों को स
में वड़े तेज घोड़े और गतिवान ऊंट मिलेंगे। जिनकी काठि
जीन याक़ूत के होंगे। वह स्वर्ग में भ्रमण (सैर) करेंगे। उन
पत्नियां, अप्सराएं मोती सदृश्य होंगी।

मिर्जा हैरत देहलवी ने उपरोक्त स्वर्ग का वर्णन अ
प्रसिद्ध पुस्तक "मुकद्दमाए तफसीरे फुर्कान" में पृष्ठ क्र
७६ से ८४ तक किया है। कुरआन में बहुत सी वह बातें नहीं
जो कि हदीसों-तफसीरों व अन्य ग्रन्थों में हैं। अतः इस वि
पर हम पृथक से एक अन्य पुस्तक जिसमें केवल सम्पूर्ण स्वर्ग
विवरण होगा, शीघ्र प्रकाशित करेंगे। यह तो मात्र पाठकों
इस्लाम के स्वर्ग की काल्पनिक झांकी समान है। इस किञ्चि
विवरण मात्र से आयत में वर्णित स्वर्ग की एक आंशिक रूप
इस्लाम और कुरआन के एक प्रामाणिक विद्वान मिर्जा हैरत दे
लवी द्वारा प्राप्त हो गई है।

हमारी धारणा

संसार के समस्त प्रभु भक्तों-धर्माचार्यों-संतों और म
त्माओं ने संयम व सदाचार को ही जीवन की श्रेष्ठता

पादित करने वाले सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं, किन्तु उपरोक्त वर्णित तथाकथित स्वर्ग का कतिपय वर्णन मनुष्य को विषय विकारों, भोग विलासों एवं सांसारिक कुत्सित कामनाओं के विषाक्त वनों में घसीट ले जाने वाला है। यही कारण है कि इस्लाम के अधिकांश अनुयाईयों का जीवन विलासिता-दुराचार असंयमी–अत्याचारी–भोगविलासी एवं महापातकी के रूपों में इतिहासों में प्रकट हुआ है। जैसे वर्तमान बांगला देश काण्ड में भी असंख्य विवाहित महिलाओं और कुमारी कन्याओं पर मुसलमान सैनिकों द्वारा पाशविकतापूर्ण बलात्कार व अत्याचार किये गए। इससे पूर्व भी संसार के समस्त भागों व देशों में भी मुसलमान आक्रान्ताओं द्वारा इसी प्रकार के अमानुषिक व बर्बरतापूर्ण कृत्य किये गये हैं जिन्हें इतिहास आज भी अपने अनगिन पृष्ठों में पुकार–पुकार कर उनके नामों को और उनके कर्मों को धिक्कार रहा है।

समस्त ईश्वरभक्त सर्वसम्मति से विषय विकारों एवं सांसारिक सुखों को त्याग कर मात्र भगवद्–प्राप्ति को ही अपना एकमेव लक्ष्य निर्धारित करते हैं। जब कि इस्लाम इन्हीं विषय विकारों में लीन हो जाने को ही मुक्ति व मोक्ष बताता है।

तफसीर मजहरी ने स्वर्ग में उपलब्ध पदार्थ वही बताये हैं, जो कि सामान्यतया लोगों को इसी संसार में उपलब्ध रहते हैं। कोई दिव्य अलौकिक भाव व पदार्थ की वहां कल्पना तक नहीं है। इसीलिए इस्लाम के अधिकांश अनुयाईयों अर्थात मुसलमानों की भव्य से भव्य और विशाल महत्वकांक्षाएं भी सांसारिक भोग विलासों और खाने-पीने तक ही सीमित रहती है, और अपनी कामनापूर्ति हेतु इसीलिए वह कोई भी और कैसा भी कुकर्म करने में किसी प्रकार की कोई लज्जा या संकोच अनुभव नहीं करते। उनसे संयम–सदाचार–सभ्यता–समानता–दिव्यता और आध्या-

त्मिकता की आशा तो क्या कल्पना भी नहीं की जा सकती है क्योंकि इस प्रकार की किञ्चित शिक्षा भी उन्हें किसी भी आयत अथवा किसी भी पैगम्बर-धर्मप्रचारक या अन्य किसी मार्गदर्शक द्वारा दी ही नहीं जाती रही और यही कारण है उनके मन और मस्तिष्क में किन्हीं दिव्य भावों ने न तो जन्म लिया है या उस ओर न कभी उनकी रूचि ही अग्रेसित हुई है।

एक हदीस में अबू हुरैरा से उद्धृत है कि रसूलिल्लाह फरमाया मैंने अपने भक्तों हेतु ऐसी-ऐसी उत्तम वस्तुएं की हैं, जिन्हें न किसी ने आंखों से देखा न कानों से सुना और किसी के हृदय में ऐसा विचार ही आया। इसका प्रमाण है:-फला तालमो नफ्सुम्मा उखेफा लहुम मिनकुर्रता अयनु अर्थात:-कोई प्राणी नहीं जानता कि जो आंख की ठण्डक हेतु वहां छुपाई गई है। इस हदीस को बुखारी व मुस्लिम वर्णन किया है। तफसीर मज़ाहरी, पारा १ पृष्ठ

इसका तात्पर्य यह है कि स्वर्ग में कुछ अदृश्य व अलौकिक दुर्लभ पदार्थ भी हैं। जिनका कहीं पर भी कोई वर्णन पाया जाता है। उनका वर्णन इसीलिए नहीं किया गया क्योंकि के लोग उन्हें नहीं जानते ? जो जानते नहीं उन्हीं का ज्ञान न और जो जानते हैं उन्हीं का ज्ञान देना, क्या यही धर्म-शिक्षा इस सम्बन्ध में मिर्जा हैरत लिखते हैं:-

जो कुछ स्वर्ग के सम्बन्ध में कहा है, वह एक विचार सिद्धान्त के आधार पर कहा गया है। हमारे पैगम्बर उन में पैगम्बर बन कर आए थे. जिन्हें दूध-शहद-शराब-फल स्त्रियां व जवाहिरात आदि के भवन अत्याधिक प्रिय थे व कर लगते थे। वे उन पदार्थों को अन्तिम कोटि का आनन्द और उल्लास समझते थे। यदि उन्हें उनके ही विचार-रूचि और

भावन अनुकूल स्वर्ग के पदार्थों का भागीदार न बनाया जाता तो आज कुफ़र व अवज्ञा में सम्पूर्ण संसार ग्रस्त होता और कहीं नाम मात्र को भी ईश्वर की भक्ति दृष्टिगोचर नहीं होती।

मुकद्दमाए तफसीरे फुर्कान, पृष्ठ ८४

अरब के चन्द मुट्ठी भर लोग यदि शराब-कबाब और शबाब आदि में लिप्त थे, तो मिर्जा साहिब! आप तो अपने आपको स्वयँ बचा सकते थे। आप भी समझते-बूझते इसी पाप पंक में क्यों और कैसे लिप्त हो गये ? आगे लिखा है :-

हमारे पैगम्बर ने उस वहशी जाति को खुदा की भक्ति हेतु आव्हान किया था जिसके दैनिक जीवन में स्त्रियों तथा शराब की बहुतायत थी। जिन के पास हरियाली-नहरों, दरियाओं के नाम और निशान तक न थे। उन्हे सीधे मार्ग पर लाना अत्यन्त कठिन कार्य था। जब तक उन्हें वह बातें न बताई जाती जो उन्हें प्रिय व रुचिकर थी व उन्हें उन्हीं के प्रचलन अनुसार न समझाया जाता तो वह कभी भी सन्मार्ग पर नहीं आते।

भविष्य के सुख-दुख के सम्बंध में आप उनको क्या समझा सकते थे ? जिनका जीवन शताब्दियों लूटमार व हत्याएँ करते रेगिस्थानी जँगलों में गुजर गया था। जिन्होंने हरियाली फल-फूल-चश्मों की बहार-नहरें व रेगिस्थानी बियाबानों में सुन्दर स्त्रियों से सम्पर्क का कभी अवसर ही नहीं पाया हो। जिन्होंने हीरे-जवाहिरातों से महलों-तम्बुओं व बिछौनों का वर्णन केवल कहानियों और लोकोक्तियों में ही सुने हों। उन ऐसे लोगों को यदि ऐसा सुखद और सुरुचिपूर्ण संवाद न सुनाया जाता और मात्र विवेकानुसार बुद्धिमतापूर्ण वाक्य कह दिये जाते कि स्वर्ग में ऐसे पदार्थ है, जो न किसी ने देखे न सुने और न जिव्हा से चखे तो इन साधारण वाक्यों से उनको कभी भी सन्तोष न होता

वह कभी भी मुसलमान नहीं बनते । इसको सिद्ध करने हे मनुष्य को समयानुसार व्यवहार करना चाहिये एक उदाहरण

मुस्लिम विद्वानों ने इस विशेष प्रकरण में कहा कि, मूर्ख को मूर्ख के समान उत्तर दिया जाना चाहिए। इसका सच्चा अनुकरण किया है और वह इस मार्ग में सफल हुए है । हमारी दिल्ली गौरव शाह अब्दुलअजीज साहिब से एक दिन एक हिन्दू ने आकर कहा कि यदि आप मेरे प्रश्न का उत्तर दे दें और मुझे सन्तोष हो जाए तो में मुसलमान हो जाऊँगा । वह व्यक्ति जाट था और उसकी बुद्धि भी मोटी थी । उसने प्रश्न किया कि खुदा हिन्दू है या मुसलमान ? शाह साहिब ने कहा - मुसलमान । उसने कारण पूछा तो शाह साहिब ने कहा खुदा मुसलमान न होता, यदि हिन्दू होता तो गाय का बध क्यों करने देता ?

मुकद्दमाए तफसीरे फुर्कान पृष्ठ ८६

सब प्रमाणों तथा उदाहरणों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि जिस प्रकार भी हो येन-केन-प्रकारेण अथवा सत्य-झूठ कर लोगों को अपने चंगुल में फांसा जाये । इसी आधार पर हजरत मुहम्मद ने लोगों के सन्मुख सतरगे स्वर्ग को रखा है। कि वह लोभ व विषयों के आकर्षण में सरलता से मुसलमान हो जाएँ। यह एक हथकंड़ा मात्र ही कहा जा सकता है अन्यथा मिर्जा गालिब जैसे कट्टर मुसलमान विचारक व कवि का यह कहना कि:--

> खूब मालूम है जन्नत की हकीकत हमको;
> दिल बहलाने को गालिब यह खयाल अच्छा है।

स्वर्ग के खयाली पुलाव की सारी पोल खोल देता है। अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं मिर्जा हैरत देहलवी ने यह स्वीकार कर लिया है कि सत्य–असत्य, धर्म–अधर्म, नैतिकता-अनैतिकता

इत्यादि की चिन्ता किये बिना हज़रत मुहम्मद ने पूरी तरह मौका-परस्ती एवं स्वार्थ साधन के समस्त हथकंडों को खुल कर अपनाया है। ऐसे अवसरवादी विचारों को धर्म का स्थाई रूप देना कहां तक मानवोन्नति का आधार माना जा सकता है ? अन्तिम बात जो मिर्ज़ा साहिब ने कही, वह ईसाईयों को स्वर्ग के विषय में दिया गया उत्तर है कि:-

हूरों का इतनी संख्या में स्वर्ग में होना असम्भव नहीं, जितना बिना बाप के सन्तान (हज़रत ईसा) का उत्पन्न होना, मर कर पुनः जीवित हो जाना, और शरीर सहित आसमान पर चढ़ जाना। मुकद्माए तफसीरे फुर्कान पृष्ठ ९०

इसमें स्पष्ट ही मिर्ज़ा साहिब का तर्क यह है कि हूरों का होना असम्भव तो है, परन्तु इतना असम्भव नहीं, जितना बिना बाप के सन्तान पैदा होना। मिर्ज़ा साहिब ने अपनी सफाई देते हुए इतिहास का गला घोंट दिया है अरब देश के निवासी व बड़े-बड़े धनाढ्य व्यापारी व संसार भर में व्यापार करने वाली जाति के भी थे। जिन थोड़े से जंगली डाकू-लुटेरों के हेतु उन्होंने इतने बड़े धर्म व आध्यात्मिक सिद्धान्तों को बाज़ारू सौदा बना डाला है। यह धर्म व आध्यात्मिक सिद्धान्तों की महानता के साथ एक प्रकार का छलावा व बलात्कार सहित उनको नष्ट-भ्रष्ट किये जाने का एक गम्भीरतम अपराध ही माना जाएगा।

सर सैयद साहिब के विचार

यह समझना कि स्वर्ग एक उद्यान के समान उत्पन्न किया गया है। उसमें संगमर्मर व मोती के जड़ाऊ महल हैं। हरियाले व सुहावने वृक्ष हैं। उधर शराब व शहद की नहरें बह रही है। हर प्रकार के मेवे (फल) खाने को उपलब्ध है, शराब पिलाने-वालियाँ चांदी के कंगन पहिने हुए हैं, जिन्हें हमारे यहां घोसिनें

पहिनती हैं, शराब पिला रही हैं और स्वर्ग में रहने वाला
एक व्यक्ति हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है व हूर एक ने उस
रान (जंघा) पर सिर रखा हुआ है। एक छाती से लिपट रहा
तो एक ने चुम्बन ले लिया है, कोई किसी कोने में कुछ...... ऐ
बेहूदापन है, जिस पर आश्चर्य होता है। यदि स्वर्ग यही है
हमारे खराबात (भ्रष्ट स्थान) इससे हजारों गुणा उत्तम हैं।

..........मुस्लिम विद्वान अपनी मानसिक निर्बलता व
के प्रभुत्व के कारण जिससे सत्य बात कहने का साहस नहीं रह
इसीलिए वह बुज़ूर्ग उन सब बातों को मानते है। जिनको
भी नहीं मान सकता और वह बातें जैसे कि बुद्धि व धर्म
उद्देश्यों से विरूद्ध होती हैं।

तफसीर सर सैयद, पृष्ठ ३३-३४

स्वर्ग के विचार

सर सैयद कहते हैं:-

उसके अन्दर धर्मशास्त्र के अनुसार काम करने व नि
कार्यों से बचाने की एक इच्छा उत्पन्न होती है और एक
मगज मूल्ला या व्याभिचारी भगत यह समझता है कि स्वर्ग
अत्यन्त सुन्दर अप्सराएँ मिलेगी, शराब पियेंगे, मेवे खायेंगे
और शराब की नहरों में नहायेंगे, जो दिल चाहेंगा मजे उड़ा
इन निरर्थक और अशिष्टतापूर्ण विचारों से निहित कर्मों के क
और वर्जित कर्मों से बचने का यत्न करता है।

तफसीर सर सैयद पृष्ठ ३५

बात तो सर सैयद ने भी वही कही जिसमें मिर्जा है
देहलवी ने जंगली अरबों को लक्ष्य बनाया था। जब कि
सैयद ने विद्वानों को इससे सम्बोधित किया है। हमने कि
अन्य स्थान पर लिखा हैं कि इस्लाम के बहुत से सम्प्रदाय

जंन्म को मानते हैं परन्तु वह स्वर्ग और नर्क को नहीं मानते। इस आयत पर हम पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। विश्वास है कि आप पाठकों को सम्पूर्ण जानकारी और सन्तोषप्रद सामग्री प्राप्त हो गई होगी। हमने स्वर्ग के सम्बन्ध में पाठकों के ज्ञातव्य हेतु संक्षेप में वर्णन लिखा है, ताकि आप सभी को ही इस्लामी स्वर्ग का सम्पूर्ण दर्शन न भी हो तो कम से कम एक झलक तो दृष्टि-गोचर हो। उपरोक्त संक्षिप्त वर्णन मात्र से ही इस्लामी स्वर्ग की वास्तविकता भलीभांति आपके सन्मुख प्रकट हो ही गई है।

इसके पश्चात आयत:-

इन्नल्लाहा ला यस्तह्यी अं य्यजरेबा मसलम्मा बऊजतन फमा फौकहा। फ़अम्मल्लज़ीना आमनू फ़यालमूना अन्नहुलहवको मिर्र-ब्बेहिम व अम्मल्लज़ीना कफरू फ़यकूलूना माज़ा अरादल्लाहो बे हाज़ा मसला। युज़िल्लो बिही कसीरव्वयहदी बिही। व मा युज़िल्लो बिही इल्लल फासेकीन्। अल्लज़ीना यन्कुज़ूना अहद-ल्लाहे मिम्बादे मीसाकिही व यक़तऊना मा अमरल्लाहो बेही अं य्युसिला व युफ्सेदूना फिलअर्जे। ओलाइका हुमुलखासेरून।

कुरआन पारा १ आयत क्रमांक २७-२८

अर्थ:-वास्तव में अल्लाह तआला नहीं शरमाते इस बात से कि बयान कर दें कोई उदाहरण, चाहे वह मच्छर का हो, चाहे उससे भी बढ़कर (अर्थात अधिक तुच्छ हो) अतः वह लोग जो ईमान ले आए हैं, चाहे कुछ भी हों वह तो विश्वास करेंगे ही कि यह उदाहरण तो उनके मालिक की ओर से अत्याधिक उचित अव-सर का (प्रयोग किया हुआ) है। और शेष रह गएं वह लोग जो काफिर हो चुके हैं, सो चाहे कुछ भी हो जाए वह तो यों ही कहते रहेंगे कि इस उदाहरण को बयान करने से खुदा की मंशा क्या है? सो इस साधारण उदाहरण से अल्लाह बहुतेरों को पथभ्रष्ट

करता है और बहुतेरों को शिक्षा भी देता है। इसके कारण अल्लाह बहुतों को नहीं भटकाता है इस उदाहरण को देकर, मगर बदकारों को (भटकाता है) जो प्रतिज्ञाबद्ध होकर भी अपना ईश्वर से किया गया प्रण तोड़ देते हैं, और पृथ्वी पर उत्पात मचाते हैं। ऐसे लोग घाटे (नुकसान) में पड़ने वाले हैं।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ

शाने नज़ूल (उतरने का कारण)

इब्ने अब्बास व इब्ने मसऊद आदि से उद्धृत है कि ऊपर की तीन आयतों में मुनाफिकों के लिये दो उदाहरण वर्णन किए गए। अर्थात आग के व पानी के। सो वह कहने लगे कि ऐसे छोटे-छोटे उदाहरण अल्लाह तआला कदापि वर्णन नहीं कर सकता। इस पर यह दोनों आयतें उतरी कही गई हैं।

हज़रत कतादा फरमाते हैं कि जब कुरआन में मकड़ी और मक्खी का उदाहरण प्रस्तुत हुआ तो मुशरिक कहने लगे भला ऐसी तुच्छ वस्तुओं के बयान करने कुरआन जैसी पुस्तक को क्या आवश्यकता है ? तो उसके उत्तर में यह आयतें उतरीं और कहा गया कि सत्य को प्रतिपादन करने में अल्लाह नहीं शरमाता चाहे वह (उदाहरण) छोटा हो या बड़ा।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ

अयात के प्रारम्भ में अल्लाह के साथ हया (लज्जा) को जोड़ा गया है, जो किसी भी प्रकार उचित नहीं। हया का वास्तविक अर्थ है बुरी बातो से रूक जाना और उसको त्याग देना।

तफ़सीर बयानुल्कुरआन, पारा १ पृष्ठ

तफसीर मजहरी ने लिखा कि इन प्रकरणों में हया का वास्तविक अर्थ तो बन ही नहीं सकता क्योंकि इसका असली

तो बुरे काम से (नफ्स) दिल में............प्रभाव को स्वीकार कर लेने के हैं। और अल्लाह इनसे पवित्र तथा शुद्ध है। हया से तात्पर्य यहां उस काम को त्यागना है, जो असली अर्थों से सम्बन्धित हैं। आयत में प्रयुक्त किया गया हया शब्द मुश्किल से ख़ाली नहीं, क्योंकि हया का अर्थ स्पष्ट है कि यहां बुरे काम को त्यागने के होंगे। इसका उत्तर यह है कि जब काफिरों ने यह अनर्गल प्रलाप किया कि अल्लाह ऐसे उदाहरणों से लजाता नहीं तो उत्तर में कहा गया कि नहीं। इससे विदित हुआ कि हया का प्रयोग मात्र सामना करने हेतु किया गया है। जैसा कि इसी प्रकार दूसरे स्थान में दर्शाया गया है और बुराई का प्रतिकार वैसे ही बुराई करना है, तो ज्ञात हुआ कि बुराई के बदले बुराई से कहा जाना परन्तु इसकी स्थिति यह है कि वह बुराई नहीं केवल सामना करने पर आधारित है।

तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ठ ६८
तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १२६

व्याख्याकारों ने यद्यपि हया (लज्जा) शब्द को उचित सिद्ध करने हेतु कितने ही उलट फेर किये हैं फिर भी अल्लाह के साथ हया शब्द का प्रयोग किसी भी रूप में उचित सिद्ध नहीं हो सका तो मुकाबिले (सामना) का बहाना खड़ा कर दिया क्योंकि एक प्रमाण यह सिद्ध करता है कि बुराई का प्रतिकार बुराई से ही होता है मुसलमान बुराई का बदला बुराई से दें। यदि कोई गाली दे तो वह भी गाली से सामना करें परन्तु खुदा इन बुराईयों से पाक ज़ात (पवित्र) कहलाता है। उसको बुराई में धकेलना तो उसे नापाक (अपवित्र) करने के सदृश्य हुआ। भाष्यकारों की यह पैरवी या साफगोई सफाई आदि तो स्वयं खुदा को अत्याधिक मँहगी पड़ी कि पाक से नापाक

(पवित्र से अपवित्र) हो गया। हया (लज्जा) तो सह्य थी कि यह नापाकी (अपवित्रता) कैसे सहन होगी ?

व्याख्याकारों का यह कथन कि यह आयत गत आप की सफाई में उतरी है। यह भी असंगत बात है। जब खुदा स्थिति ऐसी है कि "ला युस्अलो लम्मा यफ़अलो"

खुदा के कामों के विषय में कोई जवाबतलबी नहीं सकती फिर काफिर पूछने वाले कौन होते हैं ? जिनसे भयभी हो खुदा ने अपनी मर्यादा भंग की। जब खुदा स्वेच्छाचारी तो छोटे से छोटे उदाहरण रचने, दिलों पर ताले लगाने, लो के रोग बढ़ाने, लोगों को पथभ्रष्ट करने, आपस में शत्रुता उत्प करने, लूटमार करवाने, पत्थर बरसाने और विनाशकारी भयं युद्धों की आज्ञाएँ देने से जब वह नहीं लजाता तो फिर मच्छरों आदि के उदाहरण मात्र से भाष्यकारों को इतना लज्जि क्यों लगा और क्यों यह उदाहरण मात्र भारी पड़ा ?

आगे आयत में है कि जो ईमानदार हैं वह तो जानते हैं कि उनके पालनकर्ता की ओर से जो कुछ भी है, वह सत्य ईमानदार की कसौटी ही यह है कि वह सत्य वचन के अतिरि जिंव्हा न खोले। हां काफिर तो बुद्धिवादी होगा ही, वह त वितर्क अवश्य ही करेगा "हरकस कि शक आरद काफिर गरद अर्थात जो शंका करे वह काफिर कहलायेगा। यथा :-

जब हजरत मुहम्मद साहिब ने कहा कि मुझे रात्री मैराज (स्वर्ग यात्रा) हुआ तो जिन्हें काफिर कहा जा रहा उन्होंने कहा कि हजारों वर्षों की यात्रा एक ही रात में कैसे हो गई ? तो उन्होंने यह बात न मानी। फिर उन लोगों ने अ बकर से कहा कि तेरा साहिब हज़रत मुहम्मद कहता है कि रा

को मुझे मैराज (स्वर्ग यात्रा) हुआ तो अबाबकर महोदय ने कहा:-"काला व काला जालेका" अर्थात क्या उसने (हज़रत ने) ऐसी बात कही है। तो उन लोगों ने कहा "कालू नअम" अर्थात हां कहा है, उन्होंने कहा। तो इस पर अबाबकर ने कहा "फकाला लकद सदका" अर्थात यह जो कहा वह निसन्देह सत्य है।

तारीखुल खुलफा (सियूती) पृष्ठ २४

बस............ऐसे होते हैं ईमानदार ? इसी लक्ष्य को ध्यान दिलाने हेतु यह आयत:-

व अतीउर्रसूलो अलल्लकुम तुर्हमून

अर्थ:-(ऐ लोगों) रसूल के आज्ञापालक बनो। जिससे सम्भवतः दया की जाए। तफसीर कादरी, भाग २ पृष्ठ १२८

हम पूर्व में लिख चुके हैं कि जो किसी भी मौमिन के लिये कर्तव्य निश्चित करे उसके विरुद्ध करने वाले नर्कगामी है।......

तफसीर मज़हरी से हम इस आयत की व्याख्या उद्धृत कर रहे हैं। आगे है कि.....अल्लाह पथभ्रष्ट (गुमराह) करता है। ऐसे उदाहरणों से बहुतेरों को मार्ग दिखाता है उसके साथ और नहीं गुमराह करता, किन्तु फासिकों व बदकारों को पथभ्रष्ट करता है। फासिक तो पूर्व से ही पथभ्रष्टता में अन्तिम सीमा तक पहुँचे हुए हैं, उनको खुदा और क्या पथभ्रष्ट करेगा ? यह तो पीसने का पीसना हुआ। जैसे कोई कहे कि मैं तो किसी को नहीं मारता मगर मरे हुओं को मारता हूं। कैसी उद्भुत शक्ति है ? इसी आयत में कहा कि इससे मैं बहुतेरों को मार्ग दिखाता हूँ और बहुतेरों को मार्गभ्रष्ट करता हूँ, जो पूर्व ही से भ्रष्ट पथ की की अन्तिम सीमा तक पहूँच चुके हैं। आयत का कोई अर्थ आपको दिखाई देता है ? वह अधिक कौन से हैं जो उन्हें पथभ्रष्ट करेगा ? यह दृष्टांत मरे हुओं को ही मारने सदृश्य है। क्या कोई खुदा

पर विश्वास करने वाला इस बात को स्वीकारेगा कि खुदा क्या अपने मनुष्यों को पथभ्रष्ट करने का धंधा कर सकता है? ऐसे पथभ्रष्ट करनेवाले व्यक्ति या शक्ति को कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति खुदा स्वीकारने को तत्पर नहीं हो सकता? खुदा का यह कार्य नहीं कि वह ऐसे दृष्टांत दे, जिससे लोग पथभ्रष्ट हों। अतः इस आयत का निर्माता या कर्ता खुदा नहीं हो सकता। फासिकों को पथभ्रष्ट करने की बात इस आयत में कहीं गई है। फासिक कौन? जब तक इसका ठीक पता न लग जाये कि फासिक कौन हैं? तब तक आप असमंजस में ही रहेंगे कि सम्भव फासिक भी कोई ऐसा गिरोह (समूह) है, जिसको पथभ्रष्ट किया जा सके। अतः देखना आवश्यक है कि फासिक किसे कहते हैं। फिस्क़ के धात्विक अर्थ बाहर निकलने के हैं। धर्मशास्त्र की परिभाषा में महापाप करने के कारण खुदा की भक्ति से बहिष्कृत हो जाने को फिस्क कहते हैं और उसकी तीन श्रेणियां हैं। (१) जिन वस्तुओं पर ईमान लाना अनिवार्य है, उनको अस्वीकार करना, (२) महापापों में संलग्न हो जाना, और (३) महापापों को करना और छोटे पापों पर हठ करना। यह है फिस्क़............।

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ
तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृ.

दुसरा चरण है कि वह बहुतेरों को पथभ्रष्ट करता है। यह बात भी वैसी ही है। इसी आयत के दुसरे चरण में कहा गया है कि ईमानदार तो जानते हैं कि यह खुदा की ओर से है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह तो पूर्व से ही सन्मार्ग पर हैं, और जो सन्मार्ग पर हैं, उनको सन्मार्ग दिखाना भी वैसा ही है, जैसा पथभ्रष्टों को पथभ्रष्ट करना।

अतः आयत का यह भाग सर्वथा निरर्थक है। अब इस तफसीर के भी अर्थ देख लें, सो जिन लोगों के भाग्य के समान

पूर्व से ही, अनादि काल से ही स्वाभाविक प्रकाश से आलोकित हो चुके हैं। वह इन दृष्टान्तों को अपने पालनकर्ता की ओर से सत्य जान कर ईमान लाते हैं और जो शत्रुता–हठधर्मी के अँध-कार में लिप्त हैं, हैरान व परेशान हैं, वह इन दृष्टान्तों को सुन-कर कहते हैं कि खुदा को अपनी असीम शक्ति-श्रेष्ठता और परा-क्रम में से इस तुच्छ वस्तु का वर्णन करने से क्या प्रयोजन है ?

तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १३०

आपको इस उद्धृण से यह स्पष्ट ज्ञात हो गया होगा कि हमने जो उपरोक्त लिखा कि जो अनादि (प्रारम्भ से) मौमिन थे वह वह मौमिन ही रहे और जो मुनाफिक (गैरमुस्लिम) थे वह मुनाफिक ही रहे। न कोई पथभ्रष्ट हुआ और न किसी ने सन्मार्ग ही पाया। जो जहां थे, वो वहां ही रहे। अन्त में तफसीर आज-मुत्तफासीर ने एक तत्व की बात लिखी है, सो उसे ध्यान से पढ़िये :—

(**मअसला-समस्या**) इस आयत में अहले सुन्नत की एक सुदृढ़ युक्ति है कि मार्ग दर्शन और मार्ग भ्रष्टता एवं अन्य समस्त कर्म खुदा की ओर से ही होते हैं। समस्त कर्मों चाहे वह भले हों या बुरे हों। उनका वास्तविक कर्ता तो वही खुदा है।

आजमुत्तफासीर, पारा १ पृष्ट १३०

यहां आकर तो व्याख्याकार ने खुदा का सम्पूर्ण रहस्य ही प्रकट कर दिया और समस्त आयतों पर पानी भी फेर दिया। मौमिन व फासिक होने की सम्पूर्ण गुत्थी ही खोलकर रख दी। अब ईमान लाने व पथभ्रष्ट होने के समस्त विवरण ही मात्र एक कपोल कल्पित कहानी सद्य हो गए और सभी को निर्दोष सिद्ध कर दिया। क्योंकि इन सबका कर्ता तो स्वयं खुदा और मात्र खुदा ही है।

अब आगे आयत में " अल्लज़ीना युन्केज़ूना " शब्द है यद्यपि हम पूर्व ही में अर्थ लिख चुके हैं किन्तु इस शृंखला में पुन: लिखते हैं:–

वह लोग जो वचनबद्ध होकर तोड़ते हैं, वचनबद्धता से तात्पर्य यह है कि " जिनको ईश्वरीय पुस्तक मिली है।" तौरात वाला उद्देश्य ही है कि हज़रत मुहम्मद साहिब पर ईमान लाएँ और जो सद्गुण उनमें निहित है उन्हें प्रकट कर दें, छुपाएं नहीं। "या" बहुवचन है जो अलस्तों से लिया गया था और सब आदम की सन्तान से लिया गया था, उसको तोड़ते हैं अभिप्राय यह है कि अल्लाह ने जो आदेश दिया था कि समस्त नबी हमारे नबी ....के साथ ईमान का सम्बन्ध मिला जाए और वह उसको तोड़ते हैं और आज्ञा तो यह दी जाती कि पैग़म्बरों में से किसी के साथ भेदभाव मत करो और उसको तोड़ कर कहते हैं कि हम किताब की किसी आज्ञा को तो स्वीकारते हैं और किसी आज्ञा को अस्वीकारते हैं या कोई पारिवारिक अधिकारों और उत्पत्ति के सम्बन्धों को काट हैं और देश में उत्पात मचाते हैं। उत्पात से तात्पर्य हज़रत मुहम्मद से कुफ़र करना तथा खेती और पशुओं को नष्ट करना है। यह लोग हानि उठाने वाले हैं।

तफसीर मज़हरी भाग १ पृष्ठ ७०

इसका अर्थ मुआलिमुत्तंजील में निम्नलिखित हैं:–

युखालेफ़ूना व यतीकूना व अस्लोहुन्न कज़्लकसरो अहदल्लाहि अमरूल्लाहिल्लज़ी अहदा अलैहिम यौमिल्मीसाके बिकौलिहि अलस्तो बिरब्बेकुम, कालू बला व कीला अरादा बिहिल् दिल्लज़ी अखज़हू अलन्नबीय्यीना व सायरेल उम्मे अंय्योमिनू मुहम्मदिन सल्लिल्लाह फी कौलिहीतआला व अखज़ल

मीसा किन्नबिय्योना ।................इत्यादि, इसका अर्थ बाद में लिखा जाएगा पहिले एक आयत पर विचार आवश्यक है।

मुआलिम पारा १ पृष्ठ २० और पारा ३ पृष्ठ १६६

अर्थात:-जो लोग खुदा के वचन को तोड़ते हैं, जो उससे वचन-वद्धता के दिन हुआ था। वह यह है-खुदा ने कहा क्या मैं तुम्हारा खुदा नहीं हूँ। सबने कहा कि हाँ, तू हमारा खुदा है।

कुरआन पारा ९ की सूरत ऐराफ़ रकू २२।१२ की इस आयत पर निम्न विवरण विचारणीय है। पढ़िये विवरण:-

जव आपके पालन कर्ता ने आदम की पीठ से उसकी नस्ल को निकाला और इकरार किया कि क्या मैं तुम्हारा पालनकर्ता नहीं हूँ ? कहा कि क्यों नहीं ? हम सब इस घटना के साक्षी बनते हैं। यह इसलिए कहा कि तुम लोग प्रलय के दिन यह न कहने लगो कि हम तो इस ईश्वर की एक्यता से अपरिचित थे। अर्थात हमने आदम की पीठ से उसकी सन्तति को निकाला और उनमें से अमुक को, अमुक का साक्षी बनाया और उनसे कहा क्या मैं तुम्हारा रव्ब (ईश्वर, नहीं हूं ? उन्होंने कहा-हाँ तू ही हमारा पालनहार है।

अबू हुरैरा से वर्णित है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया कि अल्लाह ने आदम को उत्पन्न करने के पश्चात उनकी पीठ पर हाथ फेरा जो इन्सान उसकी नस्ल से कयामत तक उत्पन्न होने वाले थे, वह निकल आए और अल्लाह ने प्रति मनुष्य को दोनों आंखों के मध्य नूर की एक चमक उत्पन्न कर दी। फिर सबको आदम के सन्मुख किया। आदम ने निवेदन किया कि ऐ मेरे पालनहार ! यह कौन हैं ? अल्लाह ने फरमाया कि यह तेरी सन्तान हैं।

आदम ने उनमें से एक व्यक्ति की आँखों में चमक देखी। उसने खुदा से पूछा यह कौन है ? खुदा ने कहा-दाऊद है। आदम ने पूछा-ऐ खुदा ! तूने इसकी आयु कितनी निश्चित की है ? खुदा ने कहा कि ६० वर्ष। तब आदम ने कहा-ऐ मेरे पालनहार! मेरी आयु में से ४० वर्ष और प्रदान करने की कृपा कर। जब हजरत आदम की आयु सम्पूर्ण हो गई केवल यही ४० वर्ष शेष रह गये जो उन्होंने दाऊद को दिये थे, तो फरिश्ता को आदम ने कहा-अभी मेरी आयु के ४० वर्ष शेष हैं। यमदूत ने कहा-आपने अपने पुत्र दाऊद को ४० वर्ष दिये थे। आदम ने अस्वीकार कर दिया। इसी कारण से उसकी सन्तान भी अपने स्वयं किये वादे को अस्वीकारती है और आदम ने खुदा की आज्ञा को विस्मृत कर निषिद्ध वृक्ष का फल खा लिया था, इसी कारण उसकी सन्तान भी विस्मृत होती है।

तिर्मज़ी ने इस हदीस को अबू दाऊद से उदधृत किया है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया कि अल्लाह ने जब आदम को उत्पन्न किया तो उनके दाहिने शाने (कंधे) पर हाथ मारा, जिससे छोटी चिंटियों की भांति उनकी गौरी सन्तति निकल पड़ी। उसके अल्लाह ने फरमाया कि यह स्वर्ग की ओर जाने वाले हैं। बांए कंधे पर हाथ मारा तो कोयले सदृश्य काली सन्तति निकल पड़ी। उसके हेतु अल्लाह ने फरमाया कि यह नर्क की ओर जाने वाले हैं।

मकातल के उद्धृण में इतना विशेष है कि अल्लाह ने सबको आदम की पीठ में ही वापिस लौटा दिया।

लेखक ने अन्य भी बहुत सी रवायतें (उद्धृण) इस विषय में लिखी हैं। ऐसी ही रवायत मुस्लिम बिन यसार की, इब्ने अब्बास की और उब्बय बिन काब की भी है। यही ऊपर का हवाला है।

उपरोक्त उद्धृत मुआलिम की अरबी व्याख्या में एक दूसरे वचन का वर्णन किया गया है। वह यह है कि समस्त नबियों और उम्मतों का हज़रत मुहम्मद साहिब पर ईमान ले आना।

जिस आयत का उल्लेख ऊपर एक अंश के रूप में किया गया है, उसका पूर्ण अर्थ यह है:- "यह वचनबद्ध होना नबियों से अनादि काल से लिया गया है"............ ....जब कि अल्लाह ने आदम की पीठ से उसकी सन्तान को निकाला तो उस समय प्रतिज्ञा ली कि फिर तुम्हारे पास ऐसा रसूल आए, जो तुम्हारे पास जो कुछ है, हिक्मत उसको प्रमाणित करे और वह रसूल हज़रत मुहम्मद हैं।

इसीलिए अली बिन अबी तालिब से इब्ने अब्बास ने उद्-धृत किया है कि अल्लाह ने कोई भी ऐसा पैगम्बर नही भेजा जिससे यह वचनबद्धता हो कि जब मैं मुहम्मद सलअम को भेजूँ और यदि तुम उस समय जीवित हो तो अवश्यमेव हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाना और उसकी सहायता करना।

(विचारणीय है कि जब समस्त पैगम्बर हज़रत मुहम्मद से पूर्व ही हुए हैं और हजरत मुहम्मद अन्तिम पैगम्बर कहे जाते हैं। फिर खुदा पूर्व नबियों को उक्त शब्द कहे, यह कितनी निरर्थक और निष्प्रयोजनीय बात है। फिर नबी को यह भी आदेश दिया कि अपनी उम्मत से वचनबद्धता करना कि जब हज़रत मुहम्मद आएँ तो उन पर ईमान लाना और उनकी सहायता करना। यदि हजरत मुहम्मद अन्तिम पैगम्बर हैं, तो उसके द्वारा यह आयत भेजा जाना इस बात का संकेत देता है कि उनके पश्चात भी नबी आएँगे। इस स्थिति में हज़रत मुहम्मद अन्तिम नबी कैसे रह जायेंगे ? इसका एकमेव यह उद्देश्य समझ में आता है कि हजरत मुहम्मद यहूदियों व ईसाईयों पर यह प्रभाव डालना

चाहते थे कि जिससे वह इस सिद्धांत को मान कर इस्लाम ग्रहण कर मुसलमान हो जाएँ। इसका मुख्य लक्ष्य वचनबद्धता माना जा सकता है।) तत्पश्चात वह मूल उद्देश्य घोषित भी कर दिया गया:-

फिर जिसने इस विश्वास और प्रतिज्ञा से मुँह मोड़ा प्रतिज्ञा भंग करने वाले फासिक हैं। यहां से स्पष्ट हुआ कि किसी नबी ने हज़रत मुहम्मद की नबव्वत और रिसालत से इन्कार नहीं किया अपितु सभी ने पुष्टि की। फिर वचन भंग करने वाले अवश्य फासिक (कुकर्मी) हुए।

तफसीर मवाहिबुर्रहमान, पारा १ पृष्ठ २४३ से

प्रथम वचनबद्धता यह है:-"अलस्तो बेरब्बेकुम" अर्थात-क्या तुम्हारा खुदा नहीं हूँ? अर्थात हां। फिर पैगम्बरों से दुसरी, तौरात में यहूदियों से तीसरी वचनबद्धता हुई कि जब मुहम्मद पैगम्बर बन कर आएँ तो ईमान लाना। यहूदियों ने इस वचनबद्धता को नकारा तो इस कारण उन्होंने वचन को तोड़ा।

आजमुत्तफासीर पृष्ठ

तौरात हेतु सूरत सफ की आयत क्रमांक ६ और ९ तथा एराफ के रकू १९/९ में हैं। चतुर्थ वचन भंग परस्पर हत्या और कुटुम्बियों से सहयोग। यह चौथा वचन भंग किया।

आजमुत्तफासीर पृष्ठ

आयतों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उस समय की परिस्थितियों और पद्धतियों को ध्यान में रखते हुए लोगों को प्रभावित करने हेतु इस प्रकार की आयतें निर्मित की गईं, जिनमें पैगम्बरों से भी हज़रत मुहम्मद साहिब पर ईमान लाने की प्रतिज्ञाएँ ली गई।

हम कहेंगे कि इस्लाम की मान्यतानुसार जिनको पैगम्बर माना गया क्या ईमान की कमी थी कि जो हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाने का वचन लिया गया ? और यदि कमी नहीं थी, तो ईमान लाने हेतु वचन क्यों लिया गया ? क्या कमी होने पर वह फिर पैगम्बर होने के अधिकारी हो सकते हैं ?

जब यह ज्ञात था कि हज़रत मुहम्मद सबसे अन्तिम पैग-म्बर हैं, तो ऐसी स्थिति में ईमान लाने की बात करना क्या अर्थ रखती है ? और फिर उनको हज़रत मुहम्मद पर जब ईमान लाने का अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ तो क्या उनका ईमान अधूरा ही रहा ? यह कहना कि तुम यदि हज़रत मुहम्मद का काल (युग) पाओ तो ईमान लाना । यह बात खुदा की शान व ज्ञान के सर्वथा विरूद्ध है । क्या इसमें खुदा का अज्ञान छुपा हुआ नहीं है ?

दोयमः—यह कि स्वर्गगामी सृष्टि खुदा ने आदम के कंधे या पीठ पर हाथ फिरा कर निकाली । बस.................यह हाथ फिराना ही उनके भाग्य का निर्णायक क्षण बन गया । क्या समस्त सृष्टि जो कि असंख्य और असीमित हैं, आदम के शरीर के भीतर चींटियों के रूप में उपस्थित थी ? यदि ऐसा है तो आदम की मृत्यु के उपरान्त यह सृष्टि कहां गई ? खुदा ने आदम के शरीर में इनके निवास हेतु ऐसा कौन सा स्थान निर्मित किया था ? जब यह सृष्टि आदम के शरीर के भीतर थी, तो इनमें आत्माएं थी या नहीं ? आदम के शरीर के भीतर इतनी सृष्टि के लोगों का निवास कैसे सम्भव हो सकता है ? हां ! यह तो स्वीकारना होगा कि जब उन्होंने यह स्वीकार किया कि तू ही हमारा पाल-नहार है, तो अवश्य ही वह चेतनावस्था में आत्मासहित ही होंगे । परन्तु यह घटना भी अपने आप में कैसी व्यर्थ है कि किसी को भी संसार में अपनी इस प्रतिज्ञा या वचनबद्धता की अब

किञ्चित मात्र भी स्मृति शेष नहीं है, और जो साक्षी थे उनको भी स्मरण नहीं तो फिर इस सारे तमाशा को करने दिखाने का लाभ ही क्या है ? जब कि किसी को भी लेशमात्र स्मृति तक नहीं रही। फिर उसी आदम के शरीर के भीतर नर्कगामी प्राणी भी निवास करते थे। वहीं पर उन्होंने उस प्रकार की लड़ाईयाँ क्यों नहीं प्रारम्भ कर दी कि जिस प्रकार के युद्ध और संघर्ष की लौमहर्षक घटनाएं बाद में घटी। क्या खुदा ने उनको आराम करने वाली सेनाओं के रूप में रखा हुआ था, जो कि संकटकालीन समय आने पर युद्ध किया करती हैं।

वास्तव में इस प्रकार की बड़ी-बड़ी अनहोनी बातें प्रायः असम्भव ही हैं, लोगों पर अपना प्रभाव डालने, उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने हेतु ही कही गई। खुदा भी किनको पथ भ्रष्ट करता है जो कि पथभ्रष्टता की अन्तिम चरम सीमा तक पहुँच चुके ? फिर जिनको वचन या प्रतिज्ञा भंग का दोषी घोषित किया गया, उन बैचारों को तो वचन का पूर्ण ज्ञान होना तो ठीक किन्तु कल्पना तक नहीं। उत्पात मचाने का तात्पर्य यहकि हजरत मुहम्मद पर ईमान न लाना। कुरआन की मान्यता में अवरोध उत्पन्नकरना इत्यादि है।

यह आयत क्रमांक १८ में सविस्तार लिखा जा चुका है। उपरोक्त चर्चित आयत की वास्तविकता और यथार्थ स्थिति से पाठकों के सन्मुख पूर्णरूपेण प्रकट हो चुकी है, जो कि समझ में आ ही गई होगी। अगली आयतः—

कैफ़ा तक्फ़रूना बिल्लाहे व कुन्तुम अमवातन फ़अहयाकुम सुम्मा युमीतुकुम सुम्मा युहयीकुम सुम्मा इलैहे तुर्जऊन।

कुरआन पारा १ आयत क्र०

अर्थातः—किस प्रकार काफ़िर होते अर्थात झूठलाते हो खुदा के साथ, वास्तव में तुम मृत (मूर्दे) थे (अर्थात जीवरहित

जैसे वीर्य) फिर अल्लाह ने तुम्हें जीवन दिया, शरीर ठीक कर के तुम्हारे शरीरों में आत्मा फूँकी, फिर वही तुम्हें मार डालेगा, जब तुम्हारी अवधि समाप्त हो जाएगी, फिर दुबारा तुम्हें जीवित करेगा कब्रों में या सूर (नरसिंहा) फूँक कर कर्मफल इत्यादि हेतु फिर उसी ओर बदला-कर्मफल आदि के हेतु लौटाये जाओगे।

तफसीर कादरी पारा १ पृष्ठ ६

सर्व प्रथम परमाणु थे, फिर माता-पिता के भोजन बने, फिर वीर्य बने, फिर मां के पेट में जाकर माँसपिण्ड बने । इस ऐसी अवस्था में उस (खुदा) ने अपनी असीम कृपा से तुम्हारे शरीरों में रूह (आत्मा) फूँक कर जीवित किया, जिसके कारण समस्त अवयव गतिशील हो गये।

आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १३३

इस पर इब्ने कसीर ने लिखा:-

"कुन्तुम अमवातुन" अर्थात तुम अपने पिताओं के उदर में मृत थे, उस (खुदा) ने तुम्हें जीवित किया फिर मार डालेगा, फिर तुम्हें कब्रों में से उठायेगा। पर एक अवस्था में संसार में मरने से पूर्व फिर दुसरी दुनियाँ में मरने की व कब्रों की ओर जाने की, फिर कयामत (प्रलय) के दिन उठ खड़े होने की, दो जिन्दगी और दो मौतें... ....,

(यहां पर तो इतने प्रबन्ध और व्यवस्था से उत्पति हुई किन्तु आश्चर्य है कि आदम के शरीर के भीतर समस्त ऐसे ही उत्पन्न थे।) ।

अबू सालह कहते हैं कि कब्र में मनुष्य को जीवित कर दिया जाता है।

अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद का कथन है कि हज़रत आदम की पीठ में उन्हें उत्पन्न किया, फिर उनसे वचन अथवा प्रतिज्ञा लेकर निष्प्राण कर दिया।

(इस प्रकार मनुष्य की उत्पति की ४ अवस्थाएं हो गई (१) सर्व प्रथम आदम की पीठ से जीवत कर उत्पन्न किये गये (२) फिर मां के उदर से उत्पन्न कर मार दिया (३) फिर कब्र में जीवित कर उठाया (४) और फिर कयामत के दिन जीवित किया। अब इस आयत बेचारी का क्या हुआ ? जो कह रही है। इस विषय को और भी देखें कितनी अवस्थाएं होगी।) व्याख्याकार ने लिखा है:-

आदम की पीठ से निकल कर वचनबद्धता हेतु जीवित किया और मार दिया। फिर मां के पेट से उन्हें उत्पन्न किया। फिर उन पर तीसरी मौत हुई। फिर कयामत आने पर उन्हें जीवित करेगा। तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृ. ८३

(मौलाना साहिब ! कब्र में से जीवित कर उठाना तो आप गिनना भूल ही गये है।)

तुम मृत थे, फिर उस (खुदा) ने जान डाली, फिर कमायत के दिन तुमको जीवित करेगा।

तफसीर मज़हरी पृष्ठ ७८

अब देखिये कि अभी से ही कितना अन्तर और विरोधाभास उपस्थित हो गया हैं। इससे पूर्व हम लिख चुके हैं कि खुदा ने आदम की पीठ से निकाल कर जीवन देकर उन्हें बचनबद्धतायुक्त उत्पति को विस्मृत ही कर गया ? और मां के गर्भाशययुक्त उत्पति को गिनने लग गए। अब फिर से गिन लो-सर्वप्रथम खुदा ने अपने खुदा होने की वचनबद्धता हेतु आदम की पीठ से उत्पन्न कर जीवित किया। जब कि हज़रत आदम ने अपनी

आयु के ४० वर्ष अपने पुत्र हज़रत दाऊद को प्रदान किये थे। दूसरे समय माता के गर्भ से उत्पति और अवधि पूर्ण होने पर मृत्यु। तीसरी बार कब्र से जीवित कर उठाना और अन्त में चतुर्थ समय कयामत के दिन स्वर्ग व नर्क के हिसाब हेतु जीवित करना। इस्लाम व कुरआन के खुदा के भी हिसाब में कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ी अवश्य है। कम से कम अल्लाह को तो अपना हिसाब ठीक रखना चाहिए मुसलमान जन सर्व सम्मति से कब्र के अज़ाब (पीड़ा) को तो मानते हैं और कब्र में मूर्दो (शवों) को डाला गया था, फिर हिसाब मूर्दों का तो नहीं हो सकता?

मृत्यु पश्चात एक और जीवन

उपरोक्त विवरण और वर्णन के अतिरिक्त जो मुसलमान शहीद (बलिदान) होते हैं, उनके विषय में कुरआन की प्रसिद्ध आयत है:-

व ला तकूलू लिमय्युंक्तलो फ़ी सबीलिल्लाहे अम्वातुन बल अहयाउंव्व। कुरआन, पारा २ रकू १६/३

अर्थः-और मत कहो उन लोगों को मूर्दा (मृत) कि जो अल्लाह की राह में मारे गए है। उन्हें मूर्दा न कह कर जीवित है, ऐसा कहो।

अनुवाद-शाह अब्दुलकादिर

बग़वी फरमाते हैं कि बदर के शहीदों की रूहें हर रात्रि को अर्श (खुदा का सिंहासन) के नीचे नतमस्तक होती हैं। अल्लाह उनको एक उत्तम शरीर में उतारता है और रूह (आत्मा) को आदेश होता है कि इसमें प्रविष्ट हो। वह उसमें प्रविष्ट होकर अपने पूर्व शरीर को देखती है और बोलती है, समझती है कि यह लोग मेरी वाणी सुनते है और मुझे देखते हैं। इस स्थिति में हूरें (अप्सराएँ) उनके पास आती हैं और आकर उनको ले जाती हैं।

सहीह मुस्लिम में हज़रत इब्ने मसऊद से उद्धृण है कि रसूलिल्लाह फरमाते है कि शहीदों की रूह (बलिदानियों की आत्मा) अल्लाह तआला के यहां सब्ज़ (हरित) पंछियों के रूप में रहती हैं और स्वर्ग में जहां चाहे सैर (भ्रमण) करती हैं, और अर्श (खुदा के सिंहासन) के नीचे जो कंदीलें हैं वहां आराम करती है। तफसीर मज़हरी पारा २ पृष्ठ २६२

उक्त लेख की हदीस यह निम्न है:-

अन्ना अखाहुश्शुहदाओं फिल्जन्नते अखाहुहुम फ़ी जौफ़ तैरिन रिज्जिन लहा कन्दीलुन मुअल्लकतुन वल अर्शो, मुस्लिम किताबुल्लाह ।

इस हदीस का अर्थ ऊपर लिखा जा चुका है। अब देखिये कि जीवन की यह पांचवी स्थिति है कि मनुष्य शहीद होने के पश्चात खुदा के स्वर्ग में हरित पंछियों के रूप धारण करते हैं, इन्हें भी मृत्यु के पश्चात नवजीवन उपलब्ध हो गया। यह ५ वीं उत्पति है। और देखिये:-

अलमतरा इलल्लज़ीना क़रजू मिन दियारेहिम व हुम उलूफ़ हज़रल्मौत फ़काला लहुमुल्लाहेमूतू । फ़ अहयाकुम ।

कुरआन पारा २ रकू ३१/१४

अर्थात:-क्या तुमने नहीं देखा उन लोगों को, जो अपने घरों से निकल कर चल दिये और वह हजारों थे। अतः खुरासानी कहते हैं वह ३ हजार थे। वहब कहते हैं ४ हजार थे। कतिपय कहते हैं कि ८ हजार थे। सद्दी कहते हैं ३० हजार थे। इब्ने ज़रीह ४० हजार व इब्ने रयाह ७० हजार बताते हैं।

तफसीर मज़हरी, पारा २ पृष्ठ ५९३

फिर अगले वर्ष जब दुवारा ताऊन (प्लेग) पड़ी तो उस गांव के वहुत से निवासी भाग गए और एक विस्तृत मैदान में जा उतरे तो एक फरिश्ते ने उन्हें आवाज़ दी कि मर जाओ ! वह सब के सब वहीं मर गए.........

कल्बी मकातल और जुहाक का कथन है कि यह लोग.... ....जिहाद (धर्मयुद्ध) से भागे थे। शस्त्र बांध कर भी उन लोगों ने हिम्मत हार दी और लौट आए। अल्लाह ने उन पर मौत को भेज दिया....................फिर मृत्यु से भागने हेतु अपने-अपने घरों से निकल पड़े और भाग खड़े हुए। बादशाह ने यह परिस्थिति देख कर खुदा से प्रार्थना की कि उन्हें कोई ऐसी करामाती निशानी दिखा जिससे उन्हें विश्वास हो जाए कि यह तुझसे भाग कर नहीं जा सकते। "फ़कालल्लाहो लहुम मूतू" अर्थात फिर अल्लाह ने उन्हें आज्ञा दी कि मर जाओ। फलतः वह और उनके पशु समस्त इस प्रकार मर गए जैसे केवल एक व्यक्ति मर जाता है।..............लोगों ने इन्हें दरिन्दों से बचाने हेतु चारों ओर घेरा वना दिया। इसी स्थिति में पड़े हुए उन्हें बहुत समय व्यतीत हो गया। कुछ लोगों का कथन है कि आठ दिन व्यतीत हुए। कुछ का कथन है कि उनके शरीर गल गए थे केवल हड्डियां रह गई थी..................अर्थात वह मर गए थे और अल्लाह ने उन्हें पुनः जीवित किया।

इब्ने ज़रीर ने प्रामाणिक आधार पर अबू मालिक से उद्धृत किया है कि हिज़कील नवी (दावरूआन) गाँवों के निकट से गुज़रे और उनकी हड्डियां धूप में चमक रही थी तथा उनके समस्त जोड़-जोड़ पृथक हो गए थे। हिज़कील को इससे अत्याधिक आश्चर्य हुआ। अल्लाह ने तत्काल अपनी वही (सन्देश) भेजी कि तुम उनके समीप खड़े होकर पुकार कर कहो कि अल्लाह

की आज्ञा से उठो। उसने आवाज दी तो वह समस्त खड़े हो गए।

इब्ने कसीर में है कि खुदा ने हिज़कील की प्रार्थना स्वीकार की और उसको आदेश दिया कि कहो कि ऐ सड़ी-गली हड्डियों! अल्लाह तुम्हें आज्ञा देता है कि समस्त एकत्रित हो जाओ और गोश्त-पोश्त, नाड़ियां व पुठ्टे जुड़ जाओ।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा २, पृष्ठ १०

खुदा ने फरिश्ते भेजे, उनमें से एक ने उस मैदान की नीची ओर से और एक ने ऊँचाई की ओर से ऐसी भयंकर चीख मारी की सब के सब मर गए। जब आस-पास के लोग आए तो अत्याधिक संख्या में थे। इसलिए उन्होंने इन मृतकों के चहुँ ओर घेराव हेतु एक दीवार खींच दी। उनका मांस गल-सड़ कर खाक हो गया। (शेष उपरोक्तानुसार)

आजमुत्तफासीर पारा २ पृष्ठ

ईस्राईल के सैकड़ों-हजारों वंशधर देश त्याग कर भाग गए और पैगम्बर--विरोधी बन गए। युद्ध में जमे नहीं रहे और परिणामस्वरूप शत्रु जीत गया तथा सब मारे गए। (शेष पूर्ववत्) तफसीर हक्कानी पारा २, पृष्ठ

तफसीर कुरआनिल अज़ीम पृष्ठ २४, तफसीर जलालैन पृष्ठ ३७ पर भी इसी प्रकार वर्णन हैं। मुआलिमुत्तन्जील में यह है, जो तफसीर मज़हरी से उद्धृत कर चुके हैं, जो संख्या हमने ८-१०-३०-४० और ७० हजार लिखी है। मुआलिम पृष्ठ ११ और तफसीर कादरी पृष्ठ ६९--७० हैं। जितने मुँह उतनी बातें इन प्रसिद्ध व्याख्याकारों ने की है। एक ही विषय पर विभिन्न मतभेदों और विरोधाभासों की भरमार हैं। फिर भी यह सर्व

कुरआन को जानने-समझने और समझाने के सर्वाधिक कट्टर दावेदार हैं। इनकी व्याख्याएं और भाष्य भला जन साधारण क्या समझ पायेंगे ?

हमारा कथन यह है कि भले ही कितने ही व्याख्याकार क्यों न हो किन्तु इस आयत की भयंकर दुर्दशा तो स्वयं खुदा ने ही कर दी, कि जो कहता था कि नियम एकबार ही उत्पन्न करने और मारने का निर्मित हैं। अब इस आयत का महत्व और सार ही क्या रहा ? एक यही आयत ही नहीं कुरआन में और भी अधिकतर आयतें भी खुदा के इस नियम का उल्लंघन करने का वर्णन करती है। मौलाना साहिवान ! स्वयं ही गणना कर देखें कि कितना सुख (पुनर्जन्म) के विषय में उनके सर्व-सम्मत सिद्धान्त की हानि कुरआन की इन आयतों द्वारा होती है? इसी प्रकार की एक और अन्य आयत :-

व इज़ कुल्तुम या मूसा लन्नोमिनालक्का हत्ता नरल्लाहा जहरतन्, फअखज़त कुमुस्साइकतो व अन्तुम तन्जोरून सुम्मा व असना कुम्मिमबादे मौतेकुम लअल्लकुम तश्करून।

कुरआन पारा १ रकू ६।६

अर्थात्:--और स्मरण करो वह समय, जब तुमने कहा-- ऐ मूसा ! हम कदापि तेरा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक कि हम खुदा को स्पष्टतः न देख लें। फिर तुम बिजली (दामिनी) की कड़क (चकाचौंध) की पकड़ में आ गए (इससे मृत्यु अभिप्रेत है) और कुछ एक ने कहा कि 'साएका' से अर्थ अग्नि का है, जो आसमान से आई थी और उन्हें खुदा ने पुनर्जीवित कर दिया और तुम देख रहे थे (यह हज़रत मुहम्मद के सम-कालीन इज्राईली वंशधरों को सम्बोधन है) इसीलिए तुम खुदा को धन्यवाद दो।

इससे स्पष्ट है कि कुरआन पुनर्जन्म को स्वीकारता है अन्यथा इनसे सम्बोधन का प्रयोजन ही क्या ? जब कि समस्त नष्ट हो चुके तो हज़रत मूसा खुदा के द्वार पर उपस्थित हुए और रोने व चीख-पुकार करने लगे तथा निवेदन किया कि ऐ खुदा ! मैं इज़्राइल के वंशजों को क्या उत्तर दूंगा ? इनमें जो वृद्ध लोग थे वह तो आपने हताहत कर दिये, और पुनः प्रार्थना की कि ऐ स्वामिन् ! यदि तू चाहता तो पहिले ही उनको मुझ सहित हताहत कर देता। क्या तू हमें कुछ मूर्ख लोगों की बात पर मार देगा। हज़रत मूसा अविरल विनति व रुदन करते रहे। यहां तक कि रूदन-सागर में ज्वार आया अर्थात् खुदा को दया उमड़ी और एक दिन मृतावस्था में रहने के पश्चात अल्लाह ने उन सबको एक-दुसरे के पश्चात क्रम से जीवित कर दिया फिर हमने तुमको जीवित खड़ा किया तुम्हारी मृत्यु के पश्चात।

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ १

इसी भाँति एक अज़ीज नामक व्यक्ति को सौ वर्षों पश्चात जीवित किया। यथाः—'अम्मातुल्लाहो मैं अता आमिन' फिर उसको सौ वर्षों तक मृतावस्था में रखा 'सुम्मा बसअहू' फिर उसको पुनर्जीवित किया।

तफसीर मवाहिबुर्रहमान पृष्ठ

कहने का अभिप्राय यह है कि अज़ीज नामक व्यक्ति को अल्लाह ने कयामत से पूर्व ही मार दिया और पुनः जीवित किया और फिर उसे मारेगा। हमने बहुत सी आयतें इस आयत के विरुद्ध प्रस्तुत की है, कि अल्लाह बस एक समय ही मारेगा और जीवित करेगा। अतः यह और ऐसी अन्य और आयतें जो कुरआन में है। वह समस्त आयतें अन्य दुसरी आयतों से सर्वथा व्यर्थ और निरर्थक सिद्ध हो गई।

कुरआन में विभिन्न स्थानों पर एक बात लिखी देखी गई है कि :--कब्रों से उठायेगा। अरबों मनुष्य जिन्हें जलाया गया, नदियों में बहाया गया जिन्हें कि विविध जलचर भक्षण कर गए, हिंसक पशु उदरस्थ कर गए। क्या अल्लाह उन्हें पुन-जीवित नहीं करेगा ? तो फिर उनका न्याय कैसे और कौन करेगा ? अथवा खुदा को यह ज्ञातव्य नहीं था कि मृत शरीरों को अग्निदाह और जल प्रवाह भी होता है ? इससे तो वह नहीं उठाये जायेंगे मात्र कब्रों से ही मृत शरीरों को ही उठाये जायेंगे।

इस विषय पर हम और भी सविस्तार लिखेंगे। यहां तो मात्र इतना ही समझना पर्याप्त है कि आयत का अस्तित्व ही नहीं रहा और न कोई प्रयोजन ही सिद्ध हो पा रहा है। कुरआन की अन्य दुसरी आयतों ने स्वयं इसे खण्डित कर दिया और निर-र्थक सिद्ध हो गई। अब आगे आयत है:-

हुवल्लजी खलका लकुम मा फिलअर्जे जमीआ सुम्मस्तवा इल-स्समाए फसव्वाहुन्ना सबआ समावात। व हुवा बिकुल्ले शैइन अलीम्। कुरआन पारा १ रकू ६/६ आयत क्र. २९-३०

अर्थात:-खुदा वही है, जिसने उत्पन्न किया तुम्हारे हेतु जो कुछ भूमि पर है समस्त। फिर इरादा किया आकाश की ओर, सातों आसमान ठीक किए और वह प्रत्येक वस्तु का जानकार है।........
........खुदा ने भूमि को निर्मित करते ही अर्थात उसे उत्पन्न करने के पश्चात तत्काल आसमान उत्पन्न कर दिये।

आजमुत्तफांसीर पारा १ पृ. १३४

आयत में स्पष्ट है कि खुदा ने भूमि की उत्पति के पश्चात ही आसमान बनाये। पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया और फिर आसमान की ओर ध्यान किया।

तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ८१

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ ७४, तफसीर मुकालिम पृष्ठ २० और तफसीर जलालैन पृष्ठ ७ पर भी यही व्याख्या की गई है।

हमने उपरोक्त एवं अन्य कई प्रमाणों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि खुदा ने भूमि के पश्चात आसमान बनाये किन्तु स्वयं कुरआन की ही निम्न आयत इसके विरूद्ध भूमि का निर्माण आसमान के पश्चात सिद्ध करती हैं। देखिये आयतः-
आ अन्तुम अशद्दो खल्कन अमिस्समाओ बनाहा रफ़आ सम्कहा फसव्वाहा वा अग़तशा लैलहा व अख़रजा जुहाहा वलअर्जा बादा जालेका दहाहा। कुरआन पारा ३० सूरत नाजेआत

अर्थातः—उत्पत्ति में क्या तुम अधिकतर कठोर हो या आसमान बनाया व उसको ऊँचा किया, फिर समतल किया, और उसकी रात को ढँक दिया, और उसकी धूप खोज निकाली, और उसके पश्चात पृथ्वी को बिछा दिया, और उसमें से उसका जल और घास निकाला तथा पर्वतों को गाड़ दिया तुम्हारे व तुम्हारे पशुओं के लाभ हेतु।

यह सब बातें भूमि को बिछाने के पश्चात की है अर्थात मुसलमानों की उत्पत्ति के पश्चात भूमि को २ हजार वर्षों पश्चात मक्का (अरब) से विस्तृत करना प्रारम्भ किया। (मक्का से भूमि को विस्तारनेयुक्त बात एक विचित्र वैज्ञानिक सूझबूझ है। आज के वैज्ञानिक और भूशास्त्री बैचारे आज तक अंधेरे में ही भटक रहे हैं किन्तु यह बात उनके भी विज्ञान और शास्त्रों में नहीं है।)

इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद आदि हज़रत मुहम्मद साहिब के साथियों के एक समूह का कथन है कि सर्वप्रथम अल्लाह पाक का अर्श (ईश्वर का पवित्र सिंहासन) पानी पर था और पानी से पूर्व अन्य कोई वस्तु उत्पन्न ही नहीं हुई थी। जब खुदा का ध्यान

सृष्टि-उत्पत्ति की ओर आकर्षित हुआ तो पानी में से एक बुखार और धुँआ निकाला और वह बुखार (भाप) पानी से ऊँचा हो गया। खुदा ने उसका नामकरण आसमान किया। फिर उस पानी को नितान्त शुष्क कर दिया, जिसका नाम पृथ्वी रखा गया। इससे तो सर्वथा यह पुष्टि हो गई कि सर्वप्रथम पानी के अतिरिक्त अन्य कुछ और था ही नहीं। उस पानी पर केवल अल्लाह का सिंहासन मात्र था। उसके पश्चात सर्वप्रथम आसमान और तत्पश्चात भूमि का निर्माण हुआ। उस समय यह भूमि स्थल और तख्त थी। खुदा ने उसे फाड़ कर सात भूमिएं निर्मित कर दी और यह कार्य दो दिवस रवि व सोमवार को सम्पन्न हुआ।

(क्या मुसलमान ! इब्ने सबाय और इब्ने मसऊद सदृश्य कुरआन के उच्चस्थ विद्वानों की सम्मति को भी झूठला या नकार सकते है ?) और देखें:-

अब यह भूमि मछली पर ठहरी है और यह मछली पानी पर टिकी है। पानी एक स्वच्छ व चिकने पत्थर पर टिका है। उस पत्थर को एक फरिश्ता पत्थर पर लिये खड़ा है और वह पत्थर वायु पर आधारित है। जब पृथ्वी मछली की तड़पड़ाहट से हिलने लगी तो खुदा ने भूमि पर पहाड़ रख दिये, जिससे वह स्थिर हो गई। (क्या उच्च कोटि का भूगोल शास्त्र है ?) फिर भूमि की उत्पत्ति के दो दिवस पश्चात मगल व बुधवार को पहाड़ और वृक्ष बनाये। जब यह पानी की सांस से भाप उठी तो उसने दो दिवस में आसमान बनाया।

आजमुत्तफासीर पारा ३० पृष्ठ ५४-४५

आयत में जो यह आया कि भूमि आसमान के पश्चात उत्पन्न हुई। इसका समाधान व्याख्याकार करता है:-

क्योंकि दूसरी आयतों में प्रथम भूमि का उत्पन्न होना लिखा है। उसका समाधान यह है कि जो वस्तुएं खुदा ने भूमि में रखी थी, वह समस्त आसमान की उत्पत्ति के पश्चात शक्ति से व्यवहार में आई। (यह है व्याख्याकार की विद्वता और ईमानदारी का एक उदाहरण। कहां भूमि का निर्माण और कहां भूमि की वस्तुओं का प्रगटीकरण ?)

तफसीर आजमुत्तफासीर पृष्ठ ९६

व्याख्याकार के शब्द देखिये:—

अर्थात:—आसमान की उत्पत्ति के पश्चात भूमि को विछाया अर्थात आसमान की उत्पत्ति के २ हजार वर्षों पश्चात अल्लाह ने मक्का से भूमि को बिछाना प्रारम्भ किया और यह भी लिखा कि जो भाप पानी से उठी उसका नाम आसमान रखा और जो धुआ शुष्क कर दिया गया उसका नाम भूमि रखा।

इससे तो यह प्रमाणित हुआ कि भूमि का सब कुछ आसमान की उत्पत्ति के पश्चात बना और भूमि एक स्थल रूप में थी, उसको फाड़ कर सात भूमिएँ निर्मित की किन्तु भूमि को उठाने का विवरण लिखा तो मात्र एक भूमि को फरिश्ते ने उठाया, शेष ६ भूमियों की कोई चर्चा नहीं कि उनको भी किसी ने उठाया था और न यह विवरण ही किसी व्याख्याकार ने ही वर्णित किया।

भूमि व आकाश निर्मिति सम्बन्धी प्रथम या पश्चात की जो इतना व्यापक मतभेद है, उसे सभी व्याख्याकारों ने यही एक बात कह कर, निवारण करने का प्रयत्न किया है कि भूमि का निर्माण तो प्रथम ही हो चुका था किन्तु उसे बिछाने का कार्य आसमान-उत्पत्ति के पश्चात किया।

उपरोक्त समाधान या निवारण कितना असत्य है, यह आपको अगली आयत से ज्ञात हो जायेगा। अस्तु लिखा है कि कुछ वेदीन (अधर्मी) लोगों ने इस आयत पर यह शंका प्रकट की है कि इस आयत का विषय कुरआन की अन्य आयतों से स्पष्टतः ही विरोधी है। इस आयत में बयान हुआ है कि भूमि की उत्पत्ति आसमान की उत्पत्ति के पश्चात हुई है। परन्तु सूरत फस्सेलत में है कि प्रथम भूमि उत्पन्न हुई और उसके पश्चात आसमान, एवं सूरतें बकर की आयत से भी यही प्रकट होता है कि पृथ्वी प्रथम और तत्पश्चात आसमान निर्मित किया गया। मुस्लिम विद्वानों ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया है कि:-

"भूमि, आसमान के प्रथम ही उत्पन्न हो गई थी। किन्तु इसकी सजावट व सुन्दरता आसमानों के पश्चात हुई, या यों कहिये कि प्रथम खुदा ने भूमि को उत्पन्न किया. फिर आसमान को बनाया, फिर तीसरी बार में भूमि को बनाया।"

भाष्यकार अपनी इस समाधानकारक पद्धति में सर्वथा ही असफल रहे हैं। अभी-अभी आपने देखा कि उन्होंने लिखा:-

"भूमि दो दिन में उत्पन्न की गई, दो दिन में उसे सँवारा गया, दो दिन में आसमान बनाए।" इससे पूर्व वह लिख चुके हैं कि आसमान निर्माण करने के पश्चात भूमि को विस्तारा था, संवारा था। अब इन दोनों बातों का परस्पर आपस में कितना मतभेद और विरोधाभास स्पष्ट रूप में है, इसमें किसी समीक्षा अथवा निराकरण की गुन्जाईश ही नहीं है।

तफसीर हक्कानी में है कि:-कतिपय हदीसों में आया है कि भूमि को रविवार व सोमवार के दिन निर्माण किया और उसको मंगलवार व बुधवार के दिन पहाड़ आदि से पूर्ति कर

संवारा और बृहस्पतिवार के दिन आसमान को बनाया और शुक्रवार को सितारों को निर्मित किया ।

तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ६०

तफसीर हक्कानी का यह वक्तव्य विचारणीय है। इसमें कितनी उलझनें हैं, वह देखिए । इब्ने कसीर सूरत सिज्दा की आयत का प्रमाण प्रस्तुत कर लिख रहे हैः—क्या तुम उस खुदा के साथ कुछ कुफ़र करते हो ? जिससे भूमि को दो दिन में उत्पन्न किया जो समस्त संसारका पालक है । उसने पृथ्वी में दृढ़ पहाड़ ऊपर से गाड़ दिये हैं। जिससे इस भूमि में उत्पन्न प्राप्तव्य पदार्थ और खाद्य सामग्री रखी है और चार दिनों में भूमि की समस्त वस्तुएँ ठीक कर दी। फिर आसमान की ओर अपना ध्यान करा जो धुंए के रूप में थे,.... ....दो दिन में आसमानों को पूरा किया ।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ

इस आयत से स्पष्ट ज्ञात होता है कि भूमि की उत्पत्ति आसमानों से पूर्व है। जैसे सूरत हामीम सजदा और सजदा में हैं। विद्वजन भी इस वात पर एकमत हैं । केवल कतादा कहते हैं। (जैसा कि हमने पूर्व आयात के आधार पर लिखा है) आसमान भूमि से पूर्व उत्पन्न हुए। कतबीं इस प्रकार नहीं मानते वह और यह लोग सूरत नाज़ेआत के आधार पर कहते हैं जहां आसमान की उत्पत्ति का वर्णन भूमि की उत्पत्ति से पूर्व है .... जैसे इब्ने अब्बास से यह पूछा गया तो आपने उत्तर दिया कि भूमि उत्पन्न तो आसमानों से पूर्व ही की गई परन्तु बाद में फैलाई गई ।

हम लिख चुके हैं कि पहाड़ बन गए । खाद्य पदार्थ बन गये क्या यह सब भूमि को बिना विस्तारे ही बन गए थे। वास्तव

मुसलमानों के पास इसका कोई समाधान नहीं। अतः वह इस प्रश्न को विस्तारने का बहाना बना कर टाल रहे हैं।)...........
जरा इससे चार पंक्ति आगे पढिये :-

सहीह मुस्लिम व निसाई की हदीस में है। अबू हुरैरा फरमाते हैं कि रसूलिल्लाह ने मेरा हाथ पकड़ा और फरमाया कि मिट्टी को अल्लाह ने शनिवार के दिन उत्पन्न किया और रविवार को पहाड़ों और वृक्षों को सोमवार के दिन, जडी-बूंटियों को मंगलवार के दिन, नूर (प्रकाश) को बुद्धवार के दिन (जड़ी बूंटियों के स्थान पर बुराइयों छपा है।) और आदम को शुक्रवार (जुम्मा) असर की नमाज़ के पश्चात उत्पन्न किया। [चूंकि इस हदीस में आसमानों की उत्पत्ति का कोई वर्णन नहीं। अतः कतिपय विद्वान इसको नहीं मानते]।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ट ८५

उक्त हदीस को इस हेतु लिखा गया हैं कि इसमें भूमि की समस्त वस्तुओं के निरन्तर निर्माण हैं। आसमान निर्माण करने के पश्चात भूमि विस्तारने का उल्लेख नहीं है।

तफसीर कादरी ने लिखा कि वह खुदा जिसने अभाव में से ही समस्त वस्तुओं के निरन्तर निमार्ण अपनी शक्ति द्वारा तुम्हारे लाभ हेतु किये वह समस्त पदार्थ भूमि में है समस्त पर्वत, खदानें, चश्में, नहरें, बूटियां, जानवर फिर भूमि उत्पन्न करने के पश्चात आसमान उत्पन्न करने की ओर ध्यान दिया। उचित एवं सम्पूर्ण कि अथवा [ऐसा] कि उसमें छिद्र-टेढ़ापन और कोई दोष नहीं है। सात आसमान बनाए और वह समस्त वस्तुओं का ज्ञाता है।

तफसीर कादरी पारा १ पृष्ठ ९

कितना स्पष्ट वर्णन है कि पर्वत-खाद्य पदार्थ-चश्में नहरें वनस्पतियां-पशु इत्यादि सब बना चुकने के पश्चात ही आसमान

उत्पन्न किए। भूमि को विस्तारने का कोई कार्य आसमान-निर्माण के पश्चात नहीं किया क्योंकि उपरोक्त समस्त वस्तुएं उत्पन्न करने हेतु भूमि का पूर्ण होना आवश्यक है।

यह भूमि-विस्तारने का बहाना भी अद्भूत ही बना लिया गया है, जब भूमि निर्मित हो चुकी तो फ़िर विस्तारने का क्या अर्थ? क्या वह चटाई की भांति लिपटी हुई थी? जब एक स्थल में चार भाग कर दिये तो फिर विस्तारना अभी शेष रह गया। शेष रहा या न रहा हो किन्तु कुछ न कुछ तो उत्तर भी देना ही था, सो दे दिया गया। अतः इस आयत का कोई समन्वयात्मक उत्तर नही कि भूमि आसमान के पश्चात निर्मित की गई। भूमि विस्तारने सम्बन्धी चर्चा का भी मुंह बन्द कुरआन की यह निम्न आयत करती है। आयतः-

कुल अइन्नकुम लतक्फरून बिल्लज़ी ख़लक़लअर्ज़ा फ़ी यौमेने व तजअलूना लहू अन्दाद। जालिका रब्बुल आलमीन। व जअला फीहा ख़ासेयामिन फौकेहा व बारका फीहा व क़द्दरा फीहा अक्वातहा फी अरबअते अय्यामिन सवाअनन् लिस्साएलीन सुम्मस्तवा इलस्समाए वा हेया दुख़ानुन फक़ाला लहा व लिल अर्ज़े तेया तौअन औ कर्हन कालता अतैना ताएईन। फक़ज़ा हुन्ना सबआ समवातिन फी यौमेने।

कुरआन पारा २४ रकू ३/१६ सूरत हामीम सजदह

अर्थातः-शोक, अति शोक है तुम पर कि तुम उस जगत के ईश्वर को नकारते हो, जिसने अपनी सामर्थ्य से ही इतनी विस्तृत लम्बी-चौड़ी भूमि कुल दो दिवस में उत्पन्न कर दी। भूमि को उत्पन्न तो रविवार को ही किया किन्तु सोमवार को उसे विस्तृत कर विस्तारा। (यह तो शंकास्पद शब्द हैं।)

जैसा कि एक विश्वसनीय हदीस से इस पर भलीभांति प्रकाश पड़ता है। यहां तो मात्र इतना ही अभिप्रेत है कि रविवार के दिन भूमि निर्मित की और सोमवार को उसे विस्तृत कर विस्तार दिया। भूमि, आसमान–निर्माण के अनन्तर नहीं निर्मित की। इस आयत में तो मात्र दिनों की गणना बताकर उत्पत्ति लिखी है। इस आयत पर विस्तार से आगे लिखेंगे, यहां इतना ही लिखना पर्याप्त है।

तफसीर कादरी में है कि-जिसने उत्पन्न किया भूमि को दो दिन में। इमाम अबुल्लैस ने लिखा है कि रविवार के दिन भूमि उत्पन्न की और सोमवार को बिछा दी और उत्पन्न की हुई भूमि में पहाड़ ऊंचे और मज़बूत (बनाए) जिससे देखनेवालों को शिक्षा मिलें और आशिर्वाद दिया (किस वस्तु को) उसने पर्वतों में, चश्में व खदानें इत्यादि निर्मित किए और वृक्ष-खेत-पशु तथा नहरों के कारण हमने खाद्य पदार्थ उसमें निहित कर दिए, फिर उसके पश्चात आसमान उत्पन्न करने की इच्छा की।

तफसीर कादरी, भाग २, पृष्ठ ३७५

तफसीर कादरी ने यहां यह भी स्पष्ट कर दिया कि भूमि रविवार को निर्मित की और सोमवार को विस्तार दी। इसके पश्चात आसमान के निर्माण में जुटे। इन तीन आयतों में भूमि को प्रथम या आसमान को पश्चात निर्माण करने का वर्णन है। यह आयत उचित नहीं। भूमि को सम्पूर्ण रूप में निर्माण करने के पश्चात ही आसमान निर्माण करना लिखा है। अतः यह आयत कि आसमान-निर्माण के पश्चात भूमि को विस्तारा अन्यथा सिद्ध है। उक्त तीनों आयतों में कभी भी समाप्त न होने वाला तीव्र मतभेद और विरोधाभास है।

इन आयतों में आसमान-सितारों और सूर्य इत्यादि का वर्णन आया है। हम इन समस्त पदार्थों की यथास्थान व यथा-समय चर्चा करेंगे। इसके आगे खुदा-फरिश्तों और आदम का वर्णन मनोरंजक वार्तालाप पढ़ः—

वा इज़ काला रब्बोका लिल्मलाएकते इन्नी जाएलुन फ़िल्अर्जे ख़लीफ़ह। कालू अतज़अलो फ़ीहा मंय्युफ्सेदो फ़ीहा व यस्फे-कुद्दमाआ। व नहनो नोसब्बेहो बेहम्देका व नोकद्देसोलक। काला इन्नी आलमो मा ला तालमून्।

कुरआन पारा १, आयत क्रमांक ३०-३१

अर्थातः—जब कि तेरे पालक ने फरिश्तों से कहा कि मैं भूमि पर अपना ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) निश्चित करना चाहता हूँ, तो देव (फरिश्ते) बोले कि क्या तू इस पृथ्वी पर ऐसा प्रति-निधि (सर्वाधिकारी) बनाता है, जो इस भूमि पर उत्पात करे और रक्त बहाए, और वास्तविक स्थिति यह है कि हम तेरी स्तुति के साथ-साथ तेरी वन्दना करते हुए तेरी पवित्रता की महिमा का गुणगान गाते हैं। इस पर अल्लाह ने उत्तर दिया कि जो कुछ मुझे ज्ञात है, वह तुमको नहीं है।

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ९०-९१

पूर्व इसके कि आयत के सम्बन्ध में कुछ लिखा जाए। यह जान लेना आवश्यक है कि खुदा ने अपना यह विचार कि मैं भूमि में अपना सर्वाधिकारी बनाने वाला हूं। एक ही बार देवों को कहा परन्तु कुरआन में कई बार इस विचार का वर्णन विभिन्न शब्दों में आया है।

यह विचारणीय है कि जिसे हम खुदा की वाणी कहते हैं और वह एक बार ही कही गई है तो उसमें एक भी मात्रा या

अनुस्वार का अन्तर नही होना चाहिए, जब कि मुसलमान कुरआन को ईश्वरीय वाणी मानते हैं तो उनको यह भी मानना पड़ेगा कि खुदा के द्वारा एक बार प्रयोग की गई वाणी के दुवारा भी वही शब्द होने चाहिए जो पहली बार कहे गए थे। यदि ऐसा न होकर कहीं कुछ, और कहीं कुछ शब्दों का प्रयोग हो तो उसके ईश्वरीय वाणी होने में शंका उत्पन्न हो जाएगी। क्योंकि उसका विभिन्न स्थानों पर एक ही बात को विभिन्न वाक्य-प्रणालियों में वर्णित करना पाठकों में भ्रमकारक हो जाता है। बारम्बार एक ही बात को कहना और वह भी विभिन्न शब्दों में, ईश्वरीय ज्ञान होने में शंका उत्पन्न करता है। मनुष्य से तो ऐसी भूल होना सम्भव है किन्तु खुदा की ओर से ऐसी भूल की सम्भावना तो क्या कल्पना तक कैसे की जा सकती है ? जब कि खुदा ने देवों को एक ही बार कहा तो फिर खुदा के शब्दों में हेर-फेर कैसे ? क्योंकि एक बार की कही बात को हो बारम्बार कहा जा रहा है। मात्र इतना ही नहीं अपितु पूर्व में कहीं गई बात को ही दुहराया भी जा रहा है। अब अन्य स्थानों पर कही गई बात के शब्द देखें:-

व इज काला रब्बोका लिलमलाएकते इन्नी खालेकुन बशरम्मिन सलसालिम्मिन हमाइम्मस्नून ।

कुरआन पारा १४ रकू २/३ सूरत हजर

और लिखा है:-

वा इज काला रब्बोका लिल्मलाएकते इन्नी खालेकुन बशरम्मिन तीन ।　　कुरआन पारा २३ रकू ५/१४ सूरत स्वाद

इसके पश्चात कुरआन पारा १५, रकू ७/७ सूरत बनी इस्राईल में और पारा १६ रकू ७/१६ सूरत त्वाहा में अन्य दुसरे ही शब्दों का प्रयोग किया गया है। एक बात और विचारणीय है कि कुरआन में जितनी भी आयतें आदम के विषय में

आई है, उन समस्त आयतों में फरिश्तों को ही सम्बोधित किया गया है, जिन्नों और शैतान को नहीं, क्योंकि जिन्न भी सबसे पूर्व की सृष्टि है ?

आजमुत्तफासीर में इसी आयत की व्याख्या में लिखा है कि इमाम बग़वी का कथन है कि जब खुदा आसमान-भूमि-जिन्न और फरिश्तों को उत्पन्न कर चुका, तो आसमान में फरिश्तों को वसाया और भूमि पर ज़िन्नों को आबाद किया। कुछ समय तक ज़िन्न भूमि पर पारस्परिक प्रेम और मित्रता से रहे फिर परस्पर द्वेष-बैरभाव तथा अनाचार में प्रवृत हो गए जिसके कारण समस्त संसार में उत्पात–अनाचार और हत्याएँ व्याप गईं। उस समय खुदा ने इस उत्पात को समाप्त करने हेतु शैतान के नेतृत्व में फरिश्तों की एक विशाल सेना भेजी। उस विशाल सेना ने जिन्नों को पहाड़ों की घाटियों तथा नदियों के द्वीपों से मार भगाया और स्वयं भूमि पर बस गए और इब्लीस (शैतान) को भूमि आसमान तथा स्वर्ग के कोषालय (ख़जाना) का शासक बनाया।

जब खुदा ने इब्लीस को नभ–धरती और स्वर्ग का सर-दार नियुक्त कर दिया, तो उसमें कौन सी न्यूनता देखी कि आदम जैसे व्यक्ति को सर्वाधिकारी नियुक्त करने लगे। शैतान तो खुदा की भक्ति करने वाला था। उसने अत्याधिक भक्ति की और विद्रोहियों के दमन में भी समर्थ था।

आजमुत्ताफासीर में यह भी है कि "काना मिनलजिन्न" अर्थात वह शैतान जिन्नों में से ही एक था। कुरआन पारा २३ सूरत स्वाद में तो शैतान स्वयं खुदा को शिकायत कर रहा है कि "तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया और आदम को मिट्टी से।

नभ और भूमि पर आदम का शासन

(खुदा ने कहा) मैं अपनी आज्ञाओं को प्रसारण करने और मनुष्यों को पापों से रोकने हेतु भूमि में एक सर्वाधिकारी बनाऊंगा और भूमि की खनखनाती (शुष्क) मिट्टी से सृजन करूंगा और वह होने व नष्ट होने में स्थित रहेगा परन्तु उसके साथ ही आसमानी रूह (आत्मा) भी उसमें फूकूंगा । जिसके कारण वह नभवासियों पर भी शासक होगा ।

आदम का उत्पात, फरिश्ते कैसे समझे ?

जब खुदा ने फरिश्तों से कहा कि मैं पृथ्वी पर सर्वाधिकारी बनाने वाला हूँ, तो वह तत्काल समझ गए कि जब यह सर्वाधिकारी पृथ्वी पर होगा और उसे विभिन्न प्राकृतिक परमाणुओं से निर्मित किया जाएगा तो उसके स्वभाव में कामवासना अवश्य रखी जायेगी................अतः उसमें विषयविकारों की कामना तथा क्रोध होना भी अनिवार्य है । इसलिए उन्होंने इस रहस्य को प्रकट करने एवं आँतरिक विवेक जागृत होने पर अत्याधिक सम्मानसहित खुदा के सन्मुख प्रार्थना की, कि हमारे मालिक ! जब उसे निन्दनीय पदार्थों की आवश्यकता होगी व उसकी कामवासना उत्तेजित होगी तो उसकी पूर्ति में लोग बाधक होंगे । परिणामस्वरूप उसकी शक्ति क्रोधाग्नि के रूप में प्रकट हो कर उत्पात मचाने और हत्याएं करने की ओर आकर्षित होगी । जिससे पृथ्वी पर अनेक प्रकार के उत्पात और हत्याएं प्रत्यक्ष होंगी और यदि उसको अगेवान बनाने का और कोई दुसरा लक्ष्य है तो क्या हम उसे पूर्ण करने में असमर्थ हैं ? हम तेरी पवित्र सत्ता की वन्दना और स्तुति करने के कारण समस्त दोष और बुराईयों से दूर रहते हैं । अतः ऐसे हत्यारे और उत्पाती को शासक बनाने में क्या उद्देश्य व प्रयोजन हैं ? तथा हमारे ऊपर

विश्वास न करने की क्या रहस्यात्मक नीति है ? तब खुदा ने फरिश्तों की इस प्रार्थना के उत्तर में फरमाया कि उसके हत्यारे और उत्पाती होने के बावजूद भी उसको बनाने की जो रहस्यात्मक नीति हैं, उसे मैं ही जानता हूं, और तुम्हारे आगे उसकी वास्तविकता प्रकट नहीं हुई है।

आजमुत्तफासीर, पारा १, पृष्ठ १३

तफसीर हक्कानी, पारा १, पृष्ठ ६

उपरोक्त उद्धृण हमने कुरआन की गाथा व वाक्यों को भाष्यकारों की अपनी भाषा शैली में ही उसके तात्पर्य के ज्ञातव्य हेतु उद्धृण किया है। इस सम्बन्ध में हमारे विचार निम्नानुसार हैं:-

यह उस जगनिर्माता-अन्तर्यामी-सर्व व्यापक-सर्वशक्तिमान और विश्वपालक जगदीश्वर के गुण—कर्म और स्वभाव के विरूद्ध एक मनघड़न्त मिथ्यापूर्ण और कपोल कल्पित गाथा मात्र है, जिसे लिख कर जन साधारण और अपने भक्तों व अनुयाईयों को भ्रामक जाल में फंसाया गया है। खुदा को क्या आवश्यकता कि वह अपनी योजना के विषय में फरिश्तों से विचार विमर्श करें कि मैं पृथ्वी पर एक शासक--सर्वाधिकारी या आगेवान बनाना चाहता हूं और फिर खुदा, वह भी ऐसा खुदा जो कि अपने ही फरिश्तों को स्वीकारे नहीं और समस्त संसार को विनाश के महागर्त में डाल देवें। खुदा, कभी ऐसा खुदा नहीं हो सकता ? और यदि वह सचमुच ही खुदा है, तो वह कभी भी ऐसा नहीं कर सकता।

उपरोक्त वर्णित वर्णन में फरिश्तों के शक्तिपूर्ण विरोधात्मक संघर्ष के बावजूद भी खुदा ने उनको कोई सन्तोषजनक उत्तर न देते हुए मात्र यह कह कर फरिश्तों का मुंह बन्द कर

दिया कि जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते। हम अपनी इस बात को सिद्ध करने हेतु जो घृणित चाल कुरआन के खुदा ने चली, आयतें प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे खुदा की सम्पूर्ण वस्तु-स्थिति अपने आप स्वतः प्रकट हो जाती है। आयतें:-

वा अल्लमा आदमल्अस्माआ कुल्लाहा सुम्मा अरजाहुम अलल्म-लाएकते फ़काला अम्बेऊनी बेअस्माए हाओलाए इन् कुन्तुम स्वादेकीन्। कालू सुब्हानका ला इल्मा लना इल्ला मा अल्लम्तना इन्नका अन्तल्अलीमुल्हकीम्। काला या आदमो अम्बेहुम् बेअस्माएहिम। फ़लम्मा अम्बआहुम बे अस्माएहिम् काला अलम् अकुल्लाकुम् इन्नी आलमो गैबस्समावाते वल्अर्जेवा आलमो मा तुब्दूना वा मा कुन्तुम तक्तोमून।

कुरआन पारा १ आयत क्रमांक ३२-३३-३४

अर्थात:-और सिखा दिये (अल्लाह ने) आदम को समस्त वस्तुओं के नाम। ऊपर वाली और नीचे वाली वस्तुओं के (यह चाल है खुदा की, कि आदम को सब सिखा दिया।) फिर उन समस्त वस्तुओं को सन्मुख प्रस्तुत किया और फरिश्तों से कहा कि इन वस्तुओं के नाम बताओ? यदि तुम सच्चे हो दोषारोपण में। फरिश्तों ने कहा-इनके नाम बताने में हम अज्ञान है तू ही पावन है, हम तेरी पवित्रता का बखान करते हैं। हमें कुछ ज्ञातव्य नहीं, पर जो कुछ तूने हमें सिखाया है, बस वही जानते हैं। निसन्देह तू ही ज्ञाता है और सिखाने वाला सुस्थिर और तत्वों को जानने वाला है। अल्लाह ने कहा-ऐ आदम! इन फरिश्तों को उनके नाम जो उपस्थित हैं, तू ही बता दे। फिर जब फरिश्तों को उनके नाम बता दिये तो अल्लाह ने उन फरिश्तों से कहा अप्रसन्नता सहित कि मैंने नहीं कहा था तुमसे कि मैं निश्चित जानता हूं, जो कुछ गोपनीय है आसमानों का हाल और जो भूमि के छुपे पदार्थ हैं,

और मैं जानता हूं कि जो कुछ तुम वाणी से प्रकट करते हो और जो कुछ तुम अपने अन्तर में छुपाते थे (वह क्या है ?) भूमि के शासन से निरस्त होने को बुरा जानने के कारण से।

तफसीर कादरी, पारा १ पृष्ठ १०

पाठक बन्धुओं ! यहां तो कुरआन के लेखक अथवा प्रवर्तक ने कमाल ही कर दिया। लोग कपोल कल्पित गाथाएँ-कथा और वार्ताएँ गढ़ते हैं, तो उनमें भी कुछ तारतम्य-शृंखला और एक गति होती है किन्तु कुरआन की उपरोक्त गाथा में न आदि न अन्त और न मध्य ही का कोई सम्पृक्त समन्वय है और न कोई परस्पर तालमेल ही है।

प्रारम्भ है कि खुदा पृथ्वी पर अपना सर्वाधिकारी बनाने का प्रस्ताव प्रस्तावित कर रहा है, कि मैं पृथ्वी पर एक ऐसा सर्वाधिकारी बनाने वाला हूँ। फ़रिश्ते उस पर आपत्ति कर रहे हैं, कि ऐसा व्यक्ति संसार में उत्पात और हत्याएँ करेगा, किन्तु हुआ क्या ? तत्काल आदम भी बन गया और खुदा ने उसको समस्त पदार्थों के नाम भी सिखा दिए। फ़रिश्तों के सन्मुख उन पदार्थों को प्रस्तुत कर उन के नाम पूछ लिये और वह बता न सके और आदम ने नाम भी बता दिये। साथ ही अल्लाह का यह कथन भी पुष्ट हो गया की मैंने पूर्व ही में कहा था कि जो मैं जानता हुँ, वह तुम नहीं जानते। क्या यह कोई एतिहासिक कथा या जासूसी उपन्यास अथवा मात्र स्वप्न है या कोई मादक तरंग ?

ऐसी ही एक लोकप्रसिद्ध कहानी है कि एक परिवार में पति-पत्नि थे। पति वकील और पत्नि डाक्टर थी। एक दिन अकस्मात दोनों पति-पत्नि में अत्याधिक विवाद उत्पन्न हो गया। अत्यधिक शोर होने पर अड़ोसी-पड़ोसी उनके यहां एकत्रित हो

गए किन्तु उनका विवाद उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। अन्तोत्गत्वा लोगों ने पूछा कि विवाद किस विषय पर है ? वकील (पति) महोदय बोले-विवाद यह है कि मैं अपने पुत्र को वकील बनवाऊंगा व यह कहती है कि नहीं में तो उसे डाक्टर ही बनाऊंगी लोगों कहा कि यह तो आपके पुत्र की रूचि पर होना चाहिये। आप अपने पुत्र को बुलवाईये, उससे ही पुछ लिया जाए कि तेरा विचार क्या बनने का है ? यह सुनकर विवाद कुछ मध्यम हुआ और दोनों पति-पत्नि बोले कि पुत्र क्या ? अभी तो गर्भ ही नहीं है। यह सुनकर लोगों ने कहा कि आप दोनों इतने पढ़े-लिखे होकर बिना किसी बात के निरर्थक विवाद उत्पन्न कर सारे मुहल्ले में संकट उत्पन्न कर दिया। वकील महोदय बोले-हम तो आशान्वित संसार में रमण कर रहे थे। आप लोगों ने उपस्थित होकर व्यर्थ ही हमारा खेल नष्ट कर दिया।

उपरोक्त आदम की कपोल कल्पित कथा से भी ऐसा ही ज्ञात होता है कि मात्र आदम की प्रतिमा के निर्माण हेतु खुदा ने पृथ्वी से मिट्टी भी मगवाई नहीं थी कि निरर्थक ही फरिश्तों से अर्थहीन विवाद में उलझ गया। न तो वहाँ कोई आदम था और न कोई नामावली। इस कथा से यह मुहावरा प्रमाणित होता है कि **"सूत न कपास और जुलाहों में लठ्ठमलठ्ठा।"**

इब्ने कसीर ने भी उपरोक्त आयत पर एक कपोल कल्पना की है जो कि निम्नानुसार है:-

यहां वर्णित है कि अल्लाह तआला ने विशेष रूप से हजरत आदम को फरिश्तों से श्रेष्टता दी। यह घटना फरिश्तों के सिजदा करने के पश्चात की है, परन्तु खुदाई रहस्य जो आपको उत्पन्न करने में था और जिसका ज्ञान फरिश्तों को न था। जिसका संक्षिप्त वर्णन उपरोक्त आयत में वर्णित हैं। उससे सम्पृक्त

होने से इस घटना को प्रथम वर्णित किया और फरिश्तों द्वारा किया गया सिज़दा, जो इससे पूर्व सम्पन्न हो चुका था, वर्णन में पश्चात कर दिया।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १. पृष्ठ २/४

उपरोक्त कथन किस प्रकार असत्य है। यह आगामी कथन से स्पष्ट हो जाएगा कि जिस समय खुदा और फरिश्तों का वार्तालाप सर्वाधिकारी (खलीफा) बनाने हेतु हुआ, उस समय तक तो हज़रत आदम की उत्पत्ति या निर्माण तक नहीं हो पाया था, तो फिर उक्त सिज़दा वाली घटना पूर्व ही कैसे हो गई ?

जब खुदा ने फरमाया: कि मैं पृथ्वी में एक सर्वाधिकारी बनाना चाहता हूँ, तो उन फरिश्तों ने निवेदन किया, कि फिर ऐसों को तू क्यों उत्पन्न करता है, जो पहली जाति के सदृश्य उत्पात और हत्याएं करें, तो उन्हें उत्तर दिया गया कि जो मैं जानता हूँ उसे तुम नहीं जानते। तत्पश्चात आदम की मिट्टी उठाई गई, जो चिकनी और अच्छी थी। जब उसका खमीर उठा तो अल्लाह ने आदम को अपने हाथों से निर्मित किया और ४० दिनों तक वह यों ही प्रतिमा (बुत) के रूप में रहा। इब्लीस आता और उस पर लात मार कर देखता था कि वह खनखनाती स्वरमय मिट्टी थी, जैसे कोई खोखली अर्थात पोली वस्तु हो। फिर वह मुंह के छिद्र से प्रवेश कर पीछे (शौचस्थान) से पलट कर आवागमन करता रहता और कहता कि वास्तव में यह कोई वस्तु नहीं है।

जब अल्लाह ने उसमें रूह (आत्मा) फूंकी और वह मस्तक की ओर से नीचे की ओर आई तथा जहां-जहां प्रवेश हुआ रक्त और मांस उत्पन्न होता गया। जब आत्मा आदम की प्रतिमा में पूर्णरूपेण प्रविष्ट हो गई तो आदम को छींक आई और कहा

"अल्हम्दो लिल्लाह" (समस्त प्रशसाएं खुदा हेतु है) अल्लाह ने उत्तर दिया "यर हमकल्लाहो" (खुदा तुझ पर कृपा करे) फिर इब्लिस के साथी फरिश्तों से खुदा ने फरमाया कि आदम को सिजदा (प्रणाम) करो। इब्ने कसीर पृष्ठ ७/२

व्याख्याकार के उपरोक्त वर्णन से यह बात स्पष्ट हो गई कि जब खुदा और फरिश्तों के मध्य आदम को सर्वाधिकारी बनाने विषयक वार्तालाप हो रहा था तब आदम उत्पन्न ही नहीं हो पाया था और खुदा ने फरिश्तों के सन्मुख मात्र प्रस्ताव ही प्रस्तुत किया था किन्तु कुरआन के लेख को पढ़ कर महान आश्चर्य होता है। कुरआन के लेखक या प्रस्तोता ने आदम की उत्पति के प्रस्ताव पर ही उसे "नाम ही सिखा दिये"। "व अल्लमा आदमल अस्माआ कुल्लाहा" अर्थात "और खुदा ने उसे सारे के सारे नामों का भी ज्ञान करा दिया और नाम सिखाने के पश्चात आदम को फरिश्तों के सामने नाम बताने हेतु प्रस्तुत भी कर दिया।"

आदम को नाम सिखाने के सम्बन्ध में तफसीर आजमुत्तफासीर ने लिखा है कि हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है कि हज़रत आदम को, आदम की सन्तति और समस्त प्राणियों के नाम पृथक-पृथक पूर्ण विवरण सहित बता दिये कि यह गधा, यह घोड़ा, यह ऊंट यह ज़ैद, यह उमर और यह खालिद है। यहां तक कि बड़े से बड़े और छोटे से छोटे प्याले-कटोरी-देगची तथा अन्य समस्त पदार्थों के गुण और प्रभाव एवं दीन और दुनिया के लाभ भी बता दिये। फिर जिन वस्तुओं के नाम हज़रत आदम को सिखाये गये थे उनके चित्र फरिश्तों को दिखा कर फरमाया कि इनके स्पष्ट रूप से नाम बताओ, यदि तुम अपने उस दावे (वाद) में सच्चे हो। (आदम के बनाने पर जो आपत्ति

उठाई गई थी) यद्यपि तुम उनको (समस्त घटनाचक्र) अपनी आंखों से देख रहे हो। फरिश्तों ने यह बात सुनते ही अपनी अज्ञानता प्रकट की और कहा कि हमको केवल उतना ही ज्ञान हैं, जितना तूने हमको सिखाया.................

आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १४१

अन्य तफसीरों में भी लगभग इसी प्रकार का वर्णन वर्णित है।

आदम और फरिश्तों का प्रश्न पत्र

खुदा की ओर से एक प्रश्न था, जो कि उत्तर हेतु आदम व फरिश्तों दोनों से किया गया। आजकल भी छात्रों को प्रश्न पत्र दिये जाते हैं एवं परीक्षक परीक्षाएं लेते हैं किन्तु यह कुरआन में वर्णित खुदा एक विचित्र भांति का परीक्षक है। प्रथम तो यह कि यदि कोई परीक्षक किसी परीक्षार्थी से ऐसा प्रश्न करता है, जो कि परीक्षार्थी ने कभी पढ़ा सुना या देखा ही नहीं हो, तो वह उत्तर क्या और कैसे देगा या लिखेगा ? वह तो यही कहेगा कि यह प्रश्न हमारे पाठ्यक्रम में नहीं हैं। फरिश्तों ने भी ठीक यही उत्तर अपने खुदा को दिया। किसी भी परीक्षक को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी परीक्षार्थी से विषय या निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कोई प्रश्न करे और यदि कोई करे तो निश्चित ही वह भ्रष्ट एवं दोषी माना जाएगा क्योंकि एक तो प्रश्न ही पाठ्यक्रम के अतिरिक्त ही है और फिर ऊपर से अपने प्रिय और सम्बन्धित परीक्षार्थी को गोपनीय ढंग से समय के पूर्व ही उस प्रश्न सम्बन्धी ज्ञान करादें और फिर सबसे अपने प्रश्न का उत्तर देने को कहें। स्वाभाविक है कि जिस भी परीक्षार्थी को समय के पूर्व गोपनीय रूप में स्वयं परीक्षक ने प्रश्नोत्तर सम्बन्धी ज्ञान करा दिया है, वह परीक्षार्थी तो प्रश्न

को हल कर ही लेगा किन्तु अन्य दूसरे परीक्षार्थी भला कैसे हल कर सकेंगे, क्योंकि वह तो उनका न तो विषय है और न पाठ्य-क्रम ही रहा? ऐसे भ्रष्ट और दोषी परीक्षक से वर्तमान शालाओं और कालेजों के छात्र भला क्या और कैसे व्यवहार करेंगे, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है।

यह फरिश्ते तो बैचारे प्राचीन युग के थे, सो सम्मान सहित सभ्यतापूर्ण ढंग से मात्र यह कह कर ही मौन हो गए कि हम तो इतना ही जानते हैं, जितना आपने हमें सिखाया। इससे अधिक न आपने हमें सिखाया और न हम जानते ही हैं। सभ्यता पूर्ण उत्तर देने का भी परीक्षक पर किञ्चित प्रभाव नहीं हुआ और उसने सबको अनुतीर्ण और जिस आदम को गोपनीय रूप में सिखा-पढ़ा दिया था, उसे उत्तीर्ण घोषित कर दिया। ऊपर से और यों कहा कि मैंने तुम्हें पूर्व ही में कह दिया था कि तुम नहीं जानते। मैं भूमि और आसमान के समस्त पदार्थों को जानता हूँ, और जो कुछ तुम गुप्त या प्रकट करते हो, उन सबको भी जानता हूँ। कल्पना करें कि मात्र इतने से उत्तर हेतु स्वयं खुदा को कितना मिथ्या मार्ग ग्रहण करना पड़ा?

बैचारे फरिश्तों की नम्रता और सभ्यतापूर्ण उत्तर पर खुदा की इस अहम्पूर्ण वाक्य रचना ने फरिश्तों का मस्तक नत कर दिया और वह वाह-वाह कर खुदा का स्तुतिगान करने लगे। जैसे सांसारिक साधारण प्राणी राजा-महाराजाओं के आसपास एकत्रित हो उन्हें प्रसन्न करने हेतु खुशामदभरी हां में हां और न में न कर अपना स्वार्थ पूर्ण करते हैं। यह स्थिति है, उस न्याय-कर्ता-चर-अचर के स्वामी और परमात्मा (खुदा) का, जो उसके नाम से प्रस्तुत किया गया है। ऐसा कार्य तो संसार में यशलो-लुप सम्पन्न लोग भी नहीं करते, वह भी सत्य-असत्य का मन्थन

और निर्णय करना अपना कर्तव्य समझते हैं, फिर भला उस परमेश्वर के नाम पर ऐसा मिथ्यापूर्ण और अशोभनीय कलंक कौन भगवद्-प्रेमी सहन कर सकता है ? आदम की कथा-शृंखला में ही यह अगली आयत:-

व इज़ कुल्ना लिल्मलाएकतिस्जोदू ले आदमा फसजदू इल्ला इब्लीस् । अबा वस्तक्बरा व काना मिनल काफेरीन् ।

कुरआन पारा १ रकू ४/४ आयत क्र.

अर्थात:-ऐ मुहम्मद ! उसे भी याद करो । कि जब हम (अल्लाह) नें फरिश्तों को कहा (एक बार ही) कि आदम को सिजदा करो, सिज़दा किया समस्त फरिश्तों ने किन्तु इब्लीस (शैतान) ने (नहीं किया)

वास्तविकता यह है कि इब्लीस ज़िन्नों में से ही एक था। उसका स्वभाव खुदा के आदेशों को उल्लंघन करने का होने से परिणामस्वरूप उसका उपनाम इब्लीस रख दिया गया था। तात्पर्य यह है कि वह खुदा की दयादृष्टि से वंचित था। आदम के सन्मुख भी उसने नतमस्तक होने से अस्वीकार कर दिया। गर्व और विद्रोह किया तथा वह खुदा के ज्ञान में काफिरों में था । (जब उसे भूमि और आकाश का शासक बनाया गया, तब वह काफिर नहीं था ?)

तफसीर कादरी, भाग १ पृष्ठ

सर्वप्रथम यह विचारणीय है कि कुरआन में जहां-जहां भी आदम को सज़दा करने का आदेश हुआ वहां-वहां केवल फरिश्तों को ही सज़दा हेतु सम्बोधित किया गया है, और शैतान को किसी भी आयत में सम्बोधन नहीं है किन्तु यह शैतान बीच में कहां से आ टपका ? इसका कारण यह है कि हज़रत मुहम्मद

शैतान से अत्याधिक आतंकित थे। प्रत्येक कार्य में शैतान से पनाह मांगने का आदेश दे रखा था। इब्ने अब्बास के कथनानुसार शैतान स्वर्ग का कोषाध्यक्ष और भूमि व आसमान का शासक भी था। उसके चार पंख भी थे।

इब्ने कसीर पृष्ठ ८/२

ऐसी स्थिति में शैतान को भयानक बनाने हेतु खुदा की अवज्ञा की यह कहानी निर्माण की गई है।

इब्लीस जिन्नों में से था।

हज़रत हसन का कथन है कि इब्लीस जिन्न था, फरिश्ता कभी भी नहीं था। इब्ने कसीर, पृष्ठ ८/२

इब्लीस फरिश्ता नहीं था। कुरआन स्वयं कहता है "काना मिनल्जिन्ने" अर्थात वह जिन्न था। कुरआन में शैतान की सन्तान बताई गई है, फरिश्तों के सन्तान नहीं होती। इब्लीस की उत्पत्ति अग्नि से है (यथा ख़लक्तनी मिन्नार, कुरआन) और फरिश्ते नूर (प्रकाश) से उत्पन्न हुए हैं। जैसा कि हजरत मुहम्मद ने फरमाया............इत्यादि ।

हमारा आरोप यह है कि इब्लीस फरिश्ता नहीं था, तो उस पर फरिश्तों का आदेश क़ैसे प्रभावित हो सकता ? अस्तु इस पर भाष्यकार कहते हैं कि वह फरिश्तों के साथ रहता था परन्तु साथ रहने से भी फरिश्तों का आदेश उस पर प्रभावित नहीं हो सकता है। आदम और फरिश्तों की इस कपोल कल्पित कहानी में शैतान का भी नाम जोड़ कर उसे अवज्ञाकारी व अभिमानी सिद्ध करने में हज़रत मुहम्मद ने सफलता प्राप्त करना अपना प्रमुख उद्देश्य बनाया है।

आदम-उत्पत्ति का संक्षिप्त विवरण

उक्त सम्पूर्ण कथा को देखते हुए आवश्यक है कि हज़रत आदम की उत्पत्ति का वर्णन किया जाय। जिससे यह ज्ञात हो सके कि फरिश्तों की परीक्षा का समय आदम के साथ कौन सा था? जब खुदा ने उन्हें उत्पन्न करना चाहा तो जिब्रील से फरमाया कि विभिन्न प्रकार की मिट्टी एकत्रित कर भूमि के नाभिस्थान (जहां अब काबा है) पर फरिश्तों को मिट्टी बनाने का आदेश दे और ४० दिनों तक वहां पर वर्षा करवाई। ३९ दिनों तक दुःख और शोक की तथा ४० वें दिन हर्ष की वर्षा की। इसी कारण मनुष्य पर दुख अधिक आया करते हैं और हर्ष कम प्राप्त होता है। फिर इस चिकनी और खनखनाती मिट्टी से खुदा ने मक्का व ताइफ के मध्य नैमान की घाटी में अपने हाथों की शक्ति से आदम की प्रतिमा निर्मित की। वह प्रतिमा ४० दिन तक उस क्षेत्र में पड़ी रही। कभी-कभी इब्लीस भी उस प्रतिमा (पुतले) के पास आता था और पांव से ठोकर मार कर कहता था कि इस खोखली वस्तु में, जो भीतर से ठोस नहीं है; खुदा जाने इसमें क्या हिकमत रखी जाएगी। कभी इस पुतले को व्यर्थ बनानेवाला घोषित कर कहता की सड़े हुए कीचड़ के पुतले! तू मात्र इस हेतु ही निर्मित नहीं किया गया अपितु तेरा खमीर (सड़ांध-प्रकृति) इस हेतु तैयार किया गया है कि कुछ और काम लेना अभिप्रेत है।

आजमुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ १

उपरोक्त विवरण एवं पूर्वोक्त कहानी का सारांश यह है कि अल्लाह ने फरिश्तों को आदेश दिया कि जब मैं आदम के पुतले में रूह (आत्मा) प्रविष्ट करूं और वह प्राणवन्त हो, तुम ही उसे सजदा करो।

पूर्वोक्त आयत से यह ज्ञात होता है कि आदम के जीवित होते ही तत्काल खुदा ने फरिश्तों को नमन करने की आज्ञा दे दी और उस समय फरिश्तों और आदम को नाम बताने का अवसर ही नहीं था। और सज़दा (नतमस्तक) हो जाने के पश्चात तो परीक्षा की आवश्यकता ही शेष नहीं रहती क्योंकि सज़दा करने से आदम को शासक और सर्वोच्च स्वीकार कर ही लिया गया।

सिजदे में कब तक रहे ?

जब फरिश्तों ने हज़रत आदम को सज़दा (नमन) किया तो वह सौ वर्ष तक सजदे में रहे। एक और वर्णन है कि सज़दे में पांच वर्ष तक रहे और जब सज़दे से अपना मस्तक उठाया तो शैतान को खड़ा देखा। अज़ाएबुल्कसस भाग १ पृष्ठ ४१

यह है इस्लाम ? एक खुदा (ईश्वर) की आराधना के सिद्धान्त का उद्घोषक, जो ऐसे व्यक्ति को सज़दा करा रहा है जो अभी खुदा की आज्ञा की अवज्ञा कर शैतान के प्रभाव से प्रभावित हो जाएगा तथा खुदा के मार्ग से पथभ्रष्ट हो जाएगा।

यद्यपि हम इस कहानी को कुरआन परिचय भाग १ में लिख चुके हैं किन्तु जिन पाठकों ने उसे पढ़ा नहीं, उनके हेतु आवश्यक यह है कि वह समस्त आयतें, जो इस सम्बन्ध में कुरआन में हैं, पुनः लिखी जाए ताकि उनका पारस्परिक मतभेद और विरोधाभास स्पष्ट रूप से सबके सन्मुख प्रकट हो सके।

खुदा और शैतान का परस्पर विवाद।

(आयतों का अन्तर आगे वर्णित हैं)

व लक़द खलक्नाकुम सुम्मा सव्वरनाकुम् सुम्मा कुल्ना लिल्मलाए कतिस्जोदू ले आदमा फसजदू इल्ला इब्लीस् लम यकुम्मिनस्सा-

जेदीन काला मा मनअका अल्ला तस्जोदा इज़् अमर्तोका, काला खैरूम्मिन्हो खलक्तनी मिन्नारिव्व खलक्तहू मिन तीन्, काला फ़ अह्बित् मिन्हा फ़मा यकूनो लका अन् ततकव्बरा फीहा फ़ख्रुज इन्नका मिनस्सागेरीन । क़ाला अन्ज़िर्नी इला यौमे युब्असून। काल इन्नका मिनल्मुन्जेरीन । काला फबेमा अग्वैतनी ल अक्‌-दन्ना लहुम सिराते कल्मुस्तकीम्, सुम्मा लआतेयन्न हुम्मिम्बैना ऐ दीहिम वा मिन् खल्फेहिम् वा अन् ऐमानेहिम् वा अन् शमा इलेहिम् वा ला तजेदो अक्सरहुम् शाकेरीन् कालख्रुज मिन्हा मज्ऊमम्मद हूरा । लमन् तबेअका मिन्हुम् ल अम्लअन्ना जह-न्नमा मिन्कुम् अज्मईन् । कुरआन पारा ८ रकू २/६

हमने उपरोक्त आयतें सम्पूर्ण रूपमें लिखदी, ताकि आप अन्य दुसरी आयतों में उपस्थित अन्तर-मतभेद और विरोधाभास को उसके सही रूप में निरख-परख सकें। खुदा और शैतान की चर्चा तो मात्र परस्पर एक ही बार हुई और फिर खुदा ने उसको अपने यहां से वहिष्कृत कर दिया। परिणामस्वरूप एक ही बार हुई चर्चा में किसी भी प्रकार का अन्तर उत्पन्न होना स्वाभाविक और सम्भव नहीं होता ? भलें ही उक्त चर्चा कुरआन में आवश्यकता-नुसार कई बार वर्णित हुई हो ? एक ही बात को यदि विभिन्न स्थानों पर विभिन्न शब्दों-वाक्यों और शैली; में अभिव्यक्त की गई है, तो स्पष्ट है कि उक्त खुदा और शैतान की चर्चा एक बार नहीं कई बार हुई है, और यदि यह चर्चा मात्र एक ही बार हुई है, तो उसमें अन्तर आ ही नहीं सकता और यदि अन्तर है, तो तय है कि उक्त अन्तर उत्पन्नकारक कोई अन्य और है क्योंकि चर्चा करने वाला तो अपनी बात में अन्तर या मतभेद उत्पन्न कर ही नहीं सकता है ;

जब खुदा और शैतान में पारस्परिक विवाद एक ही बार हुआ है तो विवाद को दुहराते समय प्रत्येक समय शब्द–शैली और अभिव्यक्ति में अन्तर क्यों और कैसे आ जाता है ? स्पष्ट है कि कोई और व्यक्ति है. जो कि अल्लाह के नाम से परिवर्तित-संशोधित कर वर्णन कर रहा है ? खुदा की वाणी में अन्तर उपस्थित हो जाने का क्या अभिप्राय ?

कुरआन में स्पष्ट लिखा है कि "लातब्दीला लेकले मतिल्लाहे" अर्थात "खुदा का कलाम (कथन) नहीं बदलता। अर्थात जो बदलता है या जिसमें अन्तर आ जाता है, वह खुदा का कलाम नहीं है।

उपरोक्त आयतों के अर्थ :–

हमने तुमको उत्पन्न किया, फिर रुप दिया फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सज़दा करो। (यहां भी वैसी ही बात कही है, जैसी पूर्व में कही थी) अल्लाह ने जब फरिश्तों को कहा कि आदम को सज़दा करो, उस समय तो मात्र आदम ही बनाया गया था। हम अभी लख आये हैं कि जब हम (अल्लाह) आदम के पुतले में रुह (आत्मा) फूंके और आदम जीवित हो जाए तो तुम लोग तत्काल सज़दे में गिर पड़ना। उस समय तक न तो किसी मनुष्य को उत्पन्न किया था और न किसी का रुप ही बनाया गया था ? वास्तव में सत्य भी यही हैं कि आदम के अतिरिक्त और न कोई मनुष्य ही उत्पन्न हुआ था। यहां तक कि कोई और अन्य मनुष्यों की जननी हव्वा तक भी नहीं निर्मित की गई थी ? किन्तु आयत में मनुष्यों को सम्बोधित किया गया है, कि हमने तुम्हें उत्पन्न किया, फिर रुप दिया, फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सज़दा करो। आयत स्पष्टतया कह रही है कि मनुष्यों की उत्पत्ति के पश्चात फरिश्तों को कहा कि

आदम को सज्दा करो। इसका स्पष्टीकरण मुसलमानों ने इस प्रकार दिया:---आदम को उत्पन्न किया और उसकी पीठ में तुम्हारे चित्र रचे। आजमुत्तफासोर, पारा ८ पृष्ठ १६४

मुजाहिद का कथन है कि:–हमने तुमको अर्थात तुम्हारे पिता आदम को निर्मित किया, फिर आदम की पीठ में तुम्हारी सूरतें निर्मित की।

तफसीर मज़हरी, भाग ४ पृष्ठ २७५

अब देखिये कि आदम की पीठ में कितना स्थान है? जहां कि असंख्य मनुष्यों के चित्र-रूप या सूरतें निर्माण हो गई। जब कि आदम को निर्मित किया गया, उस समय यही कहा गया कि जब मैं आदम में रूह फूंकू तुम तत्काल सज़दे में गिर पड़ो। किसी भी आयत में यह वर्णित नहीं है कि आदम ने पुतले में रूह-फूंकते समय असंख्य मनुष्यों के रूप भी उसकी पीठ में निर्मित कर दिये?

वास्तविकता यह है कि मुसलमानों के पास इसका कोई सन्तोषजनक या निर्णायक समाधान ही नहीं है, जो वह इस बात का कोई ठोस प्रत्युत्तार दे सके कि यह असंख्य मनुष्यों के रूप खुदा ने आदम की पीठ में कब और कैसे निर्मित किए ? और फिर आदम के मरणोपरांत वह कहां गये ? क्या यह समस्त रूप बिना रूह के (आत्मारहित) थे ? या इनमें रूह (आत्मा) भी थी? यदि रूह नहीं थी, तो फिर यह क्यों और कैसे कह दिया कि हमने तुमको उत्पन्न किया और फिर तुम्हें रूप प्रदान किया। यदि बिना रूह के (आत्मारहित) मात्र शारीरिक आकार-प्रकार ही निर्मित किया तो फिर उनका रूप भी भिन्न-भिन्न ही रहा होगा और फिर आदम की पीठ में यह विभिन्न रूपों और आकारों प्रकारों की विभिन्न सत्ताए समा सकने की इतनी जगह कैसे आ गई ? जब कि कुरआन में उत्पत्ति-क्रम निम्नानुसार हैं:-

अलम् नख़्लुक़ोकुम् मिम्माइम्महीन् फ़जाअल्नाहो फी क़रारिम्म-कीन् इला क़द्दरिम्मलूम फ़क़दरना फ़नेमल्कादेरून।

कुरआन पारा २६ सूरत मूर्सलात

अर्थात:– क्या नहीं उत्पन्न किया हमने हकीर पानी से। हकीर का अर्थ गंदा अर्थात वीर्य। पस, किया हमने उसको स्थिर मध्य स्थान के, एक निश्चित समय के ज्ञान तक, फिर हमने अनुमान लगाया।

महीन का अर्थ वीर्य, ऐसा नहीं कि उत्पत्ति के पश्चात गर्भ में वीर्य का ठहराव होता है अर्थात नुतफ़ा (वीर्य) ठहराया पूर्व और उत्पत्ति पश्चात अर्थात हमने उसको गर्भ में रखा उतने समय तक जिसकी अवधि सर्व साधारण को ज्ञात है।

नाफा और कसाई से रवायत है कि हमने मां के उदर में रहने का समय, उत्पत्ति का समय और उसके भाग्य का अनुमान निश्चित कर दिया।

इब्ने मसऊद का उद्दरण है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया तुममें से प्रत्येक की उत्पत्ति का तत्व (मूल अंश) मां के उदर के उदर में ४० दिनों तक नुतफ़ा (वीर्य) के रूप में रहता है। फिर उतना ही समय स्थिर लहू के रूप में, फिर उतना ही समय लोथड़े (माँसपिण्ड) के रूप में रहता है और फिर उसके समीप खुदा फरिश्ते को भेजता है।

तफसीर मज़हरी पारा २६ पृष्ठ २५५

कथन का अभिप्राय यह कि सर्वप्रथम वीर्य माँ के उदर में ठहरता है और फिर यहीं जमा हुआ रक्त (वीर्य) मांसपिण्ड का रूप धारण कर बालक के रूप में उत्पन्न होता है, किन्तु ऐसा

कुछ भी न होकर आदम की पीठ में मनुष्यों के रूप निर्मित हो जाना और फिर वह भी अगणितों का ? एक असम्भव बात है। शिशु केवल मां के उदर में ही रूप ग्रहण करता है न कि आदम की पीठ में उसके रूप निर्मित हो जाते है।

हमारा प्रश्न है कि आदम के मरणोपरान्त मनुष्यों के वह निर्मित किये गये रूप कहाँ जाते हैं ? यह ऐसी थोथी कल्पना है कि मात्र अंधविश्वासी और धर्मभीरू जन ही के अतिरिक्त और कोई भी इसे नहीं स्वीकारेगा।

शेष अर्थः-कहा सज़दा करो आदम को, तो सबने सज़दा किया, किन्तु इब्लीस (शैतान) न था सज़दा करने वालों में (खुदा ने कहा) कि तुझे किस बात ने सज़दा करने से रोका, जब कि मैंने सज़दा करने का आदेश किया था। (यह वाक्य भी कितना प्रतिकूल है खुदा के अपने ही कथन से कि मैंने सज़दे का आदेश किया था।)

आप सम्पूर्ण कुरआन ढूंढ लीजिए कहीं भी शैतान को सज़दा करने का आदेश नहीं। आदेश केवल फरिश्तों को है। हम पूर्व में सिद्ध कर चुके हैं कि शैतान फरिश्ता नहीं था। फरिश्ते नूर (प्रकाश) से उत्पन्न हुए और शैतान अग्नि से उत्पादित है, तो फिर आदेश का पालन करना उस पर कैसे प्रभावित हो सकता है ? यह बात सर्वथा असत्य है कि मैंने तुझको सज़दा का आदेश किया था। (क्या खुदा भी ऐसा भयंकर मिथ्यावादी हो सकता है?)

शेष अर्थः-(शैतान ने कहा) मैं इस आदम से श्रेष्ठ हूं कि मुझे तूने अग्नि से और उसको (आदम को) मिट्टी से निर्मित किया। (खुदा ने कहा) तू (शैतान) यहाँ से निकल (उतर यहाँ से) तुझको यह उचित नहीं कि तू गर्व करे अहँकारमय, यहां से निकल, तू निकृष्ट है। (इस पर इब्लीस ने कहा) कि मुझे जीवित रहने की अवधि, मृतकों के जी उठने (कयामत) तक दो। मृतकों

के जी उठने से तात्पर्य यह कि मुझे मृत्यु न आये) इस पर (खुदा ने कहा)तुमको अवधि (कयामत तक) दी गई। अर्थात मृतकों के उठने तक की अवधि दी गई।

मुसलमान भाईयों ! अल्लाह ने इस शैतान को इतनी दीर्घायु प्रदान की, क्या यह इस योग्य है ? कुरआन के खुदा का यह कार्य क्या बुद्धिमतापूर्ण हैं ? किन्तु तनिक आगे ही अल्लाह स्वयं ही उक्त वचन को टालमटोल हेतु चाहे जो कुछ भी कह देगा कि जिससे भले ही तनिक समय हेतु ही क्यों न हो किन्तु उसकी मृत्यु हो ही जाये अर्थात खुदा स्वयं अपने वचन को भंग कर देगा।

(फिर इब्लीस बोला) जैसा तूने (अल्लाह ने) मुझे पथभ्रष्ट किया है, मैं भी तेरी सीधी राह की ताक में बैठूँगा और मैं (शैतान) उनको (मनुष्यों को) पथभ्रष्ट करने हेतु आगे से, पीछे से, दाँये से, बाँए से आऊँगा और तू (अल्लाह) उनमें से अधिकांश को कृतघ्न पायेगा। (खुदा ने कहा) निकल यहां (स्वर्ग या आसमान) से फिर जो कोई तेरे मार्ग पर चलेगा उनमें से, मैं उन सबसे नर्क को भरूँगा, भरूँगा इकठ्ठे।

आजमुत्तफासीर, पारा ८ पृष्ठ १९३

यह है उपरोक्त आयतों के अर्थ, आगे और आयतों के दिखाएँगे। अब यहाँ शैतान का दुस्साहस देखिए कि वह खुदा के समक्ष ही कह रहा है कि तूने मुझे पथभ्रष्ट किया है (क्योंकि भ्रष्ट तो सभी को खुदा ही करता है, हम पूर्व में लिख आए हैं।) इसलिए मैं तेरे द्वारा निर्मित मनुष्यों को कुमार्ग पर डालूँगा। खुदा, शैतान की बातों को चुपचाप रह सुनता रहा और मात्र इतना ही कहा–जो तेरा अनुसरण करेगा उसको नर्क में डालूँगा। शैतान को अपने लक्ष्य में कितनी सफलता प्राप्त हुई ? यह पूर्व

में लिखा जा चुका है कि प्रति एक हजार में से एक व्यक्ति स्वर्ग को शेष ९९९ व्यक्ति नर्क को जायेंगे । जैसे शैतान ने खुदा से अभद्रता कर और विद्रोह फैलाने की चुनौती दी, कोई जिम्मेदार शासकीय अधिकारी या सत्ताधिकारी व्यक्ति उपस्थित होता तो तत्काल ही ऐसे (शैतान) को बन्दी कर कारागृह में डाल देता किन्तु यहां तो खुदा ने और विपरीत कार्य कर उसको कयामत तक का दीर्घायु जीवनदान दे दिया ।

अब और आयतें प्रस्तुत है, जिसमें खुदा ने क्या कहा और शैतान ने क्या प्रत्युत्तर दिये ? पूर्वोक्त आयतें पारा ८ की थी। अगली आयतें है:–

वा इज़ काला रब्बोका मिल्मलाएकते इन्नी ख़ालेकुन बशरम्मिन सल्सालिम्मिन हमइ इम्मस्नून । फ़ इज़ा सव्वेतोहू वा नफ़ख़्तो फीहे मिर्रूही फ़कऊलहू साजेदीन । फ़सजादल्मलाएकतो कुल्लोहुम अज्मऊन । इल्ला इब्लीस । अबा अंय्यकूना मअस्साजेदीन। काला या इब्लीसो मा लका अल्ला तकूना मस्साजेदीन, काला लम् अकुल्ले अस्जोदा ले बशरिन् ख़लक्तहू मिन् सल्सालिम्मिन हमइ इम्मस्नून् । काला फख़्रुज़ा् मिन्हा फ़इन्नका रजीमुंव्व इन्ना एलैकल्लानता इला यौमेद्दीन । काला रब्बे फ़अन्ज़िर्नी इला यौमे युब्असून । काला फ़इन्नका मिन्लमुन्ज़ोरीन् इला योमिल्वक़्तिल्मालूम । काला रब्बे बेमा अग़्वैतनी लओ ज़ाय्ये नन्ना लहुम फ़िल्अर्ज़ो व लउग़्वे यन्नाहुम अज्मईन । इल्ला एबादेका मिन्हुमुल्मुख़्लसीन् । काला हाज़ा सेरातुन अलय्या मुस्तकीम् । इन्ना एबादी लैसा लका एलैहिम् सुल्तानुन इल्ला ममित्तबअका मिनल्गावीन् । वा इन्ना जहन्नमा ल मौइद्दहुम अज्मईन् ।

कुरआन पारा १४ रकू ३/३ सूरत हजर

अर्थातः-

खुदा ने कहा—इब्लीस (शैतान) तुझको कौन सा कारण हुआ कि तूं सज़दा करने वालों में से न हुआ । इब्लीस ने कहा— कि मैं ऐसा नहीं कि मनुष्य को सजदा करूँ, कि जिसको तूने बजती हुई मिट्टी से, जो कि सड़े दलदल से निर्मित थी, उससे उसको उत्पन्न किया। इस पर ख़ुदा ने कहा-- कि तू आसमान से निकल जा, क्योंकि निसन्देह तू [मरदूद] फटकारा हुआ है और प्रलय (कयामत) के दिन तक तुझ पर फटकार होगी । शैतान वोला— ऐ मेरे पालक ! तू मुझको उस दिन [कयामत] तक जीवित रहने की अवधि दे, जिस दिन कि मृतकों को जीवित किया जाये। इस पर खुदा ने कहा-- तुझे निश्चित समय तक अवधि दी गई। (यह निश्चित समय का शब्द पूर्व आयत में नहीं है) शैतान बोला-ऐ मेरे पालक ! जिस प्रकार तुने मुझको पथभ्रष्ट किया है। मैं शपथ लेता हूं कि मैं भी संसार में मनुष्यों को पापाचरण करने की रूचि देकर पथभ्रष्ट करने की चेष्टा करुंगा किन्तु आपके उन भक्तों पर, जो चुन लिये गये हैं, (मेरा प्रभाव न होगा) खुदा ने कहा-यह एक सीधा मार्ग है, जो मुझ तक पहूंचता है। मेरे उन भक्तों पर तेरा तनिक भी प्रभाव न होगा। हां कुमार्गी लोगों हेतु, यह जो तेरे भ्रष्ट मार्ग पर चलेंगे उन सबसे नर्क का वचन है। तफ़सीर इब्ने कसीर, पारा १४ पृष्ठ १२

इन आयतों में पूर्वोक्त आयतों से एक अन्तर तो यह है कि तुमको उत्पन्न किया और फिर तुम्हें रुप दिया और फिर फरिश्तों से कहा कि सज़दा करो। किन्तु इन आयतों में हैं कि एक ही व्यक्ति (आदम) को उत्पन्न किया और कहा कि जब उसे जीवित कर दूं तो तुम उसके हेतु सज़दा में गिर जाना ।

दूसरा अत्याधिक अन्तर यह है कि पूर्वोक्त आयत में

मृतकोंके जीवित होने तक शैतानको जीवनप्रदान किया था किन्तु इन आयतों में उसे परिवर्तित कर यह कहा गया कि निश्चित समय तक तुझे जीवन दिया गया। इससे शैतान को मृत्यु अवश्य आएगी। अब आप देखिये कि आयतों में कितना भारी अन्तर उत्पन्न हो गया। हमारा मुस्लिम विद्वानों से प्रश्न है और वह उत्तर दे कि इन आयतों में वह कौन सी आयतें उचित मानते हैं? शैतान की मृत्यु होगी या नहीं? क्यों कि एक आयत में तो खुदा ने वर दिया कि तुझे मृतकों के ज़ीवित हो जाने तक ज़ीवित रखा जाएगा, क्योंकि उसके पश्चात किसी की भी मृत्यु नहीं होगी और दूसरी आयत में है कि तू निश्चित समय तक जीवित रहेगा अर्थात प्रथम सूर (तुरही) फूंकने तक, फिर मृत्यु आ जायगी।

इन दो परस्पर विरोधी आयतों में से एक ही आयत सत्य व उचित मानी ज़ा सकती हैं। इन परस्पर विरोधी आयतों से तो मुसलमानों का ईमान संकट में पड़ गया। आयत 'वक्त मालूम, आया है, शैतान के ज़ीवन-हेतु आप जानना चाहते होंगे कि यह 'वक्त मालूम, क्या वस्तु हैं?

इब्ने अब्बास का कथन है कि इससे नफ्ख मुराद है (नफ़्ख कहते हैं नरसिंहा) (सूर या तुरही बजाने को इस्राफील तीन बार बजेगा, प्रथम सूर (नरसिंहा या तुरही) के फूंकने के समय इब्लीस मर जायगा (द्वितीय सूर तक) और दोनों सूरों में ४० वर्षों का अन्तराल है। (अर्थात ४० वर्षों तक शैतान मृतावस्था में रहेगा) आजमुत्तफासीर, पारा १४ पृष्ठ

इन आयतों को देखते हुए कुरआन को खुदा का कलाम (वाणी) कैसे स्वीकार किया जा सकता है? अब जो आगे आयतें प्रस्तुत कर रहे हैं, उनमें खुदा ने कुछ भी नहीं पूछा अपितु

स्वयं अपने आप ही कहनें लगा। प्रस्तुत आयतें भी पूर्वोक्त आयतों से सर्वथा ही भिन्न है। आयतें:-

वा इज़ा कुल्ना लिल्मलाएकतिस्जोदू ले आदमा फसजादू इल्ला इब्लीस। काला आ अस्जुदों लेमन खलक्ता तीनन् काला अरा-एतका हा ज़ल्लाज़ी कर्रम्ता अलय्या लइन् अख्खर्तने इला यौमिल्कयामते लअह्ननेकन्ना ज़ुर्रिय्यतहू इल्ला कलीला। काल-ज़्हब फ़मन तबेअका मिन्हुम फइन्ना जहन्नमा जज़ाओकुम जज़ा-अम्मफ़ूर। वस्तफ्ज़िर् मनिस्तताता मिन्हुम वे सौतेका वा अज्लिब अलैहिम् बे खैलेका व रजलेका वा शारिकुहुम फिल् अमवाले वल् औलादे व इदहुम् वा मा यइदाहुमुश्शैतानो इल्ला गुरूरा। इन्ना एबादी लैसा लका एलैहिम सुल्तान। वा कफ़ा बे रब्बेका वकीला।

कुरआन, पारा १५ रकू ७/७ सूरत बनी इस्राईल

अर्थात:-

जब हमने (अल्लाह ने) फरिश्तों से कहा कि आदम के हेतु नतमस्तक हो जाओ, तो समस्त फरिश्ते नतमस्तक हो गए किन्तु शैतान बोला-क्या मैं ऐसे व्यक्ति को नमन करूं कि जिसे तूने मिट्टी के गारे से निर्मित किया है। इब्लीस ने अपनी अस्वीकृति का कारण आदम की निम्नतर उत्पत्ति को ठहराया है।

बग़वी ने लिखा कि सईद बिन ज़ुबैर ने इब्ने अब्बास का कथन उद्धृत किया है कि अल्लाह ने आदम को उत्पन्न किया। एक मुठ्ठी भूमि की मिट्टी ली, मीठी भी और नमकीन भी........ ....रसूलिल्लाह ने फरमाया कि अल्लाह ने सम्पूर्ण धरती से एक मुठ्ठी मिट्टी ली और उससे आदम का निर्माण किया। पस, आदम की सन्तति भूमि के सदृश्य हुई लाल-सफेद और काली इत्यादि।

इब्लीस (शैतान) ने कहा—भला बता तो सही कि यह वही है जिसको तूने (अल्लाह ने) मुझ पर बड़प्पन (श्रेष्ठता) दिया है और मुझे उसके हेतु सजदा (नमन) करने का आदेश दे रहा है। इसका क्या कारण है ? यदि कयामत (प्रलय) के दिन तक तू मुझे जीने की अवधि दे दे तो थोड़े लोगों के अतिरिक्त मैं इसकी समस्त सन्तति को वश में कर लूँगा ....और बहका कर इसकी सारी नसल की जड़ काट दूंगा.............मैं उसको जिधर चाहूँगा खींच कर ले जाऊँगा और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लूंगा। थोड़े से लोगों से तात्पर्य है कि जिनको अल्लाह ने अपनी सुरक्षा में ले लिये हैं, अर्थात पैग़म्बर और विशेष जन इत्यादि। इन्हीं के सम्बन्ध में अल्लाह ने फरमाया था कि मेरे भक्तों पर तेरा प्रभुत्व नहीं होगा।

बैज़ावी ने लिखा है कि आदम की सन्तति को बहकाने पर समर्थ होने का ज्ञान इब्लीस को सम्भवतः फरिश्तों के कथन से हो गया था, जो फरिश्तों ने कहा कि यह क्यों कर होगा, इसमें उत्पात करेगा। अथवा हज़रत आदम की बनावट से वह समझ गया होगा कि इसके (आदम के) भीतर काम-क्रोध और भ्रम की शक्ति सृजन (अर्थात स्वभाव में डाल दी) कर दी है। (उसको दिग्भ्रमित करना सरल है) खुदा ने शैतान की चुनौती को स्वीकारते हुए इन शब्दों में उत्तर दिया-जा इनमें से जो भी तेरे पीछे लगेगा, नर्क उनके हेतु दण्ड होगा। उनमें से जिनको बहका सके, बहका। जिस पर तेरा वश चले अपनी चीखों-पुकार से उनके पैर उखाड़ देना और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा लाना, भड़का देना, मूर्ख बना लेना।

(बेसौतेका) इब्ने अब्बास के मत में "सौत" से यहाँ पाप की ओर बुलाना है, जो भी अल्लाह की अवज्ञा करते हैं

ओर बुलाये वह इब्लीस की श्रेणी में सम्मिलित है। तात्पर्य यह होगा कि अपनी समस्त सेना को और बहकाने तथा धोखा देने के समस्त साधन एकत्रित कर लेना या यह कि पापों पर उद्यत करना, भड़काना..................और पापों की ओर हांकना। पाप करने में उनकी सहायता करना (जो चाहे सो कर)

(यहां भी शैतान ने कयामत तक जीवित रहने की अवधि माँगी है, पर यहां खुदा ने इसका कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया है।)

व्याख्याकारों ने लिखा हैं कि पाप-मार्ग पर चलने वाला शैतान का सैनानी है। इसमें अल्लाह ने शैतान को लोगों के बहकाने हेतु जो अधिकार प्रदान किया था कि वह सम्पूर्ण शक्ति से लोगों को पथभ्रष्ट कर सकता था और हिदायतें-इन्सानी (मनुष्यता) को जड़मूल से उखाड़ सकता था। उसकी उपमा एक ऐसे सेनापति से दी जो अपनी सम्पूर्ण सेनासहित शत्रु की बस्ती (दुर्ग) पर आक्रमण कर उसे जड़मूल से उखाड़ फेंकता है तथा उनकी सम्पत्ति व सन्तान में सांझा (भागीदारी) कर लेना और उनसे वचनबद्ध होना इत्यादि। और शैतान उनसे सर्वथा मिथ्या वचन करता है।

मुजाहिद, हसन बसरी और सईद बिन जुबैर के निकट सम्पत्ति में सांझा कर लेना अर्थात पाप की कमाई करना और उसे जमा करने हेतु लोगों को परेशान करना और माल हराम खर्च करना। अत्तार ने कहा कि इससे अभिप्राय ब्याज (सूद) का लेन--देन है और बुतों (मूर्तियों) व अन्य देवताओं तथा अपने द्वारा निर्मित घरेलू नियमों (रस्सों) के आधार पर छोड़े हुए पशु है। ज़ुहाक ने कहा कि अन्य कल्पित खुदाओं के नाम पर भेंट चढ़ाना अभिप्राय है और सन्तान में शैतान का सांझा ?

इब्ने अब्बास के निकट जीवित कन्याओं को दबा देना और जुहाक ने कहा-व्याभिचार की सन्तान। हसन व कतादा ने कहा कि सन्तान को यहूदी-ईसाई व मजूसी बनाना, सन्तान का अनुचित नाम रखना। हज़रत ईमाम, जाफ़र बिन ईमाम, ज़ैनुलआबेदीन् ने फरमाया कि जब मनुष्य अपनी पत्नि से सम्भोग का विचार करता है, तो शैतान उसके ज़कर (मुतेन्द्रीय) पर बैठ जाता है। सो यदि वह मनुष्य बिना "बिस्मिल्लाह" (आरम्भ अल्लाह के नाम सहित) के सम्भोग कर देता है, तो शैतान भी उसके साथ सम्भोग में संलग्न हो जाता है और मनुष्य की ही भांति शैतान भी वीर्य का स्खलन करता है। इस प्रकार शैतान सन्तान के सांझेपन में साथी हो जाता है। (इस उद्धरण को पढ़ या सुन कर स्वयं अश्लीलता ने भी लज्जा से अपना मुंह छिपा लिया होगा।)

बग़वी ने लिखा है, कि आसार (सहाबा के कौल) में आया है कि जब इब्लीस को निकाल कर पृथ्वी पर भेज दिया तो इब्लीस ने अल्लाह से निवेदन किया—ऐ मेरे पालक ! आदम के कारण जब तूने मुझे स्वर्ग से निकाल दिया, तो अब मुझे उस पर और उसकी सन्तत्ति पर यह अधिकार भी प्रदान कर कि मैं जिस प्रकार चाहूँ उनको मार्ग से भटका दूं। अल्लाह ने फरमाया-तुझे अधिकार दिया गया। इब्लीस ने कहा-मुझे तेरी सामर्थ्य के इस बात की यह शक्ति नहीं। अल्लाह ने फरमाया:—

वस्तफ़ज़िज़ मीनस्तताता मिन्हुम बेसौतेका व अज्लिब अलैहिम बेखैलेका वा रिज्लेका।

अर्थातः—और उन पर, जिस-जिस पर तेरा वश चले अपनी चीखों पुकारों से उनके पैर उखाड़ देना और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा लाना, भटका देना, फुसला देना और मूर्ख बना लेना।

पाठक बन्धुओं ! यह है इस्लाम और कुरआन का खुदा, जो मनुष्यों को पथभ्रष्ट करने के समस्त अधिकार शैतान को दे रहा है। क्या यह खुदा का कार्य है कि पथभ्रष्ट करने का वरदान दे और पथभ्रष्टकर्ता को स्वयं प्रोत्साहित भी करे। जब खुदा शैतान को यह वरदान दे चुका, तो आदम ने कहा-ऐ मेरे पालक ! (खुदा) तूने मुझ पर और मेरी सन्तान पर शैतान को पथभ्रष्ट करने हेतु अधिकृत कर दिया और तेरी सामर्थ्य के अभाव में मैं उससे सुरक्षित रहने की शक्ति नहीं रखता। अल्लाह ने फरमाया–मैं तेरी सन्तान की सुरक्षा हेतु रक्षक नियुक्त कर दूंगा। आदम ने निवेदन किया–मैं इस बात को सविस्तार जानना चाहता हूँ। अल्लाह ने कहा–प्रत्येक नेकी का फल दस गुणा अधिक दिया जाएगा और जब तक शरीर में जीव (प्राण) रहे तब तक तौबा (पश्चाताप) का द्वार बन्द न होगा। आदम ने कहा–और क्या ? तो अल्लाह ने फरमाया:–

या इबादे यल्लाज़ीना अशरफ़ू अला अन्फुसेहिम् ला तक्नतू मिर्रहमतिल्लाहे इन्नल्लाहा यग्फ़िरूज्ज़नूबा जमीआ।

(यह आयत कुरआन पारा २४, सूरत जुमर की है, जिसका अर्थ हम अन्यत्र लिख चुके हैं। संक्षिप्त अर्थ निम्नानुसार है।)

अर्थः–ऐ मेरे भक्तों ! जिन्होंने अत्याचार किया है अपनी जानों (प्राणों) पर, अल्लाह की कृपा से निराश न होए। निश्चय ही अल्लाह सब पाप क्षमा कर देता है। (यह आदम और खुदा की चर्चा है।)

कतिपय लोग कहते हैं कि ऐसा कौन सा मजहब (धर्म) है जो पाप करने की आज्ञा देता है। हम कहते हैं कि इससे

अधिक और क्या स्पष्ट आज्ञा होगी कि एक ओर तो इस्लाम व कुरआन का खुदा शैतान को वरदान देता है कि तू मनुष्यों को पथभ्रष्ट कर और दूसरी ओर वही खुदा आदम को धैर्य दे रहा है कि कोई बात नहीं, यदि मनुष्य पाप करेंगे तो सभी क्षमा किये जायेंगे। यह आज्ञा नहीं तो फिर पाप करने की आज्ञा और क्या व कैसी होती है ? यह भी स्मरणीय है कि पापों को क्षमा करने का आदेश मात्र मुसलमानों तक ही सीमित है, और किसी मज़हब (धर्म) मत एवं सम्प्रदाय के अनुयाईयों हेतु नहीं। शैतान ने खुदा से कुछ और बातें भी पूछी है, जो अत्याधिक मनोरंजक होने से आपके ज्ञातव्य हेतु प्रस्तुत है--

शैतान ने पूछा–पैग़म्बरों के पाठ हेतु तूने पुस्तकें भेजीं किन्तु मेरे पाठ करने को क्या होगा ? अल्लाह ने फरमाया-काव्य (शायरी)। शैतान-मेरा लेख क्या होगा ? अल्लाह-गोदना। शैतान-मेरे दूत कौन होंगे ? अल्लाह-काहन। (पुरोहित।) शैतान मेरा निवासस्थान कहां होगा ? अल्लाह-हमाम (स्नानगृह) जहां लो नग्न स्नान करते हैं। शैतान-मेरे बैठने का स्थान कहां होगा ? अल्लाह-बाज़ार। शैतान-मेरा खाना (आहार) क्या होगा ? अल्लाह-जिस पर अल्लाह का नाम न लिया जाये। शैतान मेरे पीने को ? अल्लाह-प्रत्येक मादक (नशीली) वस्तु। शैतान मेरा फन्दा (जाल) क्या होगा ? अल्लाह-स्त्रियां। शैतान-मेरा दिल वहलाने का सामान क्या होगा ? अल्लाह ने फरमाया बाजे-गाजे (वाद्ययन्त्र) इत्यादि।

तफसीर मज़हरी पारा १५ रकू ७/७ पृष्ठ १०२ से १०

पाठक–बन्धुओं ! आपने उपरोक्त लिखित इन आयतों में देख लिया कि जो वर्णन हैं, इनमें कतिपय ४–६ शब्दों के अतिरिक्त शेष समस्त में भिन्नताएं उपस्थित हैं। कुरआन

के प्रणेता अथवा लेखक ने बारम्बार इस कहानी को कुरआन में वर्णित कर इस बात को प्रमाणित कर दिया है कि यह कुरआन खुदाई(इश्वरी)ज्ञान नहीं है। कारण कि शैतानका वार्तालाप खुदा से एक ही बार हुआ और यहां बारम्बार नया ही कथोपकथन वर्णित किया। अतः यह विभिन्नतायुक्त आयतें खुदा का ज्ञान नहीं हो सकती। खुदा ने तो केवल एक ही बार एक ही शब्द कहे थे फिर बारम्बार की पुनरावृति में यह पृथकता कैसे उत्पन्न हो गई ? अब जो आयतें प्रस्तुत है, इनमें प्रारम्भिक 'इज काला' से लेकर 'काफ़िरीन' वही शब्द हैं और इससे आगे यह शब्द:—

काला या इब्लीसो मा मनअका अन् तस्जुदा लेमा खलक्तो बेयदय्या, अस्तक्बर्ता अम् कुन्ता मेनलआलीन्। काला अना खैरूम्मिन्हो। खलक्तनी मिन्नारिव्व खलक्तहू मिन तीन् काला फख्रूज् मिन्हा फ़इन्नाका रजीम् वा इन्ना अलैका लान्ती इला यौमिद्दीन। काला रब्बे फ़अन्ज़िर्नी इला यौमे युब्असून्। काला फइन्नका मिनल्मुन्ज़ेरीन्। इला यौमिल्वक्तिल्मालूम्। काला फबे इज़्ज़तेका लउग्वे यन्नहूम अज्मईन इल्ला एबादेका मिन्होमुल्मुखलेसीन्। काला फल्हक्को वल्हक्को अकूलो। लअम्लअन्ना जहन्नमा मिन्का वा मिम्मन्तबेअका मिन्हुम् अज्मईन्।

कुरआन पारा २३ रकू ५/१४ सूरत स्वाद

अर्थात:—खुदा ने इब्लीस से कहा-तूने सज्दा (नमन) क्यों नहीं किया ? जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से निर्मित किया। घमण्ड किया है तूने अथवा तू उससे श्रेष्ठ हैं ? इब्लीस ने उत्तर में कहा-मैं उससे श्रेष्ठ हूँ, तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया है कि जिसमें सूक्ष्मता और प्रकाश हैं और तूने उसको मिट्टी से उत्पन्न किया है, कि जिसमें स्थूलता और अंधकार है। जब शैतान अपनी श्रेष्ठता का बखान कर चुका तो फिर खुदा ने फरमाया कि

निकल जा तू स्वर्ग से, या आसमान से, या फरिश्तों से। यह कि तू निश्चय ही फटकारा हुआ है और कृपा से दूर हुआ है, और निसन्देह मेरी धिक्कारता और फटकार तथा रोष कयामत के दिन तक। इस पर इब्लीस ने कहा-कि यदि तूने मुझे धिक्कारा है, तो मुझे उस दिन तक जीवन दे, जिस दिन कि कब्रों से मृतक उठाये जाएंगे। इब्लीस की कामना यह थी कि वह स्वय मृत्यु को प्राप्त न हो। खुदा ने कहा-अवश्य तुझे निश्चित समय तक जीवित रहने की अवधि दी गई। निश्चित समय है पहली बार सूर फूंकने तक (सूर कहते है नरसिहा या तुरही को और फूंकने को इस्राफील। जब पहली बार वजेगा तो सब मर जायेंगे तथा शैतान भी मर जायेगा) फिर इब्लीस ने कहा-मुझे शपंथ है तेरे शासक और क्रोधित होने की, मैं आदम की समस्त सन्तत्ति को जहां तक सम्भव हो सकेगा पथभ्रष्ट करूंगा किन्तु तेरे पवित्र बन्दे......................(पर मेरा प्रभाव नहीं होगा)

तफसीर कादरी भाग २ पृष्ठ ३३९-४०

सूरत काफ़ में मात्र सजदा (नमन) करने का वर्णन है और कुछ नहीं। उपर्युक्त आयतों में उपलब्ध का अन्तर का कतिपय उल्लेख:—

सूरत बकर की आयत में मात्र इतना है कि शैतान ने सज्दा करने से इन्कार कर दिया और घमण्ड किया।

सूरत एराफ में है कि खुदा ने कहा-किस वस्तु ने तुझे सजदा करने से रोका, जब कि मेरा आदेश सजदा करने हेतु थ। शैतान ने कहा- मैं इससे श्रेष्ठ हूं मुझे अग्नि से उत्पन्न किया और इसे मिट्टी से। खुदा ने कहा—तू यहां से निकल जा तूने घमण्ड किया, तू निकृष्ट है। शैतान ने कहा-मुझे कयामत तक जीवित रहने की अवधि प्रदान कर। तब खुदा ने उसे

(शैतान को) कयामत तक जीवित रहने की अवधि प्रदान कर दी। तक शैतान ने कहा-मैं आदम की सन्तत्ति को प्रत्येक दृष्टि से बहकाऊँगा। खुदा ने कहा—तू बहिष्कृत है, स्वर्ग अथवा आसमान से निकल जा। तेरे मार्ग पर चलने वालों को मैं नर्क में डालूँगा।

सूरत हज्र की आयत में खुदा के पूछने पर शैतान ने कहा-तूने आदम को सड़े हुए गारे (मिट्टी) से निर्मित किया। प्रथम आयत में है कि तुझे कयामत तक जीवित रहने की अवधि दी, किन्तु इस आयत में है कि प्रथम नरसिंहा (सूर) बजने तक जीवित रहने की आज्ञा दी। शैतान ने कहा-मैं सबको बहकाऊँगा और कुमार्ग पर ले जाऊँगा।

सूरत बनी इस्राईल में खुदा ने कुछ भी पूछा ही नहीं और शैतान ने स्वयं ही अपने आप ही सब कहा। इस आयत में शैतान ने खुदा से उत्तर मांगा कि तूने मुझ पर आदम को श्रेष्ठता दी, इसका कारण क्या है ? और कहा कि सीमित मनुष्यों के अतिरिक्त मैं शेष समस्त को बहका दूंगा। शैतान ने खुदा से मनुष्यों को भ्रमित करने का वरदान मांगा तो खुदा ने उसे स्वीकृत किया। इस आयत की भाषा-शैली अन्य दूसरी आयतों से सर्वथा पृथक है। ऐसे विभिन्न प्रकार के अनेकानेक मतभेद-विरोधाभास और अन्तर उपस्थित हैं, जिनमें से किञ्चित मात्रा में हमने यहां उपलब्ध कर प्रस्तुत किये हैं। उक्त समस्त लिखने का तात्पर्य यह है कि आप देख लें कि एक ही बार हुई शैतान और खुदा की परस्पर वार्ता को जब विभिन्न स्थलों पर पुनरावृत्ति की गई तो उस वार्ता के अर्थ-शब्द-भाव और वाक्यों में भारी अन्तर उत्पन्न हो गया और कहीं पर कुछ, तो कहीं पर कुछ अभिव्यक्त हो गया। यह पारस्परिक मतभेद और विरोधाभास इस बात

का साक्ष्य है कि पुस्तक (कुरआन) खुदा का ज्ञान नहीं-है। जहां जो बात याद आई अनुमान और कल्पना के माध्यम से जो जो चाहा सो ही लिख दिया, क्योंकि किस विषय पर पूर्व में क्या आयत थी, यह कंठस्थ तो नहीं की गई थी, तत्पश्चात् सम्पृक्त विषय आने पर कुछ का कुछ लिखा गया ?

शैतान और खुदा के विवाद-सम्बन्धी हमने कतिपय आयतें वर्णित की है, उनमें आपको अत्याधिक मतभेद और विरोधाभास स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। आप ध्यानपूर्वक इस विषय को सोचें-समझें और मनन करें कि खुदा के कथन में तो एक भी मात्रा या शून्य का अन्तर नहीं होना चाहिए। यह अन्तर होना इस बात का द्योतक है कि यह कुरआन खुदा की वाणी नहीं है। अतः खुदा और शैतान के इस विवादात्मक विवाद को हम यहीं समाप्त कर आपके सन्मुख अगली आयात प्रस्तुत कर विषय को अग्रेसित करते हैं। अगली आयतः-

व कुल्ना या आदमुस्कुन अन्त् व जौजोकल्जन्नता व कुला मिन्हा रग़दन है सो शैतुमा व ला तक्रबा हाजेहिश्शजरता फतकूना मिनज़्ज़ालमीन्। कुरआन पारा १, आयात क्रमांक ३५

अर्थः- और कहा हम (खुदा) ने कि ऐ आदम। निवास कर तू और तेरी पत्नि हव्वा स्वर्ग में, और खाया करो अपनी इच्छानुसार स्वर्ग के फल जहां से चाहो, और इस वृक्ष (अर्थात अंगूर अंजीर या बहुचर्चित गेहूं है) के समीप मत जाना, यदि जाओगे तो हो जाओगे अपराधी अपने आप पर अवज्ञाकारी।

तफसीर कादरी भाग १, पृष्ठ १०

उक्त आयत में स्वर्ग में निवास हेतु आदम के साथ उसकी भावी पत्नि हव्वा का भी उल्लेख किया गया है। उस समय अभी

आदम को स्वर्ग में रखा गया था तब हव्वा का अस्तित्व भीं प्रमाणित नहीं होता ? अपितु कतिपयों ने इस आक्षेप के निराकरण हेतु यह कह दिया कि हव्वा स्वर्ग में जाने से पूर्व ही उत्पन्न कर ली गई थी, यह उनका मत हैं। अतः हम हव्वा के विषय में प्रवल प्रमाणों से प्रमाणित करेंगे कि हव्वा की उत्पत्ति स्वर्ग में ही हुई। इस बात को हम भली प्रकार सिद्ध कर चुके है कि इस्लाम का ऐसा कोई भी अछूता विषय शेष नहीं रहा कि जिसमें स्वयं मुसलमानों में ही पारस्परिक मतभेद और वैचारिक विरोधाभास न हों। यहां भी यही स्थिति उपस्थित है। कुछ विद्वानों के कथन है कि आदम भूमि पर अकेले और उदास फिरते रहते थे। इस हेतु खुदा ने हव्वा को भूमि पर ही उत्पन्न किया। यह एक देशी मत है, अपितु भूमि पर कभी भी आदम नहीं फिरता रहा। फरिश्तों के सज़दा करने के पश्चात फरिश्ते आदम को स्वर्ग में ले गए, जैसा हम आगे वर्णन करेंगे। अब लिखित प्रमाणीकरण प्रस्तुत है:-

आदम जब स्वर्ग गया, तो अकेला था।

अजाएबुल्कसस में है, कि जब फरिश्ते आदम को सज़दा कर चुके और शैतान का विवाद समाप्त हुआ, तो मुआरेजुन्नबव्वत और तफसीर कबीर में है कि जब हज़रत आदम को सस्मान स्वर्ग में ले गये और उनको स्वर्ग के सत्तर परिधान (वस्त्र) पहिराये और उनके मस्तक पर चमकदार मुकुट (ताज) रखा और याकूत (रत्नजड़ित) लगी पेटी कमर पर बांधी गई, जिस पर 'ला इलाहा' का सम्पूर्ण कलमा लिखा था और स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाया और सात हजार फरिश्ते दाहिनी ओर सात हजार फरिश्ते बाँई ओर शुभ कामनाएं (दुआएं) न्यौछावर करते थे और उच्चध्वनि में उद्घोष करते जाते थे कि स्वर्ग

के द्वार खोलो ! और फरिश्तों ने तख्त (सिंहासन) अपने कंधो पर उठा कर स्वर्ग में पहुँचाया। फिर खुदा का खताब (सम्बोधन) हुआ कि ऐ आदम ! हमने तुझको अपने हाथों की शक्ति और सामर्थ्य से उत्पन्न किया। विशेष रूह (आत्मा) तुझमें डाली। अव स्वर्ग में आ और मेरे अहद इकरार (अनुबन्ध या वचनबद्धता) की रिआयत (पालन) कर। हज़रत आदम ने कहा—ऐ मेरे पालक ! वह इकरार (वचनबद्धता) कौन सा है ? कि मैं उसका पालन करूं ! अल्लाह ने फरमाया-कि शैतान का कहना न मानना और इस वृक्ष से तुझको रोका जाता है, इसे न खाना। कुछ ने कहा अंजीर, कुछ ने कहा अंगूर और कुछ ने कहा कि विख्यात यह है कि वह वृक्ष गेहूँ का था, और फरिश्ते इस बात पर साक्षी हुए। [सम्भव है कि स्वर्ग में गेहूँ के वृक्ष होते हों और भूमि पर आकर वह पौधे बन गये हों ?] आगे लिखा है, कि आदम स्वर्ग में बड़े प्रसन्न रहते थे किन्तु मानवीय स्वभाव के कारण कि वह अपने ही समान कोई सहयोगी चाहता है, और आदम एकाकी था। अतः उसको मित्र की आवश्यकता थी........ ....आदम इसी विचार में था कि उनको निंद्रा आई और वह सो गए और कोख की हड्डी से उत्पन्न किया [हव्वा को] और हज़रत आदम सूचित न हुए।

अजाएबुल्कसस भाग १ पृष्ठ ४२-४३

उपरोक्त उद्धरण से यह सिद्ध है कि आदम अकेला ही स्वर्ग में गया था। अब इसका द्वितीय पक्ष यह है कि हव्वा की उत्पत्ति आदम के स्वर्ग में जाने के पूर्व ही हो गई थी, के सम्बन्ध में भी किञ्चित चर्चा कर लें ताकि आप वस्तुस्थिति से अवगत हो सके। अजाएबुल्कसस में आगे लिखा है कि:—

तफसीर लबाब में है, कुछ कहते हैं कि आदम की मिट्टी

से तनिक शेष रही थी, से हव्वा को निर्मित किया।

मुआरजुन्नबव्वत में भी वर्णित है कि एक कथनानुसार हव्वा की उत्पत्ति स्वर्ग से बाहर हुई और दोनों को तख्त पर आसीन कर स्वर्ग को ले गए।

इस पर लेखक ने लिखा है– (यह उचित नहीं हैं) क्योंकि रवायत [उद्धरण] इब्ने अब्बास-इब्ने मसऊद-ईमाम और अन्य सहाबा (हज़रत मुहम्मद के मित्रगण) से प्रमाणित है कि हव्वा की उत्पत्ति स्वर्ग में ही हुई है, और इस बात को श्रेष्ठ लोगों ने भी सम्पुष्ट किया है। अजाएबुल्कसस भाग १ पृष्ठ ४३

उपरोक्त पुस्तक के लेखक ने उक्त दोनों वर्णनों को सही नहीं माना कि हव्वा की उत्पत्ति आदम के स्वर्गारोहण से पूर्व ही हो गई थी अथवा आदम की शेष रही मिट्टी से हव्वा का निर्माण किया गया, अपितु अत्याधिक विश्वसनीय समर्थन से यही प्रामाणिक माना कि हव्वा की उत्पत्ति स्वर्ग में ही हुई। अतः आगे और देखिए:–

हव्वा की उत्पत्ति

हज़रत इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद इत्यादि से वर्णित है कि जब खुदा ने शैतान को स्वर्ग से निष्कासित कर दिया और आदम को स्वर्ग में बसाया तो वह स्वर्ग में बिना सहयोगी और हितैषी के एकाकी रहे। उस समय खुदा ने उन पर निंद्रा को निश्चित कर दिया और बांये ओर की एक कोख को चीर कर निकाल डाला और उस रिक्त स्थान को किञ्चित मांस से जोड़ दिया और उससे हव्वा को उत्पन्न किया।

आजमुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ १४६

तफसीर मुआलिम में लिखा है:-

वा कालेका अन्ना आदमा लम् यकुन फ़िल्जन्नते मिन युजाने-

सेही फ़नामा नौमतिन फ़खलकल्लाहो ज़ौजतहू हव्वा ।

मुआलेमुत्तन्जील भाग १ पृष्ठ २२

तफसीर मज़हरी ने लिखा, (जैसे उपरोक्त अरबी भाषा का अर्थ ही किया हो) और आदम के हुतु स्वर्ग में कोई साथी (मित्र) न था। पस, आदम सो गया और अल्लाह ने उसकी पत्नि हव्वा को उत्पन्न किया। .... बग़वी ने फरमाया कि स्वर्ग में हज़रत आदम का कोई सजातीय न था। अतः बहुधा उनकी मानसिक स्थिति किसी साथी के न होने से अस्त-व्यस्त रहती थी। एक दिन वह सो रहे थे कि अल्लाह ने उनकी बांई कोख से हज़रत हव्वा को उत्पन्न किया। तफसीर मजहरी भाग १ पृष्ठ ६४

इससे भी सिद्ध है कि हव्वा स्वर्ग में ही उत्पन्न हुई। इब्ने कसीर ने दोनों पक्ष लिखे हैं, अपितु हम उसकी ही भाषा उद्धृत करते हैं, अस्तु उचित वस्तू स्थिती का निर्णय लिया जा सके। तफसीर इब्ने कसीर में है कि:–

इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद इत्यादि का कथन है कि इब्लीस को स्वर्ग से निष्कासित करने के पश्चात हज़रत आदम को स्वर्ग में स्थान दिया गया किन्तु उस समय आप (आदम) तनतनहा अर्थात एकाकी थे। इस कारण उनकी निद्रावस्था में हज़रत हव्वा को उत्पन्न किया गया। जब वह निंद्रा से जागृत हुए तो उस (हव्वा) से पूछा कि तू कौन है ? और क्यों उत्पन्न की गई है ? हज़रत हव्वा ने कहा– मैं एक स्त्री हूँ, और आपके साथ रहने तथा सन्तोष का कारण बनने हेतु उत्पन्न की गई हूं। फिर तत्काल फरिश्तों ने पूछा कि कहिए ! इसका नाम क्या है ? आदम ने कहा– हव्वा। फरिश्तों ने कहा– यह नाम रखने का कारण क्या है ? तो आदम ने उत्तर दिया– यह एक जीवित (प्राणी) से उत्पन्न हुई है।

तफसीर इब्ने कसीर, भाग १ पृष्ठ १०

उपरोक्त उद्धरण से भी सिद्ध है कि हव्वा स्वर्ग में ही उत्पन्न हुई थी। जब आदम फरिश्तों को हव्वा नाम बता रहे थे (उस समय) वहीं खुदा तआला की आवाज़ आई:--

ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नि स्वर्ग में रहो और जो चाहो खाओ-पियो। इस एक विशेष वृक्ष से रूकना।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ १०/२

कुरआन में जो कहा कि 'तू और तेरी पत्नि स्वर्ग में रहो' यह इसका संकेत करता है कि जब आदम को स्वर्ग में रखा, यह उस समय की बात है; किन्तु यह बात तो पश्चात की है, जब कि आदम स्वर्ग में ही था और हव्वा की उत्पत्ति होने के पश्चात की घटना है।

इब्ने कसीर का एक प्रमाण जो उपरोक्त उद्धृत है, कि हव्वा तो स्वर्ग में उत्पन्न हुई और फरिश्ते जब हव्वा का नाम आदम से पूछ रहे थे, तो उस समय खुदा से यह आवाज़ आई कि 'तू और तेरी पत्नि स्वर्ग में रहो' किन्तु इस वृक्ष के फल न खाना।' आयत को सिद्ध करने हेतु कैसा गठन किया गया, भला यह कौनसा समय था इस बात को कहने का ? यह बात तो जब आदम को स्वर्ग में प्रवेश दिया गया, उस समय कहने की थी। यदि उस समय नहीं कहा और पश्चात कहा तथा आयत की सिद्धि बाद में करते हो तो फिर भी आयत की सिद्धि नहीं होती है, क्योंकि हव्वा की उत्पत्ति से पूर्व आदम स्वर्ग में था। उस समय उसको फल खाने से मना नहीं किया तो उतने समय में यदि आदम वह फल खा लेता तो उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। क्योंकि अभी खुदा ने एकाकी आदम को तो फल खाने से रोका ही नहीं था और कुरआन में जो प्रतिबन्ध है, वह एकाकी आदम हेतु नहीं है। यह बात भी उन तफसीरों की अपनी मन-

घड़न्त है कि प्रारम्भ में एकाकी आदम को ही फल खाने से रोक दिया था। यह भी सर्वथा निराधार है कि जब आदम को स्वर्ग में प्रवेश दिया तो उस समय भी फल खाने से रोक दिया था। यह भी व्याख्याकारों की निराधार कल्पना मात्र ही है, क्योंकि कुरआन में तो एक ही बार दोनों के एकत्रित होने की स्थिति में कहा था, न कि अकेले।

हमारा प्रश्न यह है कि वह वृक्ष भले ही अंगूर--अंजीर अथवा गेहूं चाहे कोई भी हो ? इनमें ऐसा कौन सा अभिष्ट तत्व था, जो कि आदम या हव्वा के खाने पर उन्हें पथभ्रष्ट कर देता? जब कि शराब ने आदम को पथभ्रष्ट नहीं किया। यह तो मात्र बाईबिल की अपनी सूझबूझ है, जो यहाँ उद्धृत कर ली गई है। हव्वा मिट्टी से निर्मित नहीं की गई, इसकी पुष्टि इब्ने कसीर सूरत मौमिनून में करते हुए इस आयत को प्रस्तुत करते हैं।

आयतः—

वल्क़द खलकनल इंसाना मिन् सलालतीम्मिन् तीन्।

कुरआन पारा १८ रकू १/१

अर्थातः—आदम को मिट्टी से उत्पन्न किया। हव्वा को मिट्टी से नहीं उत्पन्न किया। इब्ने कसीर पारा १८ पृष्ठ ८

इसी प्रकार कुरआन की निम्न आयत भी है। आयतः—

अल्लाज़ी ख़लका कुम्मिन्नफसिम्म् वाहिदातिव्व् ना ख़लकामिन्हा ज़ौजहा। कुरआन पारा ४ रकू १/१२

अर्थातः—खुदा वह है, जिसने उत्पन्न किया तुमको एक व्यक्ति से, और उसी व्यक्ति से उसका युगल अर्थात पत्नि को उत्पन्न किया।

एक व्यक्ति से तात्पर्य हज़रत आदम से है, जिसको खुदा ने मिट्टी से निर्मित किया। जब उनको एकाकीपन से घबराहट

हुई तो उनकी बांई पसली से उनकी पत्नि हव्वा को, उनकी निद्रावस्था में निर्मित कर बैठा दिया। जिससे वह प्रसन्न हुए।

तफसीर हक्कानी पारा ४ पृष्ठ ५०

इसी उपरोक्त आयत की व्याख्या करते हुए इब्ने मसऊद और इब्ने अब्बास ने कहा कि-- आदम के स्वर्गारोहण के पश्चात जब आदम सो रहे थे और जागृत होने पर देखा तो हर्षित हुए, क्योंकि आदम की बांई पसलियों में से किसी पसली से उसे उत्पन्न किया। तफसीर मुआहेबुर्रहमान पारा ४ पृ. १५०

तफसीर मज़हरी में है कि आदम की बांई पसली से हव्वा को उत्पन्न किया। तफसीर मज़हरी पारा ४ पृष्ठ ४७०

तफसीर इब्ने कसीर में है कि हज़रत हव्वा को, जब आदम निद्रावस्था में थे, तो उस समय बांई पसली से उत्पन्न किया।........इब्ने अब्बास का कथन है कि नारी, नर से उत्पन्न की गई है, इस हेतु उसकी आवश्यकता और कामेच्छा पुरूष में उपलब्ध की गई है। तफसीर इब्ने कसीर पारा ४ पृष्ठ ६६

उपरोक्तानुसार ही व्याख्या तफसीर कादरी, पारा ४ पृष्ठ १४६ पर भी की गई है।

उपरोक्त प्रमाणों से यह स्पष्टतः प्रमाणित होता है कि हव्वा की उत्पत्ति या निर्माण मिट्टी से नहीं हुआ और आदम के स्वर्गारोहण के पश्चात उसकी बांई पसली से निर्माण किया गया। तफसीर मुहम्मदी ने भी इस बात का पूर्णरूपेण समर्थन करते हुए लिखा है, कि शैतान को स्वर्ग से निष्कासित करने के पश्चात हज़रत आदम को स्वर्ग में स्थान दिया गया किन्तु वह वहां एकाकी ही थे। फलतः उनकी निंद्रावस्था में हज़रत हव्वा को उनकी पसली से उत्पन्न किया गया।

तफसीर मुहम्मदी पारा १ पृष्ठ ८५

उपरोक्त विषय को हम 'कुरआन परिचय' भाग प्रथम में सविस्तार लिख चुके हैं कि मुसलमानों में प्रत्येक विषय पर पारस्परिक मतभेद-विरोधाभास और अन्तर उत्पन्न हुआ है, जो कि आज तक उपस्थित है और खुदा ही जाने यह भविष्य में भी कब तक रहेगा ?

कुरआन के अधिकृत और मान्यता प्राप्त विद्वजन इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद द्वारा यह स्पष्ट कहा गया है कि हज़रत हव्वा की उत्पत्ति स्वर्ग में हज़रत आदमकी बाँई पसली से हुई और स्वयं कुरआन भी यही बात उपरोक्त वर्णित आयत 'व ख़लकमिन्हा ज़ौजहा' अर्थात आदम से हीं उसकी पत्नि को उत्पन्न किया।

हम यह भी लिख चुके हैं कि जब फ़रिश्ते आदम को सजदा कर चुके तो फिर उसे तख्त पर बिठाकर स्वर्गमें लेगये। उस समय हव्वा का कहीं भी नामोल्लेख तक नहीं आया क्योंकि स्वर्गारोहण के समय तख्तपर हज़रतआदम अकेले ही आसिन थे और फरिश्ते उस तख्त को अपने कंधों पर उठा कर स्वर्ग में ले गए।

अब हम पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं, कि जिस आयत की हम यहां चर्चा कर रहे हैं, उसमें खुदा ने आदम से कहा कि–ऐ आदम ! तू और तेरी पत्नि हव्वा स्वर्ग में रहो किन्तु इस वृक्ष के फल को न खाना किन्तु उस समय हव्वा उत्पन्न ही नहीं की गई थी, हव्वा की उत्पत्ति स्वर्ग में हुई। जैसा कि हम उपरोक्त अकाट्य प्रमाणों से प्रमाणित कर चुके है। अतएव आयत में यह कहना कि तू और तेरी पत्नि स्वर्ग से रहो वास्तविक घटना के सर्वथा प्रतिकूल है। कुरआन के प्रणेता अथवा लेखक ने जाने कैसे इस आयत की रचना कर दी, जो कि यथार्थ और गतिक्रम के विपरीत दिखाई दे रही है।

अगली आयत:–

फ़ अज़ल्ला हुमश्शैतानों अन्हा फ़ अख़रजाहुमा मिम्मा काना

है, व कुल्नहबेतु बाज़ोकुम लेबाज़िन् अदुव्व, वलकुम् फिलअर्ज़ों मुस्तकरूं व्वं मताऊन इला हीन ।

कुरआन पारा १ आयत ३७

अर्थ:-फिर फुसला दिया आदम और हव्वा को शैतान ने, उस वृक्ष के कारण से, सो पृथक कर के रहा उनको उस सुख से कि जिसमें वह थे और हम (खुदा) ने कहा—नीचे उतरो, तुम में से कतिपयों के शत्रु रहेंगे और तुमको पृथ्वी पर कुछ (तनिक) ठहरना है और काम चलाना है एक निश्चित अवधि तक ।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ६।२

तफ़सीर कादरी में है कि-फ़िर शैतान ने फुसलाया आदम और हव्वा को और ले गया स्थान से, स्वर्ग से उसके पीछे कि वह मारे, और सर्प की सहायता से स्वर्ग में आया था और आदम व हव्वा को भ्रमित किया, फिर निकाला...............उन दोनों आदम और हव्वा को उस वस्तु से कि जिस वस्तु में वह दोनों थे और वह श्रेष्ठता व उपलब्धि से, और कहा-हम (खुदा) ने मोर-सर्प-आदम-हव्वा और शैतान को, कि तुम सब स्वर्ग से संसार में उतर जाओ, कतिपय तुम्हारे कतिपयों के शत्रु हैं, जैसे इब्लीस और सर्प, कि आदम और हव्वा और आदम की सन्तति के शत्रु हैं, तुम्हारे व तुम्हारी सन्तति के निवास हेतु भूमि हैं। और जीवन तक आहारयुक्त व्यवहार और लाभप्राप्ति है ।

तफ़सीर कादरी, पारा १, पृष्ठ १०-११

तफसीर मज़हरी ने इस आयत पर जो व्याख्या की है, उसे पढ़ कर आपको अत्याधिक ज्ञान होगा । अल्लामा बग़वी लिखते हैं:-

जब इब्लीस ने आदम और हव्वा को भरमाने हेतु स्वर्ग

में जाने का विचार किया तो स्वर्ग के रक्षकों ने उसे स्वर्ग-प्रवेश से रोक दिया, तो उसके पास सर्प आया, उससे इब्लीस की पूर्व ही से मित्रता थी, और वह सर्प समस्त पशुओं से अधिक सुन्दर था, उसके चारों पैर ऊँट समान थे (तब तो अवश्यमेव सुन्दर ही होगा ?) और यह भी स्वर्ग का रक्षक था। इब्लीस ने सर्प को कहा-तू मुझे अपने मुँह में रख कर स्वर्ग में प्रवेश करा दे। उसने स्वीकृति दी और मुँह में लेकर चला, स्वर्ग के अन्य रक्षकों को इस की सूचना न हो सकी कि इब्लीस सर्प के मुँह में आसीन है। यह इस प्रकार स्वर्ग में पहुँच गया।

इब्ने जरीर ने भी इब्ने मसऊद-इब्ने अब्बास-अबू आलिया वहब बिन मुन्बता और मुहम्मद बिन कैस इत्यादि के सदृश्य ही व्याख्या की है। हसन ने कहा कि आदम और हव्वा प्रायः स्वर्ग के द्वार पर आया करते थे। जब एक दिन वह यथापूर्व आए तो शैतान ने उन्हें भ्रमित कर दिया।

अल्लामा बग़वी ने फरमाया कि जब हज़रत आदम स्वर्ग में गए तो बोले, कि क्या अच्छा हो कि सदैव इसमें ही ही निवास करें। फिर ज़ब कि शैतान आदम और हव्वा के समीप स्वर्ग में आ खड़ा हुआ, तो उन्हें ज्ञान न था कि यह इब्लीस है ? (यह बात सुनते ही) सहसा फूट—फूट कर रोने लगा और इतना रोया कि उन दोनों पर भी शोक छा गया.........
.......जब आदम व हव्वा ने उसकी आहाज़ारी (रोना-कलपना) देखी तो बोले-क्यों रोता है ? इब्लीस बोला—मुझे तुम्हारे ऊपर ही रोना आता है कि अब तुम दोनों मरोगे और स्वर्ग के उत्तम पदार्थ तुमसे छूट जायेंगे। यह हृदय कम्पित कर देने वाली सूचना पाकर आदम व हव्वा प्रभावित हुए और दोनों शोकमग्न हो गए। जब इब्लीस ने देखा कि मेरा जादू चल गया, तो उपयोगी पद्धति

अनुसार बोला-अस्तु जो भाग्य में है, वह तो होकर ही रहेगा, किन्तु मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ, और वह यह है कि अमुक वृक्ष के फल भक्षण करने से अमरत्व प्राप्त हो जाता है। हज़रत आदम ने अस्वीकृत दी और कहा कि मैं उस वृक्ष के फल कदापि भी भक्षण नहीं करूँगा। जब शैतान ने देखा कि मेरे हाथ से शिकार निकला तो बोला-खुदा की सौगन्ध मैं तुम्हारा हितैषी हूँ। इसमें कोई हानिप्रद नहीं। तब आदम और हव्वा उसकी बातों में आकर धोखा खा गये और विचारा कि भला कौन ऐसा है जो खुदा की सौगन्ध मिथ्या ग्रहण करें। अन्ततः प्रथम तो हज़रत हव्वा ने चेष्टा की और जा कर उसे खा लिया फिर हज़रत आदम ने भी खाया।

सईद बिन मुसय्यब खुदा की शपथपूर्वक कहा करते थे कि हज़रत आदम ने होंशोहवास में नहीं खाया, अपितु हव्वा ने उन्हें शराब पिला दी थी, जब वह स्वयँ नशे में मदमस्त हो गये तो हव्वा उन्हें खींच कर उस वृक्ष के निकट ले गई और उन्होंने खा लिया। तब निकलवा दिया दोनों को उस सुख-चैन से कि जिसमें वह थे।

इब्ने अब्बास और कतादा ने कहा कि अल्लाह ने हज़रत आदम से फरमाया कि आदम! जो उत्तम पदार्थ स्वर्ग में तेरे आहार हेतु उचित और नियमानुसार निश्चित कर दिये थे, क्या वह पर्याप्त नहीं थे कि तूने इसे भक्षण किया। आदम ने निवेदन किया-उत्तम पदार्थ तो निसन्देह अत्याधिक थे, किन्तु मुझे यह ज्ञात नहीं था कि तेरे नाम से भी कोई मिथ्या सौगन्ध ग्रहण कर सकता है।

सईद बिन ज़ुबैर ने इब्ने अब्बास से उद्धरण लिया है कि अल्लाह ने आदम से फरमाया—तुमने यह कृत्य क्यों किया?

उन्होंने निवेदन किया—हे जगद्पिता ! हव्वा ने ऐसी चर्चा करी कि वह वृक्ष मुझे लाभप्रद प्रतीत हुआ। खुदा तआला से आदेश हुआ, कि मैं इस पर कष्ट व संकट डालूंगा अर्थात गर्भ रहने पर पीड़ा होगी और फिर शिशु के प्रजनन काल में कष्ट-पीड़ा और दुख अतिरिक्त होगा और प्रति मास जो रक्तस्नाव आया करेगा सो अतिरिक्त। यह सुन कर हव्वा रूदन करने लगी, फिर आदेश हुआ-कि तुझ पर और तेरी समस्त पुत्रियों पर रूदन अनिवार्य कर दिया..................(कहिए, ऐसा भी कोई न्यायाधीश कहीं देखा या सुना कि किसी एक व्यक्ति के अपराध करने पर उसको दण्डित करने के साथ ही उसकी परम्परा और वंशानुगत सन्तति को भी दण्डित कर दे। जब तक यह सृष्टि है, तब तक हव्वा की सन्तत्ति (नारी जाति) होगी सब पर समान रूप से यह दोष और खुदा का दण्ड अनिवार्य है। वाह खुदा भी क्या और कैसा न्यायाधीश है ?)..................और हम (खुदा) ने आज्ञा दी कि तुम सब उतर जाओ, तुम एक-दुसरे के शत्रु हो।..........

नबी सल्लअम (हज़रत मुहम्मद) ने सर्पों को मार डालने की आज्ञा दी और कहा-जो इनको भयाक्रान्त हो छोड़ दे और प्राण न लें, वह हम (मुसलमानों) में से नहीं। (कितना क्रूर व कठोर आदेश है ?)

..................और तुम्हारे हेतु भूमि पर व्यवस्था है। (अब भूमि का खलीफा आदम नियुक्त हो गया, क्यों ? खुदा से दण्डित हो कर खलाफत के स्थान पर आ गया।)

इब्ने कसीर का कथन है कि इसके पश्चात आदम को किञ्चित वाक्य (वचन) प्राप्त हुए थे, जो तोबा (पश्चाताप) स्वीकृत होने की ओर प्रेरित थे।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ट ९५ से ९७

पाठक बन्धुओं ! यह है आदम को भ्रमित करने की कहानी क्या यह आपको सत्य कथा सदृश्य अनुभूत होती है ? इनसे तो वह समस्त आयतें निरर्थक और प्रभावहीन सिद्ध हो गई है कि जिसमें खुदा ने स्वयं कहा था कि तू मेरे बन्दों को नहीं बहका सकेगा। अब आदम से महान और श्रेष्ठ खुदा का बन्दा भला और कौन होगा ? इस पर आगे चर्चा करेंगे ।

मुआलिम में भी है, कि हव्वा ने आदम को शराब पिला दी थी और उन्होंने नशे में फल खाया ।

तफसीर मुआलीम, भाग १ पृष्ठ २२

आजमुत्तफासीर में यह विशेष है, कि आदम ने खुदा का इकरार (प्रतिज्ञा) भूल कर वृक्ष का फल खा लिया........फिर नूरी लिबास (ज्योति परिधान) उसी समय उनसे छीन लिया गया और यह दोनों पति-पत्नि नंगे हो गए । लज्जा के कारण इधर-उधर भागने लगे और वृक्षों के पत्तों से अपने गुप्तांग ढांपने लगे। आदम लम्बे कद के थे और मस्तक पर लम्बे लम्बे खजूर सदृश्य केश रखते थे। इस भाग दौड़ में उनके सर के बाल एक वृक्ष में उलझ गये। जब वह अपने बालों को सुलझाने लगे तो खुदा ने पुकार कर फरमाया, कि ऐ आदम ! क्या तू मुझसे भागता है ? आदम ने कहा—नहीं, अपितु लजाता हूँ । खुदा ने फरमाया-क्यों मैंने तुझे इस वृक्ष को खाने से रोका नहीं था ? और क्या न कहा था कि शैतान तुम्हारा स्पष्टतः शत्रु है। पस, अब तुम, तुम्हारी पत्नि और तुम्हारी सन्तानें यहां से चल दो.... ....यह निवास पाप का स्थान नहीं है ।

आज़मुत्तफासीर, भाग १ पृष्ठ १४७

उक्त कहानी से यह परिणाम निकलता है कि यदि आदम

खुदा की अवज्ञा न करता, तो यह संसार निर्मित नहीं होता। एक बात ज़िसकी ओर हमने पूर्व में भी इंगित किया था कि हज़रत आदम को खुदा ने अपने स्वयं के हाथों से निर्मित किया और उसको इतनी प्रतिष्ठा दी कि फरिश्तों से तक उसके सन्मुख सज़दा करवाया, उसे पूर्णरूपेण साज सिंगार कर बिना किसी कर्म के स्वर्ग में पहुँचाया, मनुष्य मात्र का पिता बनाया।

एक बार अबी ज़र ने हज़रत मुहम्मद से पूछा–या रसूलिल्लाह ! क्या हज़रत आदम नबी (पैगम्बर) थे ? आपने फरमाया–हां नबी भी थे और रसूल भी थे। स्वयं खुदा तआला ने उनसे आमने-सामने वार्तालाप किया।

फसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ६/२

इतना महान और उच्चपद आदम को दिया और फिर खुदा का इतना बड़ा बन्दा होने पर भी वह शैतान से भ्रमित हो गया। जब कि अपने भक्तों की सुरक्षा का पूर्ण उत्तरदायित्व खुदा ने स्वयं अपने ही हाथों में रखा था। इस विषयक समस्त आयतें हम पूर्व में लिख चुके हैं और मात्र एक बार नहीं खुदा ने शैतान से कई बार कहा था कि मेरे बन्दों को तू नही बहका सकेगा ? "लैसा अलैहिम सुल्तानुन" अर्थात उन पर तेरा वश नहीं चलेगा और शैतान के मुंह से भी अनेक बार यह कहलवा लिया कि तेरे बन्दों पर मेरा प्रभुत्व नहीं होगा।

अब प्रश्न यह है कि क्या आदम खुदा का बन्दा नहीं था ? और यदि वह था तो उस पर शैतान का प्रभुत्व कैसे हो गया ? और खुदा ने अपने बन्दों की जिम्मेदारी, जो शैतान से सुरक्षा हेतु थी, वह कहां गई थी ? जब कि खुदा के अर्श (सिंहा-

सन) की छाया के नीचे स्वर्ग के कड़े पहरे में रखे हुए सुरक्षित आदम को भ्रमित कर अपना कार्य पूर्ण कर गया। उस समय जन्नत-इस्लाम और कुरआन का खुदा तआला जाने किस निंद्रा में था कि वह अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में असफल रहा और शैतान से आदम की रक्षा न हो सकी और फिर खुदा ने यह भी बारम्बार कहा था कि जो तेरा अनुसरण करेंगे उनको नर्क में डालूंगा किन्तु खुदा ने आदम को तो भूमि पर ही भेज दिया और नर्क में नहीं भेजा।

अब हम पूछते हैं कि उन समस्त आयतों का क्या मूल रहा कि जिनमें स्वयं खुदा ने अत्याधिक गर्व से कहा था कि तू मेरे बन्दों को बहका नहीं सकेगा। अब प्रकट रूप से आदम जो खुदा का मात्र बन्दा नहीं अपितु नबी और रसूल भी था। उसको तक शैतान ने बहका लिया, तो फिर उन आयतों के मिथ्या होने में और क्या शेष रह गया? यह अत्याधिक विचारणीय है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर कुरआन और कुरआन के खुदा का क्या बनेगा? साथ ही यह भी विशेष विचारणीय है कि जब खुदा ने शैतान को मनुष्यों के बहकाने का सम्पूर्ण अधिकार दे दिया था, तो उस समय आदम ने खुदा से निवेदन किया था कि मेरी नस्ल (सन्तत्ति) का क्या होगा? इस पर खुदा ने कहा, कि मैं उनके समस्त पाप क्षमा कर दूंगा और तौबा (पश्चाताप) भी स्वीकारता रहूँगा।

उक्त घटना से यह सिद्ध है कि आदम और हव्वा ने पाप किया किन्तु खुदा ने इन दोनों के पाप क्षमा न करते हुए दण्ड-स्वरूप उन्हें स्वर्ग से निष्कासित कर दिया तथा आदम की तौबा भी स्वीकार हुई किन्तु उनको स्वर्ग में स्थान न देकर भूमि पर ही रखा और हव्वा को जो कठोर दण्ड उसको और उसकी

सन्तत्ति (नारी जाति) को परम्परागत दिया था, वह दण्ड बहाल (प्रभावशील) रहा, कुछ भी क्षमा प्राप्त न हुई। जब आदम और हव्वा के ही पाप और तौबा क्षमा नहीं हुए तो फिर अन्य सर्वसाधारण के हेतु क्या आशा की जा सकती है कि अल्लाह अपने वचनानुसार उनके पाप क्षमा कर देगा और तौबा भी स्वीकार कर ली जायेगी ? अगली आयतों में आदम द्वारा की गई तौबा की स्वीकृति का वर्णन है, जिसे हम यहां देकर उस पर समीक्षा लिखेंगे ? प्रस्तुत आयतें भी आदम से सम्पृक्त हैं।

आयतें:—

फ़ तलक़्क़ा आदमो मिर्रब्बेही कलेमातिन फ़ ताबा अलैहे। इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम। कुल्नहबेतू मिन्हा जमीआ। फ़ इम्मा यातेयन्न कुम्मिन्नी हुदन् फ़मन् तबेआ हुदाया फ़ ला खौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यहज़ोनून्। वल्लाज़ीना कफ़रू व कज़्ज़बू बे आयातेना ओलाएका अस्हाबुन्नारेहुम फ़ीहा खालेदून।

कुरआन पारा १ आयत क्र. ३८-३९-४०

अर्थात:— पस, सीख लिये आदम ने अपने पालक से कुछ स्तुति-वाक्य और वह विख्यात हैं। **"रब्बना जलम्ना"** —....इत्यादि। अर्थात ऐ पालक ! हमने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया। यदि तू क्षमा नहीं करेगा और दया का हाथ नहीं बढ़ायेगा, तो हम घाटे में रहेगें, और यह (प्रार्थना) उस समय सीखी, कि जब आदम स्वर्ग से उतरने के पश्चात सरान्दीप पर्वत पर दो सौ वर्षों तक रोए तो खुदा ने उन्हें यह वाक्य बताये। जब हज़रत आदम ने यह प्रार्थना की तो खुदा ने उनकी तौबा स्वीकार की, और वही (खुदा) बन्दों को तौबा प्रदान करने वाला है। दयावान है तोबा करने वालों पर। कहा हम (खुदा) ने उतर जाओ स्वर्ग से

या आसमानों पर से तुम सब (मौलाना साहिब ! यह सब लोग तो पहिले ही स्वर्ग से उतर चुके थे, और आदम तो सरान्दीप पर्वत पर था, यह दुबारा उतरने का क्या अर्थ ?) और फिर हमारे पास से तुम्हारे पास आये हिदायत और बयान रसूल भेजने तथा पुस्तकें उतारने के कारण से, और जो कोई अनुकरण करेगा और उसके अनुसार चलेगा मेरी हिदायत और बयान के तो निकृष्ट विचारों के प्रभाव का उन पर, जिन्होंने रसूलों की आज्ञा पालन की, इस कारण कि वह आपत्तियों से निर्भय होंगे, और वह अपने उद्देश्यों के नष्ट होने से कभी शोकातुर न होंगे। अतः वह अपनी कामनाओं को प्राप्त करेंगे और जिन लोगों ने खुदा (ईश्वर) की भक्ति न की अर्थात ईमान न लाए और हमारे अद्वैत के सिद्धान्तों को झूठलाया अथवा विश्वास न किया कुरआन का या उस पदार्थ का जिसे हम (अल्लाह) ने युक्ति युक्त निर्माण किया, वह समुदाय नर्कगामी है। और वह सदैव वहां नर्क में ही रहेगा। तफसीर कादरी, पारा १, पृष्ठ ११

यह चर्चित आयत अत्याधिक उलझनपूर्ण हैं। अस्तु इसीलिए समीक्षा हेतु अत्याधिक प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि आप आयतों में प्रयुक्त शाब्दिक चक्रवात को भली प्रकार अनुभव कर सकें। सर्वप्रथम तफसीर आजमुत्तफासीर की शब्दावली प्रस्तुत है। लिखा है:-

जब आदम स्वर्ग से निर्वासित हो सरान्दीप पर्वत पर आ पड़े तो २०० वर्षों तक रूदन करते रहे, विलाप करते रहे और ४० दिनों तक निराहार रहे। १०० वर्षों तक हज़रत हव्वा (पत्नि) की ओर कोई ध्यान न दिया। ३०० वर्षों तक आसमान की ओर मस्तक उठा कर देखा तक नहीं। यहां तक कि अल्लाह की दयादृष्टि आकर्षित हुई और कतिपय वचनों व प्रार्थना से

जो तौबा की स्वीकृति हेतु कारण निर्मित हुए थे, उनसे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो गया। जिससे (जपने से) पाप क्षमा हो गए। क्या ? जो स्तुति-वाक्य सीखे ? इनमें व्याख्याकारों से पारस्परिक मतभेद हैं ? (किस विषय पर मतभेद नहीं ?)

उबैद बिन उमैर कहते हैं कि आदम ने खुदा के सन्मुख नम्रता से प्रार्थना की ऐ मेरे पालक ! यह पाप जो मुझसे हुआ क्या मेरी उत्पत्ति से पूर्व ही यह मेरे भाग्य में लिखा था ? फर-माया (खुदा ने)–नहीं, यह अपराध तेरी उत्पत्ति से पूर्व ही तुझ पर लिखा गया था। आदम ने निवेदन किया-कि जैसे मुझ पर यह अपराध लिखा गया है, वैसे ही अब मुझे क्षमा भी कर दें।

दुसरी बार कहा कि तुम स्वर्ग से उतर जाओ और जमीन पर मेरी कृपा की प्रतिक्षा करो। मुझे विधि और निषेध पालन हेतु कष्ट देकर तुम्हारी परीक्षा लेना अभिप्रेत है। पस, यदि मेरी ओर से तुम्हारे पास कोई हिदायत आये......................तो जो मेरी हिदायत पर सत्य हृदय से अमल (पालन) करेगा, तो उसको न किसी निकृष्ट और अरूचिकर वस्तु का भय होगा और न वह शोकातुर होगा, और जो मेरी हिदायत से मुंह मोड़ेगा, और मेरे पैगम्बरों की निशानियों और चिन्हों को नकारेगा............और मेरी पवित्र पुस्तकों तथा कुरआन पर ईमान न लायेगा, तो उसे स्वर्ग से वञ्चित किया जायेगा और नर्क की स्थाई भड़कती लपटोंयुक्त अग्नि में और विभिन्न प्रकार के असह्य संकटों में डाला जायेगा।

आज़मुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ १४९-५०

विचारणीय है कि जब खुदा ने आदम की उत्पत्ति के

पूर्व ही भाग्य लिख दिया था, कि आदम उस निषेध वृक्ष के फल खायेगा, तो आदम को यह कहना कि यह फल न खाना, यह नाटक क्यों रचा गया। अस्तु, स्वयं ही भाग्य में अपराध लिखना और फिर उसे दंडित भी करना, क्या अर्थ रखता है? यह तो मात्र इस्लाम और कुरआन के खुदा का विशेष चमत्कार ही समझना चाहिए।

आयत के पूर्वार्ध की व्याख्या लिखने से पूर्व यह आवश्यक है कि इस आयत की उलझनें आपके सन्मुख प्रस्तुत कर दी जाये। जिस आयत पर हम चर्चा कर रहे हैं, इससे पूर्व आयत में है कि आदम-हव्वा-सर्प-मोर आदि समस्त को स्वर्ग से निर्वासित कर दिया और आदम सैंकड़ों वर्षों तक सरान्दीप पर्वत पर रोता-कलपता रहा और फिर प्रार्थना करता रहा। तब आदम की तौबा स्वीकृत हुई। पूर्व में इस आयत के तौबा-स्वीकृति का वर्णन है और तत्पश्चात यह वर्णन आया कि, हम (खुदा) ने कहा-सब स्वर्ग से उतर जाओ। जब कि यह प्राणी स्वर्ग से निर्वासित हो चुके हैं और स्वर्ग में उपस्थित नहीं हैं। आयत में इतनी बड़ी भूल कैसे हो गई है यह समझ में नहीं आता ? जब आयत में दूसरी बार कहा तो आप मौलाना साहिब क्यों घबराये ? आदम और हव्वा तो पूर्व से ही भूमि पर हैं, जिन्हें सैंकड़ों वर्ष व्यतीत हो गये और उनकी सन्तति तो आदम की पीठ में पल रही है। फिर खुदा ने किसको कहा कि स्वर्ग से निकल जाओ। जब कि यह समस्त प्राणी स्वर्ग में है ही नहीं। आगे चल कर हम इस भूल का कारण भी लिखेंगे। अब आप तफ़सीर इब्ने कसीर का मनन करें, जो कि कुछ विशेष हैं। लिखा है कि:—

इब्नो अब्बास के मतानुसार आदम स्वर्ग में असर से सूर्यास्त तक ठहरे।

हसन कहते हैं कि यह एक घड़ी १२० वर्षों की थी।

सद्दी का कथन है कि आदम हिन्द में उतरे और आपके साथ 'हज़रे असवद' और स्वर्ग के वृक्षों के पत्ते थे।

इब्ने अब्बास ने कहा कि सिन्ध के नगर दमना में।

हजरत हसन का कथन है कि आदम हिन्द में और हव्वा जद्दा व अन्य इस्वेहान में उतरे थे।

इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ १०

मुआलिम ने आदम को हिन्द में, हव्वा को जद्दा में, इब्लीस को काएला में और सर्प को इस्वेहान में उतारा।

मुआनिमुत्तान्जील भाग १ पृष्ठ २३

समस्त तफसीरों में प्रायः ऐसा ही लिखा है, आदम इत्यादि के हेतु यह कथन कि– सब उतर जाओ। जबकि पूर्व में निकाल चुके हैं।

तफसीर हक्कानी भाग १ पृष्ठ १०४

कुराआनिल्अज़ीम भाग १ पृष्ठ ५

तफसीर मुहम्मदी भाग १ पृष्ठ ८७

हम पूर्व में लिख चुके हैं कि इस आयत में जो दोबारा आदम व हव्वा इत्यादि को कहा, कि स्वर्ग से उतर जाओ। आयत का यह अन्श, इस आयत में जाने क्यों और कैसे संकलित हो गया। पहली आयत भी साथ ही है, जिसमें सबको निकाल देना कहा है। अब वहां से निकले हुओं को दोबारा फिर निकलने हेतु कहना स्पष्ट ही भयंकर भूल है। न जाने क्यों यह

भयंकर और गम्भीर भूल कुरआन में मुसलमानों को दिखाई ही नहीं पड़ती है ? उनका खुदा ही जानता होगा कि यह भारी त्रुटि उन्हें नज़र क्यों नहीं आती ?

अब इस भूल का निराकरण-समाधान या स्पष्टिकरण, चाहे जो कह लें, जो मुस्लिम विद्वानों ने यथाशक्ति करने का प्रयास किया है, उस पर भी दृष्टिपात कर लें। फिर जो भी सत्य - तथ्य होंगे वह और भी भली प्रकार सबके सन्मुख प्रकट हो जायेंगे। इब्ने कसीर में है कि:—

दूसरी बार जो स्वर्ग से निकल जाने की आज्ञा की गई है। इस पर कतिपय कहते हैं, कि यह इसलिए कि यहां दूसरी आज्ञाएं करना थी। कतिपयों का कथन है, कि प्रथम स्वर्ग से प्रथम आसमान पर उतारा गया और दूसरी बार प्रथम आसमान से जमीन पर उतारा गया (भला हो बेईमानी का, क्या कुतर्क है?) किन्तु प्रथम कथन उचित है।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृ. १२

अब देखिये ! क्या दूसरी आज्ञा प्रसारित करने का अभिप्राय यह है कि वास्तविक घटना के विपरीत लिखा जाए ? अब जब कि समस्त प्राणी स्वर्ग में उपस्थित ही नहीं है, तो दूसरी आज्ञा प्रसारित कर कहना, कि स्वर्ग से निकल जाओ और भूमि पर चले जाओ। यह कहाँ का तर्क है ? हां, एक बात ज्ञात होती है कि खुदा की आज्ञा इतनी शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है कि यदि तुम प्रथम आज्ञा में उतर भी जाओगे तो हम घटना की स्मृति को स्मरण कराने हेतु बारम्बार वही शब्द कहते रहेंगे कि; स्वर्ग से उतरो और भूमि पर चले जाओ। क्योंकि उन नई आज्ञाओं के साथ तो गलत बात कहने का औचित्य या सम्बन्ध ही नहीं।

दूसरे, जो यह कहते हैं कि स्वर्ग में उस समय जब प्रथम आज्ञा हुई कि स्वर्ग से निकल जाओ, तो उस समय प्रथम आसमान पर उतारे गए और दूसरी आज्ञा से भूमि पर उतारे गए। कितने दुख का विषय है कि एक अनुचित और त्रुटिपूर्ण बात की सिद्धि हेतु एक भयंकर असत्य बात कही जाए। जब कि आयत में स्पष्ट है कि स्वर्ग से भूमि पर उतर जाओ। आसमाने दुनिया (नभलोक) का वहां संकेतमात्र भी नहीं है और फिर आदम सरान्दीप पर्वत पर तथा हव्वा जद्दा में उतरे।
अब तफसीर हक्कानी को भी देख लीजिये:—

एक बार खुदा फरमा चुका था कि यहां से उतरो, किन्तु इसी आयत में फिर फरमाना, ताकि आदम को खलीफा बनने का जो परिणाम है, वह स्पष्ट हो जाए।

तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ १०४

आदम को खलीफा (शासक) बना कर भेजा है या दोष लगा कर अभियुक्त के रूप में? क्या मिथ्या कथन से भी खलीफा बनने की बात पुष्टि हो सकती है? क्या कहना है, इन मुस्लिम विद्वानों की शाब्दिक खेंचतान का भी मालिक इनका अल्लाह ही हो सकता है और तो कोई नहीं? जब प्रथम समय में ही कह दिया गया था, कि भूमि पर उतर जाओ, तो क्या उससे खलीफ़ा बनने का आशय पूर्ण नहीं होता था और दूसरे समय मिथ्या कथन मात्र से आशय पूर्ण हो जायेगा? आपने मुस्लिम विद्वानों की अनर्गल और मनघड़न्त बातें देख ली। क्या आपको इनमें रंचमात्र भी सत्य-तथ्य के दर्शन तो ठीक प्रतिबिम्ब ही दृष्टिगोचर हुआ? इन सत्यहन्ताओं से परमात्मा बचाये।

यह भूल कैसे हुई ?

हमने ऊपर लिखा, कि जब आदम और हव्वा ने उस निषेध वृक्ष के फल खा लिये, तो परिणामस्वरूप आदम-हव्वा शैतान-सर्प और मयूर सभी स्वर्ग से निर्वासित कर दिये गये। तत्पश्चात वह सैकड़ों वर्षों तक भूमि पर रहे। फिर खुदा ने एक प्रार्थना आदम को दी, उसका जप करने से खुदा ने आदम का पश्चाताप (तौबा) स्वीकृत किया, किन्तु वह पुनः भूमि से स्वर्ग नहीं पहुँचे।

इससे पश्चात लिखी आयत में, जब कि आदम और हव्वा भूमि पर ही थे और आदम द्वारा किया गया पश्चाताप भी स्वीकृत हो चुका था तथा स्थाई रूप से भूमि पर निवास हेतु आज्ञा भी प्राप्त हो चुकी थी। इतना सब कुछ हो चुकने के पश्चात भी खुदा ने फिर आदम इत्यादि से कहा-स्वर्ग से भूमि पर उतरो। यह एक ऐसी भूल है, जो ठीक हो ही नहीं सकती। न इसका कोई समाधान-संशोधन-निराकरण है और न कोई उत्तर ही हो सकता है। हां, नीचे हम कुछ और आयतें प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनसे कि आपको कुछ और भी ज्ञात हो सकेगा तथा आयतों में व्याप्त मतभेदों और अन्तर भी ज्ञात होंगे। आयतें:-

फ वस्वसा अलैहिश्शैत्वानों, काला या आदमो हल् अदुल्लोका अला शजरतिल्खुल्दे वा मुकिल्ला यब्ला। फ़ अकला मिन्हा फ़ बदत् लहुमा सौआतो हुमा वा तफ़ेका यख़्सेफ़ाने अलैहेमा मिव्वर किल्जन्नते, वा असा आदमो रब्बाहू फ़गवा। सुम्मजतबाहो रब्बोहू फ़ताबा अलैहे वा हूदा। कालह बेता मिन्हा जमीअा। बाजोकुम् ले बाजिन उदव्व। फ इम्मा यातेयन्नकु-

म्मिन्नी हूदन, फ़मनित्तब आ हूदाया फ़ला युज़िल्लो वा ला यशक़ा। कुरआन पारा १६ रकू ७/१६ सूरत त्वाहा

आयत क्रमांक ११६ से १२३ तक

अर्थात:—फिर स्वर्ग में आने के पश्चात शैतान ने वस्वसा (भ्रम) डाला और हव्वा को देखा, और मृत्यु से डराया, और हज़रत हव्वा ने हज़रत आदम को कहा, और मृत्यु से वह भी डरा, और इब्लीस (शैतान) जो वृद्ध पुरूष के रूप में आया था, उससे मृत्यु का उपचार पूछा (यहां पर स्वयं आदम और हव्वा ने शैतान से पूछा) तो शैतान ने कहा-ऐ आदम ! शज़रतुल्खल्द का (अमृतफल) खाना इस रोग का उपचार है। क्या बताऊँ मैं तुझे उस अमृतवृक्ष को, कि जो कोई उसमें से खाये उसको कभी भी मृत्यु न आये। और तुझे ऐसी वादशाही का मार्ग दिखाऊँ जो कभी पुरातन न हो अर्थात नाश को प्राप्त न हो। हज़रत आदम ने कहा:-हां बता दे। शैतान ने उसी निषेध वृक्ष को दिखाया (उसे देख कर आदम और हव्वा ने कुछ नहीं कहा) फिर आदम और हव्वा दोनों ने उस वृक्ष में से खा लिया, तो उन दोनों के गुप्तांग प्रकट हो गये अर्थात स्वर्ग के वस्त्र उन पर से उतर गये और दोनों नग्न हो गये, और खड़े हो रहे। स्वर्ग के वृक्षों के पत्ते अपने गुप्तांगों पर ढांपते थे, और आदम ने अपने पालक की आज्ञा के विपरीत निषेध फल खा लिये और अभागा रहा अपने लक्ष्य से कि सदैव का जीवन था। फिर स्वीकार कर ली खुदा ने उसकी तौबा और उसे चुन लिया, और तौबा पर सुदृढ़ रहने की शिक्षा दी। फिर खुदा ने आदम और हव्वा को कहा—उतर जाओ तुम दोनों स्वर्ग से

सब के सब, और तुम्हारी सन्तान से कुछ हेतु शत्रु होंगे, जैसे कि अब हैं, और शैतान तथा आदम की सन्तत्ति में जो शत्रुता है, वह तो प्रत्यक्ष है। फिर जब तुम्हारे पास, जब कि तुम भूमि पर हो मेरे पास से पथ प्रदर्शक या हिदायत का सबब अर्थात पैगम्बर या पुस्तक। पस, जो कोई अनुकरण करेगा मेरी शिक्षा का, वह न तो संसार में पथभ्रष्ट होगा और न कयामत (प्रलय) के दिन कष्ट और दुख ही उठायेगा। तफसीर कादरी, पारा १६ पृष्ठ ४६-४७

अब इन आयतों में भी तौबा स्वीकृत होने के पश्चात स्वर्ग से निष्कासन लिखा है, जो कि प्रकरण के सर्वथा विपरीत है, और यहां पर शैतान ने आदम और हव्वा को भ्रमित भी नहीं किया। आदम ने स्वयं ही मृत्यु का उपचार पूछा। उस शैतान ने बताया तो तत्काल जाकर उस बृक्ष के फल खा लिये।

आयतों में कितना अन्तर हैं, यह भी देखते चलें तो उचित रहेगा। घटना तो एक ही है, फिर भिन्न-भिन्न आयतों के वर्णन में इतना अन्तर कैसे हो सकता है। और यदि अंतर है तो यह इस बात का प्रमाण है कि यह खुदा की वाणी नहीं है।

तफसीर जलालैन पृष्ठ २६८ और मुआलिमुत्तन्जील भाग ३ पृष्ठ १९ पारा १६ सूरत त्वाहा में भी उपरोक्तानुसार ही है, जो कि हमने लिखा कि तौबा स्वीकृति के पश्चात स्वर्ग से निष्कासित किया, किन्तु तफसीर आजमुत्तफासीर में किञ्चित संशोधनसहित यही सब लिखा है। इसी प्रकार तफसीर मज़हरी में है कि:—

अल्लाह कृपा और क्षमासहित उनकी ओर आकर्षित हुआ

और उनको तौबा का मार्ग बता दिया.........................अल्लाह ने फरमाया-तुम दोनों (आदम और हव्वा) साथ-साथ स्वर्ग से इस स्थिति में उतरो (और संसार में इसी स्थिति में जाओ) कि तुम में से एक-दूसरे का शत्रु होगा। आगे वही है, जो पूर्व में अन्यत्र लिखा जा चुका है।

तफसीर मज़हरी, पारा १६ पृ. ४४२-४३

पाठक बन्धुओं ! पूर्व कि समस्त आयतों में 'एहबेतू' बहुवचन था, जो कि समस्त के लिये प्रयुक्त होता है किन्तु इन आयतों में 'एहबेला' द्विवचन है, जो की मात्र दो के हेतु ही प्रयुक्त हुआ है। पूर्वोक्त आयतों में है कि समस्त उतरो और इन आयतों में है कि दोनों उतरो।

इसी प्रकार पूर्वोक्त आयतों में है कि पश्चाताप (तौबा) भूमि से स्वीकार हुआ और इन आयतों में है कि पश्चाताप स्वर्ग में स्वीकृत हुआ और तत्पश्चात भूमि पर आए।

पाठकों को उक्त पांचो आयतों पर ध्यान देना चाहिए और यह जानना चाहिए कि इतना प्रबल मतभेद और विरोधाभास तो साधारण मनुष्य के कथ्य में भी नहीं होता है। फिर यह इतने भयंकर और भीषण रूप में खुदा के नाम पर क्यों और कैसे वर्णित किया जा रहा है ?

अब हम यह ज्ञात करना चाहेंगे कि इस्लाम और कुरआन के पूजक और समर्थक मुसलमान जन किन आयतों को मान्यता देंगे ? तौबा से पूर्व स्वर्ग से निष्कासित या तौबा के पश्चात स्वर्ग से निष्कासित हो भूमि पर उतरने वाली को ? क्योंकि दोनों को ही एक समान मान्यता नहीं दी जा सकती

? आपने ! ऊपर पढ़ा कि आदम ने तौबा की और खुदा ने आदम से प्रतिज्ञा भी ले ली कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा। किन्तु अभी अधिक समय भी व्यतीत नहीं हुआ कि आदम पुनः शैतान के चंगुल में फँस गया। आयतः–

हो वल्लज़ी ख़लका कुम्मिनफिसनव्वाहेदतिंव्व जअला मिन्हा ज़ोजहा लेयस्कुना इलैहा। फ़लम्मा तराश्शाहा हम्लन् खफीफ़न् फ़मर्रत् बेही फलम्मा अस्कलद्दअ वल्लाहा रब्बाहुमा लइन् आतैतना सालेहल्ल तकूनन्ना मेनश्शाकेरीन्। फलम्मा आताहुमा सालेहन जअला लहू शुरका आ फ़ीमा आताहुमा। तआ लल्लाहो अम्मा युश्रेकून।

कुरआन पारा ९ रकू २४।१४ सूरत एराफ़

अर्थातः–अल्लाह वह है, जिसने उत्पन्न किया तुमको एक व्यक्ति से, जो कि आदम है। और उसके शरीर से, किसी कोख की हड्डी से उसका युगल (जोड़ा) जो कि हव्वा है उत्पन्न किया, ताकि आदम उसके साथ आराम करे। फिर छुपा लिया आदम ने हव्वा को अर्थात उसके साथ सम्भोग किया, तो बोझ उठाया हव्वा ने, हल्का बोझ, कि वह हज़रत आदम का वीर्य था। फिर उस गर्भसहित चलतीं–फिरती रही, तो फिर हव्वा उस बोझ के कारण बोझिल हुई, जो उसके उदर में था। अर्थात गर्भ बड़ा हुआ तो हव्वा भारी हुई। फिर आदम और हव्वा ने खुदा को पुकारा और उन दोनों ने कहा–यदि तू हमें सुन्दर पुत्र देगा तो हम तेरा धन्यवाद करेंगे।

इस नवीन कृत्य पर एक कथन यह भी है कि जब हव्वा गर्भवती हुई तो शैतान एक अज्ञात रूप में हव्वा के समक्ष प्रकट

हुआ और बोला-तेरे उदर में क्या है ? हव्वा ने उत्तर दिया-मैं नहीं जानती । शैतान बोला–सम्भवतः कोई जगली हिंसक पशु हो । फिर शैतान ने पूछा-यह किधर से निकलेगा ? हव्वा बोली-मुझे नहीं मालूम । शैतान बोला सम्भवतः मुंह-कान या नथूनों से निकले अथवा तेरा उदर फाड़ कर निकालें । हव्वा भयभीत हुई और यह किस्सा उसने हज़रत आदम को सुनाया । हज़रत आदम भी भयभीत हुए । (देखिये, खुदा ने आदम को तो सब बातें सिखा दी थी, किन्तु यह बात नही सिखाई कि शिशु गर्भ से बाहर कैसे निकलेगा ? हां, गर्भ करना अवश्य सिखा दिया। आदम पृथ्वी का खलीफा और पैगम्बर रहा किन्तु इतनी सी बात का ज्ञान तक नहीं ?) फिर शैतान दुसरे रूप में उनके सन्मुख आया और उनके दुख का कारण पूछा । उन दोनों ने पूर्ण वृतान्त का वर्णन किया । शैतान बोला–चिन्ता न करो, मैं "इस्मे आज़म" जानता हूँ । ("इस्मे आज़म" इस्लाम में विख्यात एक महत्वपूर्ण वचन है, जिसके उच्चारण मात्र से समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं ।) और मेरी प्रार्थना स्वीकृत है । मैं याचना करता हूँ कि इस गर्भ से तुम्हारे सदृश्य सुन्दर और पूर्ण शिशु उत्पन्न हो और सरलता से तेरे उदर से निकले, किन्तु यह शर्त है कि इसका नाम अब्दुलहारिस रखना । (शैतान का एक नाम हारिस भी था) हव्वा ने उसका यह धोखा स्वीकार कर लिया । जब अल्लाह नें उनको स्वस्थ और नेक पुत्र प्रदान किया, तो आदम और हव्वा नें खुदा हेतु एक और नाम संलग्न भक्ति में नहीं किया अर्थात अब्दुलाह के स्थान पर अब्दुलहारिस नामकरण किया ।

तफसीर कादरी, भाग १ पृष्ठ ३५१-५२

इसी प्रकार तफसीर हक्कानी पारा ६ पृष्ठ ५४–५५, मुआलिमुत्तन्ज़ील पारा ६ पृष्ठ ३५ और तफ़सीर मज़हरी, पारा ६

पृष्ठ ३४०-४१ से भी यही सिद्ध होता है, जो उपरोक्त वर्णित है। हां तफसीर आजमुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ २४०-२४१ में इस वर्णन के साथ ही यह और विशेष है कि इस आयत की व्याख्या में कुरआन के व्याख्याकार विद्वानों में अत्याधिक मतभेद हैं।

हमारा भी यही कथन है कि मुस्लिम विद्वानों का किस विषय में मतभेद और विरोधाभास नहीं है ? जब स्थिति यह है कि मुस्लिम विद्वान अपने ही बड़े-बड़े मतभेदों का आज तक कोई निर्णय नहीं कर सके, तो उन्हें क्या अधिकार है कि वह अन्य व्यक्तियों को इसकी ओर आमन्त्रित करें। जिस पुस्तक (कुरआन) को वह ईश्वरीय ज्ञान समझते है, कम से कम उसमें व्याप्त मतभेदों का निराकरण कर एक निश्चित निर्णय ले लेना चाहिए, किन्तु हमारी यह धारणा है कि यह मतभेदों और विरोधाभासों का निर्णय कभी नहीं हो सकेगा ? क्योंकि जब उनका अपना ही दृढ़ विश्वास एक नहीं है, तो अन्यों को किसी अनिश्चित बात या विषय पर विश्वास कराना सत्यानुवेषी लोगों हेतु कहां तक सम्भव हैं ?

उक्त आयत में हज़रत आदम ने नबी (पैगम्बर) होते हुए भी दोबारा फिर वही किया, जो पूर्व में कर चुके थे। यह आयत तो प्रायः ऐसे ही इस चर्चा के मध्य वर्णित हो गई, नहीं तो हमारा विषय तो यह "आदम को स्वर्ग से तौबा स्वीकृति के पूर्व या पश्चात निर्वासित किया गया" था। दोनों प्रकार की आयतें हमने ऊपर लिखी है, आप उससे यह निर्णय कर सकते हैं कि जिस पुस्तक में ऐसे मतभेद और विरोधाभास हो, वह पुस्तक ईश्वरीय वाणी नहीं हो सकती है। यह प्रकरण हज़रतकालीन लोगों के सम्बन्ध में था, सो पूर्ण हुआ। अब आगे बनी इस्राईल का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है। ध्यानपूर्वक मनन करें।

आगामी आयतें उतरने का कारण

अब हम कुरआन में वर्णित 'बनी इस्राईल' जाति के विषय पर चर्चा करेंगे। यद्यपि इसके अतिरिक्त अन्य और भी कबीलों (समुदायों) की कुरआन में चर्चाएँ हैं। उनकी चर्चा यहां न करते हुए इस 'बनी इस्राईल' का उल्लेख इसलिए कर रहे हैं कि इससे सम्पृक्त लोग मदीना में बहुसंख्या में थे तथा महान विद्वान भी थे और इनसे सम्बन्धित आयतें भी मदीना में अत्याधिक उतरी है। इस कारण यही उचित ज्ञात हुआ कि उन्हें इस्लाम की ओर आकृष्ट किया जाये ताकि लोग उनका अनुकरण करते हुए इस्लाम स्वीकार करें। (लोग से तात्पर्य साधारण जन हैं।) तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १०

पाठक बन्धुओं ! अब आप इस प्रकरण की आगामी आयतों में पढ़ेंगे कि किस प्रकार हज़रत मूसा की प्रशंसासहित उनके असम्भव चमत्कारों का वर्णन कर 'बनी इस्राईल' समुदाय को इस्लाम में प्रविष्ट होने हेतु प्रेरित किया गया है। इस सम्पूर्ण वृतान्त में हज़रत मूसा के यहूदी मत के चमत्कारों को इस्लामी चादर में डालकर इस्लाम के रंग में रंग कर यहूदियों के सन्मुख प्रस्तुत किया गया है। आयतें:—

या बनी इस्राईलज्कुरू नेमते यल्लाती अन्अम्तो अलैकुम वा औफ़ू बे अहदी ऊफ़े बे अहदेकुम वा इय्याया फ़हबूं न् ।

वा आमेनू बेमा अन्ज़लतो मुसद्धेकल्लेमा मआकुम् वा ला तकूनु अव्वला काफ़ेरिन बेह। वा ला तश्तरू बे आयाती समनन कलीलंव्व इय्याया फ़त्तकून् ।

कुरआन पारा १ रकू ५/५ आयत ४१-४२

अर्थात:–ऐ बनी इस्राईल ! (याकूब के बेटों !) स्मरण करो मेरे

उन उपकारों को, जो मैंने तुम पर किये हैं। और मेरे साथ की गई प्रतिज्ञा को पूर्ण करो, और मैं तुम्हारे साथ किए गए वचनों को पूर्ण करूंगा। और मात्र मुझसे ही डरो, और ईमान ले आओ उस पुस्तक पर, जिसे मैंने अवतरित किया है। (अर्थात कुरआन पर) इस स्थिति में कि वह सत्य दिखलाने वाली है, उस पुस्तक को जो तुम्हारे पास है (अर्थात तौरात को खुदा की ओर से उतरी हुई प्रमाणित करती है।) और मत होओ तुम सबसे प्रथम अविश्वासकर्ता इस कुरआन हेतु। और मत होओ मेरी आज्ञाओं के सामुख्य निकृष्ट (अर्थात सांसारिक भोगों में लिप्त)। और विशेषतया मुझसे ही डरो।

इब्ने कसीर लिखते हैं, कि इन आयतों में बनी इस्राईल को इस्लाम स्वीकार करने हेतु निमन्त्रण और हज़रत मुहम्मद की आज्ञापालन करने का आदेश दिया जा रहा है। और किस सूक्ष्म व्यवस्था से उन्हें प्रेरणा दी जा रही है।

इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ १२/२

इब्ने अब्बास ने वर्णन किया है, कि तुम मेरे साथ की गई प्रतिज्ञा को पूर्ण करो, अर्थात हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाओ। मैं तुम्हारे साथ किया वचन पूर्ण करूंगा और वह कठोर आज्ञाएं इत्यादि उठा दूंगा।

बग़वी ने कल्बी के आधार पर कहा, कि अल्लाह ने मूसा की ज़बानी बनी इस्राईल से यह प्रतिज्ञा ली थी, कि मैं बनी इस्राईल से एक उम्मी नबी भेजूंगा, जो तुममें से उसकी आज्ञापालन करेगा और जो प्रकाश उसके पास होगा। उसको जो सत्य मानेगा तो मैं उसके पाप क्षमा कर दूंगा और स्वर्ग में प्रविष्ट कर दुगुणा फल दूंगा।

कल्बी कहते हैं, कि वह वचनबद्धता यह है कि हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाना।

आगे उस प्रतिज्ञा सम्बन्धी अनेक आयतें दी है और लिखा है कि बनी इस्राईल से १२ सरदार निश्चित किए और अल्लाह ने फरमाया—मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ पढ़ो, और ज़कात देते रहो, और मुझसे प्रतिज्ञा भग न करो, विविध निषेध से डरो, और जान लो कि जो मैंने उतारा है (अर्थात क़ुरआन पर ईमान लाओ).........अर्थात आसमानी पुस्तकें तौरात आदि का सार यह है कि तुम क़ुरआन पर ईमान लाओ और उसके प्रथम निषेधक न बनो।

बग़वी कहते हैं, कि यह आयत काब बिन अशरफ़ और अन्य यहूद विद्वानों के विषय में उतरी थी। ....और न लो मेरी आयतों के बदले अर्थात मेरी आयतों पर ईमान लाने के बदले सांसारिक पदार्थ न लो........क्योंकि संसार के सामान चाहे कितने ही हों, वह परलोक के सामानान्तर तुच्छ है। आयत के उतरने का कारण यह है कि यहूद के विद्वानों और धनाढ्यों को मूर्ख और साधारण लोगों से अत्याधिक आय होती थी, और उनसे वार्षिक वृति; हर तरह के माल, खेत—पशुओं-पर्वों और लोकाचार-व्यवहारों में से भाग ले लेते थे। इस्लाम का विस्तार हुआ, तो भयभीत हुए कि यदि तुमने मुहम्मद का मत ग्रहण कर लिया, तो यह सब आय हमारे हाथ से जाती रहेगी। इस कारण उन्होंने सांसारिक धर्म को प्राथमिकता दी और तौरात में आपकी प्रशंसा परिवर्तित कर दी, और आपके नाम को भी मिटा दिया। उस पर यह आयत उतरी, कि और मुझसे डरते रहो अर्थात ईमान लाओ और परलोक को अपनाओ।

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ १००-१०१

इन आयतों में बनी इस्राईल का प्रकरण प्रारम्भ किया गया है। मदीना में बनी इस्राईल बहुसख्या में थे, जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका हैं। हजरत मुहम्मद ने अनोखे ढंग से बनी इस्राईल पर अपना प्रभाव जमाना प्रारम्भ किया। आप यह ध्यान रखें कि इस आयत तक हज़रत मुहम्मद तौरात को पूर्णतया आसमानी किताब मानते थे, अर्थात वही तौरात जो उस समय वर्तमान में उपलब्ध थी। अब इस पर तफसीर मज़हरी का व्याख्याकार क्या लिख रहा है, उसे पढ़े ? किन्तु पूर्व में यह और ज्ञात कर लें कि कुरआन में अधिकांश स्थानों पर तौरात को ईश्वरी ज्ञान माना है, और प्रकाशदेय तथा शिक्षाप्रद पुस्तक कहा है।

कुरआन में पारा २६ सूरत अहकाफ़, पारा ६ सूरत माएदा, पारा २ रकू ६/६ सूरत बकर, पारा ३ रकू ७/१५ सूरत आले इमरान, पारा ६ रकू ६/१० और पारा २१ रकू ३/१६ सूरत सजदा तथा पारा ९ सूरत एराफ़ आदि की आयतों में भी तौरात को प्रामाणिक और आसमानी पुस्तक माना गया है, और यह भी लिखा गया है, कि तौरात हिदायत और नूर हैं। (शिक्षा और प्रकाश है।) और यह भी सिद्ध है, कि जिस समय आयतें रची गई तब तक तौरात ही प्रमाण मानी गई। कुरआन उसकी तस्दीक करता है।

हमारा कथन है कि कुरआन तो तौरात की तस्दीक करता है, उसको सत्य प्रमाणित करता है, और फिर जिस पुस्तक की तस्दीक कुरआन करता हो वही असली और मान्य पुस्तक होना चाहिए ? किन्तु इस सिद्धांत की किस प्रकार कुरआन में ही अवहेलना की गई है, उसका ज्ञान आपको निम्नलिखित आयतों से होगा कि जिन पुस्तकों को ईश्वरी ज्ञान कुर-

आन में स्थान-स्थान पर माना है। उन्हीं पुस्तकों की कुरआन में ही कैसी दुर्गति हुई है, अर्थात उनका अस्तित्व ही समूल नष्ट कर दिया गया है। यथा:—

वा मंय्यक्फ़र बेही मिन्लअहज़ाबे फ़न्नारो मौएदा।

कुरआन पारा १२ सूरत हूद

इस आयत की व्याख्या तफसीर मज़हरी में है कि:-

और जो व्यक्ति दूसरे मतों में इसका (कुरआन का) इन्कार (निषेध) करता है, नर्क उसके वादे अर्थात निवास स्थान है। अहज़ाब व गिरोह से तात्पर्य मुसलमानों के अतिरिक्त समस्त मज़ाहिब (सम्प्रदाय) वाले हैं।

हज़रत अबू हुरैरा का उद्धरण है कि रसूलिल्लाह ने फरमाया कि शपथ है उस सत्ता की जिसके हाथ में मुहम्मद के प्राण हैं। इस उम्मत (समुदाय) में से जो कोई और जो यहूदी और ईसाई ऐसी स्थिति में मरेगा कि जिसको (हिदायत) मुझे देकर भेजा गया है। (वह उस पर) ईमान न लाया होगा वह अवश्य नर्कगामी होगा। (खाहुल्मुस्लिम)

तफसीर मज़हरी पारा १२ पृ. ३४ सूरत हूद

अब इस आयत की उपस्थिति में उन समस्त आयतों, जिनमें तौरात को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकारा हैं, का क्या मूल्य रह जाता है ? यदि उनके पास तौरात या इंजील हो तो भी वही निर्णय है और यदि न हो तो भी वही निर्णय है। मुहम्मद पर ईमान लाये बिना मुक्ति तो नहीं होगी ? अर्थात इन समस्त बातों का सार यही है कि खुदा ने बनी इस्राईल को फरमाया-तुम अपने पूर्वजों की पुरातन--रीति--नीति और परम्परागत प्रथाओं का

परित्याग कर अन्तिम पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) के दीन (धर्म) का पालन करो, किन्तु उनके हेतु अपने प्रिय धर्म का त्यागना और नवीन धर्म का पालन करना और तत्काल ही परम्परागत विचारों को त्यागना और साँसारिक लाभों को तिलाजंली दे देना अत्याधिक कठिन और असह्य था। इस हेतु कहा गया कि यदि तुमसे इन बातों का त्यागना सम्भव नहीं हो सकता और कठिनाई होती है, तो इसका आध्यात्मिक उपचार यह है; कि संतोष और नमाज़ को ग्रहण करो। व्याख्याकार ने अन्त में लिखा है कि हज़रत इब्राहीम बनी इस्राईल से पूर्व हुए थे; तदापि वह समस्त नबियों से सर्वोच्च हैं और हज़रत मुहम्मद उनके पश्चात आये; जो आदम से लेकर कयामत तक पूर्ण सृष्टि से श्रेष्ठ और सर्वोच्च हैं; अपितु धर्म और संसार में सबके सरदार और पूज्य हैं।

आजमुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ १६५.

अगली आयतें:—

वा ला तल्बेसुल्हक्का बिल्बातेले वा तक्तोमुल्हक्का वा अन्तुम तालमून्। वा अक़ीमुस्सलाता वा आतुज्ज़काता व रकऊ मअर्राकेईन। अतामुरूनन्नासा बिल्बिर्रे वा तन्सौन। अन्फुसाकुम् बिस्सबरे वस्सलात्। व इन्नहा लक्बीरतुन इल्ला अलखासेईन्। अल्लाज़ीना यज़ुन्नूना अन्नहुमुलाकू रब्बेहिम् वा अन्नाहुम् अलैहे राजेऊन।

कुरआन पारा १ आयत ४३ से ४७ तक

अर्थः—और सत्य को असत्य में न मिलाओ, और जानबूझ कर सत्य को मत छुपाओ, और सुदृढ़ करो नमाज और ज़कात (अनिवार्य दान) दो, और रकऊ (अर्धनतमन) वालों के साथ मिल कर झुको। क्या (तुम) लोगों को नेकी करना बताते हो, और अपने आपको भूल जाते हो? और यद्यपि तुम पुस्तक (तौरात)

पढ़ते हो, फिर क्यों नहीं समझते, और सन्तोष करने व नमाज़ से सहायता लो, और निसन्देह यह नमाज़ पढ़ना अधिक कठिन है, किन्तु उन पर नहीं जो नम्रता रखते हैं, और जो यह समझते हैं कि हम अवश्य अपने पालनकर्ता से भेंट लेने वाले हैं, और उसके पास लौट कर पुनः जाएंगे। (उन पर कुछ कठिन नहीं)

तफसीर हक्कानी, पारा १, पृष्ठ ११०-११

इन आयतों में बनी इस्राईल को इस्लाम ग्रहण हेतु स्पष्ट आमन्त्रण दिया गया है। हम पूर्व में लिख चुके हैं और अकाट्य प्रमाणों से सिद्ध भी कर चुके हैं, कि ईमान लाना मनुष्य के वश में नहीं यह कार्य खुदा के अधिकार में है, तो फिर इन आयतों में बनी इस्राईल को मुसलमान बनने हेतु क्यों कहा गया है ? यह कुरआन के खुदा की एक परिभाषा है। उस पद्धति को हम अभी आदम और शैतान की कहानी में पाठकों के सन्मुख स्पष्ट कर चुके हैं, कि इधर तो आदम के भाग्य में लिख दिया कि यह इस वृक्ष के फल अवश्य खायेगा और उधर उसको निषेध कर दिया कि इस फल को खाना नहीं। साथ ही आदम तथा मूसा का आपसी शास्त्रार्थ भी लिख चुके हैं, कि कुरआन के खुदा के पूर्व निश्चय में आदम का उस निषेध वृक्ष के फल खाना ही अभीष्ट था। इसी प्रकार यहां बनी इस्राईल को कह रहा है-ईमान लाओ, किन्तु उसके पूर्व निश्चिय में यह बात नहीं थी। क्योंकि "अलएमालो बिन्नीयाते" अर्थात कर्मों का फल तो निय्यत (पूर्व निश्चय) से मिलता है, और ऐसा ही क़िस्सा ज़िहाद (धर्म-युद्ध) में मर जाने वाले लोगों का है। हम लिख चुके हैं कि एक ओर तो खुदा ने उनका ज़िहाद में ज़ाना अनिवार्य कर दिया था और दूसरी ओर खुदा उनका ज़िहाद में जाना न चाहता था। जैसा कि लिखा है:-

अल्लाह ने यह नापसन्द किया कि मुनाफेकीन (गैरमुस्लिम) इस जिहाद में जाएँ। जब कि रसूलिल्लाह (हज़रत मुहम्मद) के साथ उनका जाना अनिवार्य किया गया था, किन्तु अल्लाह ने उसी अनिवार्यता को नापसन्द किया। जिसके होने की इच्छा स्वयँ ने की और उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उसने ही उन लोगों को जिहाद में जाने से रोक दिया। फिर वह इस रूक जाने के कारण अज़ाब (संकट) करेगा।

अल्मिललो वन्नहल इब्ने हज़म भाग २ पृ. ३१६

यह है कुरआन की कार्य-पद्धति, कि एक ओर उनको जिहाद में जाना अनिवार्य कर दिया तथा दूसरी ओर रोक भी दिया और फिर उनके रूक जाने पर अज़ाब (संकट) भी करेगा।

यह कुरआन के खुदा की कार्य-प्रणाली है कि स्वयँ कहता कि करो और फिर कहता है कि मत करो और जब नहीं करते हैं, तो फिर वह खुदा अज़ाब (संकट) भी करता है।

यहां भी बनी इस्राईल को इसी प्रणाली के अन्तर्गत ईमान लाने हेतु कहा जा रहा है। इस पर इस विषय में भी आपको यही समझना चाहिए कि जैसे आदम और ज़िहाद में जाने वालों को निषेध भी किया और आज्ञा भी दी। वैसे ही इनको भी खुदा ने कहा, कि ईमान ले आओ, किन्तु खुदा की निय्यत (पूर्व निश्चय) में यह बात नहीं थी, क्योंकि "माशा अल्लाहो काबा वा मालम् यशाओलम् यकुन्" अर्थात जो अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो उसने नहीं चाहा, नहीं हुआ। अब इन बनी इस्राइल वालों के विषय में भी उसी प्रणाली को लक्ष्य में रखना चाहिए जिसे हमने ऊपर वर्णन किया है।

आयतों की व्याख्या में यही है, कि यहूद विद्वानों की त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करा उन्हें लज्जित व अपमानित करते हुए उन पर अपना प्रभाव आरोपित कर आतंकित भी किया है- और इस अनुचित आय के लोभ में सत्य को छुपाते हो, तुम सत्य को असत्य में मिलाते हो, सांसारिक वासनाओं में लिप्त होकर और तौरात में जो हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाना लिखा था, उसे तुमने वहाँ से मेट दिया हैं। अब उनको ही साक्षी के रूप में इस बात पर दृढ़ किया गया है, कि हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाने की बात को तुम भी जानते हो, और तुम विद्वान हो और जानते हो कि हज़रत मुहम्मद सच्चा नबी (पैग़म्बर) है, और तुम यह भी जानते हो कि हम सत्य बात को छुपा रहे हैं, यह अत्यन्त ही बुरा–घृणित और निन्दनीय कार्य है । ऐसा कार्य करना अत्यन्त लज्जास्पद है । फिर अति सहानुभूति से, यह बुराईयां बता कर उन्हें सच्चे मार्गदर्शक की भांति यह कहा, कि इन निर्बलताओं को दूर करने हेतु एकमात्र आध्यात्मिक उपाय है, कि मुसलमानों की भांति नमाज़ पढ़ा करो, ज़कात (अनिवार्य दान) दिया करो, और रकूअ (नमाज में अर्ध नमन क्रिया) किया करो। (रकूअ करने हेतु विशेष रूप से इस हेतु कहा गया कि यहूद की नमाज़ में रकूअ क्रिया नहीं है) अर्थात दुसरे शब्दों में यह कि मुसलमान हो जाओ न कहते हुए नमाज पढ़ा करो, जकात दिया करो और रकूअ किया करो, यह कह दिया। क्योंकि बिना मुसलमानी मत को माने यह समस्त कर्म कैसे हो सकते हैं? यह शब्द सहानुभूतिपूर्ण और हितकर प्रतीत होते हैं और स्पष्ट रूप में यह कहना कि मुसलमान हो जाओ, शब्द अप्रिय होकर तनिक चुभते हैं और भ्रष्ट करने के अनुभूत हैं। अतः खटकते हैं। मुसलमान बनाने हेतु यह एक सरल और हितकर मार्ग है कि मुसलमान हो जाओ न कह कर सन्तोष करो, नमाज़ पढ़ो, ज़कात

दो और रकूअ करो कहना अत्याधिक मीठी दवा है, और साथ ही यह कहना कि केवल अल्लाह से ही डरो, सोने पर सुहागा के सदृश्य प्रभावशाली शब्द हैं, और इस पर यह और आकर्षक ढंग से कहना, कि जो लोग अपने रब्ब (ईश्वर) से मिलने के इच्छुक हैं और उसके सन्मुख प्रार्थना करने वाले हैं। खुदा से डरने वाले हैं और निराभिमानी हैं। देखिये कि कैसा प्रभावशाली और आकर्षक मार्ग अपनाया गया है। किन्तु यह मार्ग आयतें तलवार के उतरने के पूर्व तक का ही है, क्योंकि अभी तलवार प्रयोग की शक्ति नहीं थी।

अब आगामी आयतों में देखें कि किस प्रकार बनी इस्राईल की प्रशंसा और प्रार्थना करते हुए उनके गौरव को आसमान पर चढ़ाया गया है, और खुदा ने एक मुस्लिम शिक्षक का रूप धारण कर अपने उपकारों का एक पुरातन इतिहास, इस्लाम के सिद्धान्तानुसार जिनके साथ इन लोगों का कोई सम्बन्ध न था, सुना कर किस प्रकार इस्लाम की ओर आकर्षित किया गया है। यह निम्न आयतों में देखिये:—

या बनी इस्राईलज़्कुरू नेमते यल्लती अन्अम्तो अलैकुम् वा अन्नी फ़ज़्ज़ल्तोकुम् अलल्आलमीन्। वत्तक़ू यौमल्लः तज्ज़ी नफ़्सुन अन् नफ़्सिन शयअंव्व ला युक़्बलो मिन्हा शफ़ा अतंव्व ला योख़ज़ो मिन्हा अद्लुंव्व ला हुम युन्सरून

कुरआन पारा १ आयत ४८—४९

अर्थात:—ऐ याक़ूब के बेटों! मेरे उन उत्तम पदार्थों और कृपाओं को स्मरण करो, जो मैंने तुमको प्रदान किये; और मैंने तुमको समस्त संसार पर उत्कृष्टता प्रदान की, (संसार में तो हज़रत

मुहम्मद भी आ गए) और भय करो उस दिन से कि जिस दिन कोई किसी के काम न आयेगा, और न सिफ़ारिश (अनुशंसा) ही स्वीकार होगी, और न किसी के बदले में कोई पूर्ति की वस्तु ली जायेगी, और न कोई सहायता कर सकेगा।

तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ११२

उपरोक्त जो आयते कुरआन पारा १ की क्रमांक ४८-४६ दी गई है। यही आयतें कुरआन के इसी पारा १ में क्रमांक १२३-१२४ के रूप में भी लिखी गई है। इन आयतों की व्याख्या करने में कुरआन के व्याख्याकारों में अत्याधिक घबराहट प्रतीत होती है। क्योंकि इन आयतों में से ऐसा अर्थ प्रकट करने का प्रयत्न किया गया है, कि जिसका संकेत मात्र भी आयतों में नहीं है। इन आयतों में दो बातें ऐसी आ गई हैं कि जो इस्लाम की मान्यताओं को समूल नष्ट करने वाली है। इन दो बातों में प्रथम तो यह कि- बनी इस्राईल को समस्त संसार पर उत्कृष्टता प्रदान की और द्वितीय यह कि-कयामत (प्रलय) के दिन न किसी की सिफ़ारिश स्वीकार होगी, और न बदले में पूर्ति हेतु कुछ लिया ही जायगा। यदि दोनों बातें जैसी कि आयत में है, मान ली जाये तो इस्लाम की कोई विशेषता या महत्व शेष नहीं रह जाते। इसीलिए कुरआन के व्याख्याकारों ने अपनी मनमानी व्याख्याएं कर आयतों के उचित अर्थों को पश्चात कर दिया है।

प्रथम तो यह देखना है कि आयतों में हज़रत मुहम्मद के समकालीन जिन बनी इस्राईल को सम्बोधित किया है, और उनको ही कहा गया है कि तुम मेरे उन उत्तम पदार्थों और कृपाओं को स्मरण करो, जो मैंने तुमको प्रदान किये। यदि ऐसा मान लिया जाये कि इन पर कृपा की तो पुनर्जन्म को भी मानना पड़ेगा?

क्योंकि यह हज़रत मुहम्मद के समकालीन बनी इस्राईल वह नहीं, जिन पर खुदा ने उपकार किये थे, तो फिर इनको सम्बोधन करना किस प्रकार उपयुक्त हो सकता है ? इन सब बातों का समाधान जो मुस्लिम व्याख्याकारों ने किया है, उन्हें ध्यान-पूर्वक देखें:-

बनी इस्राईल के पूर्वजों को जो पारितोषिक प्रदान किये उनका वर्णन यहां हो रहा है ।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ १७/२

पूर्वजों के पारितोषिक को उनकी सन्तान पर जतलाने का कारण यह है, कि पूर्वजों में यदि कोई प्रतिष्ठा होती है, तो वह सन्तान की प्रतिष्ठा का कारण भी बन जाती है, और वह जो उत्तम पदार्थ उनको दिये गये थे अर्थात वह इन्हें भी दिये गये थे । अपने पूर्वजों की प्रतिष्ठा को आपने कम कर दिया, उसे प्राप्त करने की यह सूरत है कि हज़रत मुहम्मद और कुरआन पाक की आज्ञा का पालन करो ।

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ १११

हम कहते हैं कि बनी इस्राईल को जो प्रतिष्ठा पूर्व में प्राप्त हुई थी; तो क्या वह हज़रत मुहम्मद साहिब पर ईमान लाने ही से प्राप्त हुई थी ? और क्या जो प्रतिष्ठा बनी इस्राईल को दी गई थी; वह हज़रत मुहम्मद के समय तक थी ? और अरब में तो बनी इस्राईल न्यूनतम थे और अन्य देशों में अधिक थे; तो क्या अन्य शेष देशों वाले बनी इस्राईल भी इस आयत की आज्ञा में सम्मिलित हैं या नहीं ? क्योंकि आयत में तो मात्र अरब निवासी बनी इस्राईल ही सम्बोधित हैं । और क्या समस्त बनी इस्राई-लियों की प्रतिष्ठा समाप्त हो गई या केवल अरब निवासियों की ही हुई ?

दूसरा प्रश्न यह है; कि बनी इस्राईल को सम्पूर्ण सृष्टि से उत्कृष्टता दी। इस हेतु व्याख्याकार कह रहा है; कि सम्पूर्ण सृष्टि पर प्रतिष्ठा देने का तात्पर्य यह है कि जो लोग उस समय उपस्थित थे; उन पर श्रेष्ठता प्रदान की।

मौलाना साहिब ! जो 'आलमीन्' शब्द है; यह किसी एक युग की परिधि का सूचक नहीं हो सकता ? जैसे सूरत 'अल्हम्द' में 'रब्बिल आलमीन्' हैं। क्या यहाँ भी यही अर्थ करेंगे; कि जब सूरत 'अल्हम्द' उतरी थी, उस समय के लोग मुराद हैं; और सूरत 'फ़ुर्कान' में 'लिल्आलेमीन् नज़ीरा' है। क्या यहां भी वही समय का अर्थ लोगे ? कुरआन में अत्याधिक स्थानों पर 'आलमीन' शब्द प्रयुक्त है। क्या आपने अन्य और स्थानों पर भी ऐसे ही अर्थ किये हैं। आप अपने ही द्वारा किया गया अर्थ सूरत 'अल्हम्द' में देख लें, तो उत्तम रहेगा। फिर दूसरा अर्थ यह किया कि— संसार वालों में जिनमें यह प्रतिष्ठा नहीं, उन पर प्रतिष्ठा दी। कैसा ईमानदारीपूर्ण अर्थ है ? जवाब नहीं इसका भी, पाठक ध्यान देवें।

तफसीर कादरी में है, कि उत्कृष्टता दी तुम्हारे पूर्वजों को संसार पर, जो उनके समकालीन थे।

तफसीर कादरी भाग १ पृष्ठ १२

आयत में है कि बनी इस्राईल को सब आलमों (पूर्ण सृष्टि) पर बड़प्पन दिया। इस पर इब्ने कसीर में है कि:—

उन्हें उनके समकालीन (अन्य लोगों पर) हमने विद्या में उत्कृष्टता दी। तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ १७/२

इसके हेतु इब्ने कसीर ने कुरआन से दूसरी आयत लिखी। कुरआन से तो अनेक आयतें उपलब्ध की जा सकती है। जिनसे

र्चित आयत की सिद्धि हो या न हो ? इस्लाम का सिद्धान्त रह जाए। आयतः—

लक़द अख़्तर्नाहुम अला इल्मिन् अलल्आलमीन् ।

कुरआन, पारा २५ रकू २/१५ सूरत दुख़ान

र्थातः-निसन्देह हमने विद्या के कारण बढ़ाई दी सब सृष्टि पर।

इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ १७/२

आयत में तो नहीं है कि उस समय के लोगों पर बढ़ाई दी। व्याख्याकार यह अपनी ओर से वृद्धि कर लिख रहा है। र्थं करने में ऐसे शब्द इस हेतु प्रयुक्त किये जा रहे हैं कि कहीं स्लाम से वह प्रतिष्ठा अत्याधिक न हो जायें, किन्तु कुरआन ने हां बनी इस्राईल को समस्त सृष्टि से उत्कृष्ट होने का प्रमाणीकरण किया, वहीं इसी पारा की आयत ५२ में 'अन्तुम जालमून' र्थात तुम जालिम (अत्याचारी) थे, बनी इस्राईल को कह या। इसी प्रकार आयत ५५ में 'इन्नकुम जल्मतुम अन्फुसेकुम्' र्थात तुमने अपनी जानों (प्राणों) पर अत्याचार किया, कहा र आयत ६६ में अवज्ञा के कारण बदर और सूअर तक बना ये। इससे आगे कुरआन के पारा ६ में 'कानू ज़ालेमीन' अर्थात हे ज़ालिम (अत्याचारी) थे, कहा गया है। इस प्रकार के ब्दों में बनो इस्राईल को पुकारा व सम्बोधित किया गया है। भी आगे आप और भी पढ़ेंगे कि कुरआन में ही बनी इस्राईल ो क्या-क्या कहा गया है ? सम्पूर्ण सृष्टि पर बनी इस्राईल को ेष्ठता दी। इस बात को प्रभावहीन और निरर्थक करने हेतु म्न आयतः—

तुम ख़ैरा उम्मतिन् उख़रेजत् लिन्नासे तामोरूना बिल्मारूफे तन्हौना अनिल्मुन्करे वा तौमेनूना बिल्लाहे वा लौ आमना

अहलूल्किताबे लकाना खैरल्लहुम मिन्हुमल्यौमेनून । वा अक्सरा हुमल्फ़ासेकून । कुरआन, पारा ४ रकू १२/३

अर्थात:-जो भी मनुष्य उत्पन्न हुए हैं। तुम उनमें समस्त समूदायों में उत्तम समुदाय हो। क्योंकि तुम लोगों को भली बात की आज्ञा करते हो और बुरी बात से रोकते हो। और अल्लाह पर ईमान लाते हो। और यदि ईमान लाते ईश्वरीय पुस्तक वाले (यहूदी) तो उनके हेतु बहुत अच्छा था। ईमान लाए उनमें से किञ्चित और अधिकांश उनमें से भ्रष्ट हैं।

तफसीर मुवाहिबुर्रहमान पारा ४
सूरत आले इमरान पृष्ठ ४२

इस आयत का शाने नज़ूल (उतरने का कारण)यह है, कि अकरमा और मकातिल ने कहा, कि मालिक बिन सैफ़ व वहब बिन यहूद आदि यहूदियों ने इब्ने मसऊद-उब्बय बिन काब-मुआज बिन जबल और सालम मौला हज़ीफा से कहा—हम तो तुम से उत्तम हैं, और हमारा दीन (धर्म) भी उस दीन (धर्म) से उत्तम है, जिस दीन (इस्लाम धर्म) की ओर तुम हमको आमन्त्रित करते हो। तफसीर मुहाहिबुर्रहमान पारा ४ पृष्ठ ४३

सत्य यह है, कि यह सम्पूर्ण आयत हज़रत मुहम्मद के समुदाय पर ही प्रभावित है:—पस, मुहम्मद की उम्मत (समुदाय) शेष समस्त उम्मतों (समुदायों) से उत्तम हैं। फिर कहा-इस उम्मत को जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है, कि यह शेष समस्त उम्मतों से उत्तम है, वह मात्र हज़रत मुहम्मद साहिब की पवित्र सत्ता के कारण प्राप्त हुई है।

तफसीर मुवाहिबुर्रहमान, पारा ४, पृ. ४३

..................और यह सम्पूर्ण उम्मत (समुदाय) का निर्णय है, क्योंकि उम्मते इस्लाम समस्त समुदायों में श्रेष्ठ हैं। ....रसूलिल्लाह (हज़रत मुहम्मद) ने फरमाया-जब तक मैं (स्वयं) स्वर्ग में प्रविष्ट न होऊँ, तब तक के लिए समस्त पैगम्बरों (नबियों) को स्वर्ग में वर्जित कर दिया गया है, और जब तक मेरा समुदाय स्वर्ग में प्रविष्ट न हो जाए, दूसरी उम्मतों के हेतु स्वर्ग-प्रवेश निषेध कर दिया गया है।

तफसीर मज़हरी, पारा ४ पृ. ३३६-३७

तुम समस्त पूर्व की उम्मतों में उत्तम और उत्कृष्ट उम्मत हो, जो लोगों में निर्वाचित कर ली गई है, और तुम्हें खुदा ने अनादिकाल से ही अपनी सुरक्षा–पुस्तिका में प्रथम स्थान दिया था।

आजमुत्ताफासीर पारा ४ पृष्ठ ४६

इन आयतों से पूर्व हमने एक आयत लिखी है, जिसमें लिखा है, कि नबी इस्राईल समुदाय (उम्मत) को समस्त सृष्टि से श्रेष्ठता दी है और इन आयतों में है कि हज़रत मुहम्मद साहिब के समुदाय को सम्पूर्ण सृष्टि की उम्मतों में से अत्याधिक महत्ता और बढ़ाई प्रदान की है।

अब उक्त दोनों आयतों में से किस आयत को मान्यता दें और किसको निरस्त कर दें ? इसका निश्चय और निर्णय करना केवल इस्लाम धर्मानुयाईयों अर्थात मुसलमानों पर ही निर्भर हैं कि वह किसे सत्य माने और किसे मिथ्या मान कर त्याग दें ?

जिस आयत की हम चर्चा कर रहे हैं, उसका अगला भाग है, कि उस दिन किसी की सिफ़ारिश (अनुशंसा) स्वीकार नहीं होगी और न बदले में कोई वस्तु ली जायेगी। यही आयत कुर-

आन के पारा १ रकू १५/१५ और पारा २९ की सूरत मुदस्सिर में है। इन आयतों में यही है, कि किसी की सिफारिश किसी को लाभप्रद न होगी किन्तु इसके विपरीत देखिए, कि प्रथम तो लिखा कि-किसी स्थिति में सिफ़ारिश स्वीकार न होगी। अब देखिए:- ला यम्लेकूनश्शफ़ाअता इल्ला मनित्तख़जा इन्दर्रहमाने अहदा। कुरआन, पारा १६ रकू ६/९ सूरत मरियम

अर्थात:- नहीं पायेंगे अधिकार सिफ़ारिश का, किन्तु जिसने अल्लाह से इकरार प्राप्त कर लिया होगा।

फिर आयत है:-

योमएज़िल्ला तन्फ़उश्शफाअतो इल्ला मन अज़ेना लहूर्रहमानो वा रज़ेया लहू कौला। कुरआन पारा १६ रकू ६/१५ सूरत त्वाहा

अर्थात:-उस दिन लाभ न देगी सिफारिश किन्तु उसको कि वचन दिया है उसके हेतु ख़ुदा ने, और पसंद किया है उसके हेतु कहना। आगे है:--

मन ज़ल्लाज़ी यश्फ़ओ इन्दहू इल्ला बेइज़्नेही।

कुरआन पारा ३ रकू ३४/२

अर्थात:--कौन है, वह जो सिफ़ारिश करेगा, उसके निकट किन्तु उसकी आज्ञा के साथ।

इन समस्त आयतों का तात्पर्य यही है, कि ख़ुदा की आज्ञा से सिफ़ारिश कर सकता है। इस आयत की व्याख्या इब्ने कसीर में है:-

विना उसकी आज्ञा और अनुकूलता के किसी को साहस नहीं कि उसके समक्ष किसी की सिफ़ारिश में जिन्हा खोले, और हदीस शफाइत में है कि—मैं (मुहम्मद) ख़ुदा के सिंहासन के नीचे

जाऊँगा और सज़दे में गिर पड़ूँगा। अल्लाह तआला मुझे सज़दा में ही छोड़ देगा, जब तक चाहे। फिर कहा जायेगा कि अपना मस्तक उठा, कहो सुना जायेगा ! शफाइत की स्वीकृति की जाएगी। आप (हज़रत मुहम्मद) फरमाते हैं, कि मेरे हेतु सीमा निश्चित की जाएगी और मैं उन्हें स्वर्ग में ले जाऊँगा :

तफसीर इब्ने कसीर, पारा ३ पृष्ठ ८

पूर्व में जो आयतें लिखी थी कि किसी की सिफारिश स्वीकृत न होगी, इस आयत को देखें।

आयत:—

वा ला यम्ले कुल्लज़ीना यदऊना मिन् दूने हिश्शफाअता इल्ला मन शहेदा बिल्हक्के वा हुम यालमून्।

कुरआन पारा २५ रकू ७/१३ सूरत जुख़रफ़

अर्थात:- और उस दिन वह लोग मालिक न होंगे, जिन्हें कि काफिर पूजते हैं, अतिरिक्त खुदा के शिफाइत करने के अर्थात काफ़िरों के इष्टदेव-- जिन्न-मनुष्य-फरिश्तें और बुत (मूर्तियां) के मुशरिक उनकी सिफारिश की आशा रखने वाले हैं या आशा रखते हैं। वह उस दिन सिफारिश न कर सकेंगे। (अर्थात बुत सिफारिश न कर सकेंगे) किन्तु जिसने सत्य साक्ष्य दी हो-जैसे-फरिश्ते-हजरत ईसा हजरत अजीज कि उनको शफाअत (सिफारिश) करने का रुतबा (पद) प्राप्त है। ....और मौमिन पापियों के अतिरिक्त और अन्य किसी की सिफारिश न कर सकेंगे।

तफसीर कादरी, भाग २ पृष्ठ ४१२

ऊपर आपने देखा कि खुदा ने जो पूर्व में कहा था, कि कोई किसी कि सिफारिश न कर सकेगा अर्थात बुत (मुर्तियां) इत्यादि

सिफारिश न कर सकेंगे। उस बात को किस प्रकार उलट-फेर कर टाला जा रहा है ? और अब यह भी कह दिया कि कौन सिफारिश कर सकेगा ? हम पूर्व में सविस्तार लिख चुके हैं, कि किस प्रकार हज़रत मुहम्मद नर्क में जाते हुए पापी मुसलमानों को स्वर्ग में पहुँचायेगा और यह भी लिख चुके हैं, कि मुसलमान चोर-व्याभीचारीऔरअत्याचारी भी क्यों न हों, स्वर्ग को जाएंगे?

सिफारिश सम्बन्धी एक विस्तृत और लम्बी हदीस है। हम यहां उसको अरबी भाषा में न लिखते हुए मात्र यहां अर्थ ही लिख रहे हैं:-

प्रलय के दिन लोग अत्यधिक कष्ट में होंगे । लोग कहेंगे ....क्या देख रहे हो, क्या तुमको कुछ पहुँच रहा है, क्या तुम उस व्यक्ति की तलाश नहीं करते जो तुम्हारी सिफारिस करे? तब वह आदम के पास जायेंगे और कहेंगे–आप मनुष्यों के पिता है। आपको खुदा ने अपने हाथों निर्मित किया है, और अपनी रूह (आत्मा) आपके भीतर फूँकी। क्या आप हमारे कष्ट और असह्य दुखः को नहीं देखते ? अपने पालक (खुदा) से हमारी सिफारिश कर दीजिए। आदम कहेंगे–मेरा खुदा आज इस भांति गुस्सा (क्रोध) में है कि पूर्व में कभी ऐसे गुस्सा में न हुआ; और न भविष्य में ऐसा होगा, और उसने मुझे वृक्ष के फल से रोका था। मैंने उसकी अवज्ञा की 'नफ़्सी-नफ़्सी–नफ़्सी, अर्थात अपने-अपने हेतु ही। तुम किसी और के पास जाओ। फिर वह हजरत नूह के पास जायेंगे। नूह भी खुदा की वही स्थिति कहकर कहेंगे:- मेरी एक ही दुआ स्वीकृत थी, सो मैं अपनी कौम पर संताप मांगने हेतु काम में ले चुका। तुम किसी और के पास जाओ। फिर वह हजरत इब्राहीम के पास जायेंगे। वह भी खुदा की क्रोधित स्थिति का वर्णन कर कहेंगे--मैं तीन असत्य बोल चुका।

हूं, 'नफ़्सी--नफ़्सी--नफ़्सी' फिर वह लोग हज़रत मूसा के पास जायेंगे। वह भी खुदा की स्थिति बताकर कहेंगें-- मैं एक जान (प्राणी) की हत्या कर चुका हूं, 'नफ़्सी--नफ़्सी--नफ़्सी।' फिर सब लोग हज़रत ईसा के पास जायेंगें। वहां भी यही होगा, और किसी के पास जाओ, 'नफ़्सी--नफ़्सी--नफ़्सी।' फिर लोग हज़रत मुहम्मद साहिब के पास आयेंगें और कहेंगे--ऐ मुहम्मद! आप अल्लाह के अन्तिम रसूल हो। अल्लाह तआला ने आपके भूत और भविष्य (अगले-पिछले) के पाप क्षमा कर दिये हैं। आप हमारी सिफ़ारिश कर दीजिये। हज़रत ने कहा--मैं चलूँगा और सिंहासन के नीचे सज़दा में गिर जाऊँगा। फिर खुदा मुझ पर अपनी स्तुति और प्रार्थना के द्वार खोलेगा....... ....फिर कहा जायेगा-ऐ मुहम्मद! अपना मस्तक उठाओ, जो मांगों, दिया जायेगा और सिफ़ारिश करो, स्वीकृत की जायेगी। पस, मैं अपना मस्तक उठाऊंगा और विनती करूंगा-ऐ मेरे मालिक! उम्मती-उम्मती। ऐ मेरे मालिक! तब कहा जायेगा-ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत (समुदाय) के उन लोगों को, जिन पर हिसाब नहीं, शान्ति से स्वर्ग के द्वार में प्रविष्ट करो।

तज़रीदे बुखारी, भाग २ पृष्ठ २८० से ८२

इस भांति 'मुस्लिम' के इन बाब को देखिए:--

"बाब"

अद्दलीलो अला अंम्माता अलत्तौहीदे दख़लल्जन्नता कतअन।

पृष्ठ १०९

उबादा बिन सामत और अबू हुरैरा से अनेक हदीसें इस विषय में हैं:-

मन काला अश्हदो अन् ला एलाहा इल्लल्लाह............अद-ख़ला हुल्जान्नता।

पृष्ठ ११४

वाब है:-कहा जो कहा, तौहीद (अद्वैत) पर रहा अर्थात शिर्क न किया वह अवश्यमेव स्वर्ग में जायेगा।

अबादा और अबू हुरैरा से उद्धरण हैं, कि जिसने 'कलमः शहादत' पढ़ा, वह अवश्य स्वर्ग में जायेगा।

इस पर उमैर बिन हानि की हदीस मुस्लिम ने वर्णित की:-

अन ऊमैर बिन हानि फ़ी हाज़ाल् असनादे बे मिस्लेही ग़ैर अन्नहू काला अदख़लहुल्लाहुल्ज़ान्नता अला मा काला मिन अमलीन।

पृष्ठ ११५

उमैर बिन हानि से उद्धरण है-खुदा ऐसे कल्मागो लोगों को स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा, चाहे उनके अमल कैसे ही हों।

शफ़ाअत की तस्दीक (प्रमाणित) करने वाली जो हदीस मुस्लिम और बुखारी में है, वह निम्न हैं:-

शफ़ अतिल्मलाएकतो वा शफ़ अन्नबिय्यून। वा शफ़ल्मौमेनुना लम् यब्के इल्ला अरहमुर्राहमीन फ यलबुज़ो कब्ज़ातुम्मनन्नारे फ़ यख़रूजो मिन्हा कौमन लम् यालमू खैरन कत्तो।

अर्थात:-अल्लाह तआला फरमायेगा-फरिश्तों ने भी सिफ़ारिश की, नबियों ने भी शफ़ाअत की, मौमिनो ने भी शफाअत की और अतिरिक्त दयासागर खुदा के कोई शेष न रहा। बस, वह अग्नि में से एक मुट्ठी भरेगा और ऐसे लोगों को बाहर निकालेगा, जिन्होंने कभी कोई भलाई नहीं की।

बयानुल्कुरआन, पारा १ पृष्ठ ६०

यह प्रस्तुत हदीस अनेकों की सिफ़ारिश करना कह रही है। इस पर तफसीर हक्कानी में है:-

मोतज़ला (इस्लाम का एक सम्प्रदाय) इस आयत से यह

तर्क प्रस्तुत करते हैं, कि नबी कयामत को पापियों की सिफ़ारिश न करेंगे किन्तु उनका यह कथ्य उचित नहीं। क्योंकि आयतों का यह कथन है कि उसकी इच्छा के प्रतिकूल अपनी ओर से कोई सिफ़ारिश न कर सकेगा, और चूँकि उसकी इच्छा कुफ़्फार और मुशरिकों के इस सन्दर्भ में न होगी तो उनके हेतु कोई शफाअत करेगा ? जैसा कि इन आयतों के प्रकरण से ज्ञात होता है और शब्द 'इल्ला ब इज़्नेही' अर्थात ऊँचे स्वरों में कह रहा है—पापी मुसलमानों हेतु नबियों-औलियाओं और भलों के हृदय में उनकी दयालुता, उनकी शफाअत के भाव उत्पन्न करेगी और वह नम्रता और अत्याधिक विनित भाव से खुदा के समक्ष निवेदन करेंगे और वह अपनी कृपा से स्वीकार करेगा। ……… सहीह हदीसों में हज़रत मुहम्मद साहिब की शफाअतों का विवरण है।

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ २-३

इसी भांति की रटन्त तफसीर इब्ने कसीर में है:—

यह वाक्य **'ला युक्बलो मिन्हा शफाअतुन'** अर्थात किसी काफ़िर को न कोई सिफ़ारिश करेगा और न उसकी सिफ़ारिश स्वीकृत होगी।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ १८

इस आयत की व्याख्या में तफसीर मज़हरी ने लिखा:—

(न काम आएगा कोई किसी के कुछ) तात्पर्य यह है कि कोई किसी काफ़िर को किञ्चित लाभ न पहुँचा सकेगा। अर्थात यह नहीं कि मुसलमान भी, मुसलमान के काम न आएगा। अन्य दूसरे स्थान पर है, कि कुफ़्फ़ार के सिफ़ारिशकर्ताओं की भी सिफारिश लाभप्रद न होगी।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ १८

तफसीर मज़हरी में है, कि (न काम आएगा कोई किसी के कुछ) तात्पर्य यह है, कि कोई किसी काफ़िर को किञ्चित लाभ न पहुँचा सकेगा अर्थात यह नहीं कि मुसलमान भी, मुसलमान के काम नहीं आएगा । क्योंकि आयतें और हदीसें यह स्पष्ट कह रही है, कि नबी साहिबान और अन्य नेक बदे पापियों की शफाअत करेंगे और इस पर समस्त सत्यवादियों का सर्वसम्मत मत है (किसी सत्यवादी का यह मत नहीं हो सकता ?) साथ ही इब्ने कसीर ने 'ला युक्बेलो' और अबू उमर तथा याक़ूब ने 'ला तुक्बलो' पढ़ा है ।

अब आयत का अर्थ और परिणाम पुनः सुन लोः—

अर्थः— कि न स्वीकृत होगी और न कोई बदला लिया जाएगा और न उन्हें सहायता पहुँचेगी अर्थात वह अल्लाह के सन्ताप से सुरक्षित नहीं रहेंगे, किन्तु परिणाम यह निकाला किः— अल्लाह तआला का तात्पर्य इस आयत से यह है, कि काफ़िरों में से कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार सन्ताप दूर नहीं कर सकता ।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ ११२

इस आयत में काफ़िर और बेईमान व्यक्ति की ओर शफाअत की नफ़ी (अस्वीकृति) की गई है, न कि मौमिन पापियों की ओर से, और काफ़िर हेतु शफाअत सर्वसम्मत दृष्टि से स्वीकृत नहीं है । आजमुत्तफासीर, पारा १ पृष्ठ १६२

'मोतज़ला' कहते हैं, कि बड़े पापकर्ता हेतु कयामत के दिन कोई शफाअत स्वीकृत नहीं होगी । क्योंकि आयत की प्रत्यक्ष आज्ञा समस्त पर प्रभावित हेतु है । इस बात को प्रमाणित करती है कि उस दिन किसी की भी शफाअत स्वीकृत न होगी । (एक

ही नहीं ऐसी अनेक आयतें हैं, उन सबों का तात्पर्य यही है, कि 'न शफाअत स्वीकृत होगी, न बदल लिया जायेगा'।)

'अहले सुन्नत' इसके उत्तर में कहते हैं, कि अत्याधिक 'नसूस जलिय्या' अर्थात प्रमाणिक आज्ञा और मतबातर (अत्याधिक) हदीसें शफाअत के वक़ूअ [प्रमाणित] पर दलालत (समर्थन) करती है। फिर यदि यह आयत सर्वथा शफाअत के न होने पर प्रामाणिक मानी जाए तो इसमें और उनमें तआरज [विरोधाभास] आएगा। [ऐसी स्थिति में जब मतभेद आता है।] तो उस समय इस आयत की तख़सीस व तक्सीद [विशेषता और संशोधन] अनिवार्य होगा। [क्या प्रतिबन्ध लगेगा ?]

हमारे विचार में यह आयत काफ़िर और बेईमान से विशेष सम्पृक्त है, और इस आयत का अर्थ यह है कि कयामत के दिन ख़ुदा की आज्ञा के बिना किसी की शफाअत स्वीकार न होगी। कारण-यह कि अत्याधिक आयतों में शफाअत की अस्वीकृति इसी प्रतिबन्ध सहित की गई है। जैसे–उस दिन न लाभ देगी शफाअत किन्तु ख़ुदा की आज्ञा से, और उसकी आज्ञा के बिना कोई शफाआत नहीं कर सकता....,..........इत्यादि। अन्य हदीसों पर दाहिनी ओर प्रमाण है, कि बेईमान के अतिरिक्त समस्त पापियों की शफाअत स्वीकृत होगी। इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि मात्र काफ़िर ही शफाअत से वञ्चित हैं, और मुकाम वा तक़ाजा अर्थात प्रकरण का उद्देश्य भी यही है कि इस आयत में इस प्रकार की शफाअत हेतु प्रतिबन्ध हो। क्योंकि यह आयत पुस्तकवालों (यहूदियों व ईसाईयों) और उनके साथियों के मिथ्या विचार दूर करने हेतु वारिद (आगमन) हुई हैं।

तफसीर आज़मुत्तफासीर, पारा १, पृष्ठ १६२-६३

पाठक बन्धुओं ! आपने कुरआन के भाष्यकारों की आपाधापी और भारी घबराहट देख ली, कि किसी भांति आयत के उचित अर्थ में मनमाने अनर्थ उत्पन्न कर कुछ का कुछ अभिप्राय प्रकट कर रहे हैं। आयत तो स्पष्टतया कह रही है, कि किसी की न तो सिफारिश स्वीकृत होगी और न कोई बदला ही लिया जाएगा। यह भी स्मरण रहे कि समस्त व्याख्याकारों ने एक ही आयत लिखी है, जो गलत है। तीन आयतें तो हम ही उद्धृत कर चुके हैं, सम्भवत: अभी कुरआन में और भी होगी ? आयत के अर्थों पर इस हेतु प्रतिबन्ध लगाया जाय कि इस्लाम का सिद्धान्त ही समाप्त होता है और अनेक हदीसें भी मिथ्या सिद्ध होती है, तथा हज़रत मुहम्मद के समस्त आश्वासन भी समाप्त हो जाते हैं। साथ ही कुरआन की अनेक अन्य आयतों में भी मत-भेद अन्तर और विरोधाभास दृष्टिगोचर होता है, तो इस आयत के अर्थ या इन समस्त आयतों के अर्थों में इसलिए परिवर्तन किए जा रहे हैं, कि हदीसों और अन्य दूसरी आयतों से विरोध आता है। यह तो यहां पर मुस्लिम व्याख्याकारों का अपना इकरार है, कि दूसरी आयतों और हदीसों से विरोध न आये। इसलिए शफाअत तो होगी किन्तु मुस्लिम पापियों की ही होगी। काफ़िर की शफाअत इस आयत में निषिद्ध है। केवल मुस्लिम पापियों की शफाअत होगी। क्यों होगी ? इसलिए कि अन्य हदीसों व आयतो में हैं।

अब आप इस युक्ति को सोचें और विचारें कि इस आयत को किस सीमा तक सत्य की कसौटी पर परखा जा सकता है ? हम तो स्थान-स्थान पर आयतों में उपलब्ध मतभेद–अतर और विरोधाभासों को उजागर करते जा रहे है, और आगे भी यह और भी स्पष्ट करेंगे कुरआन में किसी एक स्थान पर या मात्र

एक-दो आयतों में कहीं कुछ पारस्परिक अन्तर हो, तो उस पर कुछ विचारा भी जाए किन्तु यहां तो आयत-आयत में परस्पर मतभेद और विरोध प्रकट हैं। एक गाथा है, जो हमारे चर्चित विषय से सम्पृक्त है। सम्भवतः हम इसे पूर्व में भी कह चुके हों। गाथा यह है:--

एक मुसलमान को यमदूत नर्क ले जा रहे थे। जिसे देख कर हज़रत आदम ने हज़रत मुहम्मद को सूचना दी--तेरी उम्मत (समुदाय) के एक बन्दे (भक्त) को नर्क में ले जाया जा रहा है। हज़रत मुहम्मद ने कहा—मैं उन फरिश्तों के समीप जाकर कहूँगा-ऐ अल्लाह के कासिदों! तनिक ठहर जाओ। वह कहेंगे-हम शक्तिशाली खुदा के बन्दे हैं। हम उसकी आज्ञानुसार कार्य करते हैं। जब हज़रत निराश हो जाएँगे तो बाँए हाथ की मुट्ठी में अपनी दाढ़ी पकड़ कर अर्श की ओर मुँह कर कहेंगे और यह प्रार्थना करेंगें- मेरे मालिक! तूने मुझसे वायदा किया था, कि मुझे मेरी उम्मत के विषय में लज्जित न करेगा। तुरन्त अर्श (सिंहासन) से आवाज़ आएगी- मुहम्मद का कहना मानो और इस बन्दे को तौल के स्थान पर लौटा लाओ। तो वह ले आएँगे। हज़रत मुहम्मद ने फरमाया- फिर मैं पौरे के समान एक सफेद पर्चा 'विस्मिल्लाह' कह कर तराजू के पलड़े में डाल दूँगा। जिससे नेकियों का पलड़ा झुक जायेगा। तत्काल आवाज़ आएगी-सफल हुआ, इसे स्वर्ग ले जाओ।............

तिब्रानी ने हज़रत इब्ने अब्बास के कथनानुसार लिखा है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-- शपथ है उसकी जिसके हाथों में मेरी जान है। यदि सब के सब आसमान और भूमि और उनके भीतर की भौतिक सृष्टि तथा दोनों के मध्य की समस्त उत्पन्न वस्तुएं व भूमियों के नीचे की सृष्टि समस्त लाकर तराजू

के एक पलड़े पर और 'ला इलाह इल्लिल्लाह' की साक्ष्य दूसरे पलड़े में रख दें, तो यह 'ला इलाह' वाला पलड़ा समस्त से भारी होगा।

तफसीर मजहरी, पारा ८, सूरत एराफ़ पृष्ठ २६८ से ७०

सत्याभिलाषी सज्जनों ! ऐसी ही मिथ्यापूर्ण और अंधविश्वासयुक्त गाथाओं को सुना सुना कर मुसलमानों को हज़रत मुहम्मद ने अपना अनुयाई बनाया है और उन्हें ऐसे मिथ्या वाक्यजाल में फाँसा गया है, कि जिसे कोई भी विवेकशील व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता ? किन्तु मुसलमान हैं; कि विद्वान और विवेकशील होते हुए भी वह ऐसी असम्भव गाथाओं पर विश्वास किये हुए हैं। जिन्हें देखकर महान आश्चर्य होता है।

पाठक बन्धुओं ! उपर्युक्त दोनों प्रकार की आयतों का विवरण और अत्याधिक हदीसें इस विषय के सन्दर्भ में आपके समक्ष रख दी है। प्रथम आयतें वह हैं; कि जिनमें कहा गया है-उस दिन से डरो जिस दिन कोई व्यक्ति किसी के काम न आएगा और न किसी की सिफारिश स्वीकार होगी न कोई बदला लिया जायेगा और न कोई सहायता प्राप्त होगी । कुरआन में ऐसी अनेक आयतें हैं, और द्वितीय प्रकार की वह आयतें हैं, कि जिनमें कहा गया है-सिफारिश ख़ुदा की स्वीकृति से की जाएगी किन्तु सिफारिश मात्र मुसलमानों की ही होगी । काफिर सिफारिश का अधिकारी नहीं है।

यह भी हम लिख चुके हैं कि हज़रत मुहम्मद किस-किस प्रकार और कैसे सिफ़ारिश तथा सहायता करेंगे । यह ऐसी आयतें हैं, कि जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है, कि कुरआन उस जगतकर्ता परमेश्वर की वाणी या ज्ञान नहीं है।

व्याख्याकारों ने लिखा कि इस आयत पर किञ्चित प्रतिबन्ध लगाना पड़ेगा, क्योंकि आयत के अर्थ स्पष्ट करने से दूसरी आयतों से विरोधाभास उत्पन्न होता है और इस विषय में हदीसें जो अत्याधिक हैं, उनसे भी मतभेद प्रकट होता हैं। इसीलिए यह मानना होगा कि आयत काफिरों हेतु शफाअत पर प्रतिबंध लगाती है और मुसलमानों पर नहीं। अब आगे आयतें हैं:—

वा इज नज्जैना कुम्मिन आले फ़िरऔना यसूमूनकुम सूअल अज़ाबे योजब्बेहूना अब्ना आकुम् वा यस्तहयूना निसाआकुम् वा फ़ीज़ालेकुम् बला उम्मिर्रब्बेकुम् अज़ीम। वा इज़ा फ़रक़ना बेकुमुल्बहरा फ़अन्जैनाकुम वा अग़रक़ना आला फ़िरऔना वा अन्तुम तन्ज़ोरून्।

कुरआन, पारा १ सूरत बकर, आयत ५०-५१

अर्थात:-और (उस समय को स्मरण करो) जब कि हम (खुदा) ने तुमको फिरऔनवालों से छुटकारा दिया। वह तुमको महान सन्ताप देते थे। तुम्हारे पुत्रों को मृत्यु के घाट उतारते थें, और तुम्हारी पुत्रियों को जीवित रहने देते थे, और इसमे तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से महान परीक्षा थी, और (उस समय को स्मरण करो) जब कि हम (खुदा) ने तुम्हारे हेतु सागर को फाड़ दिया, और तुमको बचा दिया, और फिरऔनियों को तुम्हारे देखते-देखते ही डूबो दिया।

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ११५-१६

उपरोक्त जो आयत हमने उद्धृत की है। यही आयत कुरआन पारा ९ रकू १७/७ सूरत एराफ में और पुनः पारा १३ रकू १/१३ सूरत इब्राहीम में भी दुहराई गई है, किन्तु 'नज्जैनाकुम' के स्थान पर 'अन्जाकुम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

कुरआन में इस आयत से हज़रत मूसा का वर्णन प्रारम्भ

हुआ है, तथा हज़रत मूसा की कहानी अत्याधिक विचित्र ढंग से लिखी गई है। यहां हम हज़रत मूसा के सम्पूर्ण किस्से का वर्णन नहीं करते हुए मात्र उपरोक्त लिखित आयत के सम्बन्ध में ही लिखेंगे, किन्तु मूसा की यह कहानी कुरआन में किस प्रकार विश्रृंखल रूप में है, यह किसी भी विद्वज्जन या भाषाशास्त्री को रूचिकर नहीं हो सकती है। क्योंकि इस कहानी में क्रमबद्धता और सूत्र का तारतम्य नाममात्र का भी न होकर यह मूसा की गाथा कुरआन में एक मिथ्या-अंधविश्वास का पुलिन्दा मात्र ही है। इसके विषय में तफसीर आज़मुत्तफासीर के व्याख्याकार ने भाष्य किया है, उसे भी पढ़ लें। लिखा है कि:—

इस कहानी को कुरआन मजीद की अनेक सूरतों में कहीं अजमालन (सक्षेप में) और कहीं तफसीलन (विस्तारसहित) कही है। कहानी का उद्धरार्ध अंश प्रथम और पूर्वाद्ध अंश पश्चात, कहीं कम और कहीं अधिक वर्णित किया है।

आजमुत्तफासीर, भाग पृष्ठ १६४

हम कहते हैं, कि खुदा के कलाम (वाणी) में क्या इस प्रकार की शैली सम्भव है ? कहीं कुछ और कहीं कुछ, जहां जो जी चाहा सो कह दिया अथवा लिख दिया। आयत में जिन लोगों के हेतु उपकारों का वर्णन हैं, वह तो ३ हजार वर्षों से भी अधिक समय से कब्रों में सड़-गल चुके हैं, किन्तु आयत मे वर्तमान बनी इस्राईलियो को सम्बोधित कर अपने उपकारों की ओट में इन लोगों को इस्लाम की ओर लाना चाहा है। मानो खुदा इस्लाम का जिम्मेवार नेता हो। अतः उसके उपकारों के आभार-स्वरूप इस्लाम ग्रहण करना ही चाहिए। ऐसे प्रतिकार से खुदा प्रसन्न होगा। अब इन आयतो के विषय में जो सफा

तफ़सीर हक्क़ानी ने प्रस्तुत की है, वह भी पढ लें। लिखा है कि:-

ख़ुदा तआला अपनी नेमतों (उत्तम पदार्थों तथा उपकारों) का वर्णन करता है और प्रत्येक घटना का स्मरण कराता है, ताकि अन्य लोगों को सुन कर शिक्षा व रुचि हो, और बनी इस्राईल के दिल नर्म हो और सन्मार्ग पर आएं, किन्तु यह ज्ञात रहे कि इन घटनाओं के वर्णन से उद्देश्य केवल अपनी नेमतों और आज्ञाओं पर कष्ट तथा दण्ड को स्मरण कराना है। न कि तरतीब (शृंखला) के साथ आदम तथा बनी इस्राईल का इतिहास वर्णन करना है। जैसा कि ख़ुदाई पुस्तक तौरात आदि इतिहास की पुस्तक में हैं, जिनको वह इलहामी (ईश्वरीय ज्ञान) कहते हैं। इसलिए पूर्व की घटना को पश्चात और पश्चात की घटना को पूर्व में और कभी संक्षिप्त और कभी विस्तारसहित वर्णत करता है और मात्र मूसा की घटनाएं ही वर्णित नहीं करता अपितु उससे पूर्व और पश्चात की घटनाएं भी हैं, और मिश्र देश में उनके रहते समय तक और वहां से निकल कर किन्आन देश में आते समय के, और वहां पहुँच कर जो कुछ हुआ। वह बताता है।

तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ११५

हम भी तो यही कहते हैं कि शृंखला-तारतम्य और व्यवस्थित शैली तो शिक्षित और विद्वान व्यक्ति की भाषा में ही होते हैं। ख़ुदा को इनकी क्या आवश्यकता? यदि ख़ुदा की भाषा भी व्यवस्थित शृंखलाबद्ध हो तो फिर अन्तर ही कैसा होगा और कैसे पहचाना जाएगा कि यह ख़ुदा का कलाम है?

व्याख्याकार महोदय ने कुरआन की विशृंखल और तारतम्यहीन शैली व इतिहास के प्रतिकूल तथाकथित वाणी का

कोई समाधान और सन्तोषप्रद उत्तर न प्रस्तुत कर खुदा की वकालत उपर्युक्त शब्दों में की है, कि खुदा ने आदम और मूसा का इतिहास नहीं लिखा है। अतः घटनाओं का उल्लेख तो मात्र शिक्षा हेतु ही किया है। इस समाधान या निराकरण को उन लोगों के अतिरिक्त और कोई नहीं मान सकता जिन्होंने अपने विवेक और बुद्धि को किसी व्यक्ति के लिए भेंट चढ़ा दिया हो।

हमारी दृष्टि में खुदा की वाणी सरस-सुन्दर और सर्वांग व सम्पूर्ण होना चाहिए। उसमें कोई कटुता-त्रुटियां या अंतर नहीं होना चाहिए। क्योंकि खुदा की वाणी तो प्रत्येक दृष्टि से मनुष्य का पथ-प्रदर्शक होती है। इससे तो तौरात की कहानियां ठीक ढंग से लिखी गई है। मौलाना साहिब। आपने जो अन्तिम दो पंक्तियां लिखी है, उसे ही तो इतिहास कहते हैं। इस चर्चित आयत के सम्बन्ध में इब्ने कसीर में है कि हमने बनी इस्राईल को बचाया और वह बचाव तथा छुटकारा क्या था? इन आयतों में खुदा की आज्ञा है :-

ऐ याक़ूब के बेटों। मेरी उस कृपा को स्मरण रखो कि मैंने तुम्हें फ़िरऔनियों के अत्यन्त घातक कष्टों से छुटकारा दिया (यह फिरऔन की चर्चा कैसे चली?) फिरऔन मिश्र का शासक था। (उसका नाम वलीद बिन मसअब बिन रयान था) उसने एक स्वप्न देखा कि बैतुल्मुक़द्दस से एक अग्निशिखा भड़की जो मिश्र के प्रत्येक कब्ती के घर में घुस गई और बनी इस्राईलियों के घरों में नहीं गई। जिसका परिणाम यह समझा गया कि बनी इस्राईल में एक व्यक्ति होगा, कि जिसके द्वारा फिरऔन का अभिमान खण्डित होगा और उसके खुदाई दावे के बदले उस व्यक्ति से फिरऔन को भयकर दण्ड मिलेगा। इस कारण फिर-औन ने आज्ञा प्रसारित की, कि बनी इस्राईल में जो लड़के

उत्पन्न हो उनको मार दिया जाए और बनी इस्राईलियों से कड़ी बेगार ली जाए तथा सश्रम कार्यों का भार उन पर डाल दिया जाए। इन कष्टों से मुक्ति दिलाने का संकेत इस आयत में है।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ १९

मिश्र के प्रत्येक शासक को फिरऔन कहते थे। इस आयत का अर्थ तफसीर मजहरी में निम्नानुसार हैं:-

'वा इजा नज्जैनाकुम' और स्मरण करो जब हमने तुझको छुड़ाया (अर्थात तुम्हारे पूर्वजों को) 'मिन आले फिरऔना' फिरऔन के लोगों से। तुम्हें कडा कष्ट देते थे, 'यसूमूनकुम' फिरऔन बनी इस्राईल को विभिन्न प्रकार के सन्ताप में रखता था। घरों का निर्माण, कृषि कार्य, बोझ उठवाना, जजिया लेना, उनकी स्त्रियों से सूत कतवाना, 'सुअलअजाब, सख्त पीड़ा देता था 'यूजब्बेहना अब्ना आकुम' तुम्हारी पुत्रियों को जीवित रखता था।

अल्लामा बग़वी का कथन है कि उसके उपरान्त फिरऔन ने यह आदेश प्रसारित किया, कि बनी इस्राईल में जो लड़के उत्पन्न हो उन्हें मार दिया जाए और यह आज्ञा नगर की समस्त दाईयों को एकत्रित कर सुना दी गई। कहते हैं कि उसने १२ हजार लड़के कत्ल कराये; वहब कहते हैं, कि मुझे जानकारी मिली है कि ९० हजार बच्चे कत्ल करवाये। फिर बनी इस्राईल के वृद्धों में रोग फैल गया। कब्तियों के उच्च वर्ग ने यह स्थिति देखकर फिरऔन से कहा-वनी इस्राईल के बच्चे तो आपकी आज्ञा से मारे जा रहे हैं और वृद्ध अपनी मौत मर रहे हैं। यदि यही स्थिति रही तो बनी इस्राईल सर्वथा नष्ट हो जायेंगे और समस्त बेगार हम पर आ पड़ेगी, और कोई बेगारी मजदूर हमें न मिल सकेगा। इस पर फिरऔन

से आज्ञा दी कि एक वर्ष बच्चे कत्ल किये जायें और एक वर्ष छोड़ दिये जाएं। हारून छोड़ देने वाले वर्ष में और मूसा कत्ल होने वाले वर्ष में उत्पन्न हुए 'फी जालेकुम बलाउ मिर्रब्बेकुम् अज़ीम' इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से महान परीक्षा थी। (देखिए ! खुदा की परीक्षा पूर्ण हो गई और बनी इस्राईल के लाखों बच्चे मर गए। क्या खुदा अल्पज्ञ था कि परीक्षा करता था और इस खूनी पद्धति के अतिरिक्त खुदा को परीक्षा हेतु और कोई अन्य माध्यम न मिला ?) 'बलाउन' के अर्थ हैं अजमायश (परीक्षा) के (परीक्षा क्या है ?) परीक्षा कभी तो भयकर सन्ताप (शिद्दते अजाब) से होती है। उस समय परीक्षा होती है, कि क्या सन्तोष करते है या नहीं ? दूसरे—कभी उत्तम पदार्थों और स्वतन्त्रता से होती है। उस समय यह जांच होती है, कि बन्दे धन्यवाद करते हैं या नहीं ? जैसा कि खुदा ने एक अन्य दूसरे स्थान पर आदेश दिया है:—

वा नब्लूकुम बिश्शर्रे बल् खैरेफ़ित्नतुन ।

कुरआन पारा १७ रकू ३/३

अर्थात:-और हम (खुदा) तुम्हें बुराई और भलाई से अज़माते हैं। (आपने खुदा की परीक्षा कसौटी देख ही ली। कैसी उत्तम पद्धति है। साधारण अधिकारी परीक्षा करते हैं, तो खुदा क्या कोई उनसे कम थोड़े ही है ?) 'वा इज़ा फ़रक़ना बे कुमुल्बहरा' और स्मरण करो जब हमने तुम्हारे हेतु सागर फाड़ा। यह घटना यों हुई कि जब फिरऔन की मृत्यु का समय निकट आया और सत्य स्वरूप भगवान ने मूसा को आज्ञा दी, कि बनी इस्राईल को लेकर चलो। मूसा ने कह दिया, कि रातोरात यहां से निकल चलो और समस्त तैयारियां घरों के भीतर ही करो ताकि किसी को कानोंकान सूचना न मिले और (कश्तियों में जितने हरामी

(वर्णशकर) लड़के थे ।) उन सबको अल्लाह ने वनी इस्राईल में एकत्रित किया और बनी इस्राईल में जो कब्तियों के हरामी (अवैधानिक) थे, खुदा ने उन्हें वहां भेज दिया और कब्तियां में मरी (महारोग) पड़ी तो अत्याधिक कब्ती मर गए । प्रातः तक वह कब्ती उनकी मृत्यु क्रिया में व्यस्त रहे और मूसा ६ लाख या इससे भी अधिक बनी इस्राईलियों को लेकर मिश्र से निकले। अभी निकले ही थे, कि मार्ग भूल गए । मूसा ने वृद्ध लोगों को बुलाकर पूछा क्या करें ? उन्होंने कहा–जब हज़रत यूसुफ की मृत्यु होने लगी तो उन्होंने वसीयत की, कि तुम जब मिश्र से निकलो तो मुझे साथ लेकर निकलना । इसी कारण हम मार्ग भूल गए । जब तक हम उनका शरीर साथ न लेंगे, तब तक मार्ग नहीं मिलेगा ।......................अब उनकी कब्र की तलाश होने लगी, तो कब्र का ज्ञान एक वृद्धा को था । उसने कहा यूसुफ की कब्र नील सागर के मध्य हैं । नील के मध्य से कब्र कैसे मिले ? इस पर मूसा ने खुदा से निवेदन किया । तत्काल सागर फट गया और कब्र प्रत्यक्ष हो गई । आपने वहां से ताबूत निकलवा कर लदवा लिया ।...................मार्ग मिल गया । (कैसी कपोल-कल्पित और मनघड़न्त कथा है ।) इधर जब फिरऔन को बनी इस्राईल के फरारी का पता चला तो उसने आदेश दिया कि मूर्गे बोलते ही वनी इस्राईल की तलाश में चल पड़ो । (अभी तो कह रहे थे कि प्रातःकाल तक मृत्यु क्रिया में वह लोग लगे रहे और अब मूर्गे की बांग के समय निकल भी पड़े । खुदा की खुदाई कि उस रात कोई मूर्गं ही न बोला । बोलता भी कैसे ? क्या खुदा के पास मुँह पर लगाने वाली मुहरें समाप्त थोड़े हो हो गई थी ?). प्रातः फिरऔन और उसके आगे-आगे हायान १ करोड़ ७ लाख आदमी लेकर निकला और ७० हजार काले घोड़े भी थे । वनी इस्राईल अभी सागर तक ही पहुँचे थे कि दिन निकल

चुका था। इस्राईली फिरऔन को देख कर विस्मत रह गए और उनके पाँव तले की मिट्टी खिसक गई:—

फ़लम्मा तरा अल्जम्आने काला अस्हाबो मूसा ल मुदरकून। काला कल्ला, इन्ना मएया रब्बी सयहदीना फ़ औ हैना इला मूसा अनिद्रिब रिब्आ सा कल्बहरा। फ़न्फ़ल फ़काना कुल्लो फ़िर्किन कत्तौदिलअज़ीम्। कुरआन, पारा १६, रकू ४/८

अर्थात:-दोनों समुदाय जब एक-दूसरे को देखने लगे तो मूसा के लोग कहने लगे-हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा-कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब्ब है, जो मुझे राह दिखायेगा। तब खुदा ने मूसा को आज्ञा दी-अपना असा (डंडा) सागर पर मार (मूसा ने मारा) तो सागर फट गया, तो प्रत्येक टुकडा विशाल पहाड़ जैसा हो गया। १२ समुदायों हेतु १२ मार्ग बन गए और प्रत्येक दो मार्गों के मध्य पानी इतना ऊँचा हो गया कि पहाड़ की भांति दिखने लगा। अल्लाह ने वायु और धूप के द्वारा दम के दम में मार्ग सूखे कर दिये और प्रत्येक समुदाय ने अपना-अपना मार्ग लिया, और पानी इतना ऊँचा चढ गया था, कि चलने में एक समुदाय, दूसरे समुदाय को न देखता था, तो वह इससे भयभीत होने लगे कि कहीं हमारे भाई डूब न गये हों। खुदा ने इस भय को भी दूर कर दिया और पानी में मोर्चे खोल दिये, तो परस्पर एक--दूसरे को देखने और बातें सुनने लगे तथा इसी प्रकार कुशल-मंगलसहित पार हो गए। पस, तुमको बचा लिया और फिरऔन के लोगों को डूबो दिया।(अब कैसे डूबोया यह भी तनिक देख लो।) जब उसने देखा कि सागर फटा हुआ है और माग बने बनाए हैं, तो अपने लोगों से बड़े गर्व से फ़िरऔन कहने लगा-देखो! सागर मेरे भय से इसलिए फट गया है, कि अपने गए हुए भक्तों को पकड़ लूं।

फिरऔन एक काले घोड़े पर सवार था, और सारी सेना में घोड़े ही घोड़े थे, घोड़ी नहीं थी, तो हज़रत जिब्रील खुदा की आज्ञा से घोड़ी पर सवार होकर आये और फिरऔन के आगमन के पूर्व सागर में घुस गए। फिरऔन का घोड़ा मादा (घोड़ी) की गन्ध पाकर उसके पीछे ही सागर में हो गया और फिरऔन बिल्कुल विवश हो गया। साथ में जितने घुड़सवार थे, वह भी फिरऔन के घोड़े के पीछे-पीछे हो लिये। हज़रत मेकाईल एक घोड़े पर सवार होकर फिरऔन की कौम के पीछे-पीछे आए और सभी को आगे धकेला तथा कहते चले:-- चलो--चलो, शीघ्र अपने साथियों से मिलो। यहां तक कि समस्त सागर में घुस गए। जब वह सब के सब जल में आ गए (कितने थे ? १ करोड ७ लाख) तो जो मार्ग बनी इस्राईलियों हेतु बनाये थे, बराबर हो गए और समस्त डूब मरे। [देखो मानते हो न अल्लाह को उस्ताद ! आखिर वह भी तो पुराना खिलाड़ी निकला और फरिश्तों को आगे और पीछे लगा कर कैसा दाँव मारा कि घोड़ी को देखकर घोड़े की तबीयत मचल गई और सब के सब डूब मरे, और फिर सागर भी कितना गहन और विशाल कि फिरऔन और उसके साथ के १ करोड़ ७ लाख व्यक्ति उसमें समा गए ?)

मिश्र के निकट कौन सा सागर था ? इसमें मतभेद है। (मतभेद किसमें नहीं ?) कोई कहता है-- 'बहरे कुल्ज़म' जो फ़ारस के सागरों में एक हैं।

कतादा कहते हैं-- मिश्र के आसपास एक सागर (दरिया) जिसे 'असाफ़' कहते हैं, वह था।

'व अन्तुम तन्ज़ोरून' और तुम देख रहे थे। अर्थात उनके डूबने का स्थान देख रहे थे।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ २१३ से १६

पाठक बन्धुओं ! यह हाल है, कुरआन और कुरआन के व्याख्याकारों का ? कि क्या कहना उचित है और क्या नहीं ? जैसा कि ऊपर ही कहा है-- कि तुम देख रहे थे। यह लोग कहाँ से देख रहे थे ? क्योंकि यह घटना तो सम्भवतः हज़रत मुहम्मद से ३ हजार ५०० वर्षों पूर्व की है, और सम्बोधित किया जा रहा है, हज़रत मुहम्मद के समकालीन बनी इस्राईलियों को--"और तुम देख रहे थे।"

इस पर भी ध्यान दीजिए की फारस के दरियाओं में से एक दरिया 'बैहरे कुल्ज़म' था। । फिरऔन मूर्ग की बांग अर्थात लगभग ४ बजे के समय १ करोड़ ७ लाख व्यक्तियों को लेकर चला और सूर्योदय अर्थात मात्र २ घटों में मिश्र से वहां पहुँच गया ? उस युग में कोई जेट विमान तो थे ही नहीं, जो फिरऔन प्राप्त कर लेता और केवल २ घंटों में मिश्र से उड़ कर 'बैहरे कुल्ज़म' जा पहुँचता ? हां। कतादा के कथनानुसार--मिश्र के आसपास जो 'असाफ़' नामक सागर (दरिया) था।· वह मिश्र के कितने निकट और कितने दूर था ? यह तो कतादा ही जाने कि २ घटों में इतनी विशाल सेना दरिया तक कैसे पहुँच सकती है, और इतने खुले मार्ग उनको मिल गए कि जिन पर चल कर समस्त अर्थात १ करोड़ ७ लाख लोग दरिया तक पहुँच गए और सब के सब जल में डूब मरे और वह भी अपने घोड़ों सहित ? आश्चर्य की बात है, आखिर इतने व्यक्तियों और उनके घोड़ों को खड़े रहने हेतु कितना स्थान होना चाहिए ? दरिया कितना चौडा था कि उसमें एक ही समय में १ करोड़ ७ लाख व्यक्ति और उनके घोड़े सभी समा गए और मर भी गए ?

विचारणीय है, कि ऐसी-ऐसी कपोल-कल्पित, मनघडन्त और असम्भव बातें लिपिबद्ध कर कुरआन के भाष्यकरों ने लागों

को मूर्ख बनाया है। विवेकशील मुसलमानों को ऐसी असम्भव बातों के विषय में सोचना–समझना चाहिए और इस्लाम की ओट में मनघडन्त मिथ्या कल्पनाओं का परित्याग कर सन्मार्ग ग्रहण करना चाहिए।

उपरोक्त चर्चित आयत में तो मात्र इतना ही किस्सा है, किन्तु किञ्चित जानकारी मूसा के विषय में भी प्राप्त कर लेना आवश्यक है, और यह जानकारी भी तफसीर आजमुत्तफासीर में इसीं आयत की व्याख्या में लिपिबद्ध किया है;-

जब हज़रत मूसा उत्पन्न हुए तो ज्योतिषियों और पुजारियों ने एकत्रित होकर फिरऔन को कहा–जो लड़का तेरे शासन का सर्वनाश करेगा। उसका सितारा आज रात्रि को निकला है। फिरऔन ने हज़रत मूसा की अत्यधिक खोज की किन्तु पता न लगा। ईधर हज़रत मूसा की माता अत्याधिक चिन्तित थी, कि इस बच्चे को फिरऔन काट डालेगा। अन्ततः हज़रत मूसा की मां ने ईश्वरीय आज्ञानुसार एक सन्दूक में बन्द कर अति दुख क्लेशसहित दरियाए नील में डाल दिया। फिर मूसा की बहिन से कहा-वह ध्यान रखे कि यह कहां जाता है ? यदि यह नगर से निकल गया तो इसके जोवन की आशा हो सकती है। वह सन्दूक नीलसागर में बहते हुए उस नहर में जा पहुँचा, जो कि फिरऔन के महल में जाती थी। दासियों ने जब सन्दूक को नहर में आते देखा, तो उठा कर उसको फिरऔन और उसकी पत्नि के पास ले गई। उस समय फिरऔन और उसकी पत्नि आसिया महल के झरोखों से नहर का दृश्य देख रहे थे। फिरऔन ने जब उसको खोला और उसमें बच्चे को देख कर उसने उसे कत्ल कराने का विचार किया, किन्तु उसकी पत्नि आसिया ने उसे रोक दिया और अपना पुत्र बना कर धाया को बुलाया। लेकिन हज़-

रत मूसा ने किसी का दूध न पिया किन्तु जब हज़रत मूसा की मां आई, तो अत्याधिक प्रसन्नतासहित उसका दुग्धपान प्रारम्भ कर दिया, और मूसा की मां ही उसको दूध पिलाती रही और एक अशर्फ़ी दैनिक उसको मिलती थी। पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाया। मूसा के स्वभाव (आदतों) को देख कर कई वार फ़िरऔन ने उसके कत्ल हेतु आज्ञा दी, परन्तु उसकी पत्नि ने सदैव ही उसे बचा लिया। यहां तक कि मूसा युवा हो गया और कब्तियों द्वारा जो कष्ट बनी इस्राईलियों को दिये जाते थे। उनको देखकर वह अत्याधिक दुखी होते थे। एक दिन बनी इस्राईल के सरदारों को आमंत्रित कर कहा—यह कठोरता और संताप तुम्हारे कर्मों के फल हैं। जब मूसा ३० वर्ष के हो गए तो एक दिन बाज़ार में चले जा रहे थे, कि एक कब्ती, एक बनी इस्राईली के सिर पर लकड़ियों का एक गठ्ठर उठवा कर बादशाह के रसोईघर में ले जाना चाहता था। उसके इन्कार करने पर उसको बुरी तरह मारता था। उसने मूसा को देख कर फ़रियाद की। जब कब्ती को समझाने पर भी न माना तो मूसा ने उसके मस्तक पर ऐसा घूंसा मारा, कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसी प्रकार, जब दूसरे दिन हज़रत मूसा बाज़ार गए तो उसी इस्राईली पर एक कब्ती को अत्याचार करते देखा। उसने हज़रत मूसा को देखकर चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। जब मूसा ने मारने वाले कब्ती को पृथक करना चाहा, तो उसने समझा कि मुझे मारने को हाथ बढ़ाया है। पुकार कर कहने लगा-- लोगों देखो! कल जिस प्रकार मूसा ने एक कब्ती को मार डाला था। उसी प्रकार आज मुझे भी मारना चाहता है। बाज़ारी मनुष्यों ने फ़िरऔन के पास साक्ष्य दी, कि कल एक कब्ती मूसा के हाथों मारा गया है। फ़िरऔन तो पूर्व से ही मूसा के हेतु बुरे विचार रखता था,

किन्तु इस घटना ने उसे और भी उत्तेजित कर दिया। आवेश में आकर मूसा के कत्ल का आदेश प्रसारित कर दिया और उपस्थिति हेतु आज्ञा पत्र निकाल दिया। हिजक़ील, जो कब्ती जाति से मूसा पर ईमान ला चुका था। वह भाग कर हज़रत मूसा के पास आया और कहा—कब्तियों के सरदार तेरे रक्त के प्यासे हैं। तू यहाँ से चला जा! तब मूसा मिश्र से निकल कर नगर मदयन की ओर भाग गया।

तफसीर आज़मुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १६५-६६

तफसीर हक्कानी ने मूसा का काल ईसा से १५७१ वर्ष पूर्व लिखा हैं। हमने इन आयतों की जो व्याख्याएं लिखी हैं, अक्षरशः यही मुआलेमुत्तन्जील पारा १ पृष्ठ २६-२७ में भी है। इन आयतों और इनकी व्याख्याओं को आप पाठकों ने पढ़ लिया है, कि किस प्रकार कपोल कल्पित-मनघडन्त और अन्धविश्वासपूर्ण बातों से लोगों की बुद्धि को भ्रमित किया गया है। जैसे मूसा ने दरिया पर डंडा मारा। दरिया फट गया और मार्ग बन गये। नील में यूसुफ की कब्र खोजने और उसके ताबूत को लेने हेतु मार्ग प्राप्ति का विश्वास दिलाना। नील का शुष्क हो जाना। घोड़े को मस्ती में लाने हेतु खुदा द्वारा जिब्रील को घोड़ी सहित फिरऔन के घोडे के आगे करना और मेकाईल को पीछे घोड़े पर भेजना और आगे धकेलवाना। फिरऔन और उसके १ करोड ७ लाख सैनिकों को घोड़े सहित होना। उन्हें दरिया में डूबाना और मार डालना। रात्रि के समय बनी इस्राईलियों को निकाल ले जाना। जल में मोर्चे बना देना। रास्तों से जल का ऊँचा होना और रास्तों में न आना ......इत्यादि ऐसी बाते हैं कि जो जनसाधारण को अन्धविश्वास में भ्रमित करने के अतिरिक्त और कोई शिक्षा नहीं दे सकती।

इसी प्रकार हज़रत मूसा के जन्म के समय ज्योतिषियों और पुजारियों को आसमान में सितारा दिख जाता है किन्तु नगर के किस घर में मूसा उत्पन्न हुआ। यह ज्ञात नहीं होना, कम आश्चर्यजनक है ? फिर ३० वर्षों तक मूसा फिरऔन के प्रासाद में ही पला-पोसा और युवा हो गया किन्तु फिरऔन और उसके भविष्यवक्ता ज्योतिषियों तथा चमत्कारी पुजारियों को यह ज्ञान न हो सका, कि वह विनाशकारी लड़का स्वय फिरऔन के प्रासाद में ही, फिरऔन की पत्नि द्वारा और अपनी स्वयं को माता का दुग्धपान कर ही परवान चढ़ रहा हैं। कैसी असम्भव और ज्ञानहीन बातें हैं।

इन आयतों में इन्हीं उपकारों को स्मरण कराया गया है। जो मूसा के काल में इस्राईलियों पर किये गये थे उनको स्मरण कराया गया हज़रत मुहम्द के समकालीन इस्राईलियों को और उन्हें इस्लाम ग्रहण करने हेतु प्रेरित किया गया है। वारम्बार इस कथा को कुरआन में पिष्टपेषण कर इस्राईलियों को इस्लाम की ओर आकृष्ट किया जाकर खुदा के नाम से इन आयतों को प्रस्तुत कर ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है, कि इस्लाम ही खुदा का सत्य धर्म है। इसको स्वीकारना ही चाहिए। यह अभिप्राय है इन उपरोक्त आयतों का जो हमने उपरोक्तानुसार लिपिबद्ध कर स्पष्ट:—"दूध का दूध और पानी का पानी" कर दिया है।

बाइबिल में मूसा की कथा।

बनी इस्राईल की सन्तत्ति फलने फूलने लगी और वह लोग अत्यन्त सामर्थ्यवान बनते चले गए। इतनी अत्यधिक वृद्धि हो गई कि समस्त देश उनसे भर गया। मिश्र में एक नया

शासक सिंहासनारूढ़ हुआ जो यूसुफ से अपरिचित था और उसने अपनी प्रजा से कहा—देखो ! इस्राईली हमसे सख्या और सामर्थ्य में अधिक बढ़ गए हैं। इसलिए आओ। हम उनके साथ बुद्धिमानी से व्यवहार कर। कहीं ऐसा न हो कि जब वह बहुसख्यक हो जाय और यदि युद्धकालीन समय में हमारे शत्रुओं से मिलकर हमसे लड़े और इस देश से निकल जायें। इसलिए उन्होंने उन पर बेगारी कराने वालों को नियुक्त किया कि वह उन पर भार डाल–डाल कर दुखः दिया करें। तब उन्होंने फिरऔन हेतु पितौम और रामसेस नामक भंडारयुक्त नगरों को बनाया। पर, ज्यों-ज्यों वह उनको दुखः देते गए, त्यों–त्यों वह बढ़ते और विस्तृत होते गये। इसलिए वह इस्राईलियों से अत्यधिक आतंकित हो गए। तब भी मिश्रियों ने इस्राईलियों से कठोरतापूर्ण सेवकाई करवाई, और उनके जीवन को मिट्टी-ईंट और कृषि के भांति-भांति के कार्यों की कठिन सेवा से दुखित कर दिया। जिस किसी कार्य में वह उनसे सेवा करवाते थे। उसमें वह कठोरता का व्यवहार करते थे।

शिप्रा और पूआ नामक दो इब्री दाईयों को मिश्र के बादशाह ने आज्ञा दी–जब तुम इब्री स्त्रियों को शिशु उत्पन्न कराने हेतु पत्थरों पर बैठी देखो। तब यदि पुत्र हो तो उसे मार डालना और पुत्री हो तो जीवित रहने देना। परन्तु वह दाईयां परमेश्वर से भय मानती थी। फलतः मिश्र के बादशाह की आज्ञा न मान कर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थी। तब मिश्र के बादशाह ने उनको बुलवा कर पूछा– तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो ? दाईयों ने फिरओन को उत्तर दिया– इब्री स्त्रियाँ मिश्री स्त्रियों के समान नहीं हैं। वह ऐसी फुर्तीली हैं कि दाईयों के पहुँचने से पूर्व ही उनके शिशु उत्पन्न

हो जाता है। इसीलिए परमेश्वर ने दाईयों के साथ भलाई की, और वह लोग बढ़ कर अत्याधिक सामर्थ्यवान हो गए तथा दाईयां इसलिए कि वह परमेश्वर का भय मानती थी। उसने उनके घर बसाये। तब फिरऔन ने अपनी समस्त प्रजा को आज्ञा दी कि इब्रियों के जितने भी पुत्र उत्पन्न हों। उन सभी को तुम नील नदी में डाल देना और समस्त पुत्रियों को जीवित रख छोड़ना।

लेवी घराने के एक पुरूष के एक लेवीवंशीय स्त्री को पुत्र उत्पन्न हुआ, और यह देख कर कि शिशु सुन्दर है। उसे ३ माह तक छुपाये रखा और जब वह उसे और न छुपा सकी, तब उसके हेतु सरकंडों की एक टोकरी लेकर उस पर चिकनीं मिट्टी व राख लगा कर उसमें शिशु को रख कर नील नदी के तट पर उगी काँसों के मध्य रख आई, किन्तु उस शिशु की बहिन दूर खड़ी रही, कि देखें इसका क्या हाल होगा ? तब फिरऔन की पुत्रि स्नान हेतु नदी तट पर आई उसकी सखियाँ नदी के तीर-तीर भ्रभण करने लगी। तब उसके काँसों के मध्य टोकरी देख कर अपनी दासी को उसे लाने हेतु भेजा। उसने उसे खोल कर देखा कि एक रूदन करता हुआ शिशु है। तब उसे दया आई और उसने कहा-यह तो किसी इब्री का शिशु होगा। तब बालक की बहिन नें फिरऔन की पुत्री से कहा-मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला कर लाऊँ। जो तेरे हेतु शिशु को दूध पिलाया करे। फिरऔन की पुत्री ने कहा—जा तब वह लड़की जाकर शिशु की माता को बुला लाई। फिरऔन की बेटी ने उससे कहा-तू इस शिशु को दूध पिलाया कर। इसे मेरे हेतु ले जा और मैं तुझे पारिश्रमिक दूँगी। तब वह स्त्री उस बालक को ले जा कर दूध पिलाने लगी। जब वह बालक कुछ बड़ा हुआ। तब

वह उसे फिरऔन की पुत्री के पास ले गई, और वह उसका पुत्र ठहरा। उसने उसका मूसा नामकरण किया, कि मैंने उसको जल से प्राप्त किया।..................जब मूसा युवा हुआ और बाहर अपने भाई--बन्धुओं के पास जाकर उनके दुःखों पर दृष्टिपात करने लगा। तब उसने देखा, कि कोई मिश्री एक इब्री को मार रहा है। जब उसने इधर--उधर देखा, कि कोई नहीं है। तब उस मिश्री को मार डाला और बालू में छुपा दिया। दूसरे दिन बाहर जाकर उसने देखा, कि दो इब्री आपस में मारपीट कर रहें हैं। उसने अपराधी से कहा-तू अपने भाई को क्यों मार रहा है? उसने कहा-किसने तुझे हम लोगों पर अधिकारी और न्यायी ठहराया? जिस भाँति तूने मिश्री को मारा। क्या उसी भांति तू मुझसे घात करना चाहता है? तब मूसा यह सोच कर भयभीत हो गया, कि निश्चय ही यह बात खुल गई है। जब फिरऔन ने यह बात सुनी। तब मूसा को मार डालने की युक्ति की..................इत्यादि।

निर्गमन, अध्याय १-२ पृष्ठ ५०-५१

पाठक बन्धुओं! हमने कुरआन और तौरात दोनों पुस्तकों से हजरत मूसा की यह प्रारम्भिक कथा उपरोक्तानुसार उद्धृत की है। अब आप स्वयं निर्णय करें कि 'कुरआन' ने किस भांति 'तौरात' की कहानी को अपने इस्लाम की मजहबी चादर और मिथ्या विश्वासों के मनमाने रगों में लोटपोट कर जनसाधारण को पथभ्रष्ट किया है, और इस्लाम के अंधविश्वासों के बन्धन में जकड़ कर रख दिया है।

अब आगे की कहानी मूसा द्वारा इस्राईलियों को लेकर नदी पार करने की है। वह भी यहां उदधृत कर देते हैं, ताकि

यथार्थ और सत्य घटना को कुरआन के कथन से मिला कर आप अन्तर से परिचित हो जाएँ। आगे है कि:—

जब मिश्र के शासक को यह समाचार प्राप्त हुआ, कि वह लोग (मूसा के साथ) गए। तब फिरऔन और उसके कर्मचारियों के मन उनके विरूद्ध परिवर्तित हो गए और वह कहने लगे—हमने यह क्या किया, कि इस्राईलियों को अपनी चाकरी से मुक्ति पाकर जाने दिया? तब उसने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी सेना साथ में ली। उसने ६ सौ अच्छे से अच्छे रथवाहन, मिश्र के समस्त रथ लिये और उस पर अपने सरदारों को बैठाया। यहोवा ने मिश्र के शासक फिरऔन को कठोर कर दिया। सो उसने इस्राईलियों का पीछा किया, किन्तु इस्राईली तो निशक निकल चले थे, पर फिरऔन के समस्त घोड़ों-रथों और सवारों सहित मिश्री सेना ने उनका पीछा करके उन्हें जो पाहाही रोत पासवाल सपोन के सामने समुद्र के तट पर डेरा डाले पड़े थे। जब फिरऔन निकट आया। तब इस्राईलियों ने आंखें उठा कर क्या देखा, कि मिश्री हमारा पीछा किये चले आ रहे हैं। इस्राईली अत्यन्त भयभीत हो गए और चिल्ला कर 'यहोवा की दुहाई हो' बोल कर मूसा से कहने लगे—क्या मिश्र में कब्रें न थी, जो तू हमको मरने हेतु वहां से यहाँ वन में ले आया है? तूने हमसे यह क्या किया, कि हमको मिश्र से निकाल लाया? क्या हम तुझसे मिश्र में यह बात न कहते रहे, कि हमें रहने दें? कि हम मिश्रियों की सेवा चाकरी करें। हमारे लिये वन में मरने से मिश्रियों की दासता करनी अच्छी थी। मूसा ने लोगों से कहा—भय मत करो! खड़े-खड़े वह उद्धार का कार्य देखो। जो यहोवा आज तुम्हारे हेतु करेगा। क्योंकि जिन मिश्रियों को आज तुम देखते हो! उनको फिर कभी न देखोगे।

यहोवा आप ही तुम्हारे हेतु लड़ेगा। इसलिए तुम चुपचाप रहो। तब यहोवा ने मूसा से कहा-तू क्यों मेरी दुहाई दे रहा है ? इस्राईलियों को आज्ञा दे कि वह यहां से प्रस्थान करें, और तू अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समुन्द्र के ऊपर बढ़ा और वह दो भाग हो जाएगा। तब इस्राईली समुद्र के मध्य होकर स्थल ही स्थल पर चले जायेंगे। और सुन, मैं स्वयं मिश्रियों के मन को कठोरता हूँ, और वह उनके रथों तथा सवारों के द्वारा पीछा करेंगे। समुद्र में घुस पड़ेंगे। तब फिरऔन और उसकी समस्त सेना-रथों और घुड़सवारों द्वारा मेरी महिमा होगी। तब मिश्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। तब परमेश्वर का दूत, जो इस्राईली सेना के आगे चला करता था, जाकर उनके पीछे हो गया और मेघों का खम्बा उनके आगे से हट कर उनके पीछे हो गया। इस प्रकार वह मिश्रियों और इस्राईलियों की सेना के मध्य आ गया, और बादल तथा अन्धकार तो हुआ, तो भी उससे रात्रि को, उन्हें रात्रि का प्रकाश मिलता रहा, और वह रात्रि भर एक-दूसरे के निकट न आए, और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और यहोवा ने रात्रि भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई, और समुद्र के दो भाग कर जल ऐसा हटा दिया कि जिससे उसके मध्य शुष्क भूमि हो गई। तब इस्राईली समुद्र के मध्य थल ही थल पर होकर चले और जल उनके दाए-बाँए और दीवार का कार्य देता था। तब मिश्री अर्थात फिरऔन के समस्त घोड़े-रथ और सवार उनका पीछा करते हुए समुद्र के मध्य में चले गए और रात्रि के अन्तिम प्रहर में यहोवा ने मेघों और अग्नि के खम्बे में से मिश्रियों की सेना पर दृष्टिपात कर उन्हें घबरा दिया, और उसने उनके रथों के पहियों को पृथक कर दिया। जिससे उनका चलाना कठिन हो गया। तब मिश्री आपस में कहने लगे-आओ ! हम इस्राई-

लियों के सामने से पलायन करें। क्योंकि यहोवा उनकी ओर से मिश्रियों के विरूद्ध युद्धरत है। फिर यहोवा ने मूसा से कहा--अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा! ताकि जल मिश्रियों और उनके रथों व सवारों पर फिर बहने लगे। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और भोर होते होते क्या हुआ कि समुद्र पुनः ज्यों का त्यों अपने बल पर आ गया। मिश्री उलटे भागने लगे किन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के मध्य ही में झटक दिया................और समस्त सेना डूब गई।

निर्गमन, बाब १३-१४

हमने कुरआन और तौरात दोनों पुस्तकों में वर्णित एक ही कथा को यहां एक ही साथ लिख दिया, ताकि आप पाठकगण! एक ही कथा जो दोनों पुस्तकों में हैं, को एक साथ ही पढ़ लें और समझ लें। साथ ही इस्लाम के खुदा की कुरआन में जो अतिशयोक्तिपूर्ण अन्धविश्वास है, से भी परिचित हो लें। तौरात में जो अनर्गल और अस्वाभाविकता है। उस पर ध्यान न दें, क्योंकि वह भी तो अन्तोतगत्वा यहोवा का कलाम ही तो है। जिसमें ऐसी कतिपय मिथ्या-अस्वाभाविक और असगत बातों का होना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है, अन्यथा खुदाई पुस्तक क्यों और कैसे मानी जाएगी ?

जब इस्लाम की दृष्टि में 'तौरात' भी ईश्वरीय पुस्तक है, और कुरआन भी। साथ ही कुरआन, बाईबिल की तस्दीक करता है, तो फिर जब कुरआन, तौरात को सत्य स्वीकारता है, तो इस कदर मतभेद और अन्तर जो कुरआन और तौरात में उपस्थित है, तो दोनों की सत्यता को मान्य करना शङ्कास्पद हो उठता है। यदि तौरात सत्य है ? तो उसको सत्य मानने पर जो विरोध-

मतभेद या अन्तर कुरआन से उत्पन्न होते हैं। उनका समाधान या निराकरण कैसे होगा ? यदि वास्तव में ही तौरात सत्य ही ईश्वरीय पुस्तक है, तो फिर कुरआन को असत्य मानना पड़ेगा ? और यदि कुरआन सत्य है, तो फिर तौरात को सत्य नहीं माना जा सकता है, और इस स्थिति में भी जो कुरआन में बाइबिल को सत्य माना है। उसका क्या होगा ? यह एक ऐसी जटिल समस्या है, कि जिसका समाधान होना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है।

यदि कहा जाए कि तौरात में मिलावट हो गई है, तो फिर जब कोई इस कथा के ही दोनों वर्णनों को पृथक--पृथक कुरआन और तौरात में पढ़ेगा, तो वह यह कभी स्वीकारने को तत्पर नहीं होंगे कि जो इस कथावस्तु हेतु कुरआन में है। वह तौरात से पृथक कर निकाल दिया गया है। अपितु यही स्वीकारने पर विवश होना पड़ेगा कि कुरआन में जो कतिपय अन्धविश्वास और अन्धश्रद्धापूर्ण अंश हैं वह तौरात की मूल कथावस्तु में वृद्धि कर सलग्न रूप में कुरआन में कहा गया है। यदि वह अन्धविश्वासी भाग निकाल दिये जाएँ तो कुरआन और तौरात की कथावस्तु समान्तर होकर यह कथा एक हो जाती है।

अब इन दोनों आयतों, जिन पर हम चर्चा कर रहे थे। यहां ही छोड़ दी जाए और अग्रिम आयतों पर चर्चा करें। आयतें हैं:—

वा इज़ वा अद्ना मूसा अरबईना लैंलातन् सुम्मतख़ज़् तुमुल्इज्ला मिम्बादेही वा अन्तुम् ज़ालेमून्। सुम्मा अफौना अन्कुम्मिम्बादे ज़ालेका लअल्लकुम् तशकुरून्। वा इज़ा आतैना मूसल्केताबा वल्फ़ुर्क़ाना लअल्लकुम् तहतदून्।

कुरआन, पारा १, सूरत बकर, आयत ५३-५४

अर्थात:– जब हम (खुदा) ने मूसा से ४० रातों का वादा किया। फिर उसके पीछे तुमने बछड़ा बना लिया और तुमने अत्याचार किया। फिर उसके पश्चात हमने तुमको क्षमा किया, ताकि तुम आभार मानो, और जब हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) और फुर्क़ान (सत्यासत्य का विवेचन) दी, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो। तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ २८

कुरआन की उपरोक्त आयतें कुरआन में ही एक अन्य दूसरे स्थान पर तनिक अन्तर ग्रहण किये हुए हैं। इसे भी देखिए। आयत:–
वा अद्ना मूसा सलासीना लैलतंव्वा अत्मम्नाहाबे अश्रिन फ़तम्मा मीकातो रब्बेही अरबईना लैलतन ।

कुरआन, पारा ९ रकू १६/६ (एराफ़) आयत १४१

अर्थात:–और हम (खुदा) ने मूसा से ३० रातों का प्रण किया, और उनमें शेष १० रातों को, मिला कर तेरे पालनहार की ४० रातों की अवधि पूर्ण हुई।

इब्ने कसीर पृष्ठ २०

अब प्रारम्भ में आप उपरोक्त प्रथम आयत का तात्पर्य समझ लीजिए। द्वितीय ३० रात्रि वाली आयत को पश्चात स्पष्ट करेंगे।

जब फ़िरऔन की मृत्यु हो गई और हज़रत मूसा बनी इस्राईल को लेकर मिश्र में आए, तो उनके पास ऐसा कोई कानून नहीं था। जिसके अन्तर्गत वह अपने कर्तव्यों और कर्मों का निश्चय कर अपने हेतु मार्ग निर्धारित करें। बनी इस्राईल ने कई वार हज़रत मूसा का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। उनकी इच्छानुसार हज़रत मूसा ने खुदा तआला से निवेदन किया। आदेश हुआ-तूर पर्वत पर आकर ४० दिन व्रत रखो और एकान्तवास करो, तो मैं (खुदा) तुझसे बात करूँगा और कर्म-पद्धति

भी प्रदान करूँगा । मूसा ने अपने बड़े भाई हारून को अपना स्थानापन्न नियुक्त किया और आप स्वयँ तूर पर्वत पर चला गया और व्रत करना प्रारम्भ कर किया। तब खुदा ने उनसें वार्तालाप कर उन्हें गौरवान्वित किया और तौरात की लौहें (पाटियां) प्रदान की।

तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १७३

तफसीर हक्कानी में है कि:—

जब मूसा ने कुल्ज़म दरिया (सागर) को पार किया और पर्वत तूर के निकट पहुँचे, तो खुदा ने फरमाया—४० रातें हमारी शरण में आकर तूर पर्वत पर हमारी भक्ति करना, कि तुमको हमारी वाणी और शरीअत अर्थात कर्तव्य और कर्मविधि मिले। हज़रत मूसा पर्वत पर पधारे, और बनी इस्राईल से ३० रात्रि का प्रण कर गए। क्योंकि प्रथम यही आदेश हुआ था। (कि ३० दिन आओ) तफसीर हक्कानी, पारा १, पृष्ठ २८

अब देखिए ! प्रथम आयत में ४० रात्रि का और द्वितीय में ३० रात्रि का प्रण और फिर १० दिन और वृद्धि या सम्मिलित कर ४० किए गए। इस आयत में तो प्रण (वादा) ही ४० दिनों का किया और अन्य द्वितीय आयत में १० दिवस पीछे सें सम्मिलित कर ४० दिवस किए। एक आयत में पीछे से १० दिन बढ़ा कर ४० की संख्या पूर्ण की गई। जब कि एक आयत में वादा ही ४० दिन का हुआ था अर्थात १० दिवस की वृद्धि इस हेतु की गई कि ४० की संख्या सम्पूर्ण हो जाएँ, किन्तु उपरोक्त दोनों आयतों में जो शाब्दिक मतभेद हैं, वह तो दूर न हुआ और न हो सकता है ? इब्ने कसीर ने लिखा:—

जब तुम्हारे नबी मूसा ४० दिन के प्रण पर तुम्हारे पास गए।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २०

अब मज़हरी को देखिए:-अबू जाफ़र और अबू उमर ने 'वा अदना' को 'वादना' पढ़ा। आगे लिखा:-(अरबईना लैलतन) ४० रात के लिए। व्याख्याकार कहते हैं कि जिन ४० रातों का खुदा ने हज़रत मूसा से वादा फरमाया (प्रण किया) उसमें ३० रातें जीकाद और १० रातें ज़ुल्हज्ज़ की (यह ज़ुल्हज्ज़. इस्लाम के १२ महिनों का अंतिम मास) यह किस्सा इस प्रकार है :-

फिरऔन की मृत्यु के पश्चात जब बनी इस्राईल मिश्र में आकर बसे, तो खुदा ने हज़रत मूसा से तौरात देने हेतु ४० रातों का प्रण (वादा) फरमाया।

तफ़सीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ ११८

तफ्सीर कादरी ने लिखा:-

"वा इज़ा वा अदना मूसा" और स्मरण करो, उसे कि वादा दिया हमने मूसा को पुस्तक देने का और वादा दिया मूसा ने हमें तूर पर्वत पर आने हेतु ४० दिन-रात का।

तफसीर कादरी, भाग १ पृष्ठ १३

मुआलिम करा अबू उमर वा अहलल्बससते वादना। अरबईना लैलतन सलामून मिन जीकाद वा अशरा जिल्हज्ज।

अर्थात:- अबू उमर और बसरावालों ने 'वा अदना' को 'वादना' पढ़ा और ३० दिन ज़ीकाद और १० दिन ज़िल्हज्ज़ (मास) के थे। आगे वही कुछ है, जो तफसीर मजहरी में भी लिखा है।

तफसीर कुरआनिलअज़ीम पृष्ठ ६

इसी प्रकार 'मुआलेमुत्तन्ज़ील' पारा १ पृष्ठ २७ और तफसीर 'मुहम्मदी' पारा १ पृष्ठ ६५ पर भी वादा (प्रण) ४० रात का लिखा है।

बैज़ाबी में है, कि फिरऔन की मृत्यु के पश्चात हज़रत मूसा को तौरात देने हेतु वचन पर ४० दिन, ३० दिन ज़ीकाद और १० दिन जिल्हज्ज़। कुल ४० दिन के लिये बुलाया।

हमने कुरआन की बहुत सी तफसीरों के उद्धृणसहित यह स्पष्ट किया, कि हज़रत मूसा से ४० दिनों का वादा (प्रण) कर उन्हें तूर पर्वत पर बुलाया। परन्तु अब जो दूसरी आयत "सलासीन लैलतन" वाली हमने कुरआन से ऊपर उद्धृत की है। आप उसकी व्याख्या भी देख लें।

व्याख्या:—प्रथम वनी इस्राईल की ज़हालत (अविद्या) कूड़मगज़ी (कुन्द मस्तिष्क) और उनकी ना अकबल अन्देशी, अर्थात बात के सोचने को अभिज्ञता, कमबीनी (मूर्खता) का वर्णन था। यहां पर उपकारों का वर्णन है। मूसा ने बनी इस्राईल से वादा (प्रण) किया था कि फिरऔन की मृत्यु के पश्चात एक सम्पूर्ण विधान (कानून) मैं खुदा से लाऊँगा। तब बनी इस्राईल के आग्रह पर मूसा ने खुदा से निवेदन किया, तो आदेश हुआ, कि ३० रोज़े (व्रत) रखो और तूर पर्वत पर आओ। (व्याख्याकार महोदय ! ३० दिन के वादा के स्थान पर ३० रोज़े रखो, लिख गए) हज़रत मूसा ने ३० रोज़े रखे और ३१ वें दिन तूर पर्वत पर गए और आपने विचार किया, कि मेरे मुँह में रोज़े की बदबू (व्रत की दुर्गन्ध) है और मैं खुदावन्द से कलाम करने जाता हूँ। अच्छा हो, कि मिसवाक (दतौन) कर लूँ ताकि यह दुर्गन्ध जाती रहे। आपने ऐसा ही किया। इस पर फरिश्तों ने कहा–हम तुम्हारे मुँह से कस्तूरी की सुगध सूँघते थे। तुमने दतौन कर उसको नष्ट कर दिया। हकतआले (खुदा) ने फरमाया–इसके बदले में १० दिन और रोज़े रखो। जैसा कि फरमाया अर्थात हमने मूसा से उन्हें पुस्तक देने हेतु ३० दिन का

वादा किया था। फिर उस पर १० दिन और बढ़ा कर ४० दिन पूर्ण कर दिए।

तफसीर आजमुत्तफासीर पारा ९ पृष्ठ २२३

यहां पर वादा (प्रण) ३० दिन का लिखा और १० दिन दतौन करने के दण्डस्वरूप थे, किन्तु वादा ३० दिनों का हीथा। यद्यपि प्रथम आयत में आप कितने सशक्त और प्रबल प्रमाणों-सहित पढ़ चुके हैं, कि वादा ४० रातों का था। इब्ने कसीर लिखते है, कि:-

अल्लाह ने मूसा से ३० रातों का वादा किया था। भाष्य-कार कहते हैं, कि मूसा ने इन दिनों रोज़ा रखा था। जब ३० दिन पूर्ण हुए तो अल्लाह ने १० दिन और बढ़ा दिये, और ४० दिन कर दिये।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा ९ पृष्ठ २०

हमने मूसा से ३० रातों का वादा (प्रण) कर लिया और (अधिक) १० रातों को ३० का शेष कर दिया, और इस प्रकार अल्लाह का निश्चित समय ४० दिन हो गया। फिर जब अल्लाह ने शत्रु को मौत के घाट उतार दिया तो हज़रत मूसा ने अल्लाह से पुस्तक-प्रदान करने हेतु निवेदन किया, तो अल्लाह ने उन्हें ३० रोज़े (व्रत) रखने का आदेश दिया। जब ३० दिन हो गए, तो हज़रत मूसा को मुंह मे कुछ दुर्गन्ध अनुभव हुई, तो आपने किसी नर्म लकड़ी से दतौन कर ली। फरिश्तों ने हज़रत मूसा से कहा-पूर्व में हमको आपके मुंह से कस्तूरी की सुगन्ध आती थी। आपने दतौन कर उसे नष्ट कर दिया। इस पर अल्लाह ने ज़िल्हज्ज (माह) के १० रोज़े और रखने का आदेश दिया और फरमाया-तूझे मालूम नही कि रोज़ादार के मुंह की बू (गंध) मेरे निकट कस्तूरी की बू से भी अधिक उत्तम सुगंध

होती है। (यह तो मानसिक सन्तुलन और मनस्थिति पर है, कि किसे किससे दुर्गन्ध और किससे सुगन्ध अनुभूत होती है ?)
तफसीर मज़हरी पारा ६ सूरत एराफ़ पृ. ३७७

उपरोक्तनुसार ही अक्षरशः तफसीर मुआलेमुत्तन्जील पारा ६ पृष्ठ २१-२२ सूरत एराफ में भी लिखा गया है।

अब विचारणीय बात यह है, कि प्रथम पारा (बकर) में लिखा कि हमने मूसा से ४० रातों का वादा (प्रण) किया और पारा ६ (एराफ़) में लिखा कि ३० रातों का वादा किया। इसके अनुसार मूसा ने ३० रोज़े रखे और दतौन करने के दण्डस्वरूप १० और सम्मिलित कर ४० पूरे किए। इस आयत से प्रमाणित होता है, कि वादा तो ३० दिन का था, किन्तु १० दिन और दण्डस्वरूप मिलाकर ४० किये। परन्तु वादा (प्रण) तो ३० दिन का ही था।

अब देखिये ! तफसीर इत्तिकान प्रकरण ७ जिसमें कुरआन के उतरने की तरतीब लिखी है। इसमें मक्की सूरतों में सूरत 'एराफ़' है। वर्तमान में प्रचलित कुरआन में भी सूरत 'एराफ़' को मक्की सूरत ही लिखा गया है। इसमें २० दिन का वादा है, तथा सूरत 'बकर' मदिनी सूरत है, जो कि वर्तमान में प्रचलित कुरआन में भी इस सूरत 'बकर' को मदिनी सूरत ही लिखा गया है। ऐसी स्थिति में सूरत 'बकर' का ४० दिन का वादा कैसे प्रामाणिक माना जा सकता है ?

ऐसा प्रतीत होता है, कि कुरआन के लेखक-प्रणेता-प्रस्तोता अथवा कोई और जो भी रहा हो ? वह सूरत 'बकर' को प्रथम मानता है। जैसा कि वर्तमान कुरआन में इसी कारण ३० दिन का वादा और १० दिन दण्डस्वरूप जोड़ कर ४० दिन पूर्ण कर सूरत बकर की आयतानुसार करना चाहता है। कुछ भी हो, दोनों आयतों

का समन्वय तो हो ही नहीं सकता है । क्योंकि वहां वादा ३० दिनों का और वहाँ ४० दिनों का है, और जो दतौन करने के बदले मे १० दिनों की वृद्धि की गई है, वह वादे (प्रण) में नहीं गिने जा सकते हैं ?

आप पाठकों ! को दोनों वादों में कोई अन्तर या मतभेद प्रतीत होता है या नहीं ? खुदा को तो कोई अन्तर ज्ञात नहीं हो सकता है, क्योंकि वह तो समदृष्टा है ? किन्तु आप लोगों को तो ज्ञात हो सकता है । क्योंकि इन दोनों आयतों में व्याप्त अन्तर और मतभेद स्पष्ट हैं ।

दूसरा महान अन्तर यह है, कि प्रथम आयतों में तो तूर पर्वत पर जाने का आदेश था । जैसा कि हज़रत मूसा ने अपने भाई हारून को अपना स्थानापन्न नियुक्त कर तूर पर्वत पर चले गए और पीछे लोगो ने बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी, और ३० रातों वाली आयत हेतु व्याख्याकारों ने लिखा कि घर में ही रोजे रखे । जैसा कि मूसा ३० रोज़े रख कर ३१ वे दिन तूर पर गए।

क्या इन दोनों परस्पर विरोधी बातो में भी आज के मुसलमानों को कोई अन्तर या मतभेद दृष्टिगोचर होता है या नही ? उनको हो या न हो, परन्तु जो लोग सत्य को स्वीकारने और मानने वाले हैं, उनको तो दोनों ही आयतों में परस्पर विरोधाभास-मतभेद और अन्तर स्पष्टतया ही दृष्टिगोचर होगा । शेष आयत की व्याख्या:—

फिर मूसा की अनुपस्थिति में तुमने बछड़े को पकड़ा अर्थात उसको पूजने लगे, और तुम अत्याचारियों में से थे । फिर हमने क्षमा किया । तत्पश्चात ताकि तुम धन्यवाद करो ।

यह बछड़े और क्षमा का किस्सा भी अत्याधिक रहस्यमय और ज्ञातव्य योग्य है । जो कि इस प्रकार है:--

सामरी सुनार था । जब ४० दिनों के लिए मूसा तूर र्वत पर गया, तो ज़िब्रील घोड़े पर सवार होकर उसे लेने हेतु आए (ज़िब्रील, फिरऔन और उसकी सेना को डूबोने हेतु घोड़ा र चढ़ कर आए थे ।) जहां उस घोड़े का पाँव पड़ता था । वहाँ नस्पति उग आती थी । उस (सामरी) ने ज़िब्रील के घोड़ के व के नीचे से एक मुठ्ठी मिट्टी उठा कर रख ली । जब मूसा र पर चला गया, तो सामरी ने..........भूमिगत सोना निकाल र ३ दिन में एक बछड़ा तैयार कर दिया और वह मिट्टी, जो सने ज़िब्रील के घोड़े के पैर के नीचे से उठाई थी, उस (बछडे) डाल दी । चूँकि उसमें जीवन का तत्व था । मिट्टी पड़ते ही छड़ा) बोलने लग गया और इधर-उधर दौड़ने लगा । सामरी वनी इस्राईल से कहा– 'हाज़ा एलाहोकुम वा एलाहो मूसा' र्थात यह तुम्हारा और मूसा का पूज्य खुदा है । वह भूल गए । रून के साथ १२ हजार व्यक्ति सन्मार्ग पर रहे और शेष समस्त भ्रष्ट हो गए और मूसा के पीछे बछड़े को इष्टदेव बना लिया ।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ ११८-१९

रोक्तानुसार ऐसा ही मुआलेमुत्तन्ज़ील, पारा १ पृष्ठ ७२७ में है ।

उपरोक्त जो लिखा है, कि बछड़ा बोलता था और उसमें मरी ने ज़िब्रील के घोड़े के पैर के नीचे से मिट्टी उठा कर में डाल दी थी । इस कारण वह बोलता था । हम इस बात प्रमाणित करने हेतु प्रमाण कुरआन में से ही लिखेंगे ।

जब हजरत मूसा तूर पर्वत से आए, तो उन्होंने बहुत -ढमक्का देखा, तो पता लगा कि बनी इस्राईल ने बछड़ा- प्रारम्भ कर दी है । तब हज़रत मूसा इतने क्रोधित हुए कि खुदा का ज्ञान लाये थे । उस पुस्तक को भी तोड़ दिया ।

(वह पाटियां थी) और हज़रत हारून पर भी बहुत रूष्ट हुए और उनकी डाढ़ी और बाल खीचने लगे। तब हज़रत हारून ने कहा--'ला ताख़ुज़ बे लंहियती वा ला बरासी' अर्थात ऐ मरी माँ के बेटे ! मेरी डाढ़ी और मस्तक के बाल न पकड़ । तब इतने रोष में ही मूसा ने सामरा से पूछा:--

काला फ़ मा ख़त्बौका या सामरी काला बसुर्तो बेमा लम् यब्सरु बेही फ़कब्ज़ातो कब्ज़तम्मिन् असरिर्रसूले फ़ नब्ज़तोहा वा कज़ालेका सव्वलत् ली नपसी ।

कुरआन, पारा १६ रकू ५/१४ सूरत त्वाहा

अर्थात:– कि क्या है यह महान कार्य तेरा, ऐ सामरी ! सामरी बोला-- देखने वाला मैं हुआ उस वस्तु को, जो नहीं देखने वाले थे बनी इस्राईल इसके साथ अर्थात मैंने जिब्रील को देखा और पहचान लिया। फिर मैंने एक मुट्ठी खाक भर ली, मैंने रसूल के घोड़े के सुम्म (पैर) के निशान के नीचे से अर्थात जिब्रील के घोड़े के सुम्म का जहाँ निशान देखा, वहां से मैंने खाक उठा कर अपने पास रख छोड़ी थी। जब मैंने बछड़े को सांचे में से निकाला तो वह मिट्टी उस बछड़े में डाल दी और वह जीवित होकर बोलने लगा और मैंने यह जो सुसज्जित कर दिया मेरे हेतु और मेरी दृष्टि में अच्छा दिखाया यह कार्य मेरे मन ने ।

तफसीर कादरी भाग २ पारा १६ सूरत त्वाहा पृष्ठ ४२

तफसीर कादरी को तो आपने देख ही ली। अब आप एक और तफसीर का दिग्दर्शन देखिये। किञ्चित नई जानकारी ही प्राप्य होगी:—

फिर सामरी की ओर ध्यान कर मूसा ने कहा--सामरी ! तेरा क्या किस्सा है ? तूने ऐसा किस भाँति किया .... किस

वस्तु ने तुझे ऐसा करने पर उद्यत किया। उस (सामरी) ने कहा-मुझे ऐसी वस्तु नज़र आई थी, जो औरों को दृष्टिगोचर न हुई। फिर मैंने उस खुदा के भेजे हुए की सवारी के पाँव के निशान से एक मुट्ठी खाक उठा ली थी। फिर मैंने वह मुट्ठी खाक उस (पुतले) में डाल दी और मेरे दिल को यह बात पसन्द आई।

कुछ लोगों का कथन है कि सामरी ने वह मिट्टी हज़रत जिब्रील के घोड़े की टापों के नीचे से, उठाई थी, क्योंकि उसकी उत्पत्ति उसी वर्ष हुई थी, जिस वर्ष में बनी इस्राईल के नवजात शिशु कत्ल कराये जा रहे थे। सामरी की माँ ने उसे ले जाकर एक गुफा में रख दिया था। अल्लाह ने उसके पालन हेतु जिब्रील को नियुक्त कर दिया। क्योंकि उस (सामरी) के हाथों से एक फ़ितना (उपद्रव) बनी इस्राईल में स्थिर करना था। (खुदा ने बनी इस्राईल में उपद्रव हेतु कितना यत्न किया ?) जिब्रील इसका पालन करते रहे... ... ... तब से यह जिब्रील को पहचानता था, और उसके घोड़े के पैरों के नीचे की मिट्टी के विषय में जीवन-दायी भी है, जानता था। वही खाक उसके पास थी। उसने बछड़े के मुँह में डाल दी और वह बछड़ा चीखने लगा।

तफसीर मज़हरी, भाग ७ पारा १६ पृष्ठ ४२५

ऐसी ही व्याख्या 'मुआलेत्तन्जील भाग ३ पृष्ठ १७-१८ में भी की गई है। अब आप स्वयं समझें कि घोड़े के खुरों के नीचे की मिट्टी बछड़े के पुतले मे डालने मात्र से उसमें जीवन आ गया। यह कैसे सम्भव है ? यह कहानी 'तौरात' में निम्नानुसार हैं:-

तब यहोवा ने मूसा से कहा—पहाड़ पर मेरे पास चढ कर और यहाँ रह, और मैं तुझे पत्थर की पट्टियाँए और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूंगा कि तू उनको सिखाये........

...........तब मूसा पहाड़ पर चढ़ गया और बादल ने पहाड़ को छा लिया । तब यहोवा के तेज़ ने सीनै पर्वत पर निवास किया और वह बादल उन पर ६ दिन तक छाया रहा और ७ वें दिन उसने मूसा को बादल के मध्य से पुकारा और इस्राईलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पहाड़ की घाटी पर प्रचण्ड अग्नि सा दीख पड़ता था । तब मूसा बादल के मध्य में प्रवेश कर पर्वत पर चढ़ गया और मूसा पहाड़ पर ४० दिन और ४० रात रहा।

निर्गमन, बाब २४ आयत १३

मूसा के पहाड़ पर जाने की कथा मात्र इतनी ही 'निर्गमन' में हैं। अब आपने बछड़ा बनाने का क़िस्सा भी देख-पढ़ लिया है। अब शेष किस्सा भी देख लीजिये और ख़ुदा की क्षमा का मापदण्ड भी देखें। इस विषय का सम्बन्ध आगामी आयत के साथ है। अतः उसको लिख कर विषय को और भी सुस्पष्ट किया जाता है। आयतः—

वा इज़ काला मूसा ले क़ौमेही या क़ौमे इन्नकुम् ज़लम्तुम् अन्फ़ुसाकुम् बित्ते ख़ाजेकुमुल्इज्ला फ़तूल इला बारेएकुम् फ़क्तोलू अन्फ़ुसकुम्, ज़ालेकुम् ख़ैरूल्लकुम् इन्दा बारेएकुम् फ़ताबा अलैकुम इन्नहू होवत्तव्वाबुर्रहीम ।

कुरआन, पारा १ आयत ५४

अर्थातः—जब मूसा ने अपनी जाति से कहा—तुमने बछड़े को पूजा करने से अपने ऊपर अत्याचार किया । तुम अपने उत्पन्नकर्ता के सन्मुख क्षमा प्रार्थना करो, कि भविष्य में ऐसा नहीं करेंगे, और अपने पालनकर्ता के समक्ष अपने आपको मार डालो । यही तुम्हारे हेतु हितकर है । फिर ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की । निसन्देह, वह महान क्षमाशील और कृपालू हैं ।

तफसीर आज़मुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १७४

अब निम्न पंक्तियों में उनकी तौबा स्वीकृति का विवरण है:—

हज़रत मूसा के समझाने पर होंश आया और लज्जित हुए तथा क्षमायाचना करने लगे। तब उन्हें आदेश हुआ—तुम परस्पर आपस में अपने आपको क़त्ल करो।............ ....और जिन-जिन लोगों ने बछड़ा पूजा था, उनको बैठा दिया और अन्य लोग खड़े हो गए, और क़त्ल करना प्रारम्भ हुआ। देव-योग से अन्धकार छाया हुआ था। अब अन्धेरा हटा तो उन्हें क़त्ल से रोक दिया। तब गणना करने पर जाना गया कि ७० हजार व्यक्ति क़त्ल हो चुके हैं, और सम्पूर्ण जाति की तौबा स्वीकार हुई..................जब इतने कत्ल हो चुके, तो मूसा और हारून ने प्रार्थना प्रारम्भ की-ऐ खुदा! अब तो बनी इस्राईल मिट जायेंगे। इस पर उन्हें क्षमा कर दिया गया और खुदा ने फरमाया-ऐ मेरे पैगम्बर! मरे हुओं का शोक न करो; वह हमारे पास शहीदों के पद पर हैं।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ २१/२

अब आप! मूसा के पाषाणी हृदय को देखिये। उन लोगों ने तौबा (पश्चाताप) भी की। फिर भी मात्र बछड़ा पूजने के दोष में ७० हजार व्यक्तियों को कत्ल कर दिया और अश्रु पोंछने हेतु खुदा ने भी कह दिया—मरे हुओं का शोक न करो, वह हमारे पास शहीदों के पद पर हैं।

हम पूछते हैं, कि क्या इसी का नाम तौबा (पश्चाताप) है? आजमुत्तफासीर में भी ऐसा ही है। लिखा है, कि:—

मूसा ने कहा—जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की है। वह निशस्त्र घरों से बाहर निकलें और दोनों घुटने टेक कर मस्तक नीचा कर बैठे और हाथ-पैर न हिलायें, और जो लोग बछड़ा पूजा में सम्मिलित न थे, वह उनकी हत्या कर डालें। चुनाचें दूसरे दिन प्रातः बछड़ापूजक जंगल में गए और घुटनों के बल

बैठ कर मस्तक आगे झुका लिया। और प्रातः से दोपहर तक ७० हजार व्यक्ति कत्ल कर डाले।

तफसीर आजमुत्तफासीर, पारा १ पृ. १७५

इसी प्रकार मज़हरी में है, किः-

अपराधियों में उन घातकों के निकट सगे-सम्बन्धी बाप भाई-पुत्र तथा कुटुम्बी मित्र थे। जब उन्होंने तलवारें उठाई तो उनके हाथ से प्रेम-सम्बन्ध के नाते तलवारें छूट गई और खुदा की आज्ञा का पालन न हो सका। तब खुदा ने भूमि से भाप अथवा आसमान से एक काला बादल भेजा कि उससे अँधकार व्याप गया। कोई एक-दूसरे को पहिचान न सकता था। तब कत्ल आरम्भ हुआ और कई दिनों तक यह हत्याएँ चलती रही। प्रातः से सायंकल तक निरन्तर कत्ल करते थे... ... तो कत्ल हुओं की संख्या ७० हजार थी। तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १२१

समस्त भाष्यकारों ने कत्ल किये गये व्यक्तियों की गणना ७० हजार ही कहा है। इससे खुदा के कृपालू और क्षमाशील होने और हज़रत मूसा की क्रोधाग्नि का भलिभांति परिचय प्राप्त हो जाता है। अब यह कथा जहां से ली गई है। हम वहां से लिखते हैं:-

जब लोगों ने देखा, कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हो रहा है। तब वह हारून के पास एकत्रित होकर कहने लगे—अब हमारे हेतु देवता बना, जो हमारे आगे:-- आगे चले। क्योंकि उस पुरुष मूसा को, जो हमें मिश्र देश से निकाल कर ले आया है। हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ है ? हारून ने उनसे कहा–तुम्हारी स्त्रियो और पुत्र-पुत्रियों के कानों में जो सोने की बालियां हैं, उन्हें तोड़ कर उतारो और मेरे पास ले आओ। तब सब लोग सोने की बालियां तोड़ कर हारून के पास ले आए और हारून ने उन्हें लेकर एक बछड़ा ढाल कर बनाया..................तब वह कहने लगे-हे इस्राईल ! तेरा पर-

मेश्वर जो तुझे मिश्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है। यह देख कर हारून ने उसके आगे एक वेदी बनवाई और यह विचार किया, कि उस यहोवा हेतु पर्व होगा। दूसरे दिन लोगों ने तड़के उठ कर आहुति-बलि चढ़ाए और बलि ले आए, कि बैठ कर खाया-पिया और उठ कर खेलने लगे। तब यहोवा ने मूसा से कहा-नीचे उतर जा। क्योंकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू मिश्र से निकाल कर लाया है। सो बिगड़ गये हैं। जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैंने उनको दी थी, उसको शीघ्र त्याग कर उन्होंने एक बछड़ा ढाल कर बना लिया है। फिर उसको दण्डवत किया और उसके हेतु बलिदान भी चढ़ाया और यह कहा है कि हे इस्राईलियों ! तुम्हारा परमेश्वर ! जो तुम्हें मिश्र देश से छुड़ा कर लाया है, वह यही है।.................मेरा कोप उन पर भड़क रहा है, जिससे मैं उन्हें भस्म करूं। तब मूसा अपने परमेश्वर यहोवा को यह कह कर मनाने लगा-हें यहोवा ! तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़क रहा है ?...................तू अपने भड़के हुए क्रोध को शान्त कर, और अपनी प्रजा को ऐसी हानि पहुँचाने से फिर जा...................तब यहोवा अपनी प्रजा की हानि करने से, जो उसने कहा था, पछताया। तब मूसा ने फिर कर साक्षी की दोनों तख्तियों को हाथ में लिये हुए पहाड से उतरा। उन तख्तियों के इधर-उधर दोनों ओर कुछ लिखा हुआ था। और वह तख्तियां परमेश्वर द्वारा निर्मित थी, और उन पर, जो खोद कर लिखा हुआ था। वह परमेश्वर का लिखा हुआ था। जब यहोशू को लोगों के कोलाहल का का स्वर सुनाई दिया। तब उसने मूसा से कहा-छावनी से लड़ाई का सा स्वर सुनाई देता है। उसने कहा– यह वो शब्द हैं जो न तो विजयी लोगों का है और न पराजितों का। मुझे तो गाने का शब्द सुन पड़ता है। छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और

नाचना दिख पड़ा। तब मूसा का क्रोध भड़क उठा और उसने तख्तियों को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटक कर तोड़ डाला। तब उसने उनके सजाये हुए बछड़े को लेकर अग्नि में डाल कर फूंक दिया और पीस कर चूर-चूर कर डाला और जल के ऊपर फेंक दिया, और इस्राईलियो को उसे पिला दिया............उनको निरकुश देख कर मूसा ने कहा-जो कोई यहोवा की ओर का हो। वह मेरे पास आए। तब समस्त लेवीय उसके पास एकत्रित हुए। उसने उनसे कहा– इस्राईल का परमेश्वर यहोवा ! यों कहता है, कि अपनी–अपनी जांघ पर तलवार लटका कर छावनी के एक निकास से दूसरे निकास तक घूम--घूम कर अपने–अपने भाईयों– संगियो और पड़ोसियों का घात करो। मूसा के इस वचनानुसार लेवियों ने किया और उस दिन अनुमानतः ३ हजार लोग मारे गए। फिर मूसा ने कहा–आज के दिन यहोवा हेतु अपने याजक पद का संस्कार करो। अन्यथा अपने–अपने पुत्रों और भाईयों के विरुद्ध होकर ऐसा करो, कि जिससे वह तुमको आज आशिवाद दे। निर्गमन बाब ३२

उपरोक्त लिखित मूसा की कथा वहाँ से है। जहां से कुरआनकार ने ली है। यह पठन करने के पश्चात आप अवश्य ही इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि हजरत मूसा की मूल कथा में कुरआनकार ने कतिपय बातें अपनी ओर से वृद्धि कर आवर्धक रूप में लोगों के सन्मुख प्रस्तुत की है, परन्तु अन्धविश्वास और अतिशयोक्ति की सीमा लांघ ली गई है। इस कारण सब गड़बड़ हो गया है। जिस चर्चित आयत पर हम लिख रहे थे। उसका शेष अर्थ—

हमने मूसा को चमत्कार और पुस्तक दी, ताकि तुम शिक्षा अर्थात सीधा मार्ग पाओ। आजमुत्तफासीर पारा १ पृ. १९२
जिस शब्द का अर्थ चमत्कार किया गया, वह शब्द 'फुर्कान्' है। इस पर भी मतभेद है। (किसमें नहीं है ?)

किसी ने लिखा, कि फ़ुर्कान के अर्थ सत्यासत्य-पथभ्रष्टता और शिक्षा में अन्तर करने को फ़ुर्कान कहते हैं। यहां फ़ुर्कान के क्या अर्थ हैं? इसमें विरोध हैं। वैसे तो एक शब्द के कई अर्थ होते हैं।

कसाफ़ का कथन है, कि फ़ुर्कान से वही तौरात तात्पर्य है। कोई कहता है, कि इससे मूसा के चमत्कार अभिप्रेत है, और जो काफ़िर और मौमिन में स्पष्ट अन्तर प्रकट करें। कोई कहता है, कि दरिया का फट जाने से अभिप्राय है– फिरऔन को डूबोने और बनी इस्राईली को छुटकारा देना फ़ुर्कान है।

आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १७३

इसी भांति तफ़सीर मज़हरी पृष्ठ १२० में और तफ़सीर इब्ने कसीर पृष्ठ २१ में भी व्याख्याएँ की गई है। अन्य भाष्यकारों ने भी ऐसा ही अर्थ किया और करते हैं।

पाठक बन्धुओं! आपने भलीभांति देख लिया कि उक्त दोनों आयतों में किस भांति मतभेद और अन्तर हैं। जो आयत प्रथम लिखी गई, उसमें है, कि खुदा ने मूसा से ४० रात्रि का वादा किया और द्वितीय आयत में है, ३० रातों का वादा किया और दतौन करने के परिणामस्वरूप १० दिन और वृद्धि कर ४० पूर्ण कर दिये। जब सूरत 'बकर, को सूरत 'एराफ़, के पश्चात उतरी कही जाती है, तो ४० की गणना पूर्ण करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इसी प्रकार फिर बछड़े का किस्सा? अत्याधिक विचित्र है। कुरआन के अनुसार बछड़ा सामरी ने बनाया और तौरात के अनुसार मूसा के भाई हारून ने बनाया। कुरआन कहता है, कि सामरी ने जिब्रील के घोड़े के पांव के नीचे की एक मुट्ठी मिट्टी उठा कर बछड़े में डाल दी, जिससे वह बोलने और भागने-कूदने लगा। फिर बछड़ा–पूजा के दण्डस्वरुप ७० हजार व्यक्तियों की हत्या कर दी गई। फिर इन लोगों ने पश्चाताप (तौबा) भी किया इस भी इतना भयंकर और जघन्य नरसहार

आश्चर्य है। आगे है:- यह लोग मूर्तिपूजक ज्ञात होते हैं। प्रथम इनका ऐसे लोगों में जाना हुआ जो मूर्तियों (बुतों) की भक्ति में सुस्थिर थे। इस पर बनी इस्राईल ने मूसा से कहा—

कालू या मूसज्अल्लना एलाहन कमा लहुम आलेहतुन। क़ाला इन्नकुम् कौमुन तजहलून।

कुरआन, पारा ९ रकू १६/६ (एराफ़)

अर्थात:-(बनी इस्राईल) कहने लगे-मूसा हमारे हेतु भी एक ऐसा पूज्य देवता निश्चित कर दे। जैसे इनके इष्टदेव हैं। मूसा ने कहा-निसन्देह तुम लोग मूर्ख हो (यही है, वह जाति जिसको कुरआन और उसके खुदा ने कहा, कि तुमको समस्त सृष्टि से उत्कृष्टता प्रदान की।)

तफसीर मज़हरी पारा ९ पृष्ठ ३७६

देखिये ! जिस जाति और समुदाय को, कुरआन और इस्लाम के खुदा ने समस्त सृष्टि से उत्कृष्टता प्रदान की, कहा है। उसको इतना भी ज्ञान नहीं है कि किस की भक्ति या आराधना करना चाहिए और कब व कैसे करना चाहिए। यह आप पढ़ चुके हैं कि बछड़ापूजको को किस भांति मरवाया गया है, कि मस्तक नीचे कर घुटनों के बल बैठ गए और दूसरे लोगों ने उन्हें क़त्ल कर दिया। परन्तु आयत में शब्द हैं 'फ़क़्तुलु अन्फुसकुम' अर्थात पस, मारो अपने आपको स्वयँ, अर्थात आत्महत्या कर मर जाएँ। लेकिन इस कहानी का विवरण निश्चयात्मक इस स्पष्ट अर्थ के विपरीत हैं, क्योंकि बनी इस्राईल स्वयं अपने हाथों से नहीं मरे, अपितु उन बछड़ापूजकों को उन लोगों ने कत्ल किए हैं, जो कि उनसे सर्वथा पृथक थे। तफसीर कादरी में है, कि:--

और हारून २ हजार व्यक्तियों सहित तलवारें खींच कर आए और प्रातः से दोपहर तक ७० हजार व्यक्तियों की हत्याएँ कर डाली। तफसीर कादरी भाग १ पृष्ठ १३

आजमुत्तफासीर में है कि:--

सो यहां हकीकत कलाम मुराद नहीं है, बल्कि असनादे मजाजी। अर्थात--सो यहाँ वास्तविक कथन अभिप्राय नहीं है, अपितु अवास्तविक प्रमाण पर निर्भर हैं।

आजमुत्तफासीर, पारा १ पृष्ठ १७५

अब आप देखिये ! कि जहां आयत के विपरीत कार्य हुआ, तो उसे अवास्तविक प्रमाण घोषित कर टाल दिया।

हम कहते हैं, कि यह मूसा का घटनाकाल हज़रत मुहम्मद से २ हजार वर्षों पूर्व का है, तो फिर आयत में ऐसे शब्दों का प्रयोग क्यों कर हुआ कि जो उपयुक्त न हो। जो कुछ पूर्व में घटित हुआ था। उसे ज्यों का त्यों ही वर्णन करना था। यह सिद्ध है, कि उक्त घटना में लोगों ने स्वयँ आत्महत्याएँ नहीं की। जब कुरआन उस बात को बता रहा है, जो कि घटित हो चुकी है, तो जो कुछ घटा उसके विरूद्ध शब्दावली क्यों लिखी गई। अब आगे बनी इस्राईल की हठधर्मी का विषय है:—

व इज कुल्तुम या मूसा लन्नोमैना लका हत्ता नरल्लाहा जहरतन फ अखज़त्कुस्साएकतो वा अन्तुम तन्ज़ोरून् सुम्मा व अस्नाकुम्मिन बादे मौतेकुम् लअल्लकुम् तश्कोरून्।

कुरआन पारा १ आयत ५६-५७

अर्थात:--और जब तुमने कहा-- ऐ मूसा ! हम कदापि तुम पर ईमान नहीं लायेंगे अर्थात तेरा दीन (धर्म) स्वीकार नहीं करेंगे।

जब तक कि हम अल्लाह को प्रत्यक्ष न देख लें। पस, पकड़ा तुमको मूसा ने और ७० व्यक्ति चुन कर लाने को, हमारे वादे के अनुसार, और फिर जब उनको लरज़ें (कम्पन) ने आ पकड़ा तो मूसा ने प्रार्थना की, ऐ रब्ब ! (ऐ परमेश्वर !) यदि तू चाहता तो इनको पहिले ही हलाक (मार) कर देता।

आजमुत्तफासीर पारा ९ पृष्ठ २२६

आगे वही है, जो हम पूर्व में अन्यत्र लिख चुके हैं। कई लोगों ने बिना किसी प्रमाण के ही 'रिज़्फा' शब्द का अर्थ 'विद्युत' कर दिया है, क्योंकि एक आयत में विद्युत है, किन्तु इसमें मात्र 'रज़्फ़ा' है। जिसका अर्थ ज़लज़ला अर्थात भूचाल होता है।

बयानुल्कुरआन पारा ९ पृष्ठ ७८१ (एराफ़)

'निर्गमन' में यह इस प्रकार है:—

न ७० व्यक्ति बुलाये, न कोई पहाड़ पर गया, न विद्युत और न भूचाल से कोई मरा, न मरणोपरान्त किसी को जीवित ही किया। लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की आज्ञा नहीं थी। कतिपय आज्ञाएँ भी सुनाई गई। 'निर्गमन' बाब १९

जो भी कुछ ७० व्यक्तियों की चर्चा की गई है। वह तौरात में नहीं है, अपितु कुरआन की अपनी स्वय की सूझबूझ और मनगढ़न्त कपोल कल्पना मात्र है।

अब देखिए— जब बनी इस्राईल ने खुदा को प्रत्यक्ष देखने की बात कही तो खुदा ने इसे असम्भव मान कर उन्हें विद्युत से जला दिया तथा जब मूसा ने यही बात कही तो उसे अग्नि या विद्युत से भस्म नहीं किया। जो भी कुछ किया सो निम्नानुसार हैं। रब्ब (ईश्वर) ने कलाम किया, तो उसे श्रेष्ठ पैगम्बर बना दिया:—

वा लम्मा जाआ मूसा लेमीकातेना वा कल्लमहू रब्बोहू; काला रब्बे अरेनी अन्ज़ुर इलैका; काला लन् तरानी; वा ला के निन्ज़ुर इलल्जबले फ़ए निस्तकर्रा मकानहू फ़सौफातानी।

कुरआन पारा ९ रकू १७/७

अर्थात:- और जिस समय मूसा अपने निश्चित समय पर आया और उसके साथ, उसके रब्ब ने कलाम किया। अर्थात उसे अपना कलाम बिना किसी प्रतिबन्ध के सीधा सुना दिया।

'तिब्यान' में लिखा है, कि जब खुदा ने चाहा कि मूसा से कलाम करे, तो ७ कोस तूर पर्वत के घेरे को अँधकार ने घेर लिया और जब मूसा ने अंधेरे में पाँव रखा तो उनके शैतान को उनके पास से हांक दिया और कर्मपत्र-लेखक दोनों फ़रिश्तों को भी उनके पास से पृथक कर दिया; और आसमान को उसकी दृष्टि में लाए, उन्होंने फरिश्तों को सेवा में खड़े देखा; और विशाल अर्श (खुदा का सिंहासन) उन पर प्रकट हुआ।

'यनाबीअ्' में लिखा हैं; कि मूसा को २४ हजार कलमे सुनाये गये; और एक रवायत (उद्धृण) में है; कि ७ लाख; परन्तु सत्य २४ हजार हैं।

'कसाफ' में लिखा है, कि खुदा ने हज़रत मूसा से ४० दिन-रात कलाम किया। [अवश्य ही किया होगा? क्योंकि सम्भवतः दोनों ही बेकार जान पडते हैं। यदि पूरे वर्ष भी करते रहते, तो भी क्या हानि होती?] जब हज़रत मूसा ने खुदा का कलाम सुना, तो उन्हें प्रेम की मात्रा उत्पन्न हुई और मद में विस्मृत हो गये, कि मैं ससार में हूं, अपितु यह विचार उत्पन्न हुआ, कि मैं फिरदौसे आला अर्थात सबसे बड़े स्वग में हूँ। क्योंकि स्वर्ग मिलने और प्रभूदर्शन का स्थान है। [क्या कयामत, दीदार का

स्थान नहीं ?] तो हज़रत मूसा ने कहा– मुझे अपना साक्षात दर्शन करा दे कि मैं इन आँखों से आपको देखूं । अल्लाह ने कहा– तू मुझे संसार में न देख सकेगा । क्योंकि अनादि आदेश इस भाँति है, कि जो मुझे संसार में देखेगा, सो मर जायेगा ···· और तू पर्वत की ओर देख । यदि पहाड़ मेरे प्रकाश से दृढ़ और उचित रहा तो तू भी मुझे देख सकेगा । [मूसा को प्रत्यक्ष उदाहरण सहित समझा दिया किन्तु उन लोगों को समझाया तक नहीं और बेचारों को विद्युत से भस्मीभूत ही कर दिया ! वाह, खुदा भी क्या खुदा हैं ?)

'ऐन्लमूआनी' में सहल साएदी से वर्णित है, कि खुदा ने ७० हजार पर्दों की ओट में से एक दिरहम (एक छोटे सिक्के के समान) के परिणाम अपना प्रकाश प्रकट किया । उस समय समस्त भू पर जो पागल थे, बुद्धियुक्त हो गए । जो रोगी थे, स्वस्थ हो गए । सम्पूर्ण धरती हरी-भरी हो गई । खारा जल मीठा हो गया । बुत्त (मूर्तियां) मुँह के बल गिर पड़े । मजूसियों की अग्नि बुझ गई । (जो यज्ञ हेतु सदैव रखते हैं ।) और इस प्रकाश के कारण पर्वत को अल्लाह ने खण्ड-खण्ड कर दिया ।

"तिब्यान" में है, कि ६ पर्वत उससे पृथक हो गए । ३ पर्वत उहद-वर्कान और रज़वी यह तो मदीना में जा पड़े और दूसरे ३ पर्वत सौर-सबीर और हिरा मक्का में जा पड़े, और हज़रत मूसा पहाड़ को खड-खड होता देखकर भय के मारे अचेत होकर गिर पड़े और बृहस्पतिवार की संध्या से शुक्रवार की संध्या तक बेहोश रहे । होंश आने पर खुदा की स्तुति और पवित्रता बखान करने लगे ।

तफसीर कादरी भाग १ पारा ९ पृ. ३३२–३३

उपरोक्त विषय में तफसीर मज़हरी ने जो लिखा, वह अत्याधिक मनोरजक और हास्यास्पद है । इसे भी पढ़िये:–

जिस समय अल्लाह ने मूसा से वार्तालाप किया था। उस समय शैतान ने भूमि के भीतर घुस कर और मूसा के दोनों पैरों के मध्य से भूमि चीर कर अपना मस्तक ऊपर निकाल कर मूसा के हृदय में यह वसवसा (भ्रम) डाला था, कि यह तुझसे कलाम करनेवाला अल्लाह नहीं शैतान है। उस समय हज़रत मूसा ने दर्शन हेतु प्रार्थना की। फिर खुदा ने मूसा से कहा—'इन्नी इस्त-फ़ैतोका अलन्नासे' (कुरआन पारा ९) अर्थात ऐ मूसा! मैंने तुझे लोगों में चुन लिया, विशेष कर लिया पैग़म्बरी और कलाम सहित।................ हज़रत मूसा कतिपय सिद्धान्तों से अभिज्ञ थे, और इसमें कोई दोष की बात नहीं। जैसे हज़रत नूह ने अपने पुत्र हेतु मुक्ति की प्रार्थना की थी, और उन्हें ज्ञात न था कि वह डूबने से बचाया जायेगा या नहीं? हज़रत इब्राहीम ने अपने पिता हेतु क्षमा की प्रार्थना की, उन्हें ज्ञात न था कि मुशरिक को नहीं बख्शा जायेगा। हज़रत मुहम्मद साहिब ने भी अबू तालिब (अपने चचा व पालक) हेतु क्षमा की प्रार्थना की थी 'वल्ला-ज़ीना आमनू अंय्यस्तग़फ़िरू लिल्मुशरेकीना वा लौ कानू उलि-कुर्बा' अर्थात उचित नहीं हैं नबी के हेतु और उन लोगों के जो ईमान लाये, कि क्षमा मांगे मुशरिकों हेतु। यद्यपि वह निकठस्थ सम्बन्धी ही क्यों न हों, और फिर हज़रत मुहम्मद साहिब ने काफ़िरों हेतु भी क्षमा की प्रार्थना की थी:-इस्तग़फ़िरलहुम औ लातस्तग़फ़िरलहुम सब्ईना मर्रातीन् फ़ लंय्यग़फ़ेरल्लाहो लहुम।

कुरआन पारा १० रकू १०/१६

अर्थात:-ऐ मुहम्मद! तू उनके हेतु क्षमा मांग या न माँग, यदि ७० बार भी क्षमा मांगे तो भी खुदा उनको नहीं बख्शेगा। ..
....
उस समय यह ज्ञात न था, कि काफिरों हेतु क्षमा प्रार्थना भी स्वीकार होने योग्य नहीं। (यह अन्तिम पैगम्बर

थे, और उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं ?)

तफसीर मज़हरी भाग ४ पारा ९ पृ. ३७९

हम यह लिख रहे थे, कि हज़रत मूसा ने ख़ुदा के दर्शन हेतु ख़ुदा से कहा। इस पर तफसीर मज़हरी ने अत्याधिक महत्वपूर्ण और मनोरंजक भाष्य लिखा। सो उसे देख कर यह भी विचार आया कि आप पाठकगणों की जानकारी हेतु यह विवरण अवश्य प्रस्तुत करना चाहिये। जो इस प्रकार है:—

वहब बिन मंबा और इब्ने इस्हाक ने वर्णन किया, कि जब मूसा ने ख़ुदा के दर्शन का प्रश्न किया, तो कोहरा और अंधकार ४-५ फर्सख (१ फर्सख = ३ मील) तक छा गया। बिजलियां चमकने लगी, बादल गरजने लगे और अल्लाह ने आसमानों के फरिश्तों को आदेश दिया, कि मूसा के समक्ष आ जाएं। आदेशानुसार निचले आसमान के फरिश्ते बैलों की आकृति में बादल के सदृष्य गरजदार आवाज़ में अल्लाह की पवित्रता का जाप करते सामने से गुज़रे। फिर द्वितीय आसमान के फरिश्ते सिंह की आकृति में सामने आए। उनके मुख से भी अल्लाह की पवित्रतायुक्त दहाड़े निकल रही थी। निर्बल भक्त मूसा इस दृश्य को देख कर और उन आवाजों को सुनकर भयभीत हो कांप गया। शरीर के रोंए खड़े हो गए और कहने लगा—अब मुझे अपनी प्रार्थना पर लज्जा है। क्या ही अच्छा होता कि कोई वस्तु मुझे यहाँ से पृथक कर देती, ताकि मैं यह दृश्य न देखता। इस पर फरिश्तों के मुखिया ने कहा-मूसा अभी अपने प्रश्न पर दृढ़ रहो। अभी तो बहुत थोड़ा देखा है तुमने। फिर तृतीय आसमान के फरिश्ते मूसा के सामने आए उनका रूप भी सिंहों के समान था। गर्जीली आवाज में अनवरत ख़ुदा की पवित्रता और श्रेष्ठता के जप का शोर कर रहे थे। (पाठक बन्धुओं। कहीं ऊब न जाईयेगा। तनिक ख़ुदा

की अपनी सृष्टि का आप भी दृश्यावलोकन अवश्य करें।) ऐसा ज्ञात होता है, कि जैसे किसी सेना का सम्मिलित शोर हो रहा है। अग्नि की लपटों की भांति उनका रंग था। मूसा भयभीत हो गए और जीवन की आशा न रही। मुखिया फरिश्ते ने कहा-इब्ने उमरान। (मूसा) अपने स्थान पर ठहरे रहो। तुम्हारे सन्मुख अभी तो ऐसा दृश्य आयेगा, कि उसे सह न सकोगे। फिर चतुर्थ आसमान के फरिश्ते मूसा के सामने आए। पूर्व में जो फरिश्ते आये थे, उनके रुप उनसे भिन्न थे। रग तो अग्नि ज्वालाओं जैसा था और शरीर बर्फ की भांति सफेद था। उनका जयघोष अत्याधिक ऊँचा था। इसे देख कर हज़रत मूसा का अंग--प्रत्यंग चटकने और हृदय धड़कने लगा, और बड़े जोर से रुदन करने लगे (अरे खुदा के पैग़म्बर होकर घबरा गये। कोई कुछ लेता या कहता है? तनिक सन्तोष करो और अपने खुदा का लवाज़मा तो पूरा देख ही लो। बेचारे, लोग तो मात्र झाँकिया देख कर ही आनन्दित और प्रसन्न हो उठते हैं। और एक आप हैं, बिना कुछ लिये-दिये मुफ्त में देखने पर किसी गँवार और उज्जड़ व्यक्ति की भाँति घबराने और रोने लगे) फिर फरिश्तों के सरदार ने मूसा को दृढ़ रहने हेतु कहा। फिर पंचम आसमान के फरिश्ते मूसा के सामने आए। जिनके ७ रंग थे। मूसा के देखने की शक्ति न रही। ऐसी आकृतियां उन्होंने नहीं देखी थी और न ऐसी आवाजें ही सुनी थी। दिल घबराया और शोक ने घेर लिया तथा वह अत्याधिक रोने लगे। (आप चाहे जितना रोओ-कलपो। खुदा तो अपना सम्पूर्ण वैभव और शानौशोकत दिखा कर ही रहेगा। पुनः फरिश्तो के मुखिया ने वही बात कही जो सबने कही। खुदा के आदेशानुसार फिर षष्ठम आसमान के फरिश्ते उतर कर मूसा के निकट आए। प्रत्येक फरिश्ते के हाथ में सूर्य से अधिक प्रकाशवान् व खजूर के सदृश्य लम्बा अग्निदण्ड

था। सबकी देशभूषा अग्नि-ज्वालाओं के सदृश्य थी। प्रत्येक फरिश्ते के मस्तक में ४ मुँह थे। गत फरिश्तों की आवाज़ सदृश्य उच्च स्वर से यह पढ़ रहे थे:—

"सब्बहून कुद्दूसुन रब्बुल्मलाएकते वर्रूहे रब्बुलइज्जते अब्दन ला यमतो।"

मूसा उनका जप सुन कर स्वयँ भी जप करने लगे और साथ ही रूदन भी करते जाते थे तथा विनती करने लगे— ऐ मेरे रब्ब ! मुझे स्मरण रखना। यदि मैं यहाँ से निकलता हूँ, तो जल जाऊँगा और यहां रहता हूं, तो मर जाऊँगा। अपने भक्त को विस्मृत मत कर देना। इन फरिश्तों के सरदार ने भी वही बात कही, जो सब कहते चले आए हैं। फिर इसके पश्चात सप्तम आसमान के फरिश्तों को खुदा के तख्त को उठाने का आदेश हुआ। ज्योंही नूरे अर्श (प्रकाशमय सिंहासन) आलोकित हुआ, पर्वत खुल गया और समस्त फरिश्तों ने:—

"सुब्हानुल्मलकिल्कुद्दूस रब्बुलइज्जाते अबदा लायमूतो" की आवाज़ बुलन्द की। पहाड़ में कम्पन आया और जो वहाँ वृक्ष था, फट गया तथा निर्बल भक्त मूसा मुँह के बल बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर अल्लाह ने अपनी कृपा से रूह (आत्मा) को उसके पास भेजा और वह मूसा पर साये की भाँति हो गई। जिस पत्थर पर मूसा खड़े थे। उस पत्थर को मूसा पर उलट कर गुम्बद-सा बना दिया, ताकि मूसा जल न जाए। किञ्चित देर पश्चात रूह ने उन्हें खड़ा कर किया, तो मूसा खुदा की पवित्रता का पाठ करते हुए उठ खड़े हुए और प्रार्थना करने लगे— मेरे मालिक ! मैं तुझ पर ईमान लाया और तस्दीक करता हूँ (मूसा पैगम्बर हो गया था, किन्तु खुदा पर ईमान अब लाया) ठीक,

जो भी व्यक्ति तुझे देखेगा, जीवित न रहेगा। पुनः खुदा को स्तुति करने लगा। फिर ज्योंही रब्ब (खुदा) ने पहाड़ पर अपना जलवा (प्रकाश) डाला। उसे छिन्न-विछिन्न कर दिया। मूसा पुनः बेसुध हो गिर पड़े और फिर जब सुधि आई, तो विनती की- निसन्देह, तेरी सत्ता पवित्र है।

सियूती ने लिखा है, कि तेरी तर्जनी (अंगुली) के अर्धांश के सदृश्य खुदा के प्रकाश (नूर) का प्रकटीकरण हुआ।

इब्नो अब्बास ने फरमाया, कि खुदा का नूर पहाड़ पर आलोकित हुआ।

ज़ुहाक का कथन है, कि अल्लाह ने अपने प्रकाश से पर्दे हटा लिये थे और बैल की नाक के छिद्र के बराबर (नूर को) प्रकट कर दिया था।

अब्दुल्लाह बिन सलाम और काबे अहबार ने बताया, कि खुदा की प्रतिष्ठा का दृश्य मात्र सुई के छिद्र (नाके) के बराबर प्रकट हुआ था, कि पहाड़ फट गया।

बहुत लोगों ने खुदा के प्रभाव को पहाड़ पर देखा, किन्तु इब्ने अब्बास ने फरमाया- पहाड़ को खाक कर दिया, और पहाड़ धीरे-धीरे चला (क्या खाक हो चुकी वस्तु भी चलती है ?) यहां तक कि समुद्र में जा गिरा। और समुद्र के भीतर अब भी बराबर चलता जा रहा है। (सत्य है, मौलाना साहिब ! आप क्या झूठ थोड़े ही कह सकते हैं ?)

बहुत लोगों ने पहाड़ की अवस्था पर अपने विचार कहे हैं। अन्ततः जब हज़रत मूसा को होश आया, तो कहा- मैं बिना आज्ञा प्राप्त किये प्रश्न करने से तौबा करता हूँ, और इस समय में सबसे प्रथम मौमिन [मुसलमान] हूँ।

तफसीर मज़हरी, पारा ९ [एराफ़] पृष्ठ ३८० से ३८३

उपरोक्तानुसार ही वर्णन तफसीर मुआलेमुत्तन्जील, सूरत 'एराफ' पृष्ठ २२-२३ में भी किया गया है।

हम इस विषय पर लिख रहे थे; कि मूसा की जाति ने कहा–हम तब तक ईमान न लायेंगे, कि जब तक खुदा को प्रत्यक्ष न देख लें। तब विद्युत (गाज) गिरने से उनकी मृत्यु हो गई। और फिर मूसा की प्रार्थना पर उनको जीवित कर दिया।

हम पूर्व में कुरआन की आयतों के प्रमाणसहित लिख चुके हैं, कि आयत में यह कहा गया है; कि खुदा प्रत्येक मनुष्य को जन्म देता है; फिर मारेगा और पुनः कयामत के दिन जीवित करेगा।

इस्लाम उन आयतों के आधार पर दुनियाँ में मृत्यु हो जाने पर कयामत से पूर्व किसी का जीवित होना नहीं मानता है, किन्तु उपरोक्त आयत में है, कि ७० मनुष्यों को मार दिया और पुनः जीवित किया' इस भांति एक बार जीवित होना और एक बार मरना न रहा। यह कुरआन की अनेक आयतों के प्रतिकूल है। क्योंकि इसमें एक बार मरना और पुनः जीवित होना, अधिक हो जाता है। जब खुदा की यह घोषणा हैं, कि संसार में एक बार उत्पन्न होना और फिर एक बार ही मरना है, तो यह मध्य में एक बार से अधिक मरना और पुनः जीना इस्लाम और कुरआन के सिद्धांत एवं विधान के विरुद्ध है। फिर या तो वह पूर्वोक्त आयतें प्रभावहीन और निष्प्रयोजनीय मानी जाए या फिर यह आयतें, जिनमें लोगों को संसार में ही मार कर पुनः संसार में ही जीवित किया गया है। यह गलत मानी जाए।

सम्भवतः इस्लाम और कुरआन के फर्माबरदार कोई मुसलमान बन्धु यह कहे, कि यह तो मात्र ७० मनुष्य थे।

हम कहते हैं, कि ७० हो या मात्र १ ही क्यों न हों? खुदा ने जो कानून बनाया था, वह तो भंग हो गया। फिर यहां तो

मात्र ७० ही हैं पर अन्य दूसरे स्थान पर ऐसी संख्या सहस्रों तक भी हैं। यह देखिये:—

अलम्तरा एलल्लाज़ीना ख़रजू मिन् देयारेहिम वा हुम् उलूफुन् हज़रल्मौत् । फ़ काला लहोमुल्लाहो मूतू सुम्मा अहयाहुम इन्नल्लाहा लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासे वा ला किन्ना अक्सरान्नासे ला यशकोरून् । कुरआन पारा २ रकू ३१/१५ (बकर)

अर्थात:-क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा, कि जो अपने घरों से मृत्यु के भय के कारण निकल गये, और हाल यह है कि वह संख्या में हजारों थे। तब उनको खुदा ने कहा-मर जाओ। पुनः उन्हें जीवित कर दिया। निसन्देह खुदा मनुष्यों पर बड़ी कृपा करता है। तफसीर हक्कानी पारा २ पृष्ठ ९४.

विवरण इस प्रकार है:-

जब दूसरे वर्ष पुनः ताऊन पड़ी, तो गांव वाले समस्त छोटे से बड़े तक, जो कतिपय कथनानुसार ८ हज़ार और कतिपय मतानुसार ४० हजार अथवा ७० हजार व्यक्ति थे। वह एक जंगल में पहुँचे। जंगल अत्यन्त सुहावना और स्वास्थ्यप्रद था। उन लोगो ने वहां पर अपने पड़ाव डाल दिये। खुदा तआला ने वहां २ फरिश्तों को भेजा। जिनमें से एक ने उस क्षेत्र के ऊपर की ओर से और दूसरे ने नीचे की ओर से एक ऐसी भयंकर चीख मारी कि वह सब के सब मर गये। आस पास के लोग जब लगने पर आये, ताकि दबा दें, तो उन्होंने उनके इर्द गिर्द एक घेरे के सदृश्य दीवार बनादी ।..................एक दीर्घकाल उन पर व्यतीत हो गया। जिसके कारण उनका माँस आदि गल कर राख हो गया और मात्र हड्डियों के अतिरिक्त और कोई चिह्न शेष न रहा। इसी मध्य हज़रत हिज़्कील का इस ओर आगमन हुआ। हिज़्कील मूसा के तीसरे ख़लीफ़ा थे। आपने एक विस्तृत

क्षेत्र को हड्डियों के ढेर से भरा देख कर आश्चर्य किया और चारों ओर ज्ञातव्य—दृष्टिपात कर खुदा की सेवा में प्रार्थना की जिस प्रकार तूने अपने भय का प्रभाव उन्हें दिखाया। उसी प्रकार अपनी कृपा—दृष्टि भी इन पर डाल। खुदा की बारगाह (निवास स्थान) से उत्तर आया-हिज़कील ! मैं तेरे कारण से स्वीकार करता हूँ और तेरी प्रार्थना खुदा के दरबार में स्वीकृत हुई। तू एक ऊँची जगह पर खड़ा होकर यह कह, कि सड़ी-गली अस्थियों ! खुदा का आदेश है, कि तुम सब एक स्थान पर एकत्रित हो जाओ। ज्यों ही यह शब्द हिज़कील के मुँह से निकले। त्यों ही प्रत्येक शरीर की समस्त अस्थियां एक-दूसरे से मिल गई और अपने स्थान पर जुड़ गई। फिर हिज़कील को आदेश पहुँचा—खुदा का आदेश है, कि ऐ जुड़ी हड्डियों ! खुदा की आज्ञा है, कि तुम अपने गोश्त-पोश्त को, रगों-पठ्ठों का लिबास पहिन लो। हज़रत हिज़कील ने जैसे ही कहा। अस्थियों पर तत्काल ही गोश्त-पोश्त चढ़ गया। फिर आदेश हुआ, कि यह वाक्य कहो-ऐ रूहों ! (आत्माओं !) खुदा तुम्हें आज्ञा देता है कि अपने अपने शरीर में प्रविष्ट हो जाओ। हज़रत हिज़कील की जिन्हा से यह वाक्य निकलते ही सब के सब जीवित हो उठे।

तफसीर आज़मुत्तफ़ासीर, पारा २ पृष्ठ ७२-७३

यह मरने और पुनः जीवित होने वाले मनुष्य हज़ारों की सँख्या में थे, जो कि इस संसार में खुदा के ही द्वारा मरे और पुनः खुदा के ही द्वारा संसार में पुनर्जीवित भी हुए। इस पर हक्कानी ने लिखा:—

कुरआन मजीद से यह ज्ञात नहीं होता, कि यह घटना किस काल में और किस नबी के समय में घटी। और घर से मृत्यु से भयभीत होकर शत्रु के कारण से निकले थे या वबा

(रोग) के कारण ? विद्वानों और भाष्यकारों के इसमें विभिन्न कथन हैं (किसमें नहीं है ?) किन्तु सत्य और विश्व सयोग्य यह है, कि यह घटना हज़रत हिज़कील के काल में बनी इस्राईल पर घटित हुई थी।

हज़रत इब्ने अब्बास का भी यही कथन है, कि फिर खुदा ने हिज़कील को कहा; कि यह शब्द कहो [जिनको हम ऊपर लिख चुके हैं] इस प्रकार वह जीवित हो गए।

तफसीर हक्कानी; पारा २ पृष्ठ ९५

इसी प्रकार इस घटना के सम्बन्ध में ऐसा ही विवरण तफ-मज़हरी पारा २ पृष्ठ ५५३ से ५५६ में; तफसीर कादरी भाग १ पारा २ पृष्ठ ६९-७० में, तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील पारा २ पृ. ११४ में, तफसीर कुरआनिल्अज़ीम पृष्ठ २४ में, तफसीर बैज़ावी पृष्ठ २४ में और तफ़सीर अज़ीमुल्कुरआन पृष्ठ २४ एवं तफसीर जलालैन पृष्ठ ३७ में तो वर्णन एक समान है।

यह तो आपने कुरआन का विवरण पढा। अब आप 'हिज़काएल' भी देखें। बाइबिल में एक पुस्तक 'हिज़काएल' है। हिन्दी में इस पुस्तक का नाम 'यहेजकेल' है। कुरआ-नकार और व्याख्याकारों ने वहाँ से लेकर इस कथा को लिखा है। हिज़काएल में है कि:—

यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई और वह मुझमें अपनी आत्मा समा कर बाहर ले गया तथा तराई के मध्य खड़ा कर दिया। और तराई अस्थियों से भरी हुई थी। तब उसने पूछा—ऐ मनुष्य की सन्तान ! क्या वे अस्थियाँ जी सकती है ? मैंने कहा—हे परमेश्वर यहोवा ! तू ही जानता है। तब उसने मुझसे कहा—इन अस्थियों से भविष्यवाणी कर के कह—ऐ सूखी

अस्थियों ! यहोवा की वाणी सुनो । परमेश्वर यहोवा तुम अस्थियों से यों कहता है-कि देखो मैं आप तुममें साँस समवाऊंगा और जी उठोगी और मैं तुम्हारी नसें उपजा कर माँस चढाऊंगा और तुमको चमडे से ढापूंगा और तुममें माँस समवाऊंगा, और तुम जी उठोगी, जीओगी और यह जान लोगी, कि मैं यहोवा हूँ । इस आज्ञानुसार मैं भविष्यवाणी करने लगा और भविष्यवाणी कर ही रहा था, कि एक आहट आई और भूडोल (भूकम्प) हुआ और वे अस्थियाँ एकत्रित होकर अस्थि के साथ अस्थि जुड़ गई और मैं देखता रहा, कि उनके नसें उत्पन्न हुई और माँस चढ़ा और वे चमड़े से ढंप गई, परन्तु उनमें साँस न थी । तब उसने मुझसे कहा-ऐ मनुष्य की सन्तान ! साँस से भविष्यवाणी कर के कह--हे साँस ! परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि चारों दिशाओं से आकर इन घात किये हुओं में समा जा, कि यह जी उठें । उसकी इस आज्ञानुसार मैने भविष्यवाणी की । तब उनमें साँस आ गई और वे जीकर अपने-अपने पैरों के बल खड़े हो गए और एक बहुत बड़ी सेना हो गई ।"......
इत्यादि यहेजकेल अध्याय ३७ आयत १ से १२

वैसे तो यह दोनों पुस्तकें एक ही किस्म के खुदा की बनाई हुई कहीं जाती हैं । हम बाइबिल के प्रमाण, कोई प्रमाणिक समझ कर नहीं लिख रहे हैं, अपितु मात्र यह दिखा रहे हैं, कि कुरआन में जो हिज़कील की कहानी को लिखा गया है । वह यहां से लेकर अरबी में अनुवादित किया गया है। इसके अतिरिक्त एक और घटना मारने और जीवित करने की कुरआन में वर्णित की गई है :—

औ कल्लाज़ी मर्रा कर्यातिव्व हिया खावियतुन अला ऊरूशेहा, काला अन्ना योहयी हाज़ेहिल्लाहो बादा मौतेहा । फ़ अमाता हुल्लाहो । मेआता आमिन सुम्मा ब असहु । काला कम् लबिस्ता

यौमन औ बाज़ा यौमिन काला बल लबिस्ता मेअता आमिन।
फ़न्जुर इना तुआमेक़ा बा शराबेक़ा.... ......इत्यादि।

कुरआन पारा ४ रकू ३५/३

अर्थात:-- या जैसे वह व्यक्ति जो गुज़रा एक नगर पर, जो गिर पड़ा था अपनी छतों पर, बोला--कहां जलायेगा इसको अल्लाह, इसकी मृत्यु के पश्चात ? पस, मृत्यु दी अल्लाह ने उसको। एक सौ वर्ष, फिर उसको उठाया और पूछा-कितनी देर रहा ? बोला मैं रहा एक दिन या उससे कम। फरमाया-नहीं, तू सौ वर्ष रहा, सो देख अपने खाने व पीने को, कि बिगड़ा नहीं है, और देख अपने गधे को। और तुझको हम उदाहरण किया चाहते हैं लोगों के हेतु। और देख अस्थियों को, कि क्यों कर हम उभारते हैं। और फिर हम माँस पहिनाते हैं। फिर जब उन पर खुल गया (तो) बोला- मैं जानता हूँ कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर कादर (बनाने में समर्थ) हैं।

मुआहिबुर्रहमान, पारा ३ पृष्ठ २५

इसी प्रकार तफसीर हक्कानी में एक और दूसरा किस्सा भी है, जो कि हज़रत ईसा से लगभग ६०० वर्षों पूर्व शाम देश में एक स्थान एलिया में हुआ उसका विवरण निम्नानुसार हैं:—

आक्रमण में बाबल के शासक बख़्ते नसर ने सहस्त्रों बनी इस्राईलियों को कत्ल किया और यरूशलम नगर को जला कर नष्ट कर दिया तथा बैतुलमुकद्दस को गिरा कर और जला कर नष्ट कर दिया और ७० हजार को बन्दी बना कर साथ ले गया ....मगर हज़रत यर्मियाह वहीं रहे थे। एक बार वह इस नगर से गुज़रे। उसको यह स्थिति और देश व जाति की बर्बादी देख कर मन भर आया और शोकातुर होकर कहने लगे-अब इस

नगर को अल्लाह क्यों कर आबाद करेगा ? अल्लाह ने उसको अपनी सम्पूर्ण शक्ति का तमाशा दिखाया। वह यह कि यर्मियाह ने अपना गधा जैतून के वृक्ष के साथ बांध दिया और अंगूर के शिरके के बर्तन और रोटियों का थैला वृक्ष से लटका कर सो रहे खुदा ने उनको मृत्यु देदी (उनकी आत्मा निकाल ली) यहां तक कि सौ वर्षों का समय उन पर व्यतीत हो गया।(आगे वही है, जो कि पूर्व में लिख चुके हैं,) कि उसको सौ वर्षों के पश्चात जीवित किया।

तफसीर हक्कारी पारा ३ (बकर) पृ. ९

उपरोक्तानुसार ही तफसीर इब्ने कसीर पारा ३ पृ १३ पर भी है

हज़रत मुहम्मद की पाठ्य-शैली (करात) में 'नुन्शज़ोह' को 'नुन्शरूहा' अर्थात 'ह' को 'ज़' से पढ़ा है।

तफसीर इब्ने कसीर पारा ३ पृ. १४

तफसीर मज़हरी ने इस किस्से में विशेष यह लिखा, कि एक तो यर्मियाह का नाम अज़ीज लिखा और दोयम यह लिखा कि बख्ते नसर ने तौरात भी जला दी थी, तो यह जान कर अज़ीज़ रो दिये। तब फरिश्ते ने एक बर्तन में लाकर उन्हें पानी पिलाया। पानी पीते ही सम्पूर्ण तौरात का चित्र उनके हृदय में उतर आया... ....और अपनी स्मृति से आपने तौरात लिखवा दी।

तफसीर मज़हरी, पारा २ पृष्ठ ४४

हमज़ा–कसाई और याकूब ने 'लम् यतसन्नह' के 'ह' को लुप्त कर दिया और 'लम् यतसन्ना' पढ़ा।

तफसीर मज़हरी, पारा ३ पृष्ठ ४१

पाठक बन्धुओं ! आपने मरे हुओं को पुनः जीवित करने के तीन प्रमाण पढ़ लिये । एक में ७० व्यक्ति, दूसरे में हज़ारों और तीसरे उदाहरण में मात्र १ व्यक्ति । प्रथम मृत्यु के घाट उतारे गये और पुनः उनको जीवित किया गया । इससे स्पष्ट हो गया कि यह मनुष्य इसी संसार में मरे और इसी सँसार में जीवित किये गये । इनसे कुरआन का वह नियम, जो कि अनेक आयतोंमें आया है, कि एक बार उत्पन्न करेंगे और एक बार मृत्यु होगी और पुनः कयामत के दिन जीवित करेंगे । हम उन आयतों में से एक आयत पुनः यहाँ लिख रहे हैं, ताकि आप ठीक से और भी देख लें । आयतः—

अल्लाहुल्लज़ी खलकाकुम्न सुम्मा रज़काकुम सुम्मा योमीतोकुम सुम्मा योहयीकुम् ।

कुरआन पारा २१ रकू ४।७

अर्थः— अल्लाह वही है, जिसने तुमको उत्पन्न किया, फिर तुमको खाद्य पदार्थ दिये, फिर तुमको मृत्यु देता है । फिर तुमको जफायेगा ।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा २१ पृष्ठ ३३

व्याख्या में लिखा है, कि जीवन के पश्चात तुम्हें मार डालेगा और पुनः कयामत के दिन जीवित करेगा ।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा २१ पृष्ठ ३४

अब आप दोनों को मिला कर देख लें कि इस विधान को स्वयं खुदा ने ही कैसे भंग कर उल्लंघन किया है । आगे आयत हैः—

वा जल्लल्ना अलैसोमूलामामा वा अन्ज़ल्ना अलैकोमुलमन्ना वस्सल्वा कूलू मिन् तय्यबाते मा रज़क्नाकुम् वा मा ज़लमूना वा लाकिन कानू अन्फुसहुम् यज्लेमून ।

कुरआन, पारा १ रकू ६।६ आयन ५८

अर्थातः—और मेघों की छाया की तुम पर हमने (मैदाने तय्या में)

और (परोक्ष कोष से) पहुँचाई तुम्हारे पास तुरजबीन और बटेरें खाओ उत्तम पदार्थों से, जो कि हमने तुमको दी हैं, और (इस से) उन्होंने हमारा कोई अनिष्ट नहीं किया अपितु अपनी ही हानि करते थे।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २३

यह उपरोक्त पारा १ की आयत कुरआन पारा ९ सूरत "एराफ" में भी है। वहाँ "मध्य पुरूष" के स्थान पर "प्रथम पुरूष" है:—

वा जल्लल्ना अलैहे मुलामामा वा अन्जल्ना अलैहे मुल्मन्ना।

कुरआन, पारा ९ रकू २०।१०

इस आयत में और उपरोक्त पारा १ की आयत में मात्र इतना ही अन्तर है, कि वहाँ प्रथम आयत में दोनों स्थानों पर 'कुम्' है जो 'तुम' के अर्थ देता है, और इस पारा ९ की आयत में 'हूम' है, जो 'वह' के अर्थ देता है।

हमारा कथन यह है, कि खुदा की वाणी में एक मात्रा या अनुस्वार का भी अन्तर नहीं होना चाहिए। यह तो गाइब और मुखातिब (प्रथम पुरूष और मध्य पुरूष) का अन्तर है। अब उस प्रथम आयत की व्याख्या लिखते हैं। प्रथम तो यह देखना है, कि प्रथम और द्वितीय वाक्य में कोई तारतम्य नहीं है। प्रथम है-खाओ उत्तम वस्तुएं जो हमने तुमको दी है। आगे है, कि—उन्होंने हमारा कोई अनिष्ट नहीं किया। यह दोनों वाक्य आपस में मेल नहीं खाते। मध्य में एक और वाक्य चाहिए. कि यदि वह ऐसा न करेंगे, तो अल्लाह की उसमें कोई हानि नहीं। अस्तु अब इस आयत की व्याख्या पढ़िये। उससे सब ज्ञात हो जायेगा:-

यह एक अन्य घटना का वर्णन है। जो बनी इस्राईल के कुल्ज़म नदी को पार करने और फिरऔन के डूब जाने के पश्चात घटी थी। मूसा के समस्त कार्यों से निवृत हो चुकने के पश्चात खुदा की ओर से सन्देश आया, कि ऐ मूसा ! बनी इस्राईल को कहो कि अब शाम देश को, जहां हज़रत इब्राहीम और उनकी सन्तान की कब्रे हैं, और बेतुल्मुकद्दस भी वहाँ हैं। अमालका जाति के अत्याचारियों से रिक्त करा लो, और वहां ही अपना वतन (निवास स्थान-देश) उस पवित्र भूमि को बनाओ ! किन्तु पैगम्बरों के साथ गुस्ताखी और उनकी अप्रतिष्ठा करना इन बनी इस्राईल की स्वाभाविक और जन्मसिद्ध प्रकृति थी। इस कारण इस आज्ञा का पालन न किया और कहने लगे-ऐ मूसा ! तू और तेरा रब्ब (ईश्वर) जाकर अमालका जाति से लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे (हां जी, यह है सम्पूर्ण संसार से उत्कृष्ट जाति ?) और जब तक वह अत्याचारो और विद्रोही अपने आप शाम से न चले जाएँ, हम वहां न जायेंगे। हज़रत मूसा ने उनकी इस गुस्ताखी की शिकायत खुदा के पास की, तो आदेश हुआ–इस अवज्ञा के दण्डस्वरूप हमने उनका बैतुल्मुकद्दस में प्रविष्ट होना और उस पर उनका स्वामित्व हराम कर दिया। (वर्जित कर दिया।) यह लोग तय्या के जगलों में ४० वर्षों तक हैरान व परेशान फिरते रहेंगे।

यद्यपि इस घटना का इस आयत में विवरण है, कि ऐ-बनी इस्राईल ! जब तुम्हारे पूर्वज तय्या के मैदानों में, जो मिश्र से ६ कोस की दूरी पर स्थित है।................ .. उस जंगल में बनी इस्राईस खुदा की अवज्ञा और मूसा के साथ गुस्ताखी करने के कारण ४० वर्षों तक हैरान व परेशान रहे।...................उस समय बनी इस्राईल की सख्या ६ लाख थी। २० वर्ष की आयु के अतिरिक्त सब लोग इस तय्या में मर-खप गए आर हज़रत मूसा

व हारून की भी यहीं पर ही मृत्यु हो गई तथा समस्त डेरे-तम्बू फट गए। उस समय हमने मूसा की प्रार्थना और तुम्हारे पूर्वजों की खेदजनक स्थिति पर दया करके गर्मी से बचाने हेतु सफेद व सूक्ष्म बादल का साया कर दिया। ताकि अब भी हमारे दिये उत्तम पदार्थों को उपयोग में लाने के कारण हमारा धन्यवाद करो और पापों से तौबा करो।

आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ. १७८-७९

उपरोक्त जो द्वितीय आयत हमने प्रस्तुत की है। व्याख्याकारों द्वारा उसका भी अर्थ और व्याख्या उपरोक्तानुसार ही की गई है। साथ ही कुरआनकार बनी इस्राईलियों की अवज्ञाओं, और जो उन पर किये गये खुदाई उपकारों को भी एक साथ वर्णन करता जाता है। खुदा की कृपाएँ तो इस ढंग से वर्णित हैं। मानों कोई एक मुसलमान जन उन पर उपकार कर रहा हो। जैसे कि धूप से सुरक्षा हेतु उन पर खुदा ने मेघ आच्छादित कर दिया। अभी यह बनी इस्राईल का विषय चल रहा है। आप देखेंगे कि किस प्रकार इस्राईलियों को इस्लाम की ओर आकृष्ट करने हेतु युक्ति और नीति-रीति प्रयुक्त की गई है। जिन लोगों ने 'अलिफ-लैला' पढ़ी है। उनको आगामी आयतें और भी पढ़ने में मनोरंजक और आकर्षक अनुभूत होगी। अगली आयत:-

वा इज़ कुल्नद्खुलू हाज़ेहि हिल्कर्यता फ़ कुलू मिन्हा हैसो शेतुम, रग़दंव्वद् खुलुलबाबा सुज्जदव्व कूलू हित्ततु न्नग़फिर्लकुम् खतायाकुम व सनज़ा दुलमोहसेनीन। फ़बद्दाकल्लाजीना ज़लमू कौलन ग़ैरल्लज़ी कीलालहुम फ़ अन्ज़ल्ना अलल्लाज़ीना ज़लमू रिज्ज़म्मिनस्माए बे मा कानू यफ़्सोकून।

कुरआन पारा १ रकू ६/६ आयत ५९-६०

अर्थात:–और स्मरण करो, जब कि हम (खुदा) ने कहा, कि इस नगर में चलो। पस, वहाँ दिल भर कर जहाँ से चाहो, खाओ और द्वार में नतमस्तक हो, प्रविष्ट होना और कहना कि हम क्षमा चाहते हैं, तो हम तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और अच्छे लोगों को अधिक देंगे। पस, अत्याचारियों ने वह बात, जो उनसे कही गई थी, परिवर्तित कर दी, तो तब हमने अत्याचारियों हेतु आसमान से उनके दुष्ट कृत्यों हेतु उन पर एक आपत्ति डाली।

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ३१

इन आयतों के स्पष्ट अर्थ क्या हैं ? वह हम तफसीर आज़मुत्त-फासीर से उद्धृत कर रहे हैं। लिखा है:—

जैसा कि पूर्व में लिखा गया गया है, कि बनी इस्राईल को अवज्ञा करने के अपराध में ४० वर्षों तक जंगलों में निवास करने और कष्ट उठाने का दण्ड प्राप्त हुआ था। उस अवधि को समाप्त करने के पश्चात अर्थात बनी इस्राईल जब जंगल के कष्टों और एकसा ही खाना खाने के कारण उकता गए और हज़रत मूसा व हारून भी मर चुके और यूशा बिन नून, हज़रत मूसा के पश्चात जो नबव्वत प्राप्त होने से उनके स्थानापन्न निर्मित थे, तो वह शेष बनी इस्राईलियों को साथ लेकर बैतुलमुकद्दस की ओर चले और अमालका जाति से युद्ध कर पवित्र नगर रिक्त करा लिया। उनके हेतु किञ्चित देर सूरज भी रोक दिया गया था.........तो इस विजय हेतु धन्यवाद करने के लिए उन्हें आज्ञा दी, कि तुम इस नगर में प्रविष्ट होओ, तो अभिमानपूर्वक गर्व मत करना और तौबा करते हुए; क्षमा माँगते हुए तथा सजदा (नतमस्तक) करते हुए नगर मे प्रविष्ट होना। उस गाथा को यहाँ स्मरण कराया जाता है, कि बनी इस्राईल ! उस समय को स्मरण करो, कि जब तुम्हारे पूर्वज एक ही प्रकार के भोजन और यात्रा के कठोर

संकट से थक गये थे, तो हमने कहा— इस नगर में प्रवेश करो और जहाँ से चाहो, खाओ किन्तु प्रथम उन उपकारों का धन्यवाद करो, और वह, यह कि इस नगर के द्वार पर नतमस्तक (सज्दा) करते हुए जाओ, और जिव्हा से 'हित्तुन' अर्थात हमारे अपराधों को धो डालें, कहो ताकि तन और मन दोनों से धन्यवाद प्राप्त हो और तुम्हारी तौबा (पश्चाताप) सत्य और स्वीकार हो। पस, उस समय हम तुम्हें मात्र अपराधों से ही पवित्र न करेंगे, अपितु नेक पुरुषों को और भी अधिक देंगे। यद्यपि यह बात अत्याधिक सरल थी; किन्तु वह इसको भी न कर सके; अपितु कतिपय दुष्टों ने अवहेलना–विमुखता और अवज्ञा की तथा तौबा और क्षमा के स्थान में हँसी व उपहास करने लगे और जिस बात को करने हेतु आज्ञा हुई थी; उसे परिवर्तित कर दी..........इसके दण्डस्परूप उन पर ताऊन का रोग पड़ा। परिणामस्वरूप २४ हजार या ७० हजार मर गए।

तफसीर आजमुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ १८०-८१

आप देखिये; कि कुरआनकार ने कैसा विचित्र और दोहरा मार्ग अपनाया है; कि स्वयँ की कीर्ति और गौरव-गाथा का राग भी प्रतिध्वनित हो जाता है और साथ ही साथ उनके अपराधों की सिद्धि कर उनके कष्टों व संकटों के पड़ जाने का भय भी दिलाता जाता है; और यह प्रभाव भी उत्पन्न करता जाता है; कि हजरत मुहम्मद हमारी जाति को अत्याधिक उत्कृष्ट भी मानते हैं; और यदि हम अवज्ञा करेंगे; तो हमें पूर्व की भांति कठिन दुखः होगा व संकटग्रस्त हो जायेंगे। आगे भी मूसा तथा बनी इस्राईल की ही चर्चा है। इसे भी पढे। आयत:—

वा इज़िस्तस्का मूसाले कौमेही फ़ कुल्नज़िरब्बे असा कल्हज़र फ़न्फज़रत मिन् हुस्नता अश्रता ऐना। कद अलेमा कुल्लो अना-

सिम्मरबहुम कुल्लू लश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहे वा ला तासौ फ़िल्अर्ज़े मुफ़्सेदीन् । कुरआन पारा १ रकू ७।७ आयत ६१

अर्थ–और स्मरण करो, उस घटना को; जब मूसा ने अपनी जाति हेतु जल की प्रार्थना की; तो हम (खुदा) ने कहा–ऐ मूसा ! अपनी लाठी को पत्थर पर मारो । पस; फूट निकले उस पत्थर से द्वादश (१२) जलप्रपात । निसन्देह प्रत्येक व्यक्ति ने अपना घाट जान लिया था । हमने कहा-खाओ और पियो; खुदा के देय पदार्थों से; और भूमि पर उत्पात मचाते मत फिरो ।

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ३३

प्रत्येक व्यक्ति ने अपना घाट कैसे जान लिया ? यह व्याख्या से ज्ञात होगा । इस आयत की विचित्र व्याख्या आपके समक्ष प्रस्तुत करें; इससे पूर्व एक ऐसी ही आयत सूरत एराफ पारा ९ में भी आई हैं; उसे भी देख लें कि खुदा ने जो आयत उतारी उसमें कोई अन्तर या मतभेद नहीं होना चाहिए किन्तु इन दोनों पारा १ और पारा ९ की आयतों में कितना शाब्दिक अन्तर है; यह आप भलिभाँति देख लें । वास्तव में सत्य यह है कि हज़रत मुहम्मद साहिब बाइबिल इत्यादि एवं अन्य प्रचलित समकालीन गाथाओं के आधार पर कोई आयत रचते और फिर उस आयत के भाव तो स्मृति में रहते किन्तु आयत के शब्द विस्मृत हो जाते । भाव के आधार पर ही दूसरी बार लिखते समय आयत रच कर सुना देते । आयत का भाव तो मिल जाता किन्तु शब्दावली में अन्तर हो जाता । जैसा कि आप आगामी आयत और पूर्व में उपरोक्त लिखी जा चुकी आयत में देखेंगे । आयतः–

वा औहैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहो क़ौमोहू अनिज़्रब्ब असा-कल्हजर । फ़म्बजसत् मिन्हुस्नता अशरता ऐना । क़द अलेमा

कुल्लो उनासिम्मशरबहुम । वा जल्लल्ना अलैहिमुलग़मामा वा अन्जल्ना एलैहेमुलमन्ना वस्सलवा । कुलू मिन् तय्येबातिन् मा रज़क्नाकुम् वा मा ज़लमूना वा लाकिन कानू अन्फ़ुसहुम यज़्लेमून् ।

कुरआन पारा ६ रकू २०/१० (एराफ़)

उपरोक्त आयत में जिन-जिन शब्दों को रेखांकित किया है। उन-उन शब्दों का दोनों आयतों में तीव्र अन्तर हैं।

सूरत बकर पारा १ की आयत में "ज़ल्लल्ना अलैकौमुलग़मामा" है। जब कि पारा ६ सूरत एराफ की आयत में "जल्लल्ना अलैहिमुलग़मामा" हो गया है। सूरत एराफ में प्रथम "इज़िस्तस्का" के पश्चात "जल्लल्ना" वाली आयत है, और सूरत बकर की आयत ६१ में "इज़िस्तस्का मूसा" पश्चात है। वहां ३ आयतें प्रथम और यहां एक ही आयत के अन्त में है। इसी प्रकार सूरत बकर की आयत में 'खाओ-पिओ' लिख दिया। जब कि वहाँ बारह (१२) जलप्रपातों का वर्णन है किन्तु सूरत एराफ की आयत में खाद्य पदार्थ का भी साथ ही वर्णन है जबकि पीने का नहीं फिर 'सुम्मा औहैना इला मूसा' सूरत बकर की आयत में नहीं है। सूरत एराफ़ की आयत में 'फ़कुना' शब्द नहीं है। सूरत बकर की आयत में 'फ़फज़रन' और सूरत एराफ की आयत में 'इस शब्द के स्थान पर 'फन्बजसत्' है। सूरत एराफ की 'वशरबू' नहीं है। सूरत बकर की आयत मे 'मिर्रिज़कल्लाह' है, और सूरत एराफ की आयत में 'रज़क्नाकुम' है। सूरत एराफ की आयत में 'ला तासो फ़िअरज़ें मुफ़सदीन' के स्थान पर 'वा लाकिन कानू अन्फुसहुम् यज़्लेमून' हैं।

पाठक बन्धुओ ! आप ध्यानपूर्वक देखें कि एक आयत को अन्य दूसरे स्थान पर लिपिबद्ध करने मे किस भाँति शाब्दिक अन्तर उत्पन्न हो गया है और इन आयतों के भावार्थ में भी मत-

भेद होना स्वाभाविक ही है। इस विषय पर हम स्वयँ अपनी ओर से कोई टिप्पणी न करते हुए इब्ने कसीर ने जो लिखा मात्र वही उद्धृत कर रहे हैं, ताकि आप उनके भाष्य से इन आयतों में व्याप्त अन्तर और मतभेद से परिचित हो लें। लिखा हैं कि:-

इन दोनों स्थानों के कथन में १० कारणों से अन्तर है, जो अन्तर शाब्दिक होने के साथ ही साथ भावान्तर और अर्थान्तर भी है।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २६

अब इस पर तो एक मुस्लिम विद्वान और कुरआन के व्याख्याकार भी हैं, ने लिख दिया कि इन दोनों आयतों में शाब्दिक अन्तर है और अर्थों में भी मतभेद है।

हम कहते हैं, कि जब एक ही घटना का वर्णन, एक ही व्यक्ति के विषय में है, तो फिर इस अन्तर और मजभेद के क्या कारण हैं ? इससे यह स्पष्ट होता है, कि स्मृति के आधार पर मात्र आयतें रच कर लिपिबद्ध की गई हैं, और नाम अल्लाह का उल्लेखित कर दिया गया है, और सम्भवतः इन आयतों के रचयिता स्वयँ हज़रत मुहम्मद साहिब ही रहे होंगे ? अब आयत की व्याख्या:—

यह एक और उत्तम पदार्थ का स्मरण कराया जा रहा है, कि जब तुम्हारे नबी ने तुम्हारे हेतु जल माँगा, तो हमने उस पत्थर से जलस्त्रोत बहा दिये। जो तुम्हारे साथ रहा करता था और तुम्हारे प्रत्येक परिवार हेतु हमने एक-एक जलप्रताप जारी कर दिया। जिसे प्रत्येक कुटुम्ब से जान लिया। (कैसे जाना ? यह आगे है।) और हमने कह दिया, कि मन्न और सलवा (तुरंजबीन और बटेरें) खाते रहो और इन जलस्त्रोतों का जल पीते रहो और इस बिना परिश्रम के प्राप्त खाद्य पदार्थों को खाकर

हमारी भक्ति में लगे रहो, और अवज्ञाकारी बन कर भूमि में उत्पात न मचाओ। (पत्थर के हेतु)

हज़रत अब्बास फरमाते हैं, कि यह एक चोकोर पत्थर था। जो उनके साथ ही था। हज़रत मूसा ने खुदा की आज्ञा से उस पर लाठी मारी, चारों ओर से तीन-तीन नहरें बह निकली यह पत्थर बैल के मस्तक जितना था। (बैल के मस्तक जितने चौकोर पत्थर से १२ नहरे, फूट निकली। यह एक अनोखा चमत्कार हैं ?) जो बैल पर लाद दिया जाता था, और जहाँ उतरते थे, वहां रख देते थे और लाठी लगते ही उससे बारह नहरें बह निकलती थी। जब प्रस्थान करते, तो उसे उठा लेते, और नहरे बन्द हो जाती, और पत्थर को साथ रख लेते। यह पत्थर तूर पर्वत का था। एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा... ....एक और कथन है, कि यह वह पत्थर है, जो हज़रत आदम के साथ स्वर्ग से आया था और हज़रत मुग़ीब तक उनके पास था। हज़रत मुग़ीव ने यह लकड़ी और पत्थर हज़रत मूसा को दे दिये।

कतिपय यह कहते हैं, कि यह वही पत्थर है, जो मूसा के कपड़े लेकर भागा था और उस पत्थर को ज़िब्रील के परामर्श से मूसा ने उठा लिया और जिससे आपका यह चमत्कार प्रकट हुआ।

ज़मख्शरी कहते हैं, कि कोई विशेष पत्थर नहीं था। मूसा की लाठी किसी भी पत्थर पर लग जाती, तो उससे जल बहने लगता और दूसरी बार लाठी लगने से जल सूख जाता। (कुछ भी हो, जितने मुँह उतनी बातें हैं। खुदा की वाणी क्या एक विचित्र गोरखधधा है ?

जलस्रोत की पहिचान

(जब जल बहने लगता) तो प्रत्येक परिवार का एक-एक पुरुष वहां खड़ा हो जाता। पस, जिस व्यक्ति की ओर जो जल-स्रोत जाता, वह अपने कुटुम्बियों को बुला कर कह देता- यह जलस्रोत तुम्हारा है। ऐसे ही जलस्रोत पहिचान लेते। यह घटना तथ्या क्षेत्र की है। तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २६ उपरोक्तानुसार ही यह विवरण तफसीर मुहम्मदी, पारा १ पृष्ठ १०० पर और तफसीर हक्कानी पारा १ रकू ७।७ पृष्ठ ३३।२ पर भी हैं।

जब बनी इस्राईल सैन का जंगल पार कर रफ़ीदीम में पहुँचे, तो उस रेतीले स्थान पर जल नहीं था, सो लोग मूसा से झगड़ने लगे और कहा-हमको जल दे कि पीयें। मूसा से खुदा ने विनती कर कहा- मैं इनसे क्या करूँ ? मूसा ने खुदा से कहा- लोगों के आगे जा और बनी इस्राईल के लोगों को साथ ले और अपनी लाठी, जो तू नदी पर मारता था। उस चट्टान को मार। उससे जल निकलेगा; ताकि लोग पीयें। तब मूसा ने ऐसा ही किया। तब उस चट्टान से १२ जलस्रोत बह निकले।

इस भांति लिख कर आगे लिखा:-- मूसा ने लाठी मार कर पत्थर से जल निकाला। बहुधा स्वयम् ही हजारों जलस्रोत पत्थरों से निकलते हैं; परन्तु हज़रत मुहम्मद साहिब ने तो उँग-लियों से इस भांति जल निकाला कि जिसको सैकड़ों मनुष्यों और पशुओं ने पेट भर कर पानी पिया।

तफसीर हक्कानी रकू ७।७ पृष्ठ ३३।२

इसी भांति तफसीर मज़हरी में भी लगभग वही विवरण है, जो कि तफसीर इब्नो कसीर में है। मात्र अन्तर इतना है,

कि वह पत्थर हज़रत मूसा के तोबरे (थैली) में रहता था।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १२६-२७

तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील में इतना विशेष है, कि यह पत्थर १० गज़ा लम्बा था, और यह भी है, कि हज़रत आदम स्वर्ग से लाये थे और उनसे हज़रत शुएब को मिला। शुऐब ने मूसा को दिया।

तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील पारा १ पृष्ठ २९

वहब ने कहा-कोई भी पत्थर हो, जिस पर मूसा लाठी मारता था, पानी निकल आता था।

दूसरों ने कहा—नहीं, विशेष पत्थर है।

इब्ने अब्बास ने कहा-छोटा पत्थर था। मनुष्य के मस्तक बराबर। जल पीने वाले ६० हजार व्यक्ति थे।

तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील पारा १ पृष्ठ २९

तफसीर कादरी में भी यही विवरण है, किन्तु पत्थर को चौकोर और आदमी के मस्तक के बराबर लिखा है।

तफसीर कादरी भाग १ पृष्ठ १५

यही बात तफसीर जलालैन पृ. १० में, तफसीर बैज़ावी पृ. १० में और तफसीर अज़ीमुल्कुरआन पृष्ठ ६ में भी लिखी हुई है।

उपरोक्त दोनों आयतों के विषय में जो लिखा गया। वह पत्थर के विषय में एक कपोल कल्पित और मनगढ़न्त किस्सा है इस किस्से को खरूज ने गढ़ा है। हज़रत मुहम्मद साहिब ने ग्रहण कर अरबी भाषा में अनुवादित कर कुरआन की आयतों के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस प्रमाण को हम पश्चात लिखेंगे किन्तु मौलाना मुहम्मदअली एम. ए. अहमदी ने इस बात को असम्भव

जान कर यह कल्पना कि, जिसे 'निर्गमन' के प्रमाण से पुष्ट किया है, किन्तु बड़े शोक की बात है, कि जिस प्रमाण को लिख कर अहमदी मौलाना मुहम्मदअली एम. ए. ने यह सिद्ध किया है, कि:—

पानी पत्थर से लाठी मारने पर नहीं निकलता था, अपितु पानी पहले ही विद्यमान था। प्रमाण यह है:-

जब मूसा इस्राईलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया और वह शुर नामक वन में आए, तो वन में जाते हुए ३ दिन तक उन्हें जल का सोता नही मिला। फिर सारा नामक एक स्थान पर पहुँचे। वहां का पानी खारा था, उसे वह पी न सके इस कारण उस स्थान का नाम सारा पडा। तब वह यह कह कर मूसा के विरुद्ध बकझक करने लगे--हम क्या पीयें ? तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी और यहोवा ने उसे एक पौधा बतला दिया। जिसे जब उसने जल में डाला तो जल मीठा हो जाता।................तब वह अलीम के समीप आए। वहाँ जल के १२ स्रोत और खजूर के ७० वृक्ष थे। वहाँ उन्होंने जल के निकट डेरे खड़े किये।

'निर्गमन' अध्याय १५ आयत २२ से २७

कितने दुख का विषय है, कि यह पूर्व की घटना है। जिसे अहमदी मौलाना मुहम्मदअली एम. ए. लाहौरी ने लिख कर कुरआन के मिथ्यावाद पर आवरण डालने का प्रयास किया। इस उद्घृण के साथ कुरआन की आयत का कोई सम्बन्ध ही नहीं बैठता है। कुरआन की आयत 'निर्गमन' के जिस स्थान से ली गई है, वह स्थल निम्नानुसार हैं:-

फिर इस्राईलियों की सम्पूर्ण मंडली सीन नामक वन से निकल चली और यहोवा की आज्ञानुसार प्रस्थान कर स्वींदीम

में अपने डेरे खड़े किये । वहां उन लोगों को पीने हेतु जल न मिला । इस कारण वह मूसा से वाद-विवाद कर कहने लगे-हमें पीने का पानी दे । मूसा ने उनसे कहा—तुम मुझसे क्यों वाद-विवाद करते हो ? तब वह मूसा पर बड़बड़ाहट कर यों कहने लगे तू हमें, बच्चोंवाले और पशुओंसहित प्यासे मार डालने हेतु मिश्र से क्यों ले आया है ? तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी और कहा-इन लोगों से मैं क्या करूँ ? यह सब मुझ पर पथराव हेतु तत्पर हैं। यहोवा ने मूसा से कहा—इस्राईली वृद्धजनों में से कुछ अपने साथ ले ले और जिस लाठी से तूने नील नदी पर मारा था। उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे वढ़ चल । देख मैं तेरे आगे चल कर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा और तू चट्टान पर मारना । तब उससे जल निकलेगा, जिसे वह लोग पीयें। तब मूसा ने इस्राईल के वृद्धजनों के देखते—देखते वैसा ही किया और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीया रखा। क्योंकि इस्राईलियों ने वहां वाद विवाद किया था ।

'निर्गमन' अध्याय १७ आयत १ से ७

यह उपरोक्त वह घटना है, जहां के समाचार ज्ञात कर हज़रत मुहम्मद साहिब ने आयत बना कर कुरआन में संकलित की। इसमें न तो उस पत्थर का ही वर्णन है, जिसे मूसा बैल पर लाद लेता था, अथवा अपने तोवरे (झोले) में डाल लेता था। ऐसा ज्ञात होता है कि बाइबिल की कथाओं के साथ कतिपय दन्तकथाएँ भी परम्परागत प्रचलित रही होंगी, जिन्हें हज़रत साहिब ने 'निर्गमन' की कथावस्तु में संलग्न कर आयतों की रचना कर दी । इस कारण निर्गमन के विवरण से कुछ अधिक वर्णन दृष्टिगोचर होता है, किन्तु यह समस्त किस्से बाइबिल के ही हैं।

अब रह गई बात, अहमदी मौलाना मुहम्मदअली एम. ए. लाहोरी की, जो तफसीर बयानुलकुरआन के लेखक भी हैं। इन्होंने वास्तविक घटना को न लिखते हुए एक पूर्व की घटना को लिख कर यह दिखला दिया, कि जलस्रोत पूर्व ही से विद्यमान थे। मूसा के लाठी मारने से जलस्रोत नहीं निकले।

अब यह तो स्वयँ मौलाना साहिब ! या उनका ईमान जाने कि उन्होंने गलत प्रमाण क्यों लिपिबद्ध किया ? जब कि मूसा द्वारा लाठी मारने के अन्य और भी अनेक चमत्कार हैं। पाठकों ! को 'निर्गमन' के अन्य स्थान भी देखना चाहिए।

कुरआन की आयतों में 'मन्न और सलवा' खाने की चर्चा आई है। अब उसका यथार्थ रूप 'निर्गमन' में भी देखा जाना चाहिए, ताकि आप लोग ! यह जान सकें कि कुरआन में बाइबिल से यह किस्से लेकर अरबी भाषा में आयतों के रूप में प्रस्तुत कर दिये गये हैं:—

मूसा को उन लोगों ने कहा-तुम हमको इस वन में इसलिए निकाल कर ले आए हो, कि इस सारे समाज को भूखों मार डालो। तब यहोवा ने मूसा से कहा—देखो मैं तुम लोगों के हेतु आकाश से खाद्यवस्तु बरसाऊँगा, और यह लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन एकत्रित करेंगे। इससे मैं उनकी परीक्षा करूँगा........उन्होंने वन की ओर दृष्टि कर देखा और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया। तव यहोवा ने मूसा से कहा—इस्राईलियों का बड़बड़ाना मैंने सुना है। उनसे कह दे, कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे, और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, और ऐसा ही हुआ कि संध्या को बटेरें

आ–आ कर सारी छावनी पर बैठ गई और भोर को छावनी के चहुँ ओर ओस पड़ी, और जब वह ओस सूख गई तो वह क्या देखते हैं, कि वन की भूमि पर छोटे–छोटे छिलके, छोटाई में पाले के कणकों के समान पड़े हैं।.................. तब मूसा ने कहा--यह दो खाद्यंपदार्थ हैं।.......................इत्यादि। आगे सम्पूर्ण लम्बा कथानक हैं।

'निर्गमन' अध्याय १६ आयइ ४ से २५

उपरोक्त विवरण में भी वही वर्णन है। जिसे कुरआन और उसके व्याख्याकारों ने लिखा है। इससे स्पष्ट है, कि यह सब कुरआन के किस्से, बाइबिल से ग्रहण कर अरबी के आवरण में आयतों का रुप देकर कुरआन में गुम्फित कर दिये गये हैं।

अब जैसा कि आपने उपरोक्त देख ही लिया, कि बनी इस्राईल को बिना किसी काम और परिश्रम किये दोनों समय का भोजन उपलब्ध होता रहा, किन्तु एक ही भांति का भोजन करते करते वह लोग उकता गये और कहने लगेः–

वा इज़ा कुल्तुम् या मूसा लन्नस्बिरा अला तुआमिंव्वाहेदीन फ़दओ लना रब्बका युख़्रिजलना मिम्मा तुंबेतुलअर्ज़ोमिन बक्लेहा वा क़िस्साए हा वा फ़ूमेहा वा अदसेहा वा बसलेहा। काला अतस्तब्देलू नल्लज़ी हुआ अदना बिल्लज़ी हुआ खैर। एहबेतू मिस्रन फ़ईन्ना लकुम्मा सलल्तुम्। वा ज़ुरेबत् अलैहे मुज़िज़ल्लतो वल्मस्कनतो वा बाऊ बेग़ज़ा बिम्मनल्लाहे ज़ालेका। बे अन्नहुम कानू यक्फ़ुरूना बेआया तिल्लाहे वा यक़्तोलूनन्नबिय्यीना बेग़ैरिल्हक़्क़्। ज़ालेका बेमा असव्वा कानू यातदून।

कुरआन, पारा १ रकू ७/७ आयत ६२

अर्थः—और स्मरण करो, उस दिन को भी, कि जब तुमने कहा—ऐ मूसा ! हम एक से खाने पर कदापि संतोष नही करेंगे। पस, हमारे हेतु अपने पालनहार से याचना कर, कि भूमि से जो खाद्य पदार्थ उपजते हैं। जैसे—शाक—ककड़ी—गेहूं—मसूर और प्याज़ हमारे हेतु उत्पन्न करें। मूसा ने कहा—तुम उत्तम पदार्थ के स्थान पर निकृष्ट वस्तु को लेना चाहते हो। तुम किसी नगर में चले जाओ। निसन्देह, तुम जो कुछ मांगते हो, वह तुम्हें मिलेगा, और उन्हें अपमान तथा निधनता में ग्रस्त किया गया। और वह ईश्वर के प्रकोप में जकड़े गये, और इस कारण से, कि वह ख़ुदा के चिन्हों और आज्ञाओं को नहीं मानते थे, और निर्दोष पैगम्बरों की हत्या करते थे। यह ख़ुदा का प्रकोप उनकी अवज्ञाओं और विद्रोह के कारण हुआ। तफ़सीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ३४

इब्ने अब्बास ने 'फ़ूम' को 'सूम' पढ़ा है। तफ़सीर आज़-मुत्तफासीर ने इस उपरोक्त आयत की अत्याधिक विस्तृत व्याख्या की है, किन्तु हम संक्षिप्त ही लिखते हैं:—

आयत में बनीइस्राईल की अयोग्यता का दोष, विद्रोह, कुकर्मों, प्रमाद और निकृष्ट अधम वस्तुओं की ओर मोह व इच्छा करने का कारण, जो समय-समय पर प्रकट होता था, वर्णन किया गया है। यह उस समय की घटना है, जब बनी इस्राईल वनों में ४० वर्षों तक फिरते—फिरते और एक ही प्रकार का भोजन करते-करते उकता गये थे और अपनी पूर्वावस्था स्मरण कर, हज़रत मूसा को तंग करने और बिगड़ कर कहने लगे-अब तो हमसे भूमि से उपजने वाली विभिन्न वस्तुओं के अभाव में नही रहा जाता। 'मन्न और सलवा खाते-खाते नाक में दम आ गया। अब खुदा से कहो-हमारी इच्छानुसार भूमि से उपजने वाली वस्तुएँ हमें प्रदान करें। ख़ुदा इस घटना को इस प्रकार वर्णन करता है:-

ऐ बनी इस्राईल ! तुम्हारे पूर्वजों के आसमानी उत्तम पदार्थों और परोक्ष की देन पर सन्तोष न करने का कारण यह था, कि वह अशक्त लोग स्वाभाविक विचारानुसार भूमि के निकृष्ट कार्यों की ओर इच्छा रखते थे और उत्तम शक्ति तथा साहस से सर्वथा कार्य न लेते थे और उनकी नीजि शक्ति यहां तक निरर्थक और निष्प्रयोजनीय हो गई थी, कि वह मूसा सदृश्य उच्च विचार और साहसी व्यक्ति को भी साधारण मनुष्यों के सदृश्य सर्वथा निकम्मा जानते थे। जब उन्होंने अत्यन्त अप्रतिष्ठापूर्वक हज़रत मूसा को न, तो या नबी ! अथवा न या रसूल ! ही कहा, अपितु बिना किसी सम्बोधन के मात्र इतना ही कहा–हम एक भोजन पर सन्तोष नहीं कर सकते। इस पर हज़रत मूसा ने कहा--यदि तुम्हें यही अभिप्रेत है, तो पास के किसी नगर में जा उतरो। तुम्हारी कामना पूर्ण हो जाएगी। फिर बनी इस्राईल भूमिवाहकों के सदृश्य अत्यन्त सम्पत्तिहीन–अपमानित एवं दयनीय स्थिति में हो गए, सो तुम उनकी सन्तान हो। ध्यान से सुनो, कि मैंने उनकी समस्त प्रतिष्ठा तथा वैभव को मिटा डाला एव वंशानुगत गौरव को धूलघुसरित कर दिया। मात्र इस बात पर कि वह सत्य को स्वीकारने में घमण्ड तथा विद्रोह करते थे और खुदा की आयतों को मानने से इन्कार करते थे।..........
..........और निरपराध पैगम्बरों, जैसे–शाया–हज़रत ज़करिया हज़रत याहया आदि की निर्दोष हत्या कर दी, और अपने विचार से हज़रत ईसा को भी सूली पर चढाया और अन्तिम पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) के साथ जादू करने पर ही बस न की, अपितु विष देकर हत्या करने पर उद्यत हुए। (हज़रत मुहम्मद साहिब भी जादू के चक्कर में फँस गये। यह भी उनकी एक शान है।) और इस कुफर और हत्याओं ने पैग़म्बरो की आज्ञाओं की अवज्ञा करने हेतु उन्हें साहसी कर दिया था, और यह अवज्ञा तथा

विद्रोह उनके हृदय में ऐसा सुदृढ़ हो गया था, कि वह अपराध करने में सदैव सलग्न रहते वे। (क्यों न रहें, इसीलिए तो कुर-आन ने उन्हें समस्त सृष्टि से सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ कहा है।) पस, तुमको उचित हैं, कि उनकी घटनाओं को स्मरण कर शिक्षा ग्रहण करो तथा अपराधों से लजाओ, अन्यथा तुम्हारा समस्त वैभव और प्रतिष्ठा क्षण भर में धूल में मिला दूँगा। तुम अपनी वंश-परम्परागत प्रतिष्ठा पर न इतराना, क्योंकि मेरी (खुदा की) दृष्टि में शराफत तथा हस्ब-नस्ब कुछ भी मूल्य नहीं रखते, अपितु नम्रता-दीनता और पैगम्बरों की हार्दिक आज्ञाकारिता मेरे लक्ष्य में हैं। पस, तुमको अति उचित है, कि मेरे इस अन्तिम पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) की सत्य हृदय से आज्ञापालन करो। (बस, सम्पूर्ण स्वार्थमय बात, तो यही मुख्य है।) देखो, अब भी समय है, कहा मान जाओ और अपराधों को त्याग दो, अन्यथा संसार में हानि-निकृष्टता-बदनामी और परलोक में अत्यन्त ही पीड़ादायक कष्ट होगा। (लोक तथा परलोक को दिखा कर और आतंकित कर उद्देश्य तो मात्र मुसलमान बनाने का है)

तफसीर आजमुत्तफासीर, पारा १ पृष्ठ\१८५-८६

और भी देखिये, इब्ने कसीर ने लिखा है:—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फरमाते हैं, कि बनी इस्रा-ईल एक-एक दिन में ३००-३०० नबियों को कत्ल क़रते थे, फिर बाज़ारों में जाकर अपने लेने देन में लगते थे। (अबू दाऊद अब्बासी)

इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २८

तफसीर मुहम्मदी पारा १ पृष्ठ १०१

(अन्तोत्गत्वा, कुरआन के अनुसार समस्त सृष्टि से उत्तम थे। यह लोग नबियों का कत्ल न करते, तो फिर कौन कत्ल करें।

इसी प्रकार तफसीर मज़हरी में है, कि यहूद ने एक दिन में ७० नवियों को कत्ल किया।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १३०

पाठक वन्धुओं ! आपने देख लिया, कि बाइबिल के किस्सों में वर्णित गाथाओं को ग्रहण कर उनमें कुछ अंश अपनी ओर से संलग्न कर कुरआन की आयतें रची गई है। बनी इस्राईल के मात्र इतना कहने पर कि एक ही प्रकार का भोजन करते करते हम उकता गए हैं। अब हमारे हेतु गेहूँ-मसूर आदि उत्पन्न होना चाहिए, तो खुदा इतनीसी बात सुन कर ही आपे से बाहर हो गया और कैसे शब्दों का प्रयोग किया, वह आपने पढ़ ही लिये हैं। इस खुदा को गेहूँ निकृष्ट नज़र आता है और बटेर का माँस उत्तम प्रतीत होता है। अब जिस बात के हेतु यह समस्त तानाबाना धुना गया है। उसको अगली आयत में देखिए:-

इन्नल्लज़ीना आमनू वल्लज़ीना हादू वन्नसारा वस्साबेईना मन आमना बिल्लाहे वल्यो मिल्आख़ेरे वा अमेला स्वालेहन फ़लहुम् अज्रोहुम् इन्दा रब्बेहिम् वा ला खोफ़ुन अलेहिम् वा ला हुम यहज़नून्।

कुरआन, पारा १ रकू ८/८ आयत ६३

अर्थः--यह निश्चित है, कि मुसलमान--यहूदी एवं ईसाई और साबी (इन समस्त में) जो मनुष्य ईमान रखता हो अल्लाह की सत्ता और गुणों पर तथा महाप्रलय (कयामत) पर, और शुभ कर्म करें, तो उनको उनका फल उनके पालनकर्ता से भलिभाँति प्राप्त होगा और वह शोकातुर नहीं होंगे।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २८

उक्त आयत में यहूदी-ईसाई-मुसलमान तथा साबी को एक ही स्थान पर रख कर, समदृष्टि से कहा गया है, कि खुदा,

व महाप्रलय (कयामत) मात्र दो बातों पर विश्वास रखने को कहा गया हैं। अर्थात न तो इस आयत में हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाने, और हज्ज--क़लमा--नमाज़ और रोज़ा का भी कोई प्रतिबन्ध हैं। यह होता है, किसी को एक-दो सिद्धान्त पूर्व, जो उनको प्रथम भी रूचिकर हों। उनको उन पर विश्वास करा कर अपनी ओर आकृष्ट करना होता है। इस आयत में तो मात्र दो ही बातें हैं, प्रथम खुदा और द्वितीय महाप्रलय (कयामत) को मानना है, और इन पर विश्वास करना आवश्यक है।

यह स्मरणीय है, कि इस आयत में एक खुदा और दूसरा महाप्रलय। इन दोनों को स्वीकारने मात्र से ही स्वर्ग प्राप्ति लिखी है। अर्थात उनको परलोक में कोई भय व कोई शोक न होगा। इस आयत में मुसलमानों को भी यहूदियों और ईसाईयों तथा साबियों के साथ ही सम्बोधित किया गया है। जो कि पढ़ देख कर आश्चर्य होता है। क्या उस समय के मुसलमान खुदा और कयामत को नहीं मानते थे? यदि नहीं मानते थे, तो फिर वह मुसलमान कहलाने के अधिकारी भी नहीं हो सकते और यदि मानते थे, तो फिर उनका नाम खुदा और महाप्रलय के मानने हेतु क्यों लिखा गया और अमुस्लिमों के साथ मुसलमानों को क्यों सम्बोधित किया गया? क्या कुरआन के मानने वालों के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर है? साथ ही यह विषय, यहाँ पर ही समाप्त नहीं होता है, आगे भी देखिए। हम पूर्व में अत्याधिक विस्तारसहित लिख चुके हैं, कि हज़रत मुहम्मद की नबूवत पर ईमान लाये बिना कोई व्यक्ति स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सकता, अपितु यहाँ तक कि उनके समस्त शुभकर्म भी व्यर्थ हो जायगे, किन्तु इस आयत में हज़रत मुहम्मद की नबव्वत पर ईमान लाने का वर्णन नहीं है। आयत, मात्र प्रलय और खुदा पर ईमान लाना है, तो क्या कोई मुसलमान कुरआन की इस आयत

को मानने हेतु तैयार है? कि केवल दोनों, खुदा और कयामत पर ईमान लाने से ही समस्त प्रकार के भय और शोक मिट जायेंगे ? इस जैसी अन्य और भी आयतें कुरआन में है। हम उनको नहीं लिखते हुए इस आयत के प्रतिकूल जो आयतें हैं, उनको लिखते हैं। जिनमें कहा गया है, कि प्रत्येक स्वर्गाभिलाषी की किन-किन वस्तुओं को मानना अर्थात उन पर ईमान लाना आवश्यक है। आयत:—

वल्मौमेमूना योमेनूना बेमा उन्जिला इलैका वा मा उन्जिला मिन् कब्लिक वल्मुकीमीनस्सलाता वल्मौतू नज्जकाता वल्मौमेनूना बिल्लाहे वल्योमिल्आखेरे ओलाएका सनोतीहिम् अज्रन अजीम।

कुरआन, पारा ६ रकू २२।२

अर्थ:—और मुसलमान ईमान लाते हैं, उस वस्तु पर जो तेरी ओर उतारी गई है, और मुझसे पूर्व उतारी गई है। और सुदृढ़ करते हैं नमाज़ को, और देते हैं ज़कात को, और ईमान लाते हैं अल्लाह-सहित प्रलय के दिन को, यह लोग हैं, अवश्य देंगे हम उनको महान् पुण्य। (शाह साहिब) इस आयत में मुसलमान के, और नेकी प्राप्ति हेतु कुरआन और उससे पूर्व पुस्तकों, नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और खुदा व कयामत पर ईमान लाना आवश्यक है। तथा:-

आमनर्रसूलो बेमा उन्जोला इलैहे मिर्रब्बे ही वल्मौमेनूना कुल्लो आमना बिल्लाहे वा मलाएक्तेही वा कुतुबेही वा रूसूलेही।

कुरआन पारा ३ रकू ४०।८

अर्थ:-ईमान लाया रसूल के साथ और जो उसकी ओर खुदा की ओर से उतारी गई (कुरआन) और मुसलमान ईमान लाये, प्रत्येक ईमान लाये अल्लाह और फ़रिश्तों, पुस्तकों और

रसूलों पर। इसमें भी हज़रत मुहम्मद-कुरआन-तौरेत-इञ्जील और हज़रत मुहम्मद के पूर्व रसूलों को मानना लिखा है। इसमें प्रलय को मानने का नाम नहीं है। निम्नलिखित आयत भी इसी बात की पुष्टि करती है। आयत:--

या अय्यो हल्लजीना आमनू आमेनू बिल्लाहे व रसूलेही वल्केता बिल्लजी अन्ज़ला मिन क़ब्लो वा मंय्यक्फुर बिल्लाहे वा मलाए- कतेही वा कुतुबेही वा रसूलेही वल्यौमिल्आख़ेरे फ़क़द ज़ल्ला ज़लालम्बईदा। कुरआन पारा ५ रकू २०/३०

अर्थ:—ऐ लोगों! जो ईमान लाये हो, ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल के साथ और उस पुस्तक पर, जो उतारी है, अपने रसूल (हज़रत मुहम्मद) पर और उस पुस्तक पर, जो इससे पूर्व उतारी है, और जो कोई झूठ लाये साथ अल्लाह के, और उसके फरिश्तों, और उसकी पुस्तकों, और उसके रसूलों और प्रलय के दिन से इन्कार करें। पस, वह पथभ्रष्ट हुआ। पथभ्रष्ट न होने से तात्पर्य इन समस्त वस्तुओं को मानना अनिवार्य है। जो भी व्यक्ति इनमें से एक भी वस्तु को छोड़ देगा, वह पथभ्रष्ट हो जायगा और उनसे युद्ध किया जायेगा। या तो वह कत्ल हो या फिर तौबा करे।

जैसा कि हज़रत उमर फरमाते हैं, कि रसूलिल्लाह के परलोक-गमन के पश्चात अरबवासी इस्लाम से विमुख हो गये और उन्होंने नमाज़ पढ़ने व ज़कात देना अस्वीकार कर दिया। हज़रत उमर के समझाने पर, कि उनसे नम्रता रखो किन्तु हज़रत अबा बकर ने कहा—खुदा की शपथ! जब तक मेरे हाथ में तलवार है, मैं उनसे ज़िहाद करूँगा।

तारीख़ुल खुलफा (सियूती) उर्दू पृ. ४७

अरबा कहते हैं, कि हज़रत अबा बकर ने...... इस्लाम से विमुख अरब लोगों को पराजय दी............ और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को सेना-सहित भेज कर फरमाया-जब तक वह लोग इस्लाम को पुनः स्वीकार न करें सदक़ा (ज़कात) देना स्वीकार न कर लें, लौट कर न आना.......... ।

हन्ज़ला बिन अली ने उद्धृत किया है, कि हज़रत अबा बकर ने ख़ालिद बिन वलीद को भेजते हुए चेतावनी दी, कि इस्लाम से विमुख लोगों से पांच कारणों को लक्ष्य में रख कर युद्ध करना। यदि कोई उनमें से एक को भी अस्वीकार करे, तो उससे ऐसा ही युद्ध किया जाये, जैसा कि वह पांच, यह कि (१) कलमाशहादत (२ नमाज़ (३) ज़कात (४) रोज़ा और (५)हज इत्यादि। ख़ालिद ने उन लोगों में से अत्यधिक कत्ल किये और अत्यधिक बन्दी बनाये और शेष ने इस्लाम पुनः स्वीकार कर लिया।

तारीखुलख़ुलफा (सियूती) उर्दू पृष्ठ ४९

जब कि इस्लाम की उपरोक्त स्थिति है, तो मात्र खुदा और कयामत को मानने वाले कैसे बच सकते हैं ? और कैसे मुसलमान समझे जा सकते हैं ?

हमने जो उपरोक्त दो आयतें कुरआन की प्रस्तुत की है। जिनमें खुदा और कयामत को मानने के अतिरिक्त रसूलों-पुस्तकों फ़रिश्तों-नमाज़-ज़कात-रोज़ा और हज को मानना भी आवश्यक है। इन सब को अंगीकार किये बिना कोई व्यक्ति ईमानदार नहीं कहा जा सकता है ?

अब पाठकगण ! विचार करें, कि इन आयतों की उपस्थिति में उस आयत का क्या महत्व और मूल्य शेष रह जाता

है, जिसमें मात्र खुदा और कयामत को मानना ही पर्याप्त समझ कर भय और शोक से मुक्त होना कहा गया है। कुरआन की यह गुत्थी ही ऐसी है, कि जिसका सुलझना नितान्त असम्भव है। उपरोक्त आयतों के सन्दर्भ में एक आयत और लिख कर मज़हरी के शब्दों में आपके सन्मुख निश्चय हेतु मार्ग प्रस्तुत करेंगे, ताकि आप इस विषय की गहराई तक पैठ सकें। आयत:-

ओलाएका योमूनूना बही वां मंय्यक्फ़ुर बही मिनलएहज़ाबे फ़न्नारो मौएदा।

कुरआन, पारा १२ रकू २/२ (हूद)

व्याख्या:-यही सम्प्रदाय (इस्लाम) हैं, जो इस पर दृढ़ विश्वास रखता है।...............पस, मुसलमानों का सम्प्रदाय ही 'ओला एका' से तात्पर्य है।...............और जो कोई दूसरे सम्प्रदायों में से इसे अस्वीकार करेगा, तो उसका स्थान नर्क है। "एहजाब" समुदाय से अभिप्राय मुसलमानों के अतिरिक्त समस्त सम्प्रदाय हैं।

अबू हुरैरा से वर्णित है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-शपथ है उस सत्ता की, कि जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं। इस उम्मत के निमन्त्रण पर जो कोई यहूदी या ईसाई ऐसी स्थिति में मरेगा, कि जिस सत्यता को मुझे देकर भेजा गया है, वह उस पर ईमान न लाया होगा, तो वह अवश्य नर्कगामी होगा।

(खाहुलमुस्लिम) तफसीर मज़हरी भाग ६ पृ. ३३-३४

अब जिस आयत पर हम चर्चा कर रहे थे, उसमें मात्र खुदा और प्रलय पर ईमान लाने हेतु कहा गया है। इन दोनों पर ईमान लाने से मुसलमान नहीं हो सकता ? जब तक कि रसूल पर ईमान न लाए। इस कारण यह आयत इस्लाम स्वीकार करने

के साधनों को पूर्ण नहीं करती। इसीलिए यह सर्वथा नितान्त निष्प्रयोजनीय और इस्लाम के सिद्धान्तानुसार भी व्यर्थ है, कि उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकती, और मुसलमान बनने को पूर्ण नहीं करती है, क्योंकि उसमें रसूल पर ईमान लाने और नमाज़ ज़कात-रोजा-कलमा और हज़ इत्यादि हेतु कोई चर्चा नहीं है। अब एक बात जो लिखी है, और यह दलील दी है, कि यह विदित रहे, कि यहूदियों में ईमानदार वह है, जो तौरात को मानता है और मूसा के मार्ग का अवलम्बन करता है, किन्तु जब हज़रत ईसा आ जाएँ, तो उन आज्ञाओं का पालन करें, और उनकी नबव्वत को सत्य समझे और यदि अब भी वह तौरात और मूसा के मार्ग पर अडिग रहा और हज़रत ईसा को अस्वीकार किया और उसकी आज्ञा का पालन न किया, तो फिर बेदीन (अधर्मी) हो जाएगा, और इसी प्रकार ईसाईयों में से ईमानदार वह है, जो इन्ज़ील को खुदाई पुस्तक माने और ईसा शरीअत (धर्माचरण) पर अमल करें, और यदि वह अपने काल में हज़रत मुहम्मद को पाए तो उनकी आज्ञा का पालन करें और उनकी नबव्वत को स्वीकारें। यदि उसने अब भी इन्ज़ील को तथा ईसा के मार्ग को न त्यागा और हज़रत मुहम्मद का अनुकरण न किया तो विनाश होगा।

सारांश यह है, कि प्रत्येक नबी का अनुयाई नेक व ईमानदार है और खुदा का स्वर्ग प्राप्तकर्ता है, किन्तु जब दूसरा नबी आए, तो उसे, उसने अस्वीकार किया, तो काफ़िर हो जायेगा। कुरआन की आयतानुसार:—

मैय्यंब्तग़ो ग़ैरिल्इस्लामे दीनन् फ़लंय्युक्बला मिन्हो व हुआ फ़िल्आख़िरते मेनल्ख़ासेरीन्।

कुरआन पारा ३ रकू ६/१७

अर्थात् —जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त और दीन (धर्म) तल श क रे तो उसे कदापि स्वीकार न किया जायेगा और परलोक में वह (कयामत के दिन) हानि उठाने वालों में से होगा। क्योंकि किसी मनुष्य का कोई अमल (कर्म) कोई मार्ग स्वीकृत नहीं, जब तक कि वह हज़रत मुहम्मद की शरीयतानुसार न हो, परन्तु यह उस समय है, कि जब आप पैगम्बर बन कर संसार में आ गए हों। आपसे पूर्व जिस नबी का काल था। उस समय उस नबी का अनुसरण करना आवश्यक था। और फिर और भी आयत:—

'इन्नद्दीना इन्दल्लाहिल्इस्लाम' है, अर्थात् खुदा के निकट एक धर्म इस्लाम है। तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ २८

इस चर्चित आयत के विषय में लिखा है, कि इस आयत में यद्यपि मात्र खुदा और कयामत पर ईमान हेतु आदेश हुआ है। रसूल के भक्त होनें का वर्णन नहीं, परन्तु संयमी पुरुष भलिभाँति जान सकता हैं, कि हज़रत मुहम्मद को मान्यता दिये बिना कोई खुदा और कयामत को नहीं मान सकता। (क्यों मौलाना साहिब ! यहूदी व ईसाई हज़रत मुहम्मद को माने बिना खुदा व कयामत को मानते हैं या नहीं ? आपने कैसे लिख दिया ?) हमने प्रस्तुत आयत पर इतनी चर्चा की, कि यह आयत इस्लाम के सिद्धान्त-विरुद्ध है। इसका उत्तर भी व्याख्याकार गलत देकर इस सिद्धान्त-विपरीत बात को छुपाना चाहते हैं, जो कि नितान्त मिथ्या बात है। भारत में आर्य हिन्दू परमात्मा और प्रलय दोनों को, हज़रत मुहम्मद को स्वीकारे बिना ही, मानते हैं तो फिर व्याख्याकार की यह बात आयत की सिद्धि में कैसे सहायक हो सकती है ? क्या ऐसी भ्रमोत्पादक और मिथ्या लेखन से आयतों

का पारस्परिक मतभेद या दुर्भाव का समाधान या निराकरण हो सकता है ? यह कदापि सम्भव नहीं है।

हम पूर्व में भी इस विषय पर सप्रमाणिक लिख चुके हैं, कि मात्र इस्लामी अनुयाई मुसलमान ही स्वर्ग में जायेगा और अन्य कोई नहीं। इन आयतों के विषय में हमने सविस्तार लिख दिया है। आशा है, कि आप विद्वजन ! कुरआन की उलझनों को भलिभांति समझ लेंगे कि कुरआन की यह आयतें कहां से और किस प्रकार तथा किन गाथाओं व कथाओं का अवलम्ब ग्रहण कर बनती रही। आयतः-

वा इज अख़ज्ना मीसाककुम् रफ़ाना फौक कोमुत्त्ुर ख़ुजु मा आतैनाकुम् बे कुव्वातिःवज्ज कुरू मा फ़ीहे लअल्लाकुम् तत्तकून्।

कुरआन, पारा १ रकू ८।८ आयत ६३

अर्थात्—और जब हम (खुदा) ने तुमको वचनबद्ध कर लिया, कि तुम तौरात के अनुकूल कर्म करोगे, और हमने तूर पर्वत को तुम्हारे ऊपर उठा कर ला लटकाया, कि शीघ्र ही इस बात को स्वीकारो, कि जो पुस्तक हमने तुमको दी है, जिससे आशा है कि तुम संयमी वन जाओगे। वचनबद्धता के पश्चात् तुम अपने वचन से विमुख हो गये। यदि तुम लोगों पर अल्लाह की कृपा और दया न होती, तो अवश्य ही तुम विनाश और ध्वंश को प्राप्त होते।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ २९-३०

व्याख्या:-इस स्थान पर बनी इस्राईल की एक और घटना का वर्णन कर उनके दुराचार और विद्रोह को हजरत मुहम्मद साहिब से कहा जा रहा है, और सभ्यतापूर्वक सन्तोष दिया जाता है, कि जब उनके पूर्वजों ने जिस वस्तु की तीव्र कामना कर उसे

अपने हेतु याचना की थी। उसे अत्याधिक कठिन और बोझिल मान कर अंगीकार न किया और आज्ञापालन से बिमुख हो अवज्ञाकारी हो गये।... ... ... (ऐ मुहम्मद !) अब तेरा आज्ञा पालन हेतु इनसे क्या आशा हो सकती है ? ....इस घटना का विवरण इस प्रकार है, कि जब हज़रत मूसा तूर पर्वत से १० या १२ तख्तियां (पाटियां) लाये और उनकी आज्ञाए बनी इस्राईलियों को सुनाई, तो उन लोगों ने अत्याधिक अभिमान और विद्रोहपूर्ण ढग से उन्हें कठिन समझ कर तौरात की आज्ञाएँ मानने से अस्वीकार कर दिया। उस समय खुदा की आज्ञा से हज़रत जिब्रील ने तूर पर्वत को जड़ से उखाड़ लिया और अपने पङ्खों पर रख कर बनी इस्राईल की सेना में ले आये और मनुष्य की ऊँचाई के बराबर उनके मस्तकों पर लाकर छत की भांति लटका दिया। दूसरी ओर सामने की दिशा में अग्निज्वालाएँ धधकने लगी और पीठ पीछे समुद्र हिलोरे मारने लगा। ऐसी स्थिति में जब उन्हें भागने हेतु मार्ग न मिला, तो परेशान होकर सज़दा (नतमस्तक) में गिर पड़े और पर्वत गिरने के भय से तौरात की सम्पूर्ण आज्ञाएँ स्वीकार करने हेतु तत्पर हो गये। इसके पश्चात व्याख्याकार ने अत्याधिक विस्तारसहित लिखा है, और तत्पश्चात यह लिखा, कि अब तुमको (हज़रत मुहम्मद के समकालीन बनी इस्राईल !) उचित है, कि इस अन्तिम पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद) की आज्ञापालन से, जो तुम्हारी शारीरिक और आत्मिक रोगों का उपचार है, उसे स्वीकार करने से जी न चुराओगे, अन्यथा निकट भविष्य मे ही विनाश को प्राप्त हो जाओगे।

तफसीर आजमुत्तफासीर, भाग १ पृ. १=६-६०

उपरोक्त व्याख्यानुसार ही तफसीर बैज़ावी पारा १ पृष्ठ १०-११, तफसीर कुरआनिल अज़ीम पारा १ पृष्ठ ७, तफसीर

मुहम्मदी पारा १ पृष्ठ १०३, तफसीर कादरी पारा १, पृष्ठ १६ तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ १३२–३३, तफसीर मुआलेमुत्त-न्ज़ील पारा १ पृष्ठ ३१, तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ३० और तफसीर ज़लालैन पारा १ पृष्ठ ११ पर भी इसी भाँति व्याक्याएँ की गई है।

कुरआन ने इस आयत में खुदा की समस्त शक्तियों को तहस–नहस कर खुदा को बुरी तरह कलंकित कर दिया है। जब इस्लाम और कुरआन भी खुदा को सर्वशक्तिसम्पन्न मानता है, तो फिर ऐसे अवमूल्यनकारक बातों का प्रयोग करना, कि किसी एक सम्प्रदाय विशेष को एक बात की स्वीकृति हेतु उनके मस्तकों पर पर्वत लटका देना, सामने अग्नि ज्वालाएँ धधकाना और पीठ पीछे समुद्र को तरंगित कर उनके भागने को मार्ग न देकर अपनी बात को स्वीकार करवा लेना, क्या खुदा का कार्य हो सकता है ? क्या ऐसी किसी शक्ति को कोई खुदा (ईश्वर) स्वीकारने को तत्पर हो सकता है ? क्या खुदा अपनी आंतरिक शक्ति या प्रेरणा से बनी इस्राईल को सुमार्ग पर नहीं ला सकता था, कि उसे उस समय सृष्टि नियम के प्रतिकूल अपनी बात मनवाने हेतु बाफित होना पड़ा ? इसी प्रकार की एक और आयतः—

वा इज़ा अख़ज़्ना मीसाककुम व रफ़ाना फौक कौमुत्तर ख़ुज़ू मा आतैनाकुमू बेकुव्वातिव्वस्मऊ कालू समेना वा असैना वश्रबू फ़ी कुलूबेहेमुलइज्ला बेकुफ्रेहिम् ।

कुरआन पारा १ रकू ११/११

अर्थातः–और जब हम (खुदा) ने तुम्हारी वचनबद्धता प्राप्त की थी और तूर पर्वत को तुम्हारे मस्तकों पर लाकर लटका दिया था, कि जो कुछ (आदेश) हम तुमको देते हैं उसको साहस के

साथ सुनो और स्वीकार करो ! उस समय उन्होंने कहा–हमने सुन लिया और हमसे यह आज्ञाएँ कार्यान्वित नहीं होगा। (कारण यह है।) कि उनके हृदयों में बछड़े की पूजा स्थाई हो गई थी, और उनके यह कर्म अत्याधिक बुरे हैं।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ४६

अब देखिए, कि इस आयत के पूर्वोक्त आयत में तो यह था, कि जब उनके मस्तकों पर पर्वत लटका दिया, तो उन्होंने स्वीकार कर लिया, कि हम तौरात के अनुकूल कार्य करेंगे, किन्तु इस आयत में पूर्वोक्त आयत से और अन्तर नहीं है। मात्र इसमें यह बात कही गई है, कि जब उनके मस्तकों पर पर्वत उठाया, तो उन्होने कहा–हमने सुन लिया और हमसे यह आज्ञाएँ कार्यान्वित वहीं होगी।

अब देखिए, कि एक आयत में कहते हैं–हम तौरात के अनुकूल कार्य करेंगे और दूसरी आयत में कहा–हमसे यह आज्ञाएँ कार्यान्वित नहीं होगी। अब इन दोनों आयतों की कोई भी विवेकशील व्यक्ति खुदा की वाणी कह सकता है ? क्योंकि बनी इस्राईल की यह घटना एक ही बार घटी और उसकी अभिव्यक्ति में अन्तर और विरोधाभास उत्पन्न हो गया, कि एक आयत में स्वीकृति और दूसरी में अस्वीकृति। इतना अन्तर और विरोधाभास तो साधारण मनुष्य की वाणी में भी नहीं हो सकता है। इस प्रकार की परस्पर--विरोधी आयतों को खुदा (ईश्वर) की वाणी कहा गया है। इस आयत की व्याख्या:—

अल्लाह बनी इस्राईल के अपराध--विरोधात्मक बातें विद्रोह व सत्य से विमुख होने का वर्णन कर रहा है। जब तूर पर्वत को सिरों पर देखा, तो स्वीकार कर लिया किन्तु जब

पर्वत उनके मस्तकों पर से हट गया, तो फिर अपने वचन से विमुख हो गये, क्यों कि बछड़ा पूजा का मोह उनके हृदय में स्थापित हो चुका था। जैसा कि हदीस में है।

तफ़सीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ४६

व्याख्याकार ने प्रथम आयत को क्रम में रखते हुए यह लिख दिया, कि जब तूर पर्वत उनके मस्तकों पर लटकाया तो उन्होने स्वीकार कर लिया।

अब व्याख्याकार की ईमानदारी देखिये, कि आयत में में लिखा है, कि हम स्वीकार नहीं करते, और व्याख्याकार ने अपनी व्याख्या में लिखा, कि हम स्वीकार करते हैं। इसी बछड़ा पूजा पर हज़रत मूसा ने ७० हजार मनुष्यों की हत्या करवा दी और तौबा भी करा ली, और फिर मस्तकों पर पवत भी लटका दिया, किन्तु बनी इस्राईल के हृदयो से बछड़ा पूजा का प्रेम न गया।

हम कहते हैं, कि क्या खुदा को इस बात का ज्ञान नहीं था, कि मस्तकों पर पर्वत लटकाने से मान जायंगे किन्तु पुनः ज्यों के त्यों हो जायेंगे, तो फिर खुदा ने ऐसा निरर्थक काम क्यों किया, कि समस्त परिश्रम व्यर्थ गया। इससे स्पष्ट है, कि यह कुरआन और इसकी आयतें खुदा की वाणी नही है। खुदा को क्या आवश्यकता थी, कि वह लोगों के मस्तकों पर पर्वत लटकाता फिरे। हम चाहते हैं, कि इस विषय की जितनी भी आयतें कुरआन में है, उन्हें यहाँ प्रस्तुत कर दी जावे। यथाः—

व रफ़ाना फ़ौक होमुत्तूर बेमीसाक़ोहिम् व कुलना लहामुद ख़ुलुल्बाबा सुज्जदंव्व कुल्नालहुम् ला तादू फ़िस्सब्ते व अख़ज़्ना मिन्हुम्मीसाकन ग़लीज़ा।

कुरआन, पारा ६ रकू २२/२

अर्थः–हम (खुदा) ने उन लोगों से वचनबद्धता लेने हेतु तूर पर्वत को उठा कर उनके मस्तकों पर लटका दिया, और हमने उनको यह आदेश दिया था, कि द्वार में नतमस्तक हो, प्रवेश करना, और यह भी आज्ञा दी थी, कि सप्ताह सम्बन्धी सीमा को मत तोड़ना, और हमने उनसे घोर कठोर वचन लिये।

तफसीर हक्कानी पारा ६ पृष्ठ ४

हमने जो पूर्व में दो आयतें लिखी हैं, उनमें तो यह कहा गया है, कि अपनी पूर्व वचनबद्धता को, जिससे वह लोग विमुख हो गये थे, पूर्ण कराने हेतु उनके मस्तकों पर तूर पर्वत को लटकाया, और इस उक्त प्रस्तुत आयत में यह कहा जा रहा है, कि वचनबद्धता लेने हेतु तूर पर्वत को उठा कर उनके मस्तकों पर लटका दिया। आयत में है, कि द्वार में नतमरतक हो, प्रवेश करना और सप्ताह सम्बन्धी सीमा को तोड़ना मत।

हम पाठकों! से आग्रहपूर्वक कहेंगे, कि कुरआन के खुदा को तो इस आयत में और पूर्वोक्त दोनो आयतों में व्याप्त अन्तर और मतभेद दृष्टिगोचर नहीं हो पाता और न अंधभक्त मुसलमानों को ही अनुभव होता होगा किन्तु आपको तो निश्चय ही इन आयतों में व्याप्त गहन अन्तर और मतभेद स्पष्टतः ही दिखाई देगा। क्योंकि पूर्वोकत आयतों में यह है, कि प्रथम वचन बद्धता को पालन करवाने हेतु पर्वत लटकाया और इस आयत में है, कि उन लोगों से वचनबद्धता लेने हेतु पर्वत लटकाया, और वचनों का आयत में भी वर्णन है, कि द्वार में नतमष्तक हो प्रविष्ट होना और सप्ताह के दिनों की सीमा मत तोडना। क्या इतना अन्तर और मतभेत उपिस्थत होते हुए भी कुरआन की आयतों को ईश्वरीय बाणी कैसे कहा जा सकला है? जिनमें आकाश–पाताल का अन्तर है। इस आयत की व्याख्या भी देख लेना चाहिए ताकि आपको आयत के विषय में पूर्ण ज्ञान हो सके।

व्याख्या:—उन लोगों ने स्वीकृति हेतु पूर्ण प्रतिज्ञा की थी। इसी-लिए हमने तूर पर्वत को उनके ऊपर उठा लिया और हमने उनसे कहा। अर्थात जब तूर पर्वत उनके मस्तकों पर छाया किये हुए गिरने के सदृश्य था। उस समय मूसा की वाणी से हमने कहल-वाया, कि द्वार में (एलिया के) नतमस्तक हो प्रवेश करना, और हमने उनसे कहा—अर्थात हज़रत दाऊद की वाणी से कहलवाया और यह भी सम्भव है, कि भविष्य में हज़रत मूसा की बाणी से उस समय कहलवाया हो। जब पर्वत बनी इस्राईलियो में मस्तकों पर लटका हुआ था, क्योकि शनिवार के दिवस भक्ति का आरम्भ उसी क्रम में हो चुका था। अवश्य, इस आज्ञाभग हेतु और 'अज़ाबे मस्ख़' (मस्ख अर्थात रूप परिवर्तित करना) हैं। यह यह घटना हज़रत दाऊद के काल में हुई।

(अब देखिए, कहाँ हज़रत मूसा और कहाँ हज़रत दाऊद ? व्याख्याकार महोदय को इन दोनों के काल का अन्त-राल ज्ञात ही नहीं है, कि यह घटना किन हज़रत की सम-कालीन है ?)

शनिवार के विषय में अघिकता न करो अर्थात शनिवार को मछलियाँ पकड़ कर स्वयँ अपने पर अत्याचार न करो और हमने उनसे कठोर प्रतिज्ञा ली थी, कि वह तौरात की आज्ञा स्वीकार करेंगे और शनिवार के विषय में अधिकता न करेंगे। यहां तक कि उन लोगों ने इस आदेश को पूर्ण करने का वचन अपनी प्रसन्नता से ले लिया।

तफसीर मज़हरी पारा ६ पृष्ठ ३२१
तफसीर इब्ने कसीर पारा ५ पृष्ठ ८

इसी क्रम में एक और आयत:—

वा इज़ नतक़नल्जबला फ़ौक़हुम कअन्नहू ज़ुल्लतुं व्वज़न्नू अन्नहू वाकेउन बेहिम् । ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बे कुव्वतिव्व वज़्कुरू मा फ़ीहे लअल्लकुम् तत्तकून ।

क़ुरआन पारा ६ रकू २१/११ (एराफ़)

अर्थ:-और वह समय भी स्मरणीय है, कि जब हम (खुदा) ने पहाड़ को उठा कर छत की भांति उनके मस्तकों पर लटका दिया और उनको विश्वास हुआ, कि अब उन पर गिर पड़ेगा, और कहा कि शीघ्र स्वीकार करो, उसको जो पुस्तक (तौरात) हमने दी है, और दृढतासहित स्वीकार करो, और स्मरण रखो कि इसमें जो आज्ञाएं हैं। जिससे आशा है, कि तुम सयमी बन जाओ। तफसीर इब्ने कसीर, पारा ६ पृष्ठ ४०

यह उपर्युक्त चारों आयतें हज़रत मूसा से सम्बन्धित है, और मूसा की मनस्थिति का दिग्दर्शन कराती है, किन्तु हम एक आयत हज़रत मुहम्मद से सम्बन्धित इसी प्रकार की यहां प्रस्तुत करते हैं, ताकि आपको इस कुरआनकार की स्वाभाविक प्रकृति का अनुमान हो सके, कि जिस समय आयत रची गई उसकी मनस्थिति क्या थी ?

'यम्हकुल्लाहुर्रिबा' अर्थात खुदा ब्याज़ को निषेध करता है। इससे ऋण सम्बन्धी लेनदेन समाप्त हो गया था, किन्तु कुछ मुसलमानों को, कुछ मुसलमानों से बड़ी बड़ी ब्याज राशियां वसूलनी थी वह लोग उस ब्याज की वसूली हेतु आग्रह करने लगे। तब उन लोगो हेतु निम्नलिखित आयत रची गई। आयत:-
या अय्यो हल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा वा ज़रू मा बकेया मिनर्रिबा इन कुन्तुम मौमेनीन । फ़ इल्लम तफ़अल फ़ाज़नू बेहर्-

बिस्मेनल्लोह व रसूलेही वा इन तुब्तुम् फ़लकुम रउसो अमवाले-कुम् ला तज़्लेमून । बा ला तुजलमून ।

कुरआल पारा ३ रकू ३८/६ (बकर)

अर्थ—ऐ ईमानवालों ? अल्लाह से डरो और जों कुछ ब्याज का शेष है, उसको छोड़ दो । यदि तुम ईमानवाले हो । फिर यदि तुम इस पर अमल (पालन) न करोगे, तो सुन लो अल्लाह की और से उसके रसूल की ओर से युद्ध की सूचना अर्थात तुम पर जहाद (अनिवार्य धर्मयुद्ध) होगा, और यदि तुम तोबा कर लोगे, तो तुम्हारा असली (मूल) धन मिल जायेगा । तुम किसी पर अत्याचार न कर पाओगे और न कोई तुम पर अत्याचार कर पायेगा । तफसीर इब्ने कसीर, पारा ३ पृष्ठ २६

जब यह आयत उतरी, तो बोले-हमको अल्लाह के साथ लड़ने की शक्ति नहीं है । अर्थात हम ब्याज (सूद) छोड़ दते हैं और अल्लाह व रसूल के साथ लड़ने की शक्ति नहीं है । अल्लाह से युद्ध का तात्पर्य यह है, कि उनको अग्नि में डाल देना और रसूल से युद्ध का अभिप्राय यह है, कि उन पर तलवार चलाई जाये । तफसीर मुवाहिबुर्रहमान पारा ३ पृष्ठ ७८

उक्त पांचों आयतों में खुदा (ईश्वर) को लोगों हेतु बलात् बातें बनानेवाला, पर्वत उठा कर ऊपर गिराने का भय दिखानेवाला और तलवार का भय दिखाकर लोगों को अपने वश में करनेवाला प्रदर्शित किया गया है । कोई भी विवेकशील व्यक्ति इन आयतों को खुदा की ओर से कही या उतारी गई कभी भी स्वीकारने को उद्यत नहीं होगा । क्योंकि यह समस्त बातें या कर्म खुदा के गुण-कर्म और प्रकृति के विरुद्ध हैं । ईश्वर (खुदा) सर्वशक्तिमान–अन्तर्यामी और सर्वगुणसम्पन्न है । उसको इस बात की क्या आवश्यकता कि वह किसी को भय दिखा कर,

आत क़त कर अपनी किसी बात का समर्थन या अनुसरण करायें ?

हम इस विषय को पूर्व में भी सविस्तार लिख चुके हैं, कि संसार में वही होता है, जो मन्जूरे खुदा होता है। अतः तलवार उठाना अथवा पहाड़ गिराने का भय दिखा कर जन साधारण को सन्मार्ग पर लाना इत्यादि, यह मिथ्या और मनगढ़न्त कल्पना मात्र गल्प हैं। इन आयतों के रचयिता ने जहां खुदा की प्रतिष्ठा को मटिया मेट कर दिया हैं। वहीं कुरआन को भी निम्नस्तरीय बना दिया है। क्योंकि ऐसे कर्म खुदा (ईश्वर) के गुण-कर्म-प्रकृति और सामर्थ्य के विरुद्ध और सृष्टिकर्ता-जगत-पालक-सर्वशक्तिमान-अन्तर्यामी और सर्वगुणसम्पन्नता के प्रतिकूल हैं, और इन सब के अतिरिक्त इन समस्त आयतों में भयंकर मतभेद-अन्तर और विरोधाभास व्याप्त है। जैसा कि हम गत पृष्ठों में लिख चुके हैं।

यह समस्त बातें, जैसा कि हमने पूर्व में ही लिख दिया; कि बाईबल से ली गई है, और उसमें अपनी ओर से कतिपय अंश संलग्न कर उनको अरबी भाषा में अनुवादित कर आयतों के रूप में कुरआन में गुम्फित कर दिया गया है। वहां पर ऐसा लिखा है:—

तब मूसा आया और बन्नी इस्राईल के आगेवान लोगों को बुलाया और उनके सन्मुख समस्त बातें, जो खुदावन्द ने उसे कहीं थी, बयान की और समस्त लोगों ने सामुहिक उत्तर दिया और कहा-खुदावन्द ने जो कुछ फ़रमाया है, हम वहीं करेंगे, और मूसा ने लोगों का उत्तर खुदा को पहुँचा दिया।

"निर्गमन" अध्याय ११

उक्त घटना को कुरआन की पांचों आयतों में अत्याधिक न्यूनाधिक कर लिखा, कि खुदा ने अपने वचन को पूर्ण कराने

हेतु बनी इस्राईल पर तूर पर्वत को उठाया, और वचनबद्धता की पूर्ति हेतु प्रयत्न किया। यह आयत का एक अंग है। दूसरा अंग है, तुम उसके पीछे फिर गये अर्थात उस वचनपूर्ति से विमुख हो गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती............ ....तुम्हें अवश्य ही खुदा की ओर से कष्ट और संकट पड़ता, क्योंकि खुदा ने हज़रत मुहम्मद साहिब को सम्पूर्ण सृष्टि हेतु रहम करने वाला बनाया है।

आयत के उक्त विवरण में आप इस परिणाम पर पहुँचेगे, कि बनी इस्राईल इस योग्य थे, कि उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता, किन्तु दया और कृपा से वह दण्ड से सुरक्षित रहे।

हमने अब तक जितना बनी इस्राईल का वर्णन किया है, और कुरआन में आगे भी जो वर्णन किया गया हैं, कि यह बनी इस्राईल जाति निरन्तर विद्रोह-अवज्ञाएँ और वचनभंग करती रही, परन्तु फिर भी उसको दण्डित न कर कृपा और दया की छत्रछाया में सुरक्षित रखा और उसको अनवरत अवज्ञाएं—वचन-भंगता और विद्रोह हेतु प्रोत्साहित करना। यह कभी भी खुदा का कार्य नहीं हो सकता। क्योंकि बारम्बार उन्हें दण्ड से छोड़ा जाता है, और जो भी मांगे, दिया जाता है। जिससे ज्ञात होता है, क्या कुरआन का खुदा बनी इस्राईल का दासवत् है ? बनी इस्राईल का खुदा से न जाने क्या विशेष सम्बन्ध हैं, कि इतने अवज्ञाकारी-विद्रोही-अत्याचारी और वचनभंगकर्ता होने पर भी कुरआन के खुदा ने सम्पूर्ण सृष्टि की समस्त जातियों से उन्हें उत्कृष्ट और प्रतिष्टित प्रतिपादित किया है। इस कारण प्रत्येक विवेकशील और सत्यानुरागी व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा, कि यह सम्पूर्ण वाक्जाल और शब्दव्यूह यहूदियों को मुसलमान बनाने का षडयन्त्र मात्र है, अन्यथा कोई भी ऐसी निकृष्ट जाति

को, जैसा कि उसके सम्बन्ध में स्वयं कुरआन ने वर्णन किया है, उसे उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित नही कह सकता है।

इन प्रस्तुत आयतों पर हमने पूर्णरूपेण प्रकाश डाल दिया है, कि यदि इन आयतों पर पूर्णरूपेण विचार किया जाये, तो कोई भी मनुष्य इन आयतों को खुदा का कलाम (ईश्वरीय वाणी) नहीं कह सकता है। हां, खुदा (ईश्वर) को कलंकित और अपमानित करनेवाली वाणी तो अवश्य ही कह सकेगा ? और इन आयतों में हज़रत मुहम्मद साहिब भी सम्मिलित कर दिये गये हैं, कि जिनका इनसे कोई सम्बन्ध ही नहीं है।

दण्ड का स्वरूप

हम सुनते चले आए हैं कि पुरातन काल में उत्यन्त कठोर और निर्मम दण्ड दिया जाता था। यदि कोई एक व्यक्ति किसी परिवार से कोई पापाचार करता, तो उस पापकर्ता दोषी व्यक्ति के परिवार के समस्त सदस्यों को मृत्यु--दण्ड दे दिया जाता था। था। इसी भांति कुरआन के खुदा और हज़रत मूसा की भी न्याय और दण्ड प्रणाली है, कि बछड़ापूजा का साधारण अपराध होने पर भी बनी इस्राईल जाति से ७० हजार व्यक्ति मृत्यु के मुंह में धकेल दिये गये। इसी प्रकार की आयतें यहां प्रस्तुत की जा रही हैं। जिससे कि आपको ! दण्डकर्ताओं की योग्यता का परिचय हो सकेगा। आयतें:—

व लकद अलिम्तो मुल्लाज़ी नातदौ मिन्कुम् फिस्सबते फ़कुल्ना लहुमकून किरदतन् ख़ासेईन् फ़ज़ाअल्नाहा नकाललमा बैन यदेहा व मा ख़ल्फ़ाहा वा मौइज़तुल्लिल मुत्तकीन।

कुरआन, पारा १ आयत ६६-६७

अर्थ—तुम जानते हो, उन लोगों की स्थिति, जिन्होंने तुम में सीमा (इस आज्ञा की) को तोड़ा था, जो शनि के दिन हेतु

थी। हमने उनको कह दिया, कि तुम निकृष्ट बन्दर बन जाओ। फिर हमने उस घटना को शिक्षाप्रद बना दिया, जो उस समय उपस्थित थे, और उन लोगों हेतु जो भविष्य में आने वाले थे, उनके हेतु शिक्षाप्राप्ति का साधन बना दिया, और उन लोगों हेतु जो भय करने वाले हैं।

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ३०

व्याख्या:--ऐ बनी इस्राईल ! तुम उन लोगों के ऐतिहासिक वृतांत भलिभांति जानते हो, जिन्होंने शनि के दिन विद्रोह और अवज्ञा की थी। जिसके दण्डस्वरूप वह निकृष्ट बन गए।

इस गाथा का सारांश यह हैं, कि मदयन और तूर के मध्य किब्रिया नदी के तट पर एलिया नामक नगर के लोग तौरात की आज्ञाओं का पालन किया करते थे। उनमें से एक शनि के दिन की प्रतिष्ठा और आदर करना भी था, और वह यह कि समस्त काम-धधों को त्याग कर खुदा की भक्ति करें, और उस दिन की पवित्रता में मछली का शिकार बिल्कुल न करें, और इस बात में खुदा को उनकी परीक्षा लेना, अभिप्रेत था। इस कारण शनि के दिन ही मछलियां अत्याधिक मात्रा में जल पर आकर छा जाती थी। यह लोग इस दिन की प्रतिष्ठा के कारण उनका शिकार न कर सकते थे। शनि का दिन व्यतीत होने पर अन्य दिनों में मछलियाँ अदृश्य हो जाती थी। इस पर यह युक्ति सोची गई कि दरिया के किनारे बड़े-बड़े जलकुन्ड़ों तक नदा से नहरें निमित की गई और जब शनि के दिन मछलियां आती, तो घेरा सा बना कर उन्हें जलकुण्डों की ओर ले आते, और नहरें जालो से बन्द कर देते थे। रविवार के दिन उन मछलियों को पकड़ कर ले आते और ४० वर्षों, तथा कतिपय लोगों के कथानुसार ७० वर्षों तक यही क्रम प्रचलित रहा।

यहां तक कि हज़रत दाऊद का काल आ गया। उन लोगों ने हज़रत दाऊद की शिक्षा की ओर भी ध्यान न दिया। तब खुदा ने उनके रूप को परिवर्तित कर बन्दर आदि बना दिये।

लिखा है, कि उस बस्ती के निवासी ३ समूहों में विभक्त हो चुके थे। अनुमानतः ७० हजार मनुष्यों का समूह, तो इस निकृष्ट कर्म को करता था और १२ हजार का समूह इस कर्म से रोकता था, और एक समूह न तो स्वय करता और न शिकारियों को रोकता ही था, अपितु रोकनेवालों को धिक्कारता था। जब रोकनेवालों की बात पर ध्यान न दिया, तो उन लोगों ने अपने तथा उनके घरों के मध्य एक लम्बी दीवार खींच ली, और परस्पर मेलजोल समाप्त कर दिया। तत्पश्चात जब उन लोगों ने शिकारकर्ताओं का आवागमन न देखा, तो खोज करने पर उनको बन्दर बना हुआ पाया, और तीन दिनों तक बन्दर रह कर मर गए।

तफसीप आज़मुत्तफासीर, भाग १ पृ, १९१-९२

इसी प्रकार और भी वहुत कुछ लिखा गया है, किन्तु तफसीर मज़हरी ने अपनो ऐसी ही व्याख्या में इतना और विशेष लिखा:—

तीन दिनों तक बन्दर रह कर भी वह मरे नहीं।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १३३–३४

इसी प्रकार तफ़सीर कुरआनिल अज़ीम पारा १ पृष्ठ ७, तफसीर मुहम्मदी पारा १ पृष्ट १०४–५, तफसीर कादरी पारा १ पृष्ठ १६, तफसीर ज़लालैन पारा १ पृष्ठ ११, तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ३०, और तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील पारा १ पृष्ठ ३१–३२ पर तफसीर मज़हरी की भांति ही व्याख्या की गई है, तथा तफ़सीर हक्कानी ने इतना और भी विशेष लिखा है:---

खुदा ने उन पर आपत्ति डाली और ताऊन में रोगग्रस्त हो गये।
तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ३७-३८

पाठक बंधुओं ! विचारणीय है, कि जो खुदा (ईश्वर) अन्तर्यामी हैं, वह ४० अथवा ७० वर्षों तक जाने कहाँ और किस स्थिति में खोया रहा और वह लोग मछलियां पकडते रहे, खाते रहे। हज़रत दाऊद के काल में अल्लाह ने उनको बन्दर बना दिया। सप्ताह में ६ दिनों तक मछली पकड़ना और खाना तो उनके हेतु उचित था और कोई रोक नहीं थी। सातवें दिन भी उन्होंने नदी से मछलियां नहीं पकडी अपितु शनिवार के बदले रविवार को जलकुण्डों में से मछलियां पकडी, और इस पर उन्हें इतना कठोर दण्ड दिया कि मनुष्य से बन्दर बना कर ३ दिनों में ही मार भी दिया।

कहा जाता है, कि खुदा ने इनकी परीक्षा हेतु ऐसा किया था। जब कि मुसलमान खुदा को अन्तर्यामी और सर्वशक्तिमान मानते हैं, तो उसको परीक्षा लेनें की क्या आवश्यकता थी। खुदा हेतु यह कहना कि उसने परीक्षा लेने हेतु ऐसा किया, यह यह बात उसको अपमानित और मूर्ख प्रदर्शित करने सदृश्य है। क्योंकि जब खुदा द्वारा सृष्टि-निर्माण के पूर्व ही से समस्त मनुष्यों के हेतु उनके कर्म लिख दिये गये थे, कि ससार में जाकर अमुक मनुष्य अमुक कर्म करेंगे, तो फिर परीक्षा का क्या अर्थ है ?

हमने इस विषय पर पूर्व में ही सविस्तार लिख चुके हैं, कि संसार में जो भी कुछ होता या घटता है, वह खुदा की इच्छा के बगैर नहीं हो सकता है। इसी विषय से सम्बन्धित किञ्चित शाब्दिक अन्तरयुक्त कुरआन की एक और आयत निम्नलिखित है। आयत:---

कुल् हल् उनब्बेओकुम् बेशर्रिम्मन ज़ालेका मसूबतन इन्द-ल्लाहे मल्लानहुल्लाहो वा गज़ेबा अलैहे वा जआला मिन् हो-मुल्किरदता वलख़नाज़ीरा वा अब्दत्तागूत्त ।

कुरआन पारा ६ रकू ६/१३ (माएदा)

इस आयत में भी यही कहा गया है, कि उनमें से कुछ को बन्दर और कुछ को सूअर बना दिया और उन्होंने शैतान की पूजा की । तफसीर मज़हरी भाग ३ पृष्ठ ५३०

और कर दिये उनमें से बन्दर अर्थात उनकी आकृति परि-वर्तित कर उन्हें बन्दर बना दिया । जैसे, कि सप्ताह का सीमो-लंघनकर्ताओं को सूअर बना दिया । जैसे कि हज़रत ईसा के लोगों को माएदा (ईश्वरीय भोजन) से इन्कार करने वालों को, और वह लोग जो पूजा था जिन्होंने ताबूत (बछड़े) को ।

तफसीर कादरी, भाग १ पृष्ठ २३५

इसी क्रम में एक और आयत:—

फ़लम्मा अतौ अंम्मा नूहू अन्हो कुलनालहुम कूनू किरदतन ख़ासे-ईन । कुरआन पारा ९ रकू ३१/११ (एराफ़)

अर्थ:–जब उन लोगों ने विद्रोह किया इस बात से, कि जिससे उन्हें रोका गया था । अर्थात मछली के शिकार करने से । हम (ख़ुदा) ने उनके हेतु कहा–तुम बन्दर हो जाओ और हमारी कृपा से निराश हो जाओ ।

तफसीर कादरी भाग १ पृष्ठ ३४७

ऐसा ही अर्थ और विवरण कुरआन की अन्यान्य तफसीरो में भी किया गया है । यहाँ पर तो उन लोगों को बन्दर बनने का दण्ड दिया परन्तु उससे उनका दण्ड पूर्ण नहीं हुआ और मृत्यु के पश्चात वह सदैव नर्क में रहेंगे ।

अब आप दण्ड का परिमाण देख लें, कि मात्र नहरों में जाल लगाने पर उनको ऐसा वीभत्स दण्ड दिया कि उन्हें मनुस्य से बन्दर बना दिया। मात्र छोटे से अपराध पर इतना कठोर दण्ड देना, यह नितान्त अन्याय का विषय है। जिसे कि कोई भी न्यायकर्ता, ईश्वर को निष्पक्ष न्यायाधीश कदापि नहीं कह सकता। अतः यह आयतें कभी भी खुदाई आयतें नहीं हो सकती, अपितु अन्य रचयिता द्वारा रच कर खुदा के नामोल्लेख सहित प्रस्तुत कर दी गई है। साथ ही एक आवश्यक बात है, जिस पर बहुत बड़ा आक्षेप किया जा सकता है। किसी भी व्याख्याकार ने उस ओर ध्यान नहीं दिया, और वह यह है, कि इन बन्दर बनने वालों ४० या ७० हजार व्यक्तियों में हजारों दूध पीते, वर्ष दो वर्ष के नन्हे मुन्ने बच्चे भी रहे होंगे ? न तो उन अबोध बच्चों के बन्दर बनने के पश्चात मरना लिखा और न उन निर्दोषों हेतु बच जाना ही लिखा गया है। क्या माँ- बाप के कृत्यों या अपराधों का दण्ड उन अबोध बच्चों को भी दिया गया ? और यदि दिया गया तो यह **'अन्धेर नगरी, अन बूझ राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा'** वाली कहावत चरितार्थ होती है। जो कि उस खुदा (ईश्वर) के हेतु बहुत बड़े कलक की बात है।

आश्चर्य की बात है, कि इस विषय की ओर कुरआन के किसी भी व्याख्याकार का ध्यान ही नहीं गया। उनका ध्यान जाना तो एक ओर रहा किन्तु इस आयत के रचयिता स्वयं को भी यह बात ध्यान में नहीं आई कि इन बच्चों का क्या किया जाये ? यदि कोई विवेकशील और सत्यानुरागी व्यक्ति इस वृतान्त को पढ़ कर विचारेगा, तो उसके समक्ष यह प्रश्न अवश्य उपस्थित होगा, कि उन हजारों बच्चों का क्या हुआ ? ऐसी मनगढ़न्त और कपोल कल्पित बलात् थोपी गई

कहानियों का यही अन्त होता है, कि कुछ बातें लिख दी और कुछ बातें छोड़ दी। मुसलमानों के पास इस बात का क्या उत्तर है, कि हजारों निर्दोष व अबोध शिशुओं को भी वही दण्ड दिया गया, जो कि अपराधियों को दिया गया है ? स्वर्ग में, तो इनका पहुँचना असम्भव था और यदि इन निर्दोष और अबौध शिशुओं को भी नर्क में डाल दिया गया है, तो यह कहाँ की न्याय की बात है ? सम्भवतः इसी कारण कुरआन के मुसलमान व्याख्याकारों ने अपनी-अपनी विस्तृत व्याख्याओं में इस विषय की ओर जान-बूझ कर ध्यान न दिया और इस पर एक शब्द भी न लिखा है।

अपराधी की अनोखी खोज

संसार का आरक्षी (पुलिस) विभाग और गुप्तचर विभाग भयंकर अपराधियों की खोज हेतु विभिन्न और विचित्र ढंग के साधनों का, आवश्यकतानुसार कभी साधु-पागल-रोगी डाक्टर-वकील-व्याख्याता-दार्शनिक-औघड़-नेता या मदारी इत्यादि बन कर अथवा स्वयं शराबी-जुँआरी-चोर और डाकू बन कर अपराधियों में पहुँच कर आवश्यक अपराधी की खोज कर लेते हैं, और आजकल तो कुत्तों के माध्यम से भी अपराधियों की खोज़ होने लगी है, और उसमें आशातीत सफलता भी प्राप्त होती है, किन्तु कुरआन के खुदा ने मात्र एक अपराधी की खोज हेतु जिस विचित्र साधन का अविष्यकार किया है। उस साधन को हम आपके सन्मुख प्रस्तुत करते हैं। यदि आपने "अलिफ लैला" या "किस्सा हातिमताई" पुस्तकें पढ़ी होंगी, तो उनसे भी अधिक मनोरजन और आनन्द आपको इस कहानी से प्राप्त होगा। लीजिये प्रस्तुत हैं। आयतें:—

वा इज़ काला मूसाले कौमेही इन्नल्लाहा यामुरोकुम् अन् तज़्बहू बक़रतन, कालू अतत्तख़ेज़ुना हुज़ुवा, काला अऊज़ो बिल्लाहे अन्

अकूना मिन्लजाहेलीन । कालूदओ लना रब्बका युबैय्यिल्लना मा हेया, काला इन्नहू यकूलो इन्नहा बकरतुल्ला फ़ारेजुं ब्वला बिक्र, अवानुम्बैना जालेका फ़फ्अलू मा तोमेरून् । कालूदओ लना रब्बका युबैय्यिल्लना मा लौनुहा, काला इन्नहू यकूलो इन्नहा बकरतुन सफ़राओ फ़ाक्केउल्लोनुहा तसर्रुन्नाज़रीन् । कालूदओ लना रब्बका युबैय्यिल्लना मा हेया इन्नलबकरा तशाबहा अलैना वा इन्ना इन् । शाअल्लाहो लमोहतदून् । काला इन्नहू यकूलो इन्नहा बकरतुल्ला जलूलुम तुसीरूलअर्ज़ा वा ला तस्किल्हस, मुसल्लम तुलाशियाता फ़ीहा, कालुलआना जेवाबिल्हक्कू, फ़ज़बहूहा वा मा कादू यफ़अलून । वा इज़ कतल्तुम नफ़्सन फ़द्दारातुम् फ़ीहा, वल्लाहो मुख्रेजुम्मा कुन्तुम तक्तुमून । फ़कुल्नज़रेबूहो बेबाज़ेहा, काज़ालेका योहयिल्ला हुल्मौता वा यरीकुम् आयातेही लअल्लकुम् ताकेलून ।

कुरआन पारा १ रकू ६/६ आयत ६८ से ७४

(धातु) 'बकर' का अर्थ (शक) तोड़ने के अर्थात फटने के हैं, क्योंकि कृषि कर्म में बैल भूमि को फाड़ता है । इसलिए उसे 'बकर' कहते हैं, और यह पुलिग और स्त्रीलिंग दोनों में समान प्रयुक्त होता है । 'हुज़ुवा' के तीन अर्थ आये हैं । 'हमज़ा' और 'ज़ा' की फता से, जैसे 'होज़ावा', 'हमज़ा' और 'ज़ा' से 'होज़ोआ' 'हमज़ा' को 'वा' से परिवर्तित कर 'होज़ोवा' । अर्थ होता है, उपहास करना । तफसीर आजमुत्तफासीर भाग १ पृष्ठ १६३

अब आयतों के अर्थ देखिये:—

मूसा ने अपनी कौम से कहा—अल्लाह तुम्हें एक बैल की हत्या करने का आदेश देता है । उन लोगों ने कहा--तुम हमारे साथ हँसी मज़ाक करते हो । मूसा ने कहा—मैं खुदा से सुरक्षा की याचना करता हूँ, क्या मैं तुम्हारे साथ हँसी कर के मूर्ख ब

जाऊँ। उन्होंने कहा--हमारे हेतु अपने पालनकर्ता से प्रार्थना करो, कि वह इस बात का वर्णन करें, कि वह बैल क्या है? मूसा ने उत्तर दिया--निसन्देह खुदा कहता है, कि वह बैल न वृद्ध हो, न बच्चा हो, पर युवा होना चाहिये। तुम करो, जो आदेश किये जाते हों। उन्होंने मूसा से कहा--हमारे हेतु अपने पालनकर्ता से प्रार्थना करो, कि उस बैल का रंग कैसा हो? तब उत्तर में मूसा ने कहा--खुदा कहता है, कि उसका रंग सुनहरा होना चाहिये। वह देखनेवालों को आनन्दित करे। फिर उन्होंने कहा-हे मूसा! तुम हमारे हेतु खुदा से पूछो कि वह बैल किस प्रकार का हो? क्योंकि सन्देह होता है, और यदि अल्लाह ने चाहा, तो हम मार्ग प्राप्त करनेवाले होंगे। मूसा ने कहा--न तो उस बैल ने खेत जोते हों, और न खेत में जल सींचा हो और शरीर से स्वस्थ हो। इस पर उन्होंने कहा--अब तूने ठीक बात कही है।

हलाल (कत्ल) किया उन्होंने इस हाल (स्थिति) में, कि वह हलाल करनेवाले न थे।

जब तुमने एक प्राणी को मार डाला और उसके मारनेवाले के सम्बन्ध में विरोध किया, और अल्लाह उसको बतानेवाला था, कि वह कौन है? और तुम उसको छुपाते थे। इस पर हमने कहा--उस बैल के एक टुकड़े को उस पर मारो। इसी भांति अल्लाह मूर्दों को जीवित करता है, और तुमको अपने चमत्कार दिखाता है, ताकि तुम समझो।

तफसीर आज़मुत्ताफासीर भाग १ पृष्ठ १६३ से ६५

अब इस उपरोक्त अर्थ से, तो आपको कुछ ज्ञात नहीं हो सकता, कि किसने मारा, किसको मारा, और क्यों मारा, और कौन जीवित हो गया, और जीवित होकर उसने क्या बताया? इन समस्त प्रश्नों के उत्तर, तो आपको इन आयतों की व्याख्या

में ही समाहित हैं, मिलेंगे। आप निम्नलिखत व्याख्या पढ़िये और देखिये, कि किस भाँति आनन्दप्रद और मनोरजक वहानी है। प्रस्तुत है, व्याख्या:—

बनी इस्राईल में एक व्यक्ति, जिसका नाम आमील था। वह अत्याधिक धनाढ्य था। उसके चाचा का पुत्र फकीर(भिक्षुक)था। उसके अतिरिक्त आमीलका कोई अन्य उत्तराधिकारी नहीं था, उसने सोचा कि यह समस्त सम्पति इसके मरणोपरान्त मुझे ही मिलेगी, तो इसे अभी ही मृत्यु के घाट उतार दो, और सम्पति अपने अधिकार में कर लो। यह सोच विचार कर उसने आमील की हत्या कर दी और उसके शव को एक अन्य गांव में जाकर फेंक आया। फिर दूसरे दिन उसकी खोज करने लगा और कई अन्य व्यक्तियों पर उसकी हत्या का अभियोग भी लगा दिया। हज़रत मूसा ने जब उन लोगों से पूछा, तो उन्होंने कहा, कि हमने तो हत्या नहीं की। हज़रत मूसा अत्याधिक परेशान हुए। तब उन लोगों ने हज़रत मूसा से निवेदन किया, कि आप खुदा से प्रार्थना करें, कि इस झगड़े का निपटारा हो जाये और हत्यारे का पता भी लग जाये। हज़रत मूसा ने खुदा से प्रार्थना की, तो आदेश हुआ–अल्लाह तुम्हें आज्ञा देता है, कि एक गाय की हत्या करो। इस पर उन लोगों ने कहा--तुम हमसे हँसी करते हो। गाय की हत्या करने की आज्ञा को इसलिए हँसी कहा, कि गाय की हत्या के साथ हत्यारे का क्या सम्बन्ध है ? वह लोग इस बात को उपहास और हँसी समझे और वह लोग यह न समझ सके कि खुदा की आज्ञाओं में रहस्य हुआ करते हैं। साधारण बुद्धि उन आज्ञाओं को समझने की शक्ति नहीं रखती। इस पर मूसा ने कहा--मुझ पर खुदा की सुरक्षा हो। क्या मैं उपहास और हँसी कर मूर्ख बन जाऊँ ? और यह प्रकट कर दिया, कि यह हँसी करने का दोष नबी होने के कारण मेरे हेतु अत्याधिक पीड़ादायक है। जब उन

लोगों ने जान लिया, कि गाय की हत्या करना हम पर अल्लाह की ओर से आ पड़ा है। इस पर यह विचार हुआ, कि इस गाय की हत्या करने की आज्ञा हुई है, तो वह कोई बड़ी विचित्र गाय होगी। इस कारण उसके गुणों तथा रूप को पूछने लगे।........ ....हज़रत मुहम्मद साहिब फरमाते हैं–यदि यह लोग किसी भी गाय की हत्या कर लेते, तो भी पर्याप्त था, किन्तु इस पूछ-ताछ में उनको एक विशेष गाय की हत्या करनी पड़ी।

खुदा की यह एक विचित्र रहस्यमय बात थी, और वह, यह कि बनी इस्राईल में एक नेक मनुष्य था और उसके एक छोटा पुत्र था और उसके पास गाय का एक बच्चा था। उस बच्चे को वह अपने मन से प्रथम वन में ले गया और अल्लाह से प्रार्थना की–हे खुदा! मैं इस गाय के बछड़े को अपने पुत्र के युवा होने तक आपके पास धरोहर रखता हूं। फिर उसे वहां वन में छोड़ कर चला आया और आकर मर गया। यह बछिया वन में चरा करती और जब कोई दृष्टिगोचर होता, तो वह दूर भाग जाती थी। जब वह लड़का युवा हो गया, तो बहुत नेक था। अपनी माता की बड़ी सेवा करता था। रात्रि को एक पहर में नमाज़ पढ़ता और एक पहर में माता के सिरहाने बैठ जाता और प्रातः वन से लकड़ियां लाकर बाज़ार में बेचता और लकड़ियों के दाम के तीन भाग कर एक अल्लाह के मार्ग में देता अर्थात दान करता। दूसरा भाग माता को देता और तीसरे भाग में आप स्वयँ का निर्वाह करता।

एक दिन उसकी माँ ने उससे कहा–बेटा! तेरा पिता तेरे हेतु एक बछियां छोड़ गया है, और वह अमुक वन में खुदा के आधीन है। तू वहां वन में जाकर यह आवाज देना–हे इब्राहीम और इस्माईल के खुदा! वह गाय प्रदान कर दो। उसकी पहि-

चान यह है, कि जब तू उसे देखेगा तो तुझे यह प्रतीत होगा, कि उसके चर्म से सूर्य की किरणें निकल रही हैं, और वह अत्याधिक सुन्दर और स्वर्णिम रंग की है। इस कारण लोग उसे स्वर्णिम गाय कहा करते थे। जब वह लडका माता की आज्ञानुसार वन में आया, तो गाय को चरते देख जैसे माँ ने कहा था, वैसे ही पुकारा। तब वह गाय खुदा की आज्ञा से दौड़ कर उस लड़के के सन्मुख चली आई। वह लड़का उसकी गर्दन पकड़ कर उसे खींचने लगा। गाय बोली-हे माता के सेवक! मुझ पर सवार हो ले, तुझे आराम मिलेगा। लड़के ने कहा--मेरी माता की आज्ञा गर्दन से पकड़ कर लाने की है, सवारी करने की नहीं। इस पर गाय ने कहा--हे युवक! यदि तू सवार हो जाता, तो किसी भी भांति मैं तेरे अधिकार में नहीं आती, और तेरी माता की सेवा के कारण तेरा वह उच्च स्थान है। यदि तू पहाड को आज्ञा दे, तो वह तेरे साथ चलने लगे। तत्पश्चात् वह गाय को अपनी माता के पास ले आया। माता ने कहा-बेटा! तू निर्धन है। लकड़ियां लाने में तुझे बड़ा कष्ट और श्रम उठाना पड़ता है। इसलिए तू गाय को बेच दे। तब युवक ने पूछा-कितने मूल्य पर बेचूँ? माँ ने कहा-तीन दीनार (स्वर्ण मुद्रा) और साथ ही यह भी कहा कि जब बेचने लगे, तो पुनः मुझसे पूछ लेना। वह लड़का माता की आज्ञानुसार गाय को बाज़ार में ले गया। उधर खुदा ने अपनी सामर्थ्य प्रदर्शित करने, और उसको अपनी माता का आज्ञाकारी परखने हेतु फ़रिश्ता भेजा। उसने आते ही मूल्य पूछा? युवक ने कहा-तीन दीनार, परन्तु शर्त यह है, कि मैं अपनी माता से पूछ कर दूँगा। फरिश्ते ने कहा--तू मुझसे ६ दीनार ले ले और गाय मुझे दे दे। मां से पूछने की क्या आवश्यकता है? युवक ने कहा--यदि तू गाय से समान्तर भी स्वर्ण तौल दे, तो भी मैं अपनी माता की आज्ञाप्राप्ति के अभाव में

नहीं दूंगा। वह युवक अपनी मां के पास आया और सम्पूर्ण वृतान्त वर्णन कर दिया। माता ने कहा--जा ६ दीनार में बेच दे, किन्तु क्रयकर्ता से मेरी अनुमति प्राप्ति की पुनः शर्त कर लेना। युवक उस ग्राहक से मिला। तब उस ग्राहक ने कहा--तूने अपनी माता से पूछ लिया? उसने कहा--हां, किन्तु साथ ही मां ने कहा है, कि मेरी अनुमति की शर्त कर लेना। ग्राहक ने कहा--तू अपनी मां से न पूछ और मुझसे १२ दीनार ले ले। युवक न माना और आकर अपनी माता को सम्पूर्ण वृतान्त कहा। मां ने कहा--वह देवदूत (फरिश्ता) है, तेरी परीक्षा लेता है। यदि अब तू उसे मिले, तो उससे यह पूछना, कि इस गाय को बेचे या न वेचे? बाज़ार जाकर वह युवक उस ग्राहक से मिला, तो युवक ने गाय-विक्रय के सम्बन्ध में जानकारी चाही। देवदूत ने कहा--इस गाय को अभी न बेचना। हज़रत मूसा तुमसे एक कत्ल किये गये के सम्बन्ध में इस गाय को क्रय करेंगे। तुम इसे खाल (चाम) भर दीनार से कम मूल्य पर मत बेचना। इस कारण इसे मत बेचो।

इधर अल्लाह ने उस गाय के समस्त गुण (बनी इस्राईल को) वर्णन कर दिये। यह समस्त उस युवक की नेकनीयत और अपनी माता की सेवा का फल था। बनी इस्राईल कहने लगे--हे मूसा! हमारे हेतु खुदा से पूछ, कि वह गाय कैसी है? क्योंकि बनी इस्राईल उसे अत्यन्त ही विचित्र समझते थे, कि ऐसी कौन सी गाय है, कि जिसकी हत्या करने से हत्यारे का पता चल जाएगा। हज़रत मूसा ने कहा--वह एक गाय है। न वृद्ध है, और न इतनी छोटी है कि बच्चा देने योग्य न हो। फिर उन लोगों ने कहा--अपने खुदा से जानकारी प्राप्त कर, कि अच्छी प्रकार समझायें, कि उसका रंग क्या है? मूसा ने कहा--खुदा फरमाता है, कि उसका रंग स्वर्णिम है, और दर्शकों को सुन्दर ज्ञात होता है।

फिर उन लोगों ने मूसा से कहा—अपने खुदा से पूछ, कि वह किस किस प्रकार की है ? मूसा ने कहा--वह एक गाय है । न तो परिश्रमी और न भूमि को जोतनेवाली और न सींचनेवाली, समस्त भाँति से स्वस्थ और बिना किसी दाग़ की है । इस पर वह लोग कहने लगे—अब तो उचित ज्ञात हो गया । अन्ततः बनी इस्राईल ऐसी गाय की खोज में लग गए परन्तु गाय न मिली । अत्यन्त प्रयत्न करने पर ऐसी गाय उसी युवक से मिल गई। जिसकी कहानी उपर्युक्त वर्णित है । उन बनी इस्राईल ने उसके मूल्य में खाल भर स्वर्ण दे दिया और उसको क्रय कर लिया । उन्होंने उसकी हत्या की, परन्तु वह हत्या करना न चाहते थे । और वह समय स्मरण करो, कि जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला था, और तुम एक-दूसरे पर उसका दोष लगाते थे, और खुदा उसको प्रकट करने वाला था । जिसको तुम छुपाते थे अर्थात हत्यारा हत्या को छुपाता था । (गाय को कत्ल करने के पश्चात) खुदा ने कहा—उस शव पर गाय का एक टुकड़ा मारो या स्पर्श कर दो । खुदा के इस आदेशानुसार गाय का एक अंग उस मृत पुरुष के शव को स्पर्श करा दिया, तो वह जीवित हो उठा, और उठते ही बोल पड़ा, कि मुझे अमुक व्यक्ति ने कत्ल किया है ? तत्पश्चात वह पुनः मर गया ।

इसी बात के सम्बन्ध में आयत में यह संकेत किया गया है, कि अल्लाह मूर्दों (शवों) को जीवित करता है, और तुम्हें अपने चिन्ह दर्शाता है । सम्भवतः तुम समझो ।

तफ़सीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १३५ से ४२

उपरोक्त यही व्याख्या अक्षरशः तफसीर मुंआलेमुतन्ज़ील पारा १ पृष्ठ ३२–३३ में हैं, और तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ३८ से ४० में इस वृतान्त को संक्षेप में लिखा है, किन्तु भावार्थ

वही उपरोक्तानुसार ही है। तफ़सीर आज़मुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ १९२ से १९८ में इस वृतान्त को अत्याधिक विस्तृत रूप में लिखा गया है। तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ३२ से ३६ में, तफ़सीर कादरी भाग १ पृष्ठ १७–१८ में, तफसीर बैजावी भाग १ पृष्ठ ११–१२ में, तफसीर ज़लालैन पारा १ पृष्ठ ११ में, तफसीर मुहम्मदी पारा १ पृष्ठ १०६-७ में और तफसीर कुरआनिल अज़ीम पारा १ पृष्ठ ७ इत्यादि में भी ऐसा ही वर्णन हैं।

पाठक वन्धुओं ! जैसे हम यथासमय और यथास्थान आपको यह स्मरण कराते आ रहे हैं, कि कुरआनकार बाइबिल से घटनाओं को ग्रहण कर, उनको अरबी भाषा में आयतों में रूपान्तरित कर खुदा के नामोल्लेखसहित कुरआन में प्रस्तुत करता रहा है।

इसी भांति यह स्वर्णिम गाय की हत्या और उसके एक अंग को शव से स्पर्श कर पुनर्जीवन की कथा भी बाइबिल से ली गई है, और उसे अपनी कपोल कल्पना में रंग कर खुदा के नाम से कुरआन में लिख दी गई है। बाइबिल में क्यों–कैसे और किन अवसरों पर बछिया के मारे जाने का वृतान्त है। हम उसे बाइबिल से ही प्रस्तुत कर रहे हैं। जो निम्नानुसार है:—

यदि उस देश के क्षेत्र में, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है। किसी मृतक का शव पडा हुआ प्राप्त हो. और उसको किसने मार डाला है, यह चिन्ह न ज्ञात हो, तो उस शव से चहुँ ओर के एक–एक नगर का दूरी को नापें। तब जो नगर उस शव से सर्वाधिक निकट ठहरे। उसके विवेकशील लोग एक ऐसी बछिया ले रख, जिससे किञ्चित कार्य न लिया गया हो और जिस पर जुआ न रखा गया हो। तब उस नगर के बुद्धिमान जन

उस बछिया को एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में, जो न जोती गई हो और न बोई गई हो, ले जाएँ और उसी तराई में उस बछिया का गला तोड़ दें और लेवीय याचक भी निकट आएँ। क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उनको चुन लिया है, कि उसकी सेवा टहल करें और उसके नाम से आशिवाद दिया करें और उनके कथनानुसार प्रत्येक विवाद और मारपीट के प्रकरणों का निर्णय हो। तत्पश्चात जो नगर उस शव से सर्वाधिक निकट ठहरे उसके समस्त समझदार लोग उस बछिया के ऊपर, जिसका गला तराई में तोड़ दिया गया हो, अपने--अपने हाथ धोकर कहें यह खून हमसे नहीं किया गया और न यह हमारी आंखों देखा हुआ कर्म है। इसलिए हे यहोवा! अपनी छुड़ाई हुई इस्राएली प्रजा का पाप ढांप कर, निर्दोष के खून का पाप अपनी इस्राईली प्रजा के मस्तक से उतार। तब उस खून का दोष उनको क्षमा कर दिया जायेगा। 'व्यवस्था' अध्याय २१ आयत १ से ६

यद्यपि बाइबिल के उपयुंक्त विवरण में किसी व्यक्ति विशेष का नामोल्लेख नहीं है। यह मर्यादा सार्वजनिक थी, कि जब भी किसी मृतक के हत्यारे का पता न चले, तो जैसा कि उपयुंक्त बताया गया है, वैसे ही एक बछिया की हत्या करते थे।

इसके अतिरिक्त दूसरा प्रमाण "गिनती" पुस्तक का है, जो कि निम्नानुसार है:—

फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा--व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा देता है, सो यह है, कि तू इस्राई-लियों से कह, कि मेरे पास एक लाल निर्दोष बछिया ले आओ जिस पर जुआ कभी न रखा गया हो। उसे एलीआजर याचक को दो और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए, और कोई उसको, उसके सन्मुख बलिदान न करें। तब एलीआजर याचक अपनी

उँगली से उसका तनिक लहू लेकर मिलापवाले तम्बू के सामने की ओर ७ बार छिटक दें।

"गिनती" अध्यया १९ आयत १ से ९

उपरोक्त उद्धृण से हमारा तात्पर्य है, कि इसी प्रकार बछिया को मारने की पद्धति बनी इस्राईल में प्रचलित थी। जैसा कि उपर्युक्त वर्णित लाल गाय को लेते थे और उसकी हत्या करते थे। यहूदियों की इसी पुरातन प्रथा को लेकर हज़रत मुहम्मद साहिब ने मिथ्याविश्वास और अन्धश्रद्धा का आवरण चढ़ा कर इस घटना को आयतों के रूप में खुदा के नाम से कुरआन में रख दिया।

इस आमील की कहानी में आपने देख लिया, कि किस भांति नाटकीय रूपान्तरणसहित घटना और कथावस्तु को अपने रंग में ओत प्रोत कर प्रस्तुत किया गया है। यह आमील की कथा और कहां उस अनाथ मां--बेटे की बछिया, जो वन में खुदा के पास धरोहर रूप में छोड़ी गई थी। उस कथा को मूसा की इस घटना से सम्पृक्त कर लोगों को दिग्भ्रमित और पथभ्रष्ट किया गया है। इधर आमील का मारा जाना और उधर मूसा का यह नाटक करना कहां तक उचित प्रतीत होता है? इतना विशाल आडम्बर मूसा के नाम से, और वह भी इतनी भारी मात्रा में धन देकर गाय को हत्या हेतु लाना, तो क्या खुदा मूसा को हत्यारे का नाम नहीं बता सकता था? जिसके हेतु इतना प्रपंच और प्रयत्न किया गया।

अब देखिये, कथा–पद्धति को, कि इधर आमील को मारा गया। उधर इस घटना के साथ गोहत्या को सम्पृक्त करना था, इसलिए कहा, कि एक व्यक्ति वन में अपनी बछिया को खुदा के

पास धरोहर रूप में अर्पण कर गया, किन्तु वह मर गया। जब उसका पुत्र युवा हुआ तो उसकी मां ने उस गाय को लाने हेतु कहा। वह गाय भी अन्तर्यामी ज्ञात होती है, कि उसने उस युवक से कहा--तू अपनी माता का सेवक है। साथ ही आश्चर्य की बात तो यह है, कि वह इतने वर्षों तक वन में सुरक्षित रही और जब वह युवक दिखा तो दौड़ कर उसके सन्मुख आ गई और वह वह वाचाविहीन गाय उस युवक से मनुष्य की भांति वार्तालाप करने लगी। जैसा कि गाय ने कहा--यदि तू मुझ पर सवार हो जाता, तो मैं किसी भी भांति तेरे अधिकार में नहीं आती अर्थात खुदा की आज्ञा और धरोहर को वह गाय भी भंग कर देती ? तत्पश्चात घर लाकर उसके विक्रय का सम्पूर्ण नाटक किस प्रकार अभिनीत किया गया। वह तो आप पढ़ ही चुके हैं।

अब एक बात और, कि उस युवक को गाय की खाल (चाम) भर कर सोने की दीनारों में मूल्य चुकाया गया, किन्तु जब बनी इस्राईल उस युवक के घर गाय क्रय हेतु गये, तो मूसा और आमील का शव वहां नहीं था। फिर यदि गाय को मार कर उसकी खाल में दीनारें भरी गई, तो गाय वहां पर ही मर गई। मूसा और आमील के शव के पास आई ही नहीं, तो फिर मूसा ने कैसे उस गाय को मार कर उसके एक अंग को आमील के शव से स्पर्श किया या मारा ? क्योंकि गाय तो उस युवक के घर पर ही मार कर खाल उतार ली गई थी।

व्याख्याकारों ने यह तो लिख दिया, कि उस गाय की खाल को दीनारों से भर कर मूल्य लिया, किन्तु यह नहीं लिखा, कि मूसा के पास मरी हुई गाय को उठा कर लाये और वहां यह प्रतीत होता है, कि गाय की खाल को दीनारों से भर कर मूल्य लिया। इन दोनों बातों में किसी भी भांति समन्वय नहीं हो

सकता है ? यदि मूसा के पास जीवित गाय लाई गई, तो उसका मूल्य नहीं चुकाया जा सकता ? और यदि खाल भर कर मूल्य चुकाया, तो गाय जीवित नहीं रह सकती ? इस गोरखधन्धे का समाधान या निराकरण किसी भी व्याख्याकार ने नहीं किया। फिर मृत गाय का अंग शव को स्पर्श करने मात्र से वह शव शीवित हो गया ? यह अन्धविश्वासियों और लकीरों के फकीरों के अतिरिक्त और कोई मान ही नहीं सकता ?

इस उदाहरण के अतिरिक्त विश्व के इतिहास में ऐसी कोई अन्य घटना या उदाहरण उपलब्ध नहीं है, कि किसी मारी गई गाय के अंग को, किसी शव के स्पर्श करने से वह जीवित हो उठी हो ? फिर कुरआन में आमील का पुनर्जीवित होना भी इस्लाम के मूल सिद्धान्त के प्रतिकूल है। क्योंकि मरणोपरान्त प्रलय (कयामत) के समय ही मनुस्यों को पुनर्जीवित किया जायेगा। कयामत के पूर्व किसी मृतक को जीवित करना खुदा की वचनबद्धता के विपरीत है। जब किसी मुसलमान से पूछा जाता है, कि गाय के अंग को किसी शव पर मारने या स्पर्श करने से वह किस प्रकार जीवित हो सकता है ? यह तो सर्वथा सृष्टि-विधान के प्रतिकूल है, तो उत्तर मिलता है, कि यह तो खुदा की कुदरत है।

विचारणीय हैं, कि यह कैसा खुदा है, जो अपने ही नियम-सिद्धान्त और प्रतिज्ञा को अपनी कुदरत से भंग करता है ? द्वितीय यह, कि गाय के अंग को मार या स्पर्श कर शव को जीवित करते का नाटक क्यों रचा गया ? जिस भांति हीज़कील के कहने मात्र से सहस्रों मृतकों को खुदा ने पुनः जीवनदान दे दिया था। उसी भांति मात्र मूसा की प्रार्थना पर ही खुदा ने आमील को किञ्चित क्षणों हेतु क्यों न जीवित कर दिया ? क्यों एक

निर्दोष प्राणी गाय के प्राण लेकर उस शव को क्षणिक जीवित करने हेतु यह नाटक खेला गया ? जब मृतक खुदा की कुदरत और सामर्थ्य से जीवित हुआ, तो उस कुदरत और सामर्थ्य से मरी हुई गाय के अंग का क्या सम्बन्ध था ? यदि खुदा की कुदरत और सामर्थ्य से इस मारी गई गाय के अंगों का कोई सम्बन्ध नहीं था, तो फिर इसे क्यों माध्यम या साधन के रूप में प्रयुक्त किया गया ? यहां पर हज़रत मूसा की वह चमत्कारी लाठी मृतक को मार या स्पर्श कर क्यों न उसको जीवित कर लिया गया ? जब कि ऐसे अन्य चमत्कारों हेतु मूसा की उस लाठी को ही प्रत्येक स्थान पर कार्य में लिया गया है ? मूसा की लाठी के प्रयोग से ही समुद्र विभक्त हो जाता है। जल में मार्ग बन जाते हैं। पत्थर से जल स्रोत फूट सकते हैं, तो यह मृतक कुछ क्षणों हेतु ही क्यों नहीं जीवित हो सकता था ?

यथार्थ में वास्तविकता यह है, कि सम्पूर्ण कहानी ही मिथ्या और मनगढ़न्त है। ऐसा कोई प्रयोग न कभी हुआ था, न हुआ है न कोई भविष्य में ही होने की कहीं सम्भावना है। यह तो मात्र जन साधारण को अन्धविश्वास में जकड़ने हेतु कपोल कल्पना हैं। इसमें सत्यता या यथार्थ रचमात्र भी नहीं है। विवेकशील और शिक्षितजनों को ऐसी मिथ्यापूर्ण और मनगढ़न्त याथाओं से स्वयम् ही दूर रहना चाहिए और अन्धविश्वास में ग्रस्त आशिक्षित व भोले भाले मनुष्यों को भी बचाना चाहिये।

इस चर्चित प्रकरण का कुछ शेषांस आगे भी है। जिसे हम लिख कर इस गाथा को सम्पूर्ण करते है। निम्नलिखित आयत इसी प्रकरण से सम्बन्धित हैं। आयत:—

सुम्मा कसत् कुलूबो कुम्मिम्बादे जालेका फ़हेया कल्हिजारते औ

अशद्दो कस्वा । वा इन्ना मेनल्हेजारते लमा यतफ़ज्जरो मिन्हु-ल्अनहार । वा इन्ना मिन्हा लमा यश्शक्को फ़ यख्रुजो मिन्हु-ल्माओ । वा इन्ना मिन्हा लमा यह्बेतो मिन् ख़श्यतिल्लाहो वा मल्लाहो बिग़ाफ़े लिन् अम्मा तामेलून ।

कुरआन पारा १ आयत ७५

अर्थः–फिर उसके पश्चात तुम्हारे हृदय कठोर हो गए, मानो कि यह पत्थर के सदृश्य हैं। अर्थात कठोरता में उससे भी अधिक हैं। निसन्देह कुछ पत्थर तो ऐसे भी हैं, कि जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और कुछ ऐसे भी हैं, जो फटते हैं, तो उस समय उनसे जल झरता है, और कुछ ऐसे हैं, जो खुदा के भय से नीचे गिर जाते हैं, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अपरिचित नहीं हैं।

तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ४१

व्याख्याः–फिर आमील के जीवित होने के तत्पश्चात तुम्हारे हृदय अत्यन्त कठोर हो गये। समस्त चिन्हों के प्रगटीकरण के पश्चात फिर तुम्हारे हृदय पाषाण हो गये।

कल्बी ने कहा है, कि इस घटना के तत्पश्चात भी बनी इस्राईल ने यही कहा–हमने उसे कत्ल नहीं किया (भतीजे ने चाचा को कत्ल कर दिया) तात्पर्य यह है, कि वह लोग कठोरता में पाषाण से भी अधिक कठोर हैं, क्योंकि कतिपय पत्थर ऐसे भी हैं, जिनसे नहरें फूट निकलती हैं और कुछ ऐसे भी हैं, कि जिनके फट जाने से जल झरता है। जिनसे प्रभू (खुदा) के भक्त लाभान्वित होते हैं, और कतिपय पत्थर ऐसे भी हैं, कि जो खुदा के भय से पहाड़ से नीचे आ पड़ते है, किन्तु तुम्हारे हृदय तो ज्यों के त्यो हैं। यदि कोई कहे कि पत्थर तो जड़ (अचेतन) है,

उसको खुदा का भय कैसे होता है !.......... किन्तु कुरआन में आया है, कि "लिल्लाहे यस्जुदो मन् फिस्समावाते वल्अर्जे तौ अन् वा कर हन्" अर्थात् और जो कुछ जमीन और आसमान में है, समस्त खुसी-नाखुशी से समस्त अल्लाह को दण्डवत् प्रणाम करते हैं।

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर से वर्णित है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-मनुष्यों के हृदय अल्लाह की दो उंगलियों में इस प्रकार है, जैसे एक हृदय। वह इस हृदय को जिस भांति चाहता है, फेर देता है। (तब उन लोगों के हृदय किसने पाषाण बनाये और किसने फेरे ?)

अल्लामा बग़वी ने कहा-अहले सुन्नत का सिद्धान्त है, कि जड़ और पाशविक सृष्टि में भी अल्लाह का दिया हुआ एक ध्यान है, कि उनकी इस विद्या को विद्वानों के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। इसलिए समस्त जड़ और पशुजगत प्रार्थना और स्तुति भी करते हैं और खुदा का भय भी रखते है। कुरआन में अल्लाह ने कहा-'इम्मीन् शैईन इल्ला यो सब्बेहो बे हम्देही' अर्थात् प्रत्येक वस्तु (पदार्थ) अल्लाह की पवित्रता की प्रार्थना और स्तुति करती है। और द्वितीय स्थल पर फरमाया-'वत्तैरो साफ़ातिन कुल्लो कद अलेमा सलातहू वा तस्बीहहू' (कुरआन पारा १८ रकू ६।१२) अर्थात् देखो, पक्षी किस भांति पंक्तिबद्ध हैं। प्रत्येक अपनी भक्ति और स्तुति को जानता है। तात्पर्य यह है, कि पक्षी भी परमात्मा (खुदा) की उपासना करते हैं।

अल्लामा बग़वी ने फरमाया-हज़रत मुहम्मद साहिब बसीर पर्वत पर गये थे और काफ़िर लोग उनकी खोज में लगे हुए थे, कि पहाड़ बोल उठा-ऐ अल्लाह के नबी ! आप मुझ पर से उतर जाईये। मुझे भय है, कि कहीं आपको काफ़िर पकड़ न

लें, और मुझे इस कारण अल्लाह दण्ड दे, (अर्थात् पत्थर भी बोलता है तथा परोक्ष बाते भी जानता है।) और हिरा पर्वत ने विनती कर कहा--ऐ रसूलिल्लाह ! यहां पधार जाईये।

अल्लामा बग़वी ने जाबर बिन सामर से वर्णित किया है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया, कि मैं मक्का के उस पत्थर को भलिभांति पहचानता हूँ जो मेरे नबी होने से पूर्व मुझको सलाम किया करता था। यह हदीस सत्य है। इसे मुस्लिम ने वर्णन किया है।

हज़रत अन्स का कथन है, कि हज़रत साहिब को आहद पहाड़ जब दृष्टिगत हुआ तो फरमाया–यह पर्वत हमको मित्र समझता हैं और हम उसको मित्र समझते हैं।

अबू हुरैरा से वर्णित है, कि हमें रसूलिल्लाह ने प्रातः वेला की नमाज़ पढाई और फिर नमाज़ पढ़ा कर लोगों की ओर आकृष्ट हुए और फरमाया–एक समय की घटना है, कि एक मनुष्य एक बैल हांक लिये जाता था। जब थक गया तो बैल पर सवार हो लिया और उसे मारा भी। बैल बोल पड़ा–हम सवारी हेतु उत्पन्न नहीं किये गये ; हम तो कृषि हेतु उत्पन्न हुए हैं। लोग यह आश्चर्यजनक घटना देखकर कहने लगे–बैल भी बातें करते हैं ? हज़रत मुहम्मद ने कहा–मैं और अबू बकर और उमर इस घटना की सत्यता को प्रमाणित करते हैं। फिर रसूलिल्लाह ने फरमाया–एक व्यक्ति अपनी बकरियों में था कि अकस्मात एक भेड़िये ने बकरा को जा दबोचा। मालिक जा पहुँचा और उसे छुड़ा लिया। भेड़िया बोल उठा–अभी तो तुमने छुड़ा लिया मगर जब दरिन्दों (मांसाहारी) का राज्य होगा, उस समय इनका कौन सहायक होगा ? लोगों ने यह बात सुन कर कहा--सुभान अल्लाह ! भेड़िया भी बातें करता है। हज़रत मुहम्मद ने

कहा--मैं, अबू बकर और उमर इस बात के साक्षी हैं। इस हदीस को बुखारी और मुस्लिम ने वर्णन किया है।

आगे है, कि फ़करे आलम रसूलिल्लाह ! हिरा पर्वत पर थे। हज़रत अबू बकर-उमर-उस्मान-अली-तल्हा और ज़ुबैर भी उपस्थित थे, कि एक पत्थर हिलने लगा। हज़रत मुहम्मद ने फरमाया-स्थिर हो जा, तुझ पर बनी और सिद्दीक के अतिरिक्त और कोई नहीं है। यह हदीस मुस्लिम ने कही है। मुस्लिम ने हज़रत अली से वर्णित किया है, कि हम मक्का में रसूलिल्लाह के साथ थे। सो जब हम मक्का से बाहर इधर--उधर वृक्षों और पर्वतो में गये, तो जिस पहाड़ और वृक्ष पर हमारा जाना होता था "अस्सलामो अलेकुम्" या रसूलिल्लाह ! अरब के वृक्ष और पर्वत भी इतना ज्ञान रखते हैं, कि यह मुहम्मद खुदा का रसूल है, और अरबी बोलना भी जानते हैं, और इससे यह भी ज्ञात होता है, कि समस्त पर्वत और वृक्ष मुसलमान हैं।

सहीह मुस्लिम में जाबर से वर्णित है, कि हज़रत मुहम्मद मंच (मिम्बर) निर्माण से पूर्व एक काष्ठ स्तम्भ से, जो खजूर का था, टेका लगा कर बोलते थे। जब मिम्बर (मच) तैयार हो गया, तो उस पर आप खड़े होकर बोलने लगे, तो वह खजूर का स्तम्भ विह्वल होकर ऊँटनी के सदृश्य रोने लगा। यहां तक कि उसकी आवाज़ मस्जिदवालों ने सुनी। तब रसूलिल्लाह मंच से नीचे उतरे और उस स्तम्भ को गले से लगा लिया। वह गले से लगते ही शान्त हो गया। इन समस्त हदीसों से ज्ञात होता है, कि जड़जगत विद्या और जीवन रखता है।

अल्लामा बग़वी कहते हैं, कि मुजाहिद ने फ़रमाया--जो पत्थर नीचे से ऊपर आता है, वह अल्लाह के द्वारा नीचे जाता

है। इब्ने कसीर ने 'ताम्रजून' को 'यामजून' पढ़ा है।

तफसीर मज़हरी पारा १ पृष्ठ १४२ से १४६

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ३६ से ४६ में भी उपरोक्तानुसार ही लिखा है। इसके अतिरिक्त तफसीर मुहम्मदी पारा १ पृष्ठ १०९-१० में, तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ४१-४२ में, तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील पारा १ पृष्ठ ३४-३५, में, और तफसीर मज़हरी भाग ४ पारा ६ पृष्ठ ३५२-५३ में भी ऐसा ही वर्णन किया गया है।

इस चर्चित आयत में कहा गया है, कि उनके हृदय पाषाण के सदृश्य हो गये, किन्तु हम यहां एक आयत प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसमें कहा गया है, कि यह हृदयों का पाषाण की भांति हो जाना उनके अधिकार में नहीं, अपितु यह कार्य खुदा ही करता है। लीजिये प्रस्तुत है, आयत:–

फ़ बेमा नक्ज़ोहिम्मीसाक़ाहुम् लअन्नाहुम् व जाअल्ना कुलूबहुम् क़ासेयह । याहर्रफ़ूनल्कलेम् अन् मवाजएही अं म्मवाज़एही वा नसू हज़ज़म्मिम्मा ज़ूक्केरू बेही ।

कुरआन पारा ६ रकू ३/७

इस आयत का वृतान्त यह है, कि अल्लाह ने बनी इस्राईल से वचन लिया और उनमें १२ सरदार नियुक्त किये, और वचन लिया, कि हम नमाज़ को दृढ़ रखेंगे और ज़कात (अनिवार्य दान) देंगे, और ऋण देंगे। अल्लाह को अच्छा ऋण, और खुदा दूर कर देगा अपराध उनके।

इस आयत का अर्थ निम्नानुसार है:–

उन्होंने हमारे साथ किये हुए इस वचन का पालन न किया। अतः हमने, उन्हें फटकार डाली और उनके रूप परिव-

तित कर दिये, और उनके हृदय इस भांति कठोर कर दिये, कि सैंकड़ों चमत्कार देखने और डरावनी बातें सुनने के पश्चात भी उन्हें प्रभाव स्वीकृत न हुआ।

तफसीर आजमुत्तफासीर, पारा ६ पृ. ११२

उपरोक्त आयत से आपने स्पष्ट जान लिया, कि उनके हृदय स्वयम् पाषाण सदृश्य नहीं हो गये, अपितु स्वयं अल्लाह ने कर दिये।

तौरात से आदेश परिवर्तन करने और अन्तर उत्पत्ति कर वर्णन करने में जो हज़रत मुहम्मद पर ईमान लाने की आज्ञा थी। उसे सर्वथा विस्मृत कर दिया और विलासिता में रत हो गये।

तफसीर आज़मुत्तफासीर पारा ६ पृष्ठ ११२

इस आयत से यह तो आपको ज्ञात हो गया, कि अल्लाह ने ही उनके हृदय कठोर कर दिये थे। हम उचित समझते हैं, कि इस सम्पूर्ण प्रकरण को आपके समक्ष प्रस्तुत कर दें, ताकि आप इस विषय को भली प्रकार जान लें। "वा लक़द् अख़ज़ल्लाहो" यहां से यह प्रकरण प्रारम्भ होता है:- और निसन्देह अल्लाह ने बनी इस्राईल से प्रतिज्ञा कराई। वह थी, हज़रत मूसा के साथ सहमति और ज़ब्बार जाति के साथ युद्ध करना। इसलिए हमने उनमें से १२ सरदार बनाये ताकि अपनी जाति की स्थिति के सम्बन्ध में अन्वेषण करें, और जो प्रतिज्ञा की है, उस पर दृढ़ रहें।

यह कहानी इस भांति है, कि खुदा ने मूसा से वादा किया था, कि एलिया तथा शाम का सम्पूर्ण राष्ट्र बनी इस्राईल को दूंगा और उस समय इस प्रदेश में ज़ब्बार लोग रहते थे, और उन्हें अमालका कहते थे। वह लोग आकृति में अति दृढ़ थे। जब

मिश्र बनी इस्राईल के अधिकार में आ गया, तो खुदा का आदेश हुआ, कि पवित्र भूमि में जाओ। उसमें सहस्त्र गांव हैं। वहां जाकर जब्बार जाति से युद्ध (जिहाद) करो। तत्पश्चात हज़रत मूसा ने सेना में १२ सरदार चुने............... सरदार अपनी जातिसहित अरिहा के समीप तक गये और सरदारों ने अमालका जाति की जांच करने हेतु भेजा। सरदार उन जब्बारों में से एक को मिले और उसे ऊज या आज़ बिन अनाक कहते थे। ३ सहस्त्र ३ सौ ३० गज़ लम्बा उसका कद (ऊँचाई) था (क्यों उस्ताद ! कैसी कही, कहने की बात ही क्या ? जैनियों को भी मात कर दिया। मानते हो, न ?) तथा ३ सहस्त्र वर्षों की आयु थी (हज़रत आदम से भी ५०० वर्षों पूर्व) और शेष लोग भी लम्बे कद के थे। 'तसीर' में लिखा है, कि ८० गज़ से ८०० गज़ कद था। उनके उद्यानों का अंगूर इतना बड़ा था, कि ५ व्यक्ति भी न उठा सकते, और एक अनार के आधे छिलके में ५ मनुष्य समा जाते थे। (फल भी कैसे हैं उस्ताद ? सुभान अल्लाह) सरदार जांच कर जब लौटे, तो उन्होने परस्पर यह निश्चय किया, कि बनी इस्राईल को इस जाति की स्थिति से सूचित नहीं करना चाहिये ताकि भयभीत होकर मिश्र को न भाग जाये। सरदारों ने हज़रत मूसा और हारून को वहाँ के समाचारों से सूचित कर दिया। दो सरदारों के अतिरिक्त शेष सरदारों ने ज़ब्बार जाति की जो स्थिति देखी थी, वह सम्पूर्ण अपनी जाति को कह दी। इससे बनी इस्राईल में भय और चिन्ता व्याप्त गई। कि हम जब्बारों से कैसे युद्ध करेगे ? 'वा कल्लाहो' और खुदा ने कहा-- 'इन्नी मअकुम' मैं तुम्हारे साथ हूँ। शत्रुओं पर तुम्हें विजय दूँगा और कहा कि यदि नमाज़ को दृढ़ रखोगे, वा आततो सुज्जकाता' और अनिवार्य दान दोगे, 'वा आमन्तुम बरूसोली' और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ, और उन्हें शक्ति दोगे और उनकी पूजा

करोगे, और उनको आज्ञा मानोगे, और ऋण दोगे, खुदा को अर्थात् उसके मार्ग में अच्छा व्यय करोगे, तो 'अवफ़िरन्ना अन्कुम्' अवश्य दूर करूँगा मैं (खुदा) तुमसे 'सय्ये आतेकुम्' तुम्हारे अपराध 'वा लअदख़लन्नाकुम' और प्रविष्ट करूँगा, मैं (खुदा) तुमको जन्नातिन तज्री' स्वर्गों में, कि चलती है 'मिन् तहते हल्अन्हारो' उनके वृक्षों के नीचे नहरें 'फ़मन कफ़रा बादा जालेका' पस, जो कोई काफ़िर हो जायेगा इस शर्त के पश्चात 'मिन्कुम्' तुम में से 'फ़कद जल्लो' वह अवश्य भूल गया है 'सवा अस्सबील्' सन्मार्ग से बनी इस्राईल ने प्रतिज्ञा भग कर दी। फिर कहा—'फ़ बेमा नक्जेहिम' फिर तोड़ डालने उनके 'मीसाकहुम' प्रतिज्ञा अपनी 'लअनाहुम' दूर कर हम (खुदा) ने उन्हें अपनी कृपा से अथवा बन्दर बना दिया उनको या 'ज़जिया' (कर) देने की बेइज्ज़ती उन पर डाल दी, 'व जअल्ना कुलूबहुम्' और कर दिये गये हम (खुदा) ने उनके हृदय 'कासियह' कठोर, इस भांति, कि चमत्कार देखने और भयपूर्ण बातें सुनने से भी उनके हृदयों पर कुछ प्रभाव न होता 'यहर्रफ़न-ल्कलेमा मिम्मबाजएही' परिवर्तित करते हैं "तौरात" के वाक्यों को अथवा हज़रत मुहम्मद की स्तुति को उसके स्थान से।

तफसीर कादरी भाग १, पारा ६ पृष्ठ २१५-१६

अब आप दोनों ही आयतों को ध्यानपूर्वक देखें, एक में तो है, कि उन्होंने अपने हृदय पाषाण से भी कठोर कर लिये, अर्थात इस आयत में हृदय कठोरकर्ता वह स्वयं हैं, किन्तु इस दूसरी आयत में स्पष्ट है, कि खुदा ने उनके हृदयों को कठोर कर दिया। अब यह दोनों आयतो में परस्पर मतभेद और विरोध होने के कारण दोनों में से एक को ही माना जा सकता है, दोनों को क्यों और कैसे माना जा सकता है ? अथवा यह माने कि खुदा ने उनके हृदयों को कठोर किया। हमारे मुसलमान बन्धुगण ! तो सम्भवतः दोनों ही मानेगे, क्योंकि मानते आये हैं,

और मानते भी रहेंगे। इसी भांति की एक और आयत हम लिखते हैं, ताकि आपको यह निश्चित हो जाये, कि कुरआनकार ने पारस्परिक मतभेद-विरोध और अन्तर हो जाने का यत्किंचित मात्र भी ध्यान नहीं रखा है। आयत:—

फ़ मंय्युरिदिल्लाहो अय्यहदियाहू यश्रह सदरहू लिल्इस्लामे वा मंय्युरिद अ.य्यु ज़िल्लाहू यजरअल् सद्रह ज़्य्येकन हरजन।

कुरआन पारा ८ रकू १५/२

अर्थः--फिर अल्लाह जिनको सन्मार्ग की ओर ले जाने की इच्छा करता है, उसका सीना इस्लाम हेतु खोल देता है, और जिसके हेतु पथभ्रष्ट करने का विचार करता है, उसके सीने को तग और बद कर देता है।

अब इस आयत से भी स्पष्ट हो गया, कि खुदा स्वयम् ही लोगों को पथभ्रष्ट करने का कार्य करता है, और यह आयत अपने पूर्व की आयत का समर्थन भी करती है, जिसमें कहा गया है, कि खुदा ने ही बनी इस्राईल के हृदयों को कठोर कर दिया।

जब से बनी इस्राईल का प्रकरण प्रारम्भ हुआ है, वहां से लेकर यहाँ तक आप पाठक सुधिजनों! ने देख लिया, कि हजरत मुहम्मद साहिब अपने समकालीन बनी इस्राईलियों को उनके पूर्वजों और पुरखाओं के किस्से सुना-सुना कर, उन किस्सों को उनके हेतु सम्बोधित कर वर्णन करते चले आ रहे हैं, कि तुमने यह किया और तुमने वह किया, और उनके पूर्वजो की अवज्ञाओं-अपराधों या निकृष्ट बातें, जो सहस्त्रों वर्षों पूव इस जाति के लोगों ने की (या नहीं) थी, उनको लक्ष्य में रख कर उनकी सन्तति को, जो उस समय उपस्थित नहीं थी, उनके पूवंजो के कृत्यों से लज्जित करते थे, और अपमानित करते थे। कोई भी

बुद्धिमान और सत्यप्रिय मनुष्य इस व्यवहार को सदव्यवहार नहीं कह सकता है।

हमें एक बात स्मरण हो आई, कि जब कभी भी दो पड़ोसी स्त्रियां परस्पर झगड़ती हैं, तो एक-दूसरी को उसके दादाओं परदादाओं और पुरखाओं के नामोल्लेखसहित अत्याधिक अपशब्द कहती, सुनाती हैं, और यह भी कहती है, कि तुम्हारा तो वंश ही बुरा है, और नीच व दुराचारी भी है। प्रतिवादी स्त्री भी उस लड़ाकू स्त्री को बदनाम करने हेतु ऐसे भद्दे और अश्लील शब्दों का प्रयोग करती है, कि राह चलते राही भी सुन कर सन्नाटे में आ लज्जित हो उठते हैं, और वह स्त्रियाँ अपने उस वाक्युद्ध को वहीं छोड़कर रोटी बनाने या जल भरने चली जाती है। और अपने आवश्यक कार्यों से निवृत हो पुनः वाक्युद्ध प्रारम्भ कर देती है, और इसी भांति उन पड़ोसिनों का वह वाक्युद्ध अथवा विवाद समय-असमय कई दिनों तक अनवरत चलता रहता है। ठीक यही उपरोक्त स्थिति कुरआनकार की भी हमारे सन्मुख उपस्थित होती है। विवाद चलता रहता है और मध्यान्तर होता है, और उसमें यदा-कदा अन्यान्य विभिन्न विषयान्तर भी आ उपस्थित हो जाते हैं, और फिर समस्त जहां का तहां छोड़ कर पुनः वही विवाद का श्रीगणेश हो जाता है।

विचारणीय विषय यह है, कि ३ हजार वर्षों पूर्वकालीन लोगों ने जो कृत्य किये थे, उनको माध्यम या साधन बना कर उनके वंशजों को उनके कृत्यों या अपराधों हेतु कोसना-लज्जित करना-अपमानित करना-भयभीत करना-चेतावनी देना-सावधान करना या अपनी बात को मानने हेतु विवश करना कहाँ का सभ्यता-संस्कृति या न्योयाचित बात है ? वह तो कब्रों में कभी के गल-सड़ चुके होंगे।

हम पूछते हैं, कि विश्व में यह ऐसा कौन सा वश या जाति हैं, कि जिसके पूर्वजों ने भले और बुरे दोनों प्रकार के कार्य न किये हों। इस प्रकार तो समस्त लोग फटकारें या धिक्कारे जा सकते हैं ? एक बनी इस्राईल की ही क्या विशेष बात है ? इस प्रकार का कृत्य कभी भी अल्लाह (ईश्वर) नहीं कर सकता है, कि किसी वश या ज़ाति को उसके पूर्वजो के कृत्यों या अपराधों को स्मरण कराते हुए उनकी मनोभावनाओं को अशक्त कर उन्हें फटकारें या धिक्कारे। इसलिए कुरआन की आयतें कदापि भी खुदा (ईश्वर) की वाणी नहीं हो सकती है। संसार में सैकडों जातियां युद्धरत रही है। उनके विवादाग्रस्त विषयों को लिपिवद्ध करने हेतु ईश्वरीय पुस्तकों में स्थान नहीं होना चाहिये। ईश्वरीय ज्ञान कोई ऐतिहासिक पुस्तक नहीं है। कुरआन तो कुल ५-६ पैगम्बरों के इतिहास से ओतप्रोत है और विशेष कर हज़रत मूसा का ऐतिहासिक वर्णन तो प्रायः स्थान-स्थान पर मिलता है। ऐसा ज्ञात होता है, कि कुरआन प्रमुख रूप से मूसा का ही इतिहास है। फिर इतिहास भी कैसा ? कि आगे की बात पीछे और पीछे की बात आगे। वर्णन में कोई भी तारतम्य--श्रृंखला या सम्पृक्तता नहीं है।

अब आगे हम हज़रत मूसा की पुस्तक से असली कथा को वर्णन करते हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं है, कि हम मूसा की घटनाओं को सत्य व उचित मानते हैं। हम तो इसलिए लिखते हैं, ताकि आप लोगों को यह ज्ञात हो जाये, कि हज़रत मुहम्मद ने खुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) में वर्णित कहानियों-किस्सों और कथाओं को कहां से लिया है, और उनमें तथा कुरआन में पारस्परिक कितना अन्तर और मतभेद है। हज़रत मूसा की पुस्तक से पढ़िये:—

फिर यहोवा ने मूसा से कहा—किनान देश मैं इस्राईलियों को देता हूँ। उसका रहस्य लेने हेतु पुरूषों को भेज, वह उनके पित्तरों के गौत्र का एक प्रधान पुरूष हो। यहोवा से यह आज्ञा पा कर मूसा ने ऐसे पुरूषों को यारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्राईलियों के प्रधान थे। उनके नाम यह है, अर्थात रूबेन के गौत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्भू। शिमौन के गौत्र में से होरी का पुत्र शायान। यहूदा के गौत्र में से ययुन्ने का पुत्र कालेब। इस्साकार के गौत्र में से योसेफ का पुत्र पिगाल। एप्रेम के गौत्र में से नून का पुत्र होशे। बिन्यामीन के गौत्र में से राजू का पुत्र मगली। ज़बूलिन के गौत्र में से सोदी का पुत्र नहीएल। यूसुफ के गौत्र में से मनश्शे के सूसी का पुत्र सद्दी। दान के गौत्र में से गमल्ली का पुत्र एम्मीएल। आशेर के गौत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर। नप्ताली के गौत्र मे से वो का पुत्र नहूबी........ ....आदि। उनको किनान देश के रहस्य लाने हेतु भेजते समय मूसा ने कहा–इधर से, अर्थात दक्षिण देश होकर जाओ और पर्वतीय देश में जाकर, उस देश को देखो, कि कैसा है? और उसके निवासियों को भी देखो, कि वह शक्तिशाली है, या शक्तिहीन। न्यून है, या अधिक, और जिस देश में वह बसे हुए हैं। वह कैसा है? अच्छा है या बुरा, और वह कैसी–-कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं, और तम्बूओं में रहते हैं या गढ़ और किले में रहते हैं। वह देश कैसा है, उपजाऊ है या बंज़र है? और वृक्ष हैं या नहीं? और तुम हिसाब बांधे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ ले भी लाना। वह समय प्रथम पकी दाखों का था। सो वह चल दिये और सीन नामक वन में से लेव्होज तक जो हमान के मार्ग में हैं, सम्पूर्ण देश को देखभाल कर, उसका रहस्य लिखा। सो वह दक्षिण देश होकर चले और हेब्रोन तक गये। वहां अहीमन शशै और तल्ले नामक अनाकवंशी रहते थे।

......................वहां से एक शाखा दाखों के गुच्छेसहित तोड़ ली और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर उठाये ले चले और वह अनारों व अजीरों में से भी कुछ-कुछ ले आये । ....फिर ४० दिनों के पश्चात उस देश का रहस्य लेकर लौट आये ।........ ....उन्होंने मूसा से यह कह कर वर्णन किया, कि जिस देश में तूने हमें भेजा था । उसमें हम गये । उसमें सत्य-सत्य दूध और मधु (शहद) की धाराएं बहती हैं और उसकी में से यही है. परन्तु उस देश के निवासी शक्तिशाली हैं और उनके नगर गढ़युक्त हैं तथा अत्याधिक विशाल हैं । फिर हमने अनाकवंशीयों को भी देखा । दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं और पर्व-तीय देश में हित्ती, यबूसी और एमोरी रहते हैं तथा समुद्र और यर्दन नदी के तटों पर किनानी बसे हुए हैं । पर कालेब में मूसा के सन्मुख प्रजाजनों को चुप कराने के अभिप्राय से कहा--हम अभी चढ़ कर उस देश को अपना कर लें, क्योंकि निसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है । जो--जो पुरूष उसके संग गये थे, उन्होंने कहा--उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है, क्योंकि वह हमसे शक्तिशाली हैं । इस्राईलियों के सन्मुख उन्होंने उस देश की जिसका रहस्य उन्होंने लिया था, यह कह कर निन्दा भी की, कि वह देश जिसका रहस्य लेने हेतु हम गये थे, ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है, और हमने उसमें जितने पुरूष देखें, वह समस्त विशाल आकार--प्रकार के हैं । फिर वहां हमने नशीलों को, अर्थात नशीली जाति के अना-कवंशियों को देखा और हम अपनी दृष्टि में, तो उनके सन्मुख टिड्डियों के सदृश्य दृष्टिगोचर होते हैं । तब समस्त मंडली चिल्ला उठी और वह रात्रि भर रोते ही रहे और समस्त इस्रा-ईली मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने लगे, और समस्त मडली

उनसे कहने लगी--भला होता, कि हम समस्त मिश्र में ही मर जाते या इस वन में ही मर जाते, और यहोवा हमको उस देश में ले जाकर क्यों मरवाना चाहता है ? हमारी स्त्रियां और बाल बच्चे तो लूट में चले जायेंगे, क्या हमारे हेतु अच्छा नहीं कि हम मिश्र देश को लौट जायें। तब मूसा और हारून सम्पूर्ण मण्डली के सन्मुख मुँह के बल गिरे और नून का पुत्र यहोशू और ययुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश का रहस्य लाने वालों में से थे, ने अपने अपने वस्त्रों को फाड़ कर इस्राईलियों की सम्पूर्ण मण्डली के सन्मुख कहने लगे--जिस देश का रहस्य लेने, हम यत्र--तत्र भ्रमण कर आये हैं, वह उत्तम देश है। यदि यहोवा हमसे प्रसन्न हो, तो हमको उस देश में, जहां दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहूँचा कर उसे हमें दे देगा। मात्र इतना करो, कि तुम यहोवा के विरूद्ध विद्रोह करो और न उस देश के लोगों से भयभीत हो-ओ, क्योकि वह यहोवा हमारे साथ है, और उनके ऊपर से छाया हट गई है। तव सम्पूर्ण मण्डलो चिल्ला उठी--इन पर पथराव करो। तब यहोवा का नेत्र समस्त इस्राईलियों पर प्रकाशमान हुआ। तब यहोवा ने मूसा से कहा--वह लोग कब तक मेरा तिर-स्कार करते रहेंगे और मेरे समस्त आश्चर्यमय कार्य देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे ? मैं उन्हें मरी (महा-रोग) से मारूँगा और उनके निजि भाग से उनको निकाल दूँगा, और तुझ से एक जाति उपजाऊँगा, जो उनसे विशाल और शक्तिसम्पन्न होगी। मूसा ने यहोवा से कहा—तब तो मिश्री जिनके मध्य में से तू अपनी सामर्थ्य प्रदर्शित कर उन लोगा को निकाल ले आया है, यह सुनेंगे और इस देश के निवासियों से कहेंगे—उन्होंने तो यह सुना है, कि तू जो यहोवा है। इन लोगों के मध्य में रहता है, और प्रत्यक्ष दिखाई देता है, और तेरा बादल उनके ऊपर ठहरता है, और तू दिन को बादल के खम्बे में हो

कर इनके आगे-आगे चला चलता है। इसलिए तू इन लोगों को एक ही समय में मार डाले, तो जिन जातियों ने तेरी कीर्ति सुनी है, सो कहेंगी-यहोवा उन लोगों को उस देश में, जिसे उसने उन्हें देने को शपथ ली थी, पहुँचा न सका। इस कारण उसने उन्हें वन में घात कर डाला है। सो अब प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कथनानुसार हो, कि यहोवा कोप करने में धैर्यवान और अपराधों को क्षमाकर्ता तथा अत्यन्त करूणामय है, किन्तु वह दोषी को किसी भांति निर्दोष न ठहरायेगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों-पोतों और परपोतों को देता रहता है। अब इन लोगों के अधर्म को अपनी अथाह करूणा के अनुसार और जैसे तू मिश्र से लेकर यहां तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे। यहोवा ने कहा-तेरी विनती के अनुसार क्षमा करता हूँ।

"गिनती" अध्याय १३ पूर्ण व अ. १४ की २० आयतें

यह उपरोक्त वह मूल कथावस्तु है, जिससे हज़रत मुहम्मद ने अरबी भाषा में रूपापित कर, कतिपय अपनी ओर से सम्मिलित कर आयतों के रूप में खुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) उल्लेखित कर कुरआन में गुम्फित कर दिया है। दोनों में यह अन्तर स्पष्ट लगता है, कि जहां "गिनती" का विवरण साधारणतः अनुभूत होता है। वहां दूसरी ओर "कुरआन" का सम्पूर्ण वर्णन अन्धविश्वासयुक्त और अजीबोंगरीब करिश्मों से ओतप्रोत है। अनेक स्थलों पर तो ऐसा है, कि जो सर्वथा कल्पनाजनित और असम्भव दृष्टिगोचर होता है।

हमने जो कुरआन की उपर्युक्त आयत लिखी है, कि तुमने अपने हृदयों को पाषाण से भी अधिक कठोर कर लिया।

उसके विरोध में हमने दूसरी अन्य आयत भी कुरआन मे ही प्रस्तुत की है, कि उन्होंने अपने हृदयो को कठोर नही किया, अपितु स्वयम् खुदा ने ही उनके हृययों को कठोर कर दिया। इसके पश्चात हमने कुरआन और हदीस के प्रमाण प्रस्तुत कर इस बात को वर्णित किया है, कि इस्लाम जढ़जगत में भी चेतनता, द्रष्टव्य और समझने की शक्ति को मान्यता प्रदान करता है। इस बात को हमने इसी पुस्तक में पूर्व में भी विस्तृत रूप में लिखा है। यहां भी यही प्रकरण आ उपस्थित हो गया। अतः यत्किञ्चित यहाँ भी लिखना पडा, कि कुरआन और हदीस इस असम्भव बात को, कि जड़जगत भी ज्ञानमय है, इसको स्वीकारते हैं और इसके लिये उन्होंने अनेकानेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। जैसे सुलेमान के साथ पाषाण इत्यादि द्वारा भक्ति करना और हज़रत मुहम्मद से सलाम और वार्तालाप करना लिखा है। यहाँ तक ही नहीं, पत्थरों में परोक्ष ज्ञान होना भी लिखा है। जैसे हज़रत मुहम्मद को नबी–पैग़म्बर या रसूल मानना और यह समझना कि अब हमारी भक्ति या पूजन–अर्चन का समय व्यतीत हो गया है।

यह एक ऐसा मिथ्या और अविश्वसनीय सिद्धान्त है, कि जिसको कोई भी शिक्षित–विवेकशील अथवा दार्शनिक नहीं मान सकता और न ही इसे सिद्ध किया जा सकता है, कि पत्थर मूसा के वस्त्र लेकर भाग गया। यह कैसी अनर्गल बात है, कि पत्थर हाथ--पैर न रखते हुए भी वस्त्र उठा कर ले भागा। इस बात पर कोई मूर्ख से मूर्ख अर्थात महामूर्ख भी विश्वास नही करेगा, किन्तु इस्लाम और कुरआन का मत है, जो इस प्रकार की असम्भव और अनहोनी एवं मिथ्यापूर्ण बातों को मानते हैं और खुदा (ईश्वर) का भय व आतक प्रदर्शित कर लोगो से भी मनवाने के प्रयास में निरन्तर रत है।

इस भांति की उपर्युक्त अन्धकारपूरित अन्धश्रद्धालू और मिथ्यापूर्ण बातों को जनसाधारण के हृदयों से निकालना और उन्हें यथार्थ-सत्यता और आलोकमय सन्मार्ग की ओर उन्मुख व अग्रेसित करना 'आर्य-समाज' का परम और प्रमुख धर्म और कर्तव्य है, किन्तु दुखसहित कहना पड़ता है, कि महाऋषि दयानन्द सरस्वती, मुन्शी इन्द्रमन और पण्डित लेखराम के पश्चात इस ओर अत्यन्त ही न्यूनतम ध्यान दिया गया हैं, कि आज करोड़ों मनुष्य अन्धविश्वास और मिथ्या धारणाओं-मान्यताओं के वशीभूत हो कुमार्ग पर चल रहे है। उनको इस अज्ञान-अविद्या और अन्धकार से मुक्त कर सन्मार्ग पर लाया जाना आवश्यक है।

अतः हमने इसी हेतु इस कार्य को आरम्भ किया है, कि यदि किञ्चित मनुष्य भी अन्धकार से मुक्त होकर प्रकाश की ओर अर्थात् मिथ्यामार्ग से सन्मार्ग की ओर उन्मुख या अग्रेसर हो गये, तो हम अपने इस प्रयास और श्रम को सफल मान लेंगे। वैसे मुस्लिम सम्प्रदाय के अतिरिक्त कतिपय हिन्दूजन भी बहुसंख्या में कुरआन और हदीसों की शिक्षाओं से पर्याप्त अनभिज्ञ होते हुए भी इस अज्ञानपूर्ण शिक्षा पर विश्वास कर बैठे हैं, कि कुरआन खुदाई पुस्तक है। न केवल यह बात अपितु कई त्रिनोत्रां भावे सन्त जैसे मनुष्य भी हैं, जो इस्लाम का अ-ब-स भी नहीं जानते और ऐसे लोगों ने कुरआन जैसी पुस्तक के समर्थन में पुस्तकें लिख मारी है। ऐसे लोग देश-समाज-जाति-न्याय-धर्म और सत्य के घोर शत्रु होते हैं जो यथार्थ को न जान कर अपने लेखन द्वारा मनुष्य को दिग्भ्रमित और पथभ्रष्ट करते हैं। ऐसे लोगों से स्वयँ अपने आपको और अपने लोगों को बचाना प्रत्येक सत्यान्वेषी और सन्मार्गी मनुष्य का परम कर्तव्य ही नहीं, अपितु परमधर्म है। अब इस चर्चित विषय को यहीं

समापन कर हम क्रमशः आगामी आयतें प्रस्तुत करते हैं।

आयतें :—

अफ़तत्मऊना अंय्योमेनू लकुम् व क़द काना फ़राक़ुम्मिनहुम् यस्मऊना कलामल्लाहे सुम्मा योहर्रेफ़ूनहू मिम्बादे मा अक़लूहो वा हुम् यालमून्। वा इज़ा लकुल्लाज़ीना आमनु कालू आमन्ना वा इज़ा खला बाज़ाहुम् इला बाज़िन। कालू अतोहद्देसूनहुम् बेमा फ़तहल्लाहो अलेकुम् लेयो हाज्जूकुम् बेही इन्दा रब्बेकुम् अफला ताकेलून। अवला यालमूना अन्नल्लाहा यालमो मा युसिर्रूना वा मा योलेनून्। कुरआन पारा १ आयत ७६-७७-७८

अर्थः—ऐ मुसलमानों ! क्या तुमको यह आशा है ? कि वह (यहूद) तुम्हें मानेंगे ? इस स्थिति में कि उनमें से एक ऐसा समुदाय भी था, जो खुदा की वाणी को सुनता था। तत्पश्चात् परिवर्तित कर देता था। यहां तक कि वह भलीभांति जानते थे, और जब मुसलमानों से मिलते, तो कहते, कि हम भी ईमान लाये हैं, और जब किसी दूसरे समुदाय से एकान्त में मिलते, तो कहते हैं, कि क्या तुम मुसलमानो से वह बात कह देते हो ? जो बात तुम पर खुदा ने प्रकट की, ताकि उससे तुमको, तुम्हारे रब्ब के सन्मुख दोष देवें। क्या तुम जानते हो, कि यहूदी नहीं समझते, कि अल्लाह जानता है, जो कुछ वह छुपाते हैं, और जो कुछ वह विख्यात करते हैं।

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ४२

व्याख्याः—उस पथभ्रष्ट यहूद जाति के ईमान के सम्बन्ध में अल्लाह अपने नबी (हज़रत मुहम्मद) और आपके मित्रों को निराशा का प्रतिपादन कर रहा है, कि जब उन लोगों ने इतने बड़े-बड़े चमत्कार देखे, तत्पश्चात भी हृदयों को पाषाण-सा कठोर बना लिया

और खुदा की वाणी को सुन, समझ कर तत्पश्चात भी परिवर्तित कर दी, तो क्या तुम उनसे आशा रखते हो, अर्थात उनके वचन-भंग करने के कारण हम (खुदा) ने उन पर फटकार डाल दी, और उनके हृदय कठोर कर दिये। वह खुदा को वाणी मे परिवर्तन कर देते थे।

हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं–यहां अल्लाह ने खुदा की वाणी सुनने को फरमाया। इससे हज़रत मूसा के मित्रों की वह श्रेणी अभिप्रेत है, जिन्होंने अपने कानों से खुदा की वाणी सुनने की प्रार्थना की थी, और जब वह हज़रत मूसा के साथ तूर पर्वत पर जाकर सज़दे में गिर पड़े, तो अल्लाह ने अपनी वाणी सुनाई, और जब वह उठे, तो हज़रत मूसा ने वह खुदा की वाणी बनी इस्राईल को सुनाई, तो उन लोगों ने उस वाणी में परिवर्तन प्रारम्भ कर दिया।

सद्दी कहते हैं–उन लोगों ने 'तौरात' में परिवर्तन किया। कुरआन में एक स्थल पर आया है, कि मुशरिकों में यदि कोई तुझसे रक्षा की प्रार्थना करे, तो उसे सुरक्षा में ले ले। जहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले।...................यह तौरात' में परिवर्तनकर्ता और छुपानेवाले उनके विधान थे। हज़रत मुहम्मद की जो प्रशसा उनकी पुस्तक (तौरात) में थी, उन समस्त में उन्होंने परिवर्तन किये और वास्तविक अर्थ दूर कर दिया। इसी भांति हलाल को हराम और हराम को हलाल, सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य कर दिया करते थे। मुसलमानो से मिलते, तो कहनें लगते कि तुम्हारे नबी सच्चे हैं, लेकिन फिर आपस में बैठ कर कहने लगते, कि क्यों मुसलमानों से यह बात कहते हो? इससे तो यह तुम पर छा जायेंगे और खुदा के सन्मुख भी तुमको निरूत्तर कर देंगे। इसके कथन में अल्लाह ने फरमाया–इन मूर्खों

को क्या इतना भी ज्ञान नहीं, कि हम गुप्त और प्रत्यक्ष समस्त बातों को जानते हैं। एक स्थल पर लिखा है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया, कि मदीना में हमारे पास मुसलमानों के अतिरिक्त और कोई न आये, तो उन काफ़िरों और यहूदियों ने कहा- हम भी मुसलमान होते हैं। वह लोग प्रातः आकर मुसलमान होने का दावा करते थे और संध्या को काफ़िरों में सम्मिलित हो जाते थे। कुरआन में आया है, कि यहूदियों के एक समुदाय ने कहा-- मुसलमानों पर जो उतरा है, उस पर के दीन के (धर्म के) एक अंग पर ईमान ले आओ। तत्पश्चात दूसरे अंग में कुफ़र करो, ताकि ईमानवाले लोग भी इस दीन (धर्म) से विमुख हो जाये (अर्थात तुम्हें देख कर वह लोग भी इस्लाम त्याग देंगे) यह लोग इस धोखे से मुसलमानों के रहस्य जानना और अपने लोगों को बताना और मुसलमानों को भी पथभ्रष्ट करना चाहते थे, किन्तु उनकी चालाकी चल न सकी। यह लोग जब अपना मुसलमान होना प्रकट करते थे, तो हज़रत मुहम्मद के साथी उनसे पूछते कि क्या तुम्हारी पुस्तक में हज़रत मुहम्मद की शुभ सूचना आदि नहीं? (अर्थात मुहम्मद के पैग़म्बर होने सम्बन्धी सूचना तुम्हारी पुस्तक (तौरात) में नहीं?) वह इस बात को स्वीकार करते है, और जब अपने बड़ों के पास जाते, तो वह उन्हें डांटते और कहते कि क्यों उनसे अपनी बातें कह कर उनके हाथों में शस्त्र दे रहे हो।

मुजाहिद फरमाते हैं--हज़रत मुहम्मद ने कुरेज़ा के यहूदियों के किले के नीचे खड़े होकर फरमाया--यह बन्दर--सूअर और शैतान के पूर्वजों के भाईयों! तो वह लोग परस्पर कहने लगे--यह हमारे घर की बातें उन्हें किसने बताई। सावधान, अपनी पारस्परिक सूचनाएँ उन्हें न बताया करो।..................

(खुदा ने कहा) और जो तुम अपना ईमान प्रकट करते हो, मैं तुम्हारे इस कर्म को भलिभांति जानता हूँ।

तफ़सीर मुहम्मदी, पारा १ पृष्ठ १११

आयत का तात्पर्य यही है, कि मुसलमानों से कहा जाय कि तुम इस बात का लालच मत करो, कि यह लोग मुसलमान हो जायेंगे। जबकि यह लोग खुदा की वाणी को अपने कानों से सुन कर और हज़रत मूसा के इतने चमत्कार देख कर भी निरन्तर अवज्ञाएं करते रहे और पुस्तक (तौरात) में परिवर्तन भी करते रहे, तो ऐसी स्थिति में यह लोग मुसलमान कैसे हो सकते हैं? अन्य व्याख्याकारों ने भी ऐसा ही लिखा है।

अब देखिये, कि आयत में भी यही बात है, कि यह लोग बड़े अवज्ञाकारी हैं। तुम इनसे मुसलमान होने की आशा न रखो। यह खुदा की वाणी में परिवर्तन करते हैं। बाहर से मुसलमान कैसे हो सकते हैं? अन्य व्याख्याकारों ने भी ऐसा ही लिखा है।

अब देखिये, कि आयत में भी यही बात है, कि यह लोग बड़े अवज्ञाकारी हैं। तुम इनसे मुसलमान होने की आशा न रखो। यह खुदा की वाणी में परिवर्तन करते हैं। बाहर से मुसलमान होते हैं और भीतर से काफ़िर रहते है। प्रातः मुसलमान बनते हैं, तो शाम को काफिर बन जाते हैं। यह तो ऐसा ज्ञात होता है, कि किसी की बाह्य प्रेरणा और उसमें जो कुछ उसके साथ होता है, वह लिखा हुआ है। जो कि वास्तव में ईश्वरीय वाणी नहीं है। जब कुरआन में बारम्बार तौरात की बातें लिखी गई हैं। जैसे—"हमने मूसा को पुस्तक और फ़ुर्क़ान दिया, ताकि तुम हिदायत पाओ।" (कुरआन, पारा १ रकू ६)

फिर लिखा:— हमने उसके हेतु तख्तियों में अर्थात 'तौरात' को उसमें प्रत्येक भाँति शिक्षा और प्रत्येक वस्तु हेतु विस्तार पूर्वक लिखा है, तो उसको दृढता से पकड़ो और अपनी जाति को उसके अनुसार कर्म करने की शिक्षा दो।" कुरआन, पारा ९ रकू १७.७

"निसन्देह हमने तौरात को उतारा, उसके मध्य सत्य शिक्षा और प्रकाश है" इत्यादि। और भी अत्याधिक आयतें हैं।

हम पूछते हैं, कि जिस समय आप इन आयतों को खुदा से उतरी कहते हो। उस समय तक उसमें परिवर्तन नहीं किया गया था ? मुसलमानों का यह कर्तव्य है, कि इन आयतों के पश्चात किस समय 'तौरात' में परिवर्तन किया गया। इसे स्पष्ट करें और यह भी बतायें, कि कौन सी आयतें उचित हैं। जिनमें "तौरात" को पथप्रदर्शक और प्रकाशदायिनी कहा गया है। यह सत्य है, या वह सत्य है, जिनमें कहा गया है कि इसमें परिवर्तन कर दिया गया है। क्योंकि जो आयतें तौरात की प्रतिष्ठा सम्बन्धी हैं, उनमें यह कदापि नहीं कहा गया है, कि उसमें परिवर्तन किया गया है। यह मानना पड़ेगा, कि जिस समय वह आयतें उतरी कही गई है, उस समय तौरात में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। इन आयतों के अवतरण पश्चात कब परिवर्तन हुआ ? इस सम्बन्ध में मुसलमानों को प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिये। यह समस्त आयतें, जिनमें तौरात के अनुसार कर्म करना चाहिये, कहा गया है, वह निरर्थक और निष्प्रयोजनीय हो जाती है, और यदि इन आयतों के पश्चात परिवर्तन हुआ है, तो वह समस्त आयतें मानने के योग्य नहीं रहती। प्रत्येक स्थिति में इन दोनों प्रकार की आयतो में से एक प्रकार की आयतो को ही मानना होगा। आगामी आयतें भी इसी भांति हैं:—

वा मिन्हुम उम्मिय्यूना ला यालमूनल्किताबा इल्ला अमानिय्या

वा इन्हुम् इल्ला यजुन्नून । फ़ वैलुल्लिल्लाज़ीना यक्तोबून-ल्किताबा बेएदीहीम् । सुम्मा यक़ूलूना हाजा मिन् इन्दिल्लि-ल्लाहे लेयश्तरू बेही समनन कलीलन । फ़ वैलुल्लिल्लाज़ीन यक्तबूनल्किताबा बेएदीहिम् वा वैलुल्ला हूम्मिम्मा यक्सेबून ।

कुरआन, पारा १ आयत ७९–८०

इन आयतों में भी यहूदियों का वर्णन है । आप इनके अर्थ और व्याख्या देखेंगे, तो इस परिणाम पर पहुँचेंगे, कि यह तो उस समय की बनी इस्राईल का वृतान्त है । इससे ईश्वरीय वाणी (खुदा का कलाम) का क्या सम्बन्ध है ? कोई भी विचारक और चिन्तक इन आयतों को ईश्वरीय वाणी नहीं कह सकता । जातियों में मनुष्य विवेकशील-विद्वान और अज्ञानी भी होते हैं । भली बातें करनेवालों से आर्थिक सहायता भी लेते हैं । यह बातें तो प्रायः सदैव ही होती रहती है । उनका ज्ञान से क्या सम्बन्ध ? जैसा कि आप इन उपयुंक्त आयतो के अर्थ में देखेंगे । आयतों का अर्थ:—

और इन यहूदियौ में अत्याधिक लोग शिक्षित नहीं है । यह साहित्य का भी ज्ञान नहीं रखते हैं । इनको प्रमाणहीन मन-मोहक बातें अधिक स्मरण है, और यह लोग कतिपय विचार दृढ़ विचार नहीं करते हैं, और तौरात में जो परिवर्तित कर लिखते हैं, इसी हेतु कह देते हैं कि यह आज्ञा खुदा (ईश्वर) की ओर से है । मात्र उद्देश्य यह होता है, कि उसके द्वारा किञ्चित धन-प्राप्ति करें । उनके हेतु आपत्ति होगी ।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ३९

अब आप कुरआन की इस लेखन शैली को देखिये । प्रथम

तो बनी इस्राईल की स्तुति कर आसमान पर चढ़ा दिया, और पुनः उसकी निन्दा कर उन्हें निकृष्ट कहना प्रारम्भ कर दिया, और जहां पर "तौरात" को मनुष्यों हेतु शिक्षाप्रद और सम्पूर्ण ज्ञानमय पुस्तक तथा प्रकाशदाता कहा गया था। उसमें परिवर्तन की बात बना कर त्यागने हेतु प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं। हम पूछते हैं, कि यदि इस पुस्तक (तौरात) में परिवर्तन संशोधन या परिवर्धन किया गया है, तो उसके हेतु यह किस भांति कहा जा सकता है, कि उसके ऊपर ईमान लाओ ? अब आप उपर्युक्त आयतों की व्याख्या पढ़िये:--

और यहूदियों में एक समुदाय अशिक्षित है अर्थात विद्याहीन है। वह लोग तौरात को नहीं जानते हैं, कि उसमें क्या वस्तु है ? किन्तु अपनी कामनाओं को, जो उनकी इच्छानुकूल हो अथवा मिथ्या वचन जो अपने विद्वानों से सुनते हैं, कि स्वर्ग मात्र उनके हेतु हैं, और उनके पूर्वज उनकी सिफारिश (अनुशंसा) करेंगे, और इस बात को नहीं मानते कि संकट भी उनके हेतु है, और जो पुस्तक स्वयम् अपने हाथों से लिखते हैं, उसके हेतु कहते हैं, कि यह खुदा (ईश्वर) की ओर से लिखा हुआ है। यह बात इसलिए कहते हैं, कि उसको कुछ धनप्राप्ति हो अर्थात परिवर्तन के बदले यह किञ्चित प्राकृतिक धन लेना चाहते हैं। यहूदियों के विद्वान रिश्वत लेने हेतु जो प्रशंसा हज़रत मुहम्मद की तौरात में थी और उनके स्वरूप का वर्णन था, कि मुहम्मद अति सुन्दर, घुंघराले केश, गेहूंआ रंग, काली आंखें और मझोला कद होगा। इस स्वरूप को परिवर्तित कर, यह लिख दिया कि हज़रत मुहम्मद का कद लम्बा, आंखें नीली, खाल (चाम) सफेद, सीधे केशयुक्त होगा। यह स्वरूप लज्जास्पद होगा और सर्वसाधारण को उन्होने यह कह रखा है, कि तौरात में जिस पैगम्बर के आगमन का

वर्णन है, वह यह पैग़म्बर नहीं है, अर्थात हज़रत मुहम्मद वह पैग़म्बर नहीं है। शोक है, उनके हेतु इसलिए कि उन्होंने अपने हाथों से तौरात को परिवर्तित कर दिया और दूसरी बार फटकारा है उन लोगों पर कि वह रिश्वत लेते और हरामखोरी करते हैं।

तफसीर कादरी, पारा १ पृष्ठ १९

तफसीर मुहम्मदी में है, कि यहूदियों ने तौरात में परिवर्तन और परिवर्धन कर लिया। हजरत मुहम्मद का नाम निष्काषित कर दिया। इसलिए अल्लाह का क्रोध उन पर उतरा और कुछ तौरात उठा ली गई और अल्लाह ने फरमाया—उनके अपने हाथों से लिखे और उनकी कमाई हेतु बर्बादी और विनाश है। यहाँ पर यहूदियों के विद्वानों की निन्दा हो रही है, कि वह अपनी बातों को खुदा की वाणी कहते थे, और लोगों को प्रसन्न कर धन कमाते हैं। इन लोगों ने तो अल्लाह की पुस्तक में परिवर्तन किया और अपने हाथों लिखी हुई बातों को खुदा की बात कह कर प्रचार किया। फिर तुम्हें अपनी सुरक्षित किताब छोड़कर इस परिवर्तित पुस्तक की क्या आवश्यकता ?

तफसीर मुहम्मदी, पारा १ पृष्ठ ११२

तफसीर इब्ने कसीर, पारा १ पृष्ठ ८९

तफसीर हक्कानी, पारा १ पृष्ठ ४२

इन आयतों में मात्र यही है, कि यहूदी लोग अनपढ़ और अशिक्षित हैं। उन्होंने अत्यंत किस्से—कहानियां कंठस्थ कर रखे हैं, और धनप्राप्ति हेतु तौरात की भाषा में भी परिवर्तन और परिवर्धन कर देते है। इसमें कौन सी बात है ? कि जिसे सत्य ईश्वरीय ज्ञान माना जाये। यह तो प्रतिदिन की उनकी साधारण बातें हैं, जो उन्हें कुख्यात करने हेतु लिखी गई। मात्र

इतनी बात जानने योग्य है कि प्रमथ पूर्व आयत में यह लिखा, कि तुम शिक्षित और विद्वान हो, और इन आयतों में लिखा है, कि यह यहूदी लोग मूर्ख हैं। उनको साहित्यिक ज्ञान नहीं है। इस आयत पर अब और क्या लिखा जाये, कि इसमें लिखने योग्य कोई विषय ही नहीं है। अब आगामी आयतें भी इसी विषय से सम्पृक्त हैं, उन्हें भी देख लीजिये। आयतें:—

वा कालू लन् नमस्सनन्नारो इल्ला अय्यामिम्माहूदह्। कुल अत्तख-ज्तम। इन्दल्लाहे अहदन। फलय्युख़्ल फ़ल्लाहो अहदहू अम् तकु-लूना। अलल्लाहे मा ला तालमून्। बला मन कसबा सय्येअत-व्व वा अहातत ख़तीअतोहू, ओलाएका असहाबुन्नारेहुम फ़ीहा ख़ालेदून। कुरआन पारा १ आयत ८१-८२

अर्थ:—और यहूदियों ने यह भी कहा—हमको नरकाग्नि छूएगी भी नहीं, किन्तु किञ्चित दिन, जो उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। यह हज़रत मुहम्मद को सम्बोधन है, कि उनको आप कह दीजिये कि क्या तुमने अल्लाह के साथ कोई वचनबद्धता कर ली है। जिसके कारण विपरीत नहीं कर सकता। यह अल्लाह हेतु ऐसी बातें करते हैं, जिसका कोई भी प्रमाण उनके पास नहीं है। ऐसे लोग नर्कगामी होते है और वह इसमें सदैव हेतु रहेंगे।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १ पृष्ठ ४०

तफसीर आज़मुत्तफासीर में "मिन्हुम् ओम्मिय्युना" की व्याख्या इस प्रकार लिखी है, कि जो अपराध हमसे समय-समय पर होते हैं। ख़ुदा उन्हें अत्याधिक प्रेम के कारण हमें क्षमा कर देता है, और इसके साथ हमारें पैग़म्बर उच्चतम थे, उनका

ख़ुदा के दरबार में अत्यन्त प्रभाव था। जिसके कारण से वह उनकी इच्छा पतिवर्तन कर सकते हैं। यदि कभी हमसे अपराधों के सम्बन्ध में पकड़ भी हुई, तो हमारे पूर्वज हमें नर्कयात्रा के संकट से बचा लेंगे। यद्यपि यहूदी समुदाय अत्याधिक अपराधी भी होगा, तो भी ४० या ६० दिनों से अधिक नर्क के संकट में न रहेगा। इसके साथ ही यह बात भी है, कि नबव्वत व रसालत् की योग्यता मात्र बनी इस्राईल को ही हैं, दूसरे को बनी बनने की शक्ति नहीं (तफ़कीर अज़ीजी) फिर उनके विद्वान और मूर्ख पथभ्रष्ट तथा असत्य-अपराध आदि में समान हैं। विद्वानों को उचित था, कि अपने ज्ञानानुसार कर्म करते, असत्य, रिश्वत और खुदा की वाणी में परिवर्तन और अदला-बदली करने से परे रहते और सर्वसाधारण का कर्तव्य था, कि मात्र विद्वानों के ही अनुकरण पर निर्भर न रहते, अपितु सत्य का और विश्वास प्राप्त करने में प्रयत्न करते। अब खुदा उनके दुष्ट कृत्यों का बुरा परिणाम इस प्रकार वर्णन करता है, कि जो लोग पुस्तक में स्वयम् परिवर्तन कर उसको खुदा की ओर से बताते थे। उन पर शोक और फटकार है। तात्पर्य यह कि बनी इस्राईल के विद्वान बड़े निर्लज्ज और उच्छृंखल थे। उच्छृंखलता और दुस्साहस यह था कि खुदा की वाणी के परिवर्तन और परिवर्धन पर कहा करते थे, कि यद्यपि हम कुफ्र और अधर्म के कार्य करते हैं, किन्तु हमारे हेतु भय की कोई भी बात नहीं है। क्योंकि यदि हमें नर्क संकट होगा, तो मात्र किञ्चित दिन।

तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ २०४

उपरोक्त विवरण पर हम यह कहते हैं, कि जैसा आपने कहा कि वह लोग धन लेकर पुस्तक में परिवर्तन करते थे, तो फिर कुरआन में स्थान-स्थान पर ऐसी परिवर्नित-परिवर्धित और

संशोधित पुस्तक को प्रमाण क्यों माना ? क्यों नहीं पूर्व में ही कह दिया, कि यह परिवर्तित पुस्तक है, उसे मानने से कोई लाभ अर्थात योग्य नही है।

इब्ने अब्बास कहा करते थे, कि यहूदी लोग कहते थे कि सृष्टि की अवधि ७ हजार वर्ष के वदले हमें एक दिन नर्क का सकट होगा, तो मात्र ७ दिन हमें नर्क में रहना पड़ेगा। इसी बात के प्रतिरोधस्वरूप यह आयतें अवतरित हुई हैं।

कतिपय लोगों के कथन है, कि यहूदी लोग ४० दिन नर्क में रहना मानते हैं, क्योंकि उनके पूर्वजों ने ४० दिन बछड़े की पूजा की थी।

कुछ का कहना है, कि यह धोखा उनको इस हेतु हुआ कि तौरात में नर्क के दोनों ओर थूहर के पेड़ तक ४० वर्ष का मार्ग है। इस कारण वह कहते थे, कि इस अवधि के पश्चात नर्क का संकट हट जायेगा।

एक और वर्णन है, कि यहूदियों ने हज़रत मुहम्मद के सन्मुख आकर कहा—४० दिन तो हम नर्क में रहेंगे और फिर अन्य दूसरे लोग हमारे स्थान पर आ जायेंगे अर्थात आपकी उम्मत (समुदाय) अर्थात मुसलमान। हज़रत मुहम्मद ने उनके मस्तकों पर हाथ धर कर फरमाया—नहीं, अपितु तुम सदैव नर्क में रहोगे। (यही प्रमुख कारण इस आयत के उतरने का है।) खैबर की विजय के पश्चात हज़रत मुहम्मद की सेवा में भेंटस्वरूप पका हुआ मांस आया। तत्पश्चात यहूदियों को एकत्रित कर पूछा—नर्कवासी कौन लोग हैं, बताओ ? उन्होने कहा—कुछ दिन तो हम हैं, तो हम रहेंगे, तत्पश्चात आपकी उम्मत अर्थात मुसलमान। फिर हज़रत मुहम्मद ने कहा—मांस में विष क्यों मिलाया? उन्होने

कहा--इसलिए मिलाया कि यदि आप सच्चे हैं, तो विष आप पर कदापि प्रभाव न करेगा तथा आप यदि झूठे हैं, तो इस संसार से मुक्त हो जाओगे।

तफसीर मुहम्मदी पारा १ पृष्ठ ११३ में, तफसीर हक्कानी पारा १ पृष्ठ ४३-४४ में, तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ठ १५०-५१ में, तफसीर मुआलेमुत्तन्ज़ील पारा १ पृष्ठ ३६-३७ में, तफसीर आजमुत्तफासीर पारा १ पृष्ठ २४० में, तफसीर कादरी पारा १ पृष्ठ १९-२० में और तफसीर फैजी आजमुत्ताफासीर पारा १ पृष्ठ २०५ में भी ऐसा ही वर्णन किया गया है।

इस आयत में यह कहा गया है, कि यहूदी कहते हैं-प्रथम तो हम नर्क में जायेंगे ही नहीं, और यदि गये भी तो थोड़े दिनों के हेतु। इस पर हज़रत मुहम्मद ने आक्षेप किया हैं; किन्तु हम कहते हैं, कि मुसलमान भी यही मानते हैं, कि मुसलमान नर्क में नहीं जायेगे और यदि जायेंगे, तो थोडे दिनों के लिये। हम पूर्व में भी इस विषय पर विस्तृत चर्चा कर चुके हैं, किन्तु यहां भी किञ्चित उल्लेख उचित और आवश्यक ज्ञात होता है:—

इन्ना आतदना जहन्नमा लिनकाफ़ेरीना नुजला।

कुरआन पारा १६ रकू १२/३ (कहफ़)

अर्थः—निसन्देह, हम (खुदा) ने नर्क काफिरों हेतु बनाया है।

'कुल् हल् नोनब्बेओकुम्' कह ऐ मुहम्मद! क्या मैं तुमको सूचना दूं **'बिलअख़्सेरीना एमालन'** हानि पानेवाले लोगों के विचार से **'अल्लाज़ी नज़ल्ला'** जो लोग कि गुम हुए और व्यर्थ हुआ **'साया-हुम'** उनका दौड़ना अर्थात नेक कार्यों की ओर प्रयत्न **'फ़िल्ह-यातिद्दुनिया'** सांसारिक जीवन में, जैसे—यहूद और नसारा के

भक्त और संयमी लोग, कि अधिकाँश अपने-अपने उपासनागृहों में रोजा-नमाज अदा करते थे और कुफ़्र के कारण उनके समस्त कर्म मिथ्या हैं, और उनको, उन कर्मों का कुछ भी फल न मिलेगा:।…… … ……और, अधिक सत्य और विख्यात बात यह है, कि काफिर अपने सगे सम्बन्धियों से मेल रखते, भिक्षुओं को भोजन कराते, दास-दासियों को स्वतन्त्र करते थे। खुदा ने उनके मिथ्या होने का आदेश दिया और फरमाया:—'वा हुम यह्सबुन्' और वह घमण्ड करते हैं 'अन्नहुम् युह्सनून' यह कि वह अच्छा करते हैं 'सन्आ' काम 'ओलाएका' वह, समुदाय जिसका वर्णन किया गया है 'अल्लाजीना कफ़रू' वह लोग, जो काफ़िर हुए 'बआयाते रब्बेहिम्' अपने रब्ब (ईश्वर) की आयतों (चिन्हों) के साथ, और वह कुरआन है, या अद्वैत—तर्क के साथ, 'वा लेकाएही' और उसके दर्शन के साथ, अर्थात, दो बार कयामत उठने के साथ, कि उस समय कयामत (प्रलय) के दिन खुदा (ईश्वर) का दर्शन प्राप्त होगा। 'हबेतत् एमालोहुम्' तो जब्त (राजसात) हो गये, निरस्त हो गये उनके कर्म, जो प्रत्यक्ष में नेक प्रतीत होते थे, और वह उन कर्मों के अच्छे फल न पायेगें। 'फ़लानकीमो लहुम' फिर न खड़ी करेंगे, उनके कर्मों के (तौलने) हेतु 'यौमलकयामते' कयामत के दिन 'वज़ाना' तराज़ू कि उनके कर्म तलें। इसलिए कि उनके समस्त कर्म नष्ट और निरस्त हो गये अथवा उनके हेतु हम (खुदा) कुछ तोल न रखेंगे। अर्थात वह काफ़िर कुछ परिमाण और विश्वास न रखेंगें, अपितु अपमान और नष्टता में ग्रस्त होंगे, 'जालेका' इसके हेतु कहा गया है, कि उनके कर्म निरस्त होंगे और उनका कुछ मूल्य न होगा। 'जज़ाओहुम् जहन्नमा' उनका फल नर्क है। 'बेमा कफ़रू' इस कारण, कि उन्होंने कुफ़्र किया। तफसीर कादरी पारा १६ पृष्ठ ८

कुरआन की इस आयत ने भलिभांति स्पष्ट कर दिया है, कि नर्क मात्र काफिरों के हेतु ही निर्मित किया गया है, और यहूदी- ईसाईयों तथा अन्य काफिरों के समस्त शुभ कर्म सर्वथा नष्ट कर दिये जायेंगे। उनको शुभ कर्मों का कोई फल प्राप्त न होगा। तथा उनका गन्तव्य नर्क होगा।

हमने इस आयत को इस हेतु लिखा है, कि आप पाठक-गण ! इस बात को भलिभांति जान लें, कि काफ़िर लोग जो भी शुभ कर्म करते हैं, उन शुभ कर्मों का उन्हें कोई भी फल प्राप्त नहीं होगा वह समस्त निरस्त और नष्ट हो जायेंगे। इस कारण; कि उन्होने इस्लाम और कुरआन को अंगीकार न किया।

अब देखिए, कि जिस भांति यहूदी कहते थे, कि प्रथम तो हम नर्क में जायेगे ही नहीं, यदि गये भी तो थोड़े दिनों के लिये ही। इसी भांति मुसलमान भी कहते हैं, कि स्वर्ग में खुदा के दर्शन प्राप्त होंगे और फ़रिश्ते इस उत्तम धन से वञ्चित रहेंगे। इससे भी यही ज्ञात होता है कि मनुष्य, फरिश्तों से भी उत्तम हैं।................. चाहे वह कुकर्मी और व्यभिचारी ही क्यों न हो, क्योंकि समस्त मुसलमान चाहे कुकर्मी–व्यभिचारी हो. चाहे आज्ञाकारी हो, नर्क की यातना भोगने के पश्चात ही स्वर्ग में जायेंगे।... ....रसूले करीम फ़रमाते हैं।-'ला इलाहा इल्लिल्लाह' कहे और उसके हृदय में गेहूँ के कण के सदृश्य भी नेकी हो, या ईमान हो, तो वह नर्काग्नि से मुक्ति पा जायेगा। और फरमाया–जो 'ला इलाहा इल्लिल्लाह' कहे और उसके हृदय में एक अणु मात्र भी नेकी या ईमान हो, तो वह नर्क से मुक्ति पा जायेगा। इस हदीस को हज़रत अन्स ने बुखारी व मुस्लिम से वर्णन की है।

एक वर्णन है, कि जो ला इलाहा इल्लल्लाह' कहे और उसी पर उसकी मृत्यु हो जाये, तो वह अवश्य ही स्वर्ग में प्रविष्ठ होगा। यद्यपि वह व्यभिचारी और चोर हो। (यह हदीस हम पूर्व में अरबी में भी लिख चुके हैं।)

तफसीर मजहरी पारा १ पृष्ठ ६१

अब यह भी ज्ञात कर लेना आवश्यक है, कि काफ़िर कौन हैं? कुरआन में एक आयत:–'अफ़ामन् काना अला बैय्यन तिम्मिरंब्बेही' (पारा १२ रकू २/२) अर्थात--क्या कुरआन को न माननेवाला ऐसे व्यक्ति की बराबरी कर सकता है, जो इस कुर-आन पर दृढ़ है? जो उसके खुदा की ओर से भेजा गया है। 'बैय्यन' वह तर्क है, जो सत्य की ओर पथप्रदर्शन करता है। 'व यत्लूहो सा हे दुम्मिनहो' और इस कुरआन का अल्लाह की ओर से एक साक्षी (जिब्रील) था। अल्लाह का रसूल पढ़ता है-..................... 'ओलाएका योमेनूना बेही' यही समुदाय इस पर दृढ ईमान रखता है। 'ओलाएका' से 'मनकाना' की ओर संकेत है, क्योंकि कुरआन पर दृढ़ रहने वाला समुदाय मुसलमानों का है। 'व मंय्यक्फ़ुर बेही मिनलअहजाबे फ़न्नारो मौअदह' जो कोई अन्य दूसरे समुदायों में से इस (कुरआन) का इन्कार करेगा, तो नर्क उसके वादे का स्थान है। 'अहजाब' से तात्पर्य मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य समस्त धर्मावलम्बी हैं।

हजरत अबू होरेस से वर्णन है, कि रसूलिल्लाह ने फर-माया–शपथ है, उस सत्ता की, जिसके हाथ में मुहम्मद का जीवन है। यहूदी और ईसाई में से जो कोई ऐसी स्थिति में मरेगा, कि जिस शिक्षा को मुझे देकर भेजा गया है, वह उस पर ईमान न लाया होगा अर्थात मुसलमान न हुआ होगा तो वह अवश्यमेव नर्कगामियों में से ही होगा। (खाहुल् मुस्लिम)

अब आपको भलिभाँति विदित हो गया है, कि काफिर कौन हैं, और कौन नर्क में जाएगा। हम पूर्व में भी लिख चुके हैं, कि कोई भी और कैसा भी धर्म या सम्प्रदाय हो, जिसने कुरआन और हज़रत मुहम्मद की नबव्वत को स्वीकार न किया, तो वह काफ़िर है तथा नर्कगामी है। इससे यह स्पष्ट हो गया, कि जो भी कोई हज़रत मुहम्मद पर विश्वास (ईमान) न लायेगा वह नर्क में जायेगा।

आगे कुरआन के पारा ३० सूरत ज़ुहा में एक आयत **'वा सौफ़ा योतिका रब्बोका फ़त्तर्ज़ो'** अर्थात और अवश्य ही शीघ्र देगा तुझ (मुहम्मद) को तेरा रब्ब (ईश्वर) फिर तू प्रसन्न होगा। अब यह दृष्टव्य है, कि हज़रत मुहम्मद किस बात या वस्तु पर प्रसन्न होंगे ? इसलिए इस आयत की व्याख्या पढ़िये:--

वेहकी ने दलाइल में और तिब्रानी ने औस्त् में तथा हाकम आदि ने उद्धृण किया है, कि हज़रत इब्ने अब्बास ने फरमाया--उम्मत (समुदाय) की आगामी विजयों, धन की प्रचुरता, प्रतिष्ठाप्राप्ति और साँसारिक सफलताओं आदि को रसूलिल्लाह के सन्मुख सामाजिक व्यवस्था में लाये गये। इससे आपको हर्ष प्राप्त हुआ। इस पर यह आयत उतरी। तात्पर्य यह है, कि अल्लाह तुमको अत्यन्त कृपाओं से प्रतिष्ठित करेगा। शत्रुओं पर विजयपूर्ण उत्कृष्टता, मुसलमानों की बहुसंख्या, सम्पूर्ण ससार में इस्लाम का विस्तार, कयामत में सिफ़ारिश.................इत्यादि ऐसी--ऐसी सर्वोत्तम वस्तुएं, कि उनकी जानकारी अल्लाह के अतिरिक्त और किसी को नहीं। खुदा के निक़ट सर्वोच्च पद सर्वोच्च श्रेष्ठ वस्तु, कि अपने दर्शन से प्रतिष्ठित करेगा।

रसूलिल्लाह ने फरमाया--मेरी उम्मत (मुसलमान)

में से यदि एक भी व्यक्ति नर्क में रह गया, तो मैं प्रसन्न न होऊँगा। खुदा का वह वरदान था कि मैं (खुदा) तुझको प्रसन्न करूँगा।

हज़रत अली से वर्णित है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया- मैं अपनी उम्मत की सिफ़ारिश करूँगा और अल्लाह उसको क्षमा देगा। यहां तक कि मेरा खुदा आवाज़ देगा -ऐ मुहम्मद ! क्या तू अब प्रसन्न हो गया ? मैं निवेदन करूँगा--हाँ मेरे खुदा ! मैं प्रसन्न हो गया।

अन्स का उद्धृण है, कि हज़रत इब्ने अब्बास का कथन है, कि 'योनिका रब्बोका' का अर्थ यह है, कि अल्लाह तुझ (मुहम्मद) को सिफारिश करने की आज्ञा प्रदान करेगा और मेरी उम्मत (मुसलमानों) को मेरी सिफ़ारिश से क्षमा कर देगा। यहाँ तक कि मैं प्रसन्न हो जाऊँगा।

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर बिन आसफ़ का उद्धृण है, कि रसूलिल्लाह ने प्रार्थना की–खुदा ! अब मेरी उम्मत (मुसलमानों) को क्षमा (बख्श) कर दे। यह दो बार कहा और रोने लगे। अल्लाह ने हज़रत ज़िब्रील को आज्ञा दी–तू हज़रत मुहम्मद के पास जाकर कह दे, कि तेरी उम्मत के विषय में हम तुझे प्रसन्न कर देंगे।

तफसीर मज़हरी, पारा ३० पृष्ठ ४४१ से ४३

इस विषय पर हम पूर्व में विस्तृत रूप से लिख चुके हैं, कि किस प्रकार नर्कगामी मुसलमानों को हज़रत मुहम्मद लौटा कर स्वर्ग में भेज देंगे। अब देखिये, कि हज़रत मुहम्मद ने जो दोष यहूदियों पर आरोपित किया था, कि वह यह बात करते हैं, कि खुदा थोड़े दिनों ही नर्क में रखेगा, किन्तु इस आयत से आपको यह ज्ञात हो गया, कि हज़रत मुहम्मद ने तो समस्त

मुसलमानों को स्वर्ग में जाने हेतु खुदा से वचन ले लिया। इससे यह सिद्ध हुआ, कि यहूदियों ने तो यह माना था कि हम कुछ दिनों तक नर्क में रहेंगे, किन्तु हज़रत मुहम्मद साहिब नें तो समस्त मुसलमानों हेतु यह वरदान ले लिया कि उनमे से कोई भी नर्क में न जायेगा, चाहे वह चोर अथवा व्यभिचारी ही क्यों न हो ? वह तो स्वर्ग में जायेगा ही। ऐसी स्थिति में इस बात को देखते हुए, जो दोष यहूदियों पर हज़रत मुहम्मद ने आरोपित किया था। उससे कई गुणा अधिक दोष हज़रत मुहम्मद पर आता है ?

वास्तव में बात यह है, कि अपने अनुयाईयों को अपने जाल में फँसाये रखने हेतु प्रत्येक मनोवैज्ञानिक अपने शिष्यों-भक्तों और अनुयाईयों को इसी भांति के चमत्कारपूर्ण और अनोखे प्रलोभन प्रदर्शित करता है, ताकि वह लोग उसके फन्दे में फँसे रहे। ऐसी अनहोनी और अनबूझ बातों का सत्यता व यथार्थ से कोई भी सम्बन्ध ही नहीं रहता है। अब यहूदियों ने जो कहा है। उसी भांति की एक आयत को व्याख्या है। प्रथम आयत देखिये:—" मिस् काला ज़र्रातिन् खेरय्यह " की व्याख्या में लिखा हैं:—

अतः मौमिन चाहे फ़ासिक (कुकर्मी) हो और बिना तौबा (पश्चाताप) के भी मर जायें, अन्त को स्वर्ग में ही जायेगा। यह सर्वसम्मत सिद्धांत हैं।

हज़रत अन्स का सर्वसम्मत उद्धृण है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया–जो व्यक्ति खुदा की एक्यता और हज़रत मुहम्मद की नबव्वत को मानता है और उसके हृदय में अणु सदृश्य भी ईमान है, वह नर्क से निकल आएगा।

मुस्लिम ने हज़रत अबादा बिन सहमत का उद्धृण इन

शब्दों में उद्धृत किया है, कि जिस व्यक्ति ने साक्षी दी, कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह ने उस पर नर्क को हराम (निषेध) कर दिया। (अब क्या है ? स्वर्ग में जाने हेतु खुली छूट मिल गई। मन में आये सो करो और फिरो, क्योंकि रसूल ने तुम्हारे हेतु स्वर्ग आरक्षित कर लिया है।)

सहीहम में हज़रत अन्स और हज़रत अनबान आरत से उदधृण है, और हाकम के निकट हज़रत उमर का उद्धृण है, और मुस्लिम के निकट हज़रत मुआश के उद्धृण से एक हदीस आई है। मुस्लिम ने हज़रत इब्ने मसऊद का उद्धृण इन शब्दों में हदीस उद्धृत की है, कि जिसके हृदय में राई के कण के बराबर भी ईमान होगा। वह नर्क में प्रविष्ट न होगा। (कौन ऐसा मुसलमान है, कि जिसके हृदय में राई के सदृश्य ईमान न हो ?) इसका तात्पर्य यह कि कोई भी मुसलमान नर्क में नहीं जायेगा।

तफसीर मज़हरी पारा ३० पृष्ठ ५०२—३

हम पूर्व में इस भांति की अत्याधिक हदीसें लिख चुके हैं। अब एक और हदीस लिख कर हम इस सूद (व्याज) विषय को समापन करेंगे।

हज़रत अबू होरेस का उद्धृण है, कि रसूल्लिल्लाह ने फरमाया–व्याज ७० अपराधों का संकलन हैं। जिसमें सर्वाधिक न्यून अपराध माता से व्यभिचार करना है। (६९ जो बड़े अपराध हैं, वह भी लिख देते तो जनसाधारण को लाभ ही होता।) इब्ने माज़ाह और बेहकी ने इसे उद्धृत किया है।

तफसीर मज़हरी पारा ३ पृष्ठ ८३ में लिखा है, कि व्याजखोर को राज्यद्रोही की भाँति पश्चाताप करने को कहा जाये। तौबा

न करें तो उससे युद्ध किया जाये मैं कहता हूँ, कि ब्याज खाने-वाले के पास यदि अपनी सुरक्षात्मक शक्ति न हो, तो ईमान के लिये अनिवार्य है, कि उसको कैद में डाल दे, और जब तक वह तौबा (पश्चाताप) न करे उसे कारागृह में ही रखें। यदि उसके पास अपनी रक्षा हेतु शक्ति हो और ईमाम उसे बन्दी न बना सके तो उसे राज्यविद्रोही घोषित किया जायेगा और उससे तब तक युद्ध किया जायेगा, कि जब तक वह तौबा न कर ले। यह आज्ञा प्रत्येक (इस्लाम के अनिवार्य) छोड़नेवाले हेतु अर्थात नमाज़-रोज़ा-ज़कात इत्यादि छोड़ने वाले के हेतु और कबीरा (सबसे बड़ा अपराध) जब कि वह स्पष्टतः अपराधों पर अडिग रहे (यही आज्ञा) उनके हेतु भी है।

जैसा कि रसूलिल्लाह के मरणोपरान्त अरब के लोग इस्लाम से विमुख हो गये और ज़कात (अनिवार्य दान) देने से इन्कार कर दिया। तब हज़रत अबा बकर ने कहा-यह लोग ऊँट के पैरों की रस्सी देने से भी यदि इन्कार करेंगे तो मैं इनसे ज़हाद (धर्मयुद्ध) करूँगा। ब्याजखोर हेतु भी यही आज्ञा है। यदि कोई मौमिन ब्याज (सूद) लेवे, तो उसको यह संकट अवश्य ही होगा, किन्तु सदैव हेतु नहीं। नबी की सिफारिश या खुदा की कृपा, खुदा तो एक ओर हज़रत मुहम्मद को रसूल मानने के कारण से यह संकट टल जायेगा। (अर्थात सदैव नर्क में नहीं रहेगा।) तफसीर मज़हरी, पारा ३ पृष्ठ ८३

जो दोष हज़रत मुहम्मद ने यहूदियों पर लगाया था कि यहूदी यह कहते हैं, कि प्रथम तो कोई यहूदी नर्क में जायेगा ही नहीं और यदि जायेगा तो थोड़े दिनों के हेतु। परन्तु आपने उपरोक्त लिखे प्रमाण से यह भलिभांति जान लिया है, कि हज़-रत मुहम्मद ने इस्लाम में उस विषय में उनसे भी आगे बढ़ कर

लिखा है। हमने यहां संक्षेप में ही लिखा है, क्योंकि हम इस विषय पर पूर्व में भी चर्चा कर चुके हैं। अब आयत का अन्तिम भाग रह गया है। वह इस भाँति है:–

जिसने बुराई की और अपराधों ने चहुँ ओर से घेर लिया है। यह आयत का लेखन भी काफ़िरों हेतु ही प्रमाणित होता है। जिसके हृदय में अणु समान भी ईमान है, उसके हेतु यही सिद्ध होता है क्योंकि उसकी समस्त दिशायें अपराधग्रस्त नहीं होती। इसलिए कि जिस स्थान पर ईमान है, वह भाग सुरक्षित है।........................अतः यह वही काफ़िर लोग नर्कगामी हैं और वह सदैव उसी में रहेगे।

तफसीर मज़हरी, पारा १ पृष्ठ १५१–५२

नर्क में सदैव रहने सम्बन्धी अत्याधिक आयतें कुरआन में हैं। जैसे-'व माहुम बेखारेजिना मिनन्नार' (पारा २ रकू २०/४) अर्थात वह नर्क से कभी न निकाले जायेंगे। 'ला युखरेजूना मिन्हा व ला हुम युस्तानबुन' (पारा २५ रकू ४/२०) अर्थात नर्क से नहीं निकाले जायेंगे और न किसी प्रकार का हेतु स्वीकार किया जायेगा।

वा हुम यस्तरेखूना फ़ीहा। रब्बाना अख़्रिजना नामलो स्वाले-हन गैरल्लज़ी कुन्ना नामलो।

कुरआत पारा २२ रकू ४/१६

अर्थात:–और वह लोग नर्क में चिल्लायेगे और कहेंगे–ऐ हमारे पालनहार! हमको यहां से निकाल, ताकि हम शुभ कर्म करें। उत्तर मिलेगा--क्या हम (खुदा) ने तुमको प्रथम आयु नहीं दी थी।

'फ़ज़ूकु फ़ मा लिज़्ज़ालेमिना मिनन्नसीर'

कुरआन पारा २२ रकू ४/१६

अर्थात:--फिर नर्क की यातना भोगो, अत्याचारियों हेतु कोई सहायक नहीं है। फिर आयत है:—

ख़ालेदीना फ़ी हा ला युख़िफ़फ़ो अन्हुमुल्अज़ाबो वा ला हुम् युन्ज़ूरून।

कुरआन पारा २ रकू १६/३

अर्थात:—सदैव नर्क में रहेंगे, नहीं हल्का किया जायेगा उनसे अजाब (सकट) और न वह वहाँ से निकाले जायगे।

'ख़ालेदीना फ़ी हा अब्दा' (पारा ६ रकू २३/३) यह आयत कई बार कुरआन में हैं, किन्तु अब इसके विपरीत देखिये:—

फ़ अम्मल्लज़ीना शक्कू फ़ फ़िन्नारे लहुम फी हा ज़फीरूंव्व शहीक़। ख़ालेदीना फ़ी हा मा दामतिस्समावातो वल्अर्ज़ इल्ला मा शा आ रब्बुका इन्ना रब्बका फ़अ्आलुल्मा युरीद।

कुरआन पारा १२ रकू ६/६

अर्थः--वह लोग जो अभागे हैं, वह तो नर्क में ऐसी स्थिति में होंगे कि उसमें उनका रोना--चिल्लाना होता रहेगा और सदैव हेतु उसमें रहेंगे। जब तक आकाश और भूमि उपस्थित है। हां यदि खुदा को ही उनका निकालना स्वीकार हो तो दूसरी बात है, क्योंकि आपका खुदा जो चाहे कर सकता है।

तफसीर इब्ने कसीर पारा १२ पृष्ठ ३५

एक और आयत है:—

कालन्नारो मस्वाकुम ख़ालेदीना फ़ी हा इल्लामास अल्लाहो।

कुरआन पारा ८ रकू १५/२

अर्थः--अल्लाह कहेगा--तुम्हारा ठिकाना अग्नि है। उस अग्नि में

सदैव रहेंगे, किन्तु जो खुदा चाहे, तो तुम्हें अग्नि से ज़महरीर (शीतल स्थान) में परिवर्तित कर दे।

तफसीर कादरी, पारा ८ पृष्ठ २६८

प्रथम जो आयतें लिखी, उनमें कहा गया है, कि सदैव ही नर्क में रहेंगे। 'सदैव' वहां से निकलने हेतु प्रतिबन्धात्मक है, परन्तु उन दूसरी आयतों में कहा गया है, कि जब तक भूमि और आकाश रहेंगे, तब तक नर्क में रहेंगे। भूमि और आसमान तो जिस समय इस्राफ़ील (प्रथम नरसिंहा) बजेगा। उस समय प्रलय में नष्ट हो जायेंगे। इससे यह प्रमाणित होता है, कि उस समय तक यह लोग नर्क में ही रहेगे तत्पश्चात नहीं रहेंगे और अन्य दूसरी आयतों में कहा गया है, कि जब भी अल्लाह चाहे तो निकाल ले। इससे भी यह सिद्ध हुआ कि जो नर्क में रहने का प्रतिबन्ध लगाया गया था। वह तो भग हो ही गया। जब प्रलय में खुदा के अतिरिक्त समस्त नष्ट हो जायेगा। तब न स्वर्ग रहेगा और न नर्क रहेगा, और न उनमें रहने वाले ही रहेंगे। अर्थात सर्वनाश हो जायेगा और एकमात्र खुदा ही रहेगा इस्लाम के सिद्धांत को लक्ष्य में रखते हुए यह सिद्ध है, कि सदैव हेतु नर्क में नहीं रहेंगे, जब नर्क ही न रहेगा तो नर्कवासी कहाँ रहेंगे ? और इस बात का प्रमाण भी किसी मुसलमान विद्वान या व्याख्याकार ने नहीं लिखा और न कुरआन और हदीसों में है, कि जो लोग नर्क में थे, वह नर्क निर्माण के पश्चात पुनः नर्क में प्रविष्ट हो जायेंगे। इससे भी सिद्ध हुआ कि नर्कवासी सदैव हेतु न रहेंगे और न अनन्तकाल तक नर्क रहेगा। फिर सदैव का जो प्रतिबन्ध था, वह भंग हो गया और कुरआन की वह आयतें, जिनमें अनन्तकाल तक रहने का, कहा गया है, वह समस्त निरर्थक हो जाती है। हदीसः—

काला फ़िल्मुआलेमुत्तान्ज़ीले हद्दस्नो उमरान् बिन सुसैन अनिन्न-बिय्ये साल्लल्लाहे व सल्लम। काला यखरूजो कौमम्मिनन्नारे शफ़ा अते मुहम्मद सल्लअम् फ़ यदख़ोलू नल्ज़न्नता।

तफसीर मुआलेमुत्तान्ज़ील पारा १२ (हूद) पृ. १२०

अर्थात:—उमरान बिन हुसैन से हदीस है, कि हज़रत मुहम्मद ने कहा—फिर एक जाति निकाली जायेगी नर्क से। हजरत मुहम्मद की सिफारिश से, फिर स्वर्ग में प्रविष्ट की जायेगी।

यहां भी तो नर्क में ज़ाने के पश्चात एक जाति को वहां से निकाला जायेगा तो फिर सबका सदैव नर्क में रहना सिद्ध नहीं होता है।

तफसीर मजहरी ने 'इल्लामा सा आ रब्बोका' की व्याख्या में लिखा है, कि सदैव अग्नि में रहेंगे, जब तक कि भूमि और आसमान हैं। हाँ, यदि खुदा को ही निकालना स्वीकार हो, तो दूसरी बात है। 'इन्ना रब्बोका फ़ आ लुल्लेमा योरीद' निसन्देह आपका खुदा चाहे जो कुछ कर सकता है। अर्थात उसका सम्पूर्ण अधिकार है, कि और समस्त बातों के करने का विचार और समस्त स्थानों को घेरनेवाला होने के कारण स्वतंत्र हैं। वह इस बात हेतु विवश नही है, कि स्वर्गवासियों को स्वर्ग में और नर्कवासियों को नर्क में सदैव रहने की बात को निर्धारित कर दी, उस पर दृढ़ रह सके और किसी को वहां से न निकाल सके।

तफसीर मजहरी भाग ६ पारा १२ (हूद) पृ. ९५

व्याख्याकार महोदय ! खुदा की यह दूसरी बात ही तो विवादास्पद है, कि जिसने कुरआन की अनेक आयतों को निरर्थक और प्रभावहीन कर दिया है। जो यह कहती थी, कि अनन्त

काल तक नर्क में रहेंगे। इससे यह स्पष्ट हो गया कि खुदा जो निर्धारित करता है। आवश्यक नहीं कि वह स्वयम् उनका पालन करें या उनको भग न करें। जब उसकी इच्छा हो वह कुछ भी नियम समाप्त कर दे। (ऐसे खुदा का कौन विश्वास करेगा ?)

एक उद्धरण में हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत अबू हुरैरा के जो कथ्य आये हैं, उनसे भी इस बात का समर्थन होता है। जैसा कि हज़रत मसऊद का कथन है, कि नर्क में ऐसा दृश्य भी अवश्य आयेगा, कि उसमें कोई न होगा, और यह स्थिति उस समय होगी, कि जब लोग शताब्दियों तक उसमें रह चुके होंगे।

हज़रत अबू हुरैरा का एक वर्णन भी इस प्रकार आया है, कि सूफिया में शैख़ मौहेय्युद्दीन और इब्ने अरबी के कथन भी यही है, किन्तु यह कथन सवसम्मत और प्रत्यक्ष आयतों और हदीसों के विपरीत है, क्योंकि अल्लाह ने फरमाया है, कि वह सदैव रहेंगे।

तिब्रानी ने अल्कवीर में और हाकम ने हज़रत मौआज़ बिन जबल से उद्धृण किया है, और हाकम ने इसे उचित भी कहा है, कि रसूलिल्लाह ने मोआज़ को यमन का हाकिम नियुक्त कर भेजा। हजरत मोआज़ वहाँ पहुँचे, तो एक भाषाण में कहा--ऐ लोगों ! मैं अल्लाह के रसूल का दूत हूँ। मुझे तुम्हारे पास यह सूचना देने हेतु भेजा गया है, कि लौट कर ख़ुदा की ओर जाना है। स्वर्ग की ओर या नर्क की ओर। और वहां पर सदैव अनन्तकाल तक रहना होगा, और तन ऐसे होंगे कि कभी मरेंगे नहीं।

शैखेन ने हज़रत इब्ने उमर के उद्धृण से लिखा है, कि स्वर्गीय लोग स्वर्ग में और नारकीय लोग नर्क में चले जायेंगे।

फिर एक घोषणा करनेवाला आयेगा और कहेगा–ऐ स्वर्ग और नर्कवासियों ! यहां मृत्यु नहीं आयेगी।

बुखारी ने हज़रत अबू हुरैरा के उद्धरण से लिखा है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया–स्वर्ग और नर्कवालों से कहा कि यहाँ अनन्तकाल तक रहोगे। यहाँ मृत्यु नहीं है।

तफसीर मज़हरी पारा १२ पृष्ठ ६०–६१

शैखेन ने अबू हुरैरा के उद्धृण से वर्णन किया है, कि नर्क ने अपने खुदा से प्रार्थना की–ऐ मेरे खुदा ! मेरे एक भाग को (अत्याधिक गर्मी के कारण) दूसरा भाग खाये जाता है। अल्लाह ने उसको दो सांसे (एक वर्ष में) लेने की आज्ञा दे दी। एक सर्दी की ऋतु में और एक गर्मी की ऋतु में। गर्मी की ऋतु में लोग अत्याधिक उष्णता और सर्दी की ऋतु में अत्याधिक शीत अनुभव करते हैं, वह नर्क के साँस लेने के कारण होता है।

कतिपय सत्यान्वेषियों का विचार है...................अपराधी मुसलमानों को खुदा की ओर से अपराधो के दण्डस्वरूप नर्कज्वालाएँ लगेगी। फिर अल्लाह अपनी कृपा से उनको स्वर्ग में प्रविष्ट करा देगा और स्वर्ग–निवासियों की ओर से उन्हें नारकीय कहा जायेगा अर्थात उनकी संज्ञा नारकीय पड़ जायेगी।

तफसीर मज़हरी पारा १२ पृ. ६१–६२

उपर्युक्त कथ्य को मुसलमानों ने इस भाँति स्वीकारा है, कि अपराधो मुसलमानो को नर्क से निकाल कर स्वर्ग में भेज दिया जायेगा और काफ़िर लोग सदैव वहीं रहेंगे।

हमारा कथन यह है. कि भले ही नर्क से मुसलमान निकलें या कोई और निकलें ? किन्तु यह सिद्ध हो गया कि नर्क से भी

लोग निकलेंगे । इस सिद्धि से कुरआन की वह समस्त आयतें, जिनमें यह कहा गया हैं, कि 'वह कभी नहीं निकलेंगे । निरर्थक और प्रभावहीन हो गई है । इस आयत का एकाँश रह गया है, सो निम्न हैं:—

वल्लाजीना आमनू व अमेलुस्सालेहाते ओलाएका अस्हाबुल्जन्नते हुम फोहा खालेदून । कुरआन पारा १ आयत ८३

अर्थ:—और जो लोग कि ईमान लाये और नेक कर्म किये वह स्वर्ग में जायेंगे और सदैव उसमें रहेंगे ।

ऐसी अनेक आयतें कुरआन में है, कि नेक कर्मों के कारण स्वर्ग मिलेगा । यह बात निर्विवाद है । इस पर किसी को भी कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु कुरआन ने जिस भाँति नेक कर्मों का विवरण दिया । वह एक विवादास्पद विषय बन गया है ।

हम पूर्व में भी लिख चुके हैं, कि इस्लाम के नेक कर्म यदि सार्वभौमिक कर्म होते तो प्रत्येक मनुष्य इस बात को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारता, किन्तु इस्लाम के नेक और शुभ कर्म साम्प्रदायिक एवँ सीमित हैं । इस्लाम उन्हीं कर्मों को नेक और शुभ मानता है, जो कि इस्लाम के हेतु लाभप्रद हैं । भले ही वह लूट हिंसा और युद्ध ही क्यों न हों ? परन्तु आपको यह पढ़ कर आश्चर्य होगा, कि इन नेक कर्मो से स्वर्गप्राप्ति के सिद्धान्त का भी इस्लाम ने स्वयँमेव ही विरोध किया है । अनवरत हदीसें इसके विरोध में है । उनका कथन है कि:—

किसी व्यक्ति को भी शुभ कर्म स्वर्ग में नहीं ले जा सकते हैं । जैसे 'वा अम्मल्लजी नबयज्जत वजूहोहुम' (पारा ४ रकू ११/२) इसकी व्याख्या करते हुए मजहरी ने लिखा है, कि जिन लोगों के चेहरे गोरे होंगे अर्थात अहले सुन्नत 'फ फी रहमतिल्लाहे'

वह अल्लाह के अनुग्रह में अर्थात स्वर्ग और स्थाई नेकी में होगे। स्वर्ग की व्याख्या 'रहमत' शब्द के साथ करने से सचेत किया गया है, कि मौमिन की इच्छा है, कि सम्पूर्ण आयु अल्लाह की आराधना में व्यय हुई हो, किन्तु स्वर्ग में उसका प्रवेश अल्लाह की दया और कृपा के बिना सम्भव नहीं।

हज़रत आयशा से वर्णित है, कि रसूलिल्लाह ने फरमाया-सत्यता धारण करो और मध्यम गति से चलो, और प्रसन्न रहो। क्योंकि स्वर्ग में किसी को उसके कर्म नहीं ले जायेंगे। साथियों ने निवेदन किया—क्या आपके कर्म भो स्वर्ग में नहीं ले जायेगे? फरमाया—नहीं, मुझ को भी नहीं, हां अल्लाह अपनी—स्वयं की कृपा क्षमा और दया से मुझको ढांप ले, तो स्वर्ग में प्रवेश मिल जायेगा। इसको बुखारी और मुस्लिम ने अपनी पुस्तकों में और अहमद शैखेन ने हजरत अबू हुरैरा के उद्धृण से ऐसी ही हदीस वर्णन की है, और मुस्लिम ने हजरत जाबर का उद्धृण इन शब्दों में वर्णन किया है, कि तुम में से किसी को उसके शुभ कर्म स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं करेंगे और न नर्क से बचायेंगे और न मुझे। अल्लाह की दया के अतिरिक्त।

तफसीर मजहरी, पारा ४ पृष्ठ ३३४

'फ़ ओलायका लहुम अज़ाबुम्मुहीन' की व्याख्या में मजहरी ने बताया, कि 'ओलायका' में 'फ़' का प्रयोग बता रहा है, कि मौमिनों का स्वर्ग में प्रवेश मात्र अल्लाह की कृपा से होगा। कर्म, प्रवेश का कारण नहीं है। इसमें बुखारी और मुस्लिम के हदीस का प्रमाण दिया गया है।

तफसीर मजहरी, पारा १७ पृष्ठ २३१

इसी भांति तफसीर मजहरी, पारा ५ पृष्ठ १६६ में भी यही लिखा है, कि कर्म से स्वर्ग प्राप्ति नहीं होगी।

अल्लाह ने बनी इस्राईल के एक पैगम्बर के पास एक फरिश्ता भेजा, कि तुम्हारी उम्मत में जो भक्त लोग हों, उनसे कह दो, कि अपने कर्मों पर भरोसा न कर ले। कयामत के दिन हिसाब के समय मैं जिसको आवाज देना चाहूंगा, उसको आवाज़ दूँगा और तुम्हारी उम्मत में तो अपराधी हैं। उनसे कह दो, कि अपने आपको विनाश में मत डालो, क्योंकि मैं बड़े-बड़े अपराध क्षमा कर दूँगा। और मुझे परवाह न होगी।

तफसीर मजहरी पारा २ पृष्ठ ३२७

अबू सईद से उद्धृण है, कि रसूलिल्लाह ने फरमामा-बनी इस्राईल में एक व्यक्ति था। ज़िसने ९९ व्यक्तियों को हत्या की थी। फिर वह निकला, तो एक राहिब (ईसाई विद्वान) के पास आया और कहा—क्या मेरी तौबा (पश्चाताप) स्वीकृत हो सकती है? उसने कहा-नहीं हो सकती। बस, उसने उसको भी मार डाला और फिर तौबा हेतु पूछने को निकला। एक व्यक्ति ने उसको बताया-अमुक गाँवों में जा। उसकी मार्ग में ही मृत्यु हो गई किन्तु मृत्यु के समय वह उन गांवों की ओर सरका। तत्पश्चात उसके सम्बन्ध में रहमत (कृपा) और अजाब (सकट) के फरिश्ते आपस मे झगड़ने लगे, तो खुदा ने भूमि को आज्ञा दी-उस गाँव के निकट हो जा (जहां से वह आ रहा था) और दूसरी ओर की भूमि को आज्ञा दी-दूर हो जा. ज़िस ओर से वह आया था। फिर फरमाया- ऐ फरिश्तो ! दोनों ओर की भूमि नाप लो। नापने पर उस विद्वान के गांव की भूमि एक बालिश्त अत्याधिक निकली इसलिए खुदा ने उसे बख्श (क्षमा) दिया अर्थात स्वर्ग में भेज़ दिया।

उद्धृण उत्पत्ति हदीस २७२ तजरीदे बुखारी भाग २ पृ. १२५

मुस्लिम विद्वानों ! यह निर्णय क्या कर्मानुसार हुआ है ? कर्म तो उसके कुछ नहीं थे । मात्र उसने १०० निर्दोषों की हत्याएँ की थी । ऐसा है इस्लाम और कुरआन का खुदा, तरंग आई तो १०० व्यक्तियों के हत्यारे को भी स्वर्ग दे दिया ।

हमने यह उदाहरण इस हेतु प्रस्तुत किया है, कि समस्त कर्मकाण्डी लोग देख लें और ऐसे खुदा पर विश्वास न करें । न जाने किसको स्वर्ग में भेज दें और किसको नर्क में डाल दें । क्योंकि उसकी स्वतन्त्रता और मनमानी पर अंकुश या प्रतिवन्ध नहीं है । अब आपने देख लिया है, कि सर्वसम्मत सिद्धांत पर भी इस्लाम का मतभेद और विरोधाभास है, कि शुभ और नेक कर्मों से स्वर्ग प्राप्ति होगी या नहीं । इस आयत में यह बात बताई गई है, कि शुभ कर्म करने वाले स्वर्ग में जायेंगे और सदैव वहीं रहेंगे । इस विषय पर, कि नेक अमल (कर्म) कौन से होते हैं ? इस्लाम के दृष्टिकोण को हम विस्तारसहित इसी पुस्तक में प्रथम ही लिख चुके हैं, और यहां लिखा, कि आयत तो कहती है, कि 'नेक कर्म स्वर्ग में ले जाते हैं' । परन्तु हदीसों से यह प्रमाणित है, कि नेक और शुभ कर्म स्वर्ग में नहीं ले जा सकते हैं ।

* समाप्त *

विशेषः—पाठक बन्धुओं । पुस्तक की वृहदता को दृष्टिगत रखते हुए इसमें कुरआन पारा १ की आयत क्रमांक ८३ तक ही सामग्री प्रस्तुत है । इससे अग्रिम सामग्री इसी पुस्तक "कुरआन परिचय" के भाग तृतीय में पढ़िये ।

—लेखक

शुद्धि-पत्र.

पाठक बन्धुओं !

अत्याधिक सावधानी और सजगता रखते हुए भी पुस्तक में यत्र-तत्र शब्दों में और मात्राओं के ऊपर अनुस्वार (ं) और अरबी के उदघृणों में अक्षरों के नीचे नुक़्ते अर्थात शून्य (.) और आधे (्) तथा मात्राएँ आदि स्पष्टतः अमुद्रित रह गये हैं । अतः शुद्धि-पत्र प्रस्तुत हैं, फिर भी अनुस्वारों और नुक़्तों को आप दृष्टि में रखेंगे तथा शुद्ध कर पढ़ेंगे ।

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	ख्वारज	ख्वारिज़
५	१२	रसूल	रसूलें
६	२०	आयत	आयतें
१३	२०	के	की
१६	२३-२४	ओर रहाम	और रहीम
२५	१६	नाबूदो इय्याका	नाबूदो वा इय्याका
३४	१८	सिद्धिको	सिद्दीकों
३६	१६	सम्मि-	सम्मिलित
३६	२०	पहला	पहिले
४२	२०	क्या	✕
४४	२	क	के
४५	२०	और	×
४६	८	वअन्नालतुलहदीश	वअन्नालहुलहदीद
„	२१	इल्लज़्जालेमून	इल्लज़्ज़ालेमून
४७	११	फीहे इलल्लाहे	फ़ीहिल्लाहे
„	१६	सँदेश	सन्देह
४८	१७	चाहता कि	चाहता है कि
४६	६	भाग १ पृ. ५८	भाग १ पृ. ५६

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१	३	जालेकल्किताबे	ज़ालेकल्किताबो
५१	७	लगा लगा कर	लिका लगा कर
५५	८	जिस अर्थ है	जिसका अर्थ है।
५६	१	जबिया	ज़बरिया
"	१२	सातों आलमानों	सातों आसमानों
५८	२	माखूज़ुनम्मिनल इत्तिकाए	माखूज़ुनेमिनल इत्तेकाए
५९	१२	हादवां	हादवा
६१	२२	को आयता से	की आयतों से
६३	१२	यदि आपव	यदि आपके
"	२६	लाएगा जा	लाएगा जो
६४	८	सय-असत्य	सत्य-असत्य
६७	२	हमि	हिम
७१	४	से लकर रीढ़	से लेकर रीढ़
७३	३	कि जिसक पास	कि जिसके पास
"	२०	एव	एवम्
"	२६	रज़्क़ के	रिज़्क़ के
७४	१८	अन्ज़ाल	लौ अन्ज़ाल
"	१९	यहां जिब्रिल	यहाँ जिब्रील
७५	१४	स्वय इन्जिल को	स्वयँ इन्ज़ील को
"	१५	इन्ज़िल नही है,	इन्ज़ील नहीं है;
"	२०	जिनमें से कईया	जिनमें से कईयों
७७	२	१ हजार ५०० वर्षो	३ हजार ५०० वर्षों
८०	५	जो भो सत्यास य	जो भी सत्यासत्य
८१	२२	(कु·आन) के संवथा	(क़ुरआन) के सर्वथा
८६	२३	ईधर आतो तो	इधर आती तो

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९४	४	प्रयुक्त कैसे	प्रयुक्त होना कैसे
९७	१६	जिस खुदा के	कि जिस खुदा के
१०२	१३	जो एहरावी	जो एराबी
१०५	७	परेब देने वाला	फ़रेब देनेवाला
१०८	१०	से वचित	से वञ्चित
,,	१६	जैसे रगवाली	जैसे रङ्गवाली
१०९	१	रोकगा हो	रोकेगा ही
,,	१०	मर्सदन फई-	मर्सदन फ़इ-
,,	१९	विवस कर दो	विवश कर दो
११३	४	(मनुष्यों) से निर्णय	(मनुष्यों) के निर्णय
,,	१५	जिन्ना से नक	जिन्नों से नर्क
११५	१६	कि ससार के	कि संसार के
,,	१७	करते एवं	करने एवँ
१५६	१५	धर्म में सदेह	धर्म में सन्देह
११७	६	व्यक्ति उत्पादी	व्यक्ति उत्पाती
१२१	३	पूणत: वर्णन	पूर्णत: वर्णन
,,	८	आज्ञा क पालन	आज्ञा के पालन
,,	२०	बनी मुत्तलक से	बनी मुत्तलब से
,,	२५	सहायताथ	सहायतार्थं
१२२	१९	महिनों युध्द	महिनों में युध्द
१२५	२५	और जागारदार थे।	और जागीरदार थे।
१२९	१९	इसका समाधन	इसका समाधान
१३०	९-१०	फ़ूरेबा वैनाहुम बेनुरिल्लह	फ़ज़्रेबा वैनाहुम बेसूरिल्लह
१३४	१२	अग्नि प्रज्वलिस करें।	अग्नि प्रज्वलित करें।
१३८	१८	ईसाई) विश्वास करें	ईसाई अविश्वास करें

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४६	१६	किसी ताविल	किसी तावील
"	"	का भी एतमाल	का भी एहतमाल
१४६	२४	मिलरब्बेका ला	मिर्रब्बेका ला
१५१	५	सब छिन लेता	सब छीन लेता
"	१२	कुफ़र व निकाफ़	कुफ़र व निफ़ाक
"	१४	भय-आतक	भय-आतंक
१६१	७	जिसका ईधन	जिस का ईंधन आदमी
१६२	२०	ऽत्दुत्तर दिया है।	प्रत्युत्तर दिया होगा।
१७६	२०	काफिर और फ़ासिद है।	काफ़िर और फ़ासिक है।
१८४	४	अलमिलको	अलमिललो
१८५	३	स्वयं का कलमा	स्वय का कलाम
१८८	२१	अहलेसुन्नत सर्वी सम्मत	अहलेसुन्नत का सर्वसमस्त
१६२	२०	यह कि है कि,	यह की है, कि
१६३	५	शुभ कार्य क्य ?	शुभ कार्य क्या है ?
"	२६	कयामत (प्रलय) के पूव	कयामत (प्रलय) के पूर्व
१६५	६	न उसे मानने न मानने	उसे न मानने
२०३	२१	भूमि को नापने।	भूमि को नापो।
२११	३	उनके भवन स्वग	उनके भवन स्वर्ग
"	६	शराब तशा शहद	शराब तथा शहद
"	१४	सदृश्य हागे।	सदृश्य होंगे।
२१२	२२	उनमें से साधातण	उनमें से साधारण
२१४	२३	हम उसके हैं।	हम उसकी हैं।
२२४	२५	करने कुरआन	करने की कुरआन

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३६	१६	का तापय	का तात्पर्य
२३७	१७	कब्रों का और	कब्रों की ओर
२४०	१०	किताबुल्लाहु	किताबुल्अमारत
२४४	५	मैं इज्राइल के	मैं इस्राईल के
२४६	१	तफसीर मुक़ालिम	तफसीर मुआलिम
„	२४	अल्लाह पाक	अल्लाह पाक का
२४७	११	इब्ने सबाय और	इब्ने अब्बास और
२४८	१८	नहीं कि उनको	नहीं की, कि उनको
२४९	१४	भूमि को बनाया	भूमि को बिछाया
२५५	१९	हमाइम्मस्तून	हमाइम्मस्नून
२६१	५	लोगों कहा	लोगों ने कहा
२६७	१८	हो सकता ?	हो सकता है ?
२६८	„	कहता की सड़े हु:	कहता कि सड़े हुए
२७०	२५	ही न ी सकता है;	ही नहीं सकता है;
२७३	३	इला क़द्दरिम्मलूम	इला कदरिम्मालूम
२७६	२३	इल्ला ममित्तबअक़ा	इल्ला मनित्तबअक़ा
२७८	१९	को इस्त्राफील)	को इस्राफ़ील)
२७९	६	लअहननेकन्ना	ल अख़्नत्तनेकन्ना
„	८	अम्मफ़ुरा वस्तफ़िज़र	अम्मफ़ौरावस्तफ़िरज़
„	९	व रज़लेक़ा वा	व रिज़लेका वा
२९६	९	वणित	वर्णित
२९९	४	अस्वीकृत दी	अस्वीकृत किया
३०४	३	और तौबा क्षमा	और तौबा से क्षमा
३०८	१२	मुआने मुत्तन्ज़ील	मुआलेमुत्तन्ज़ील
३१५	६	तराश्शाहाहम्लन्	तराश्शाहा हमलत हमलन्
„	८	सालंहल्ल तक़्ननन्ना	सालेहल्लतक़्ननन्ना

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२०	६	भग न करो,	भंग न करो,
३३३	१४	कि नबी इस्राईल	कि बनी इस्राईल
३३९	१०	विनित भाव से	विनीत भावसे
३४१	१७	कोई शफाआत नहीं	कोई शफ़ाअत नहीं
३४२	२५	विराधाभासों को	विरोधाभासों को
३४८	१०	का पथ–प्रदर्शक	की पथप्रदर्शक
३५०	१७	से अज़माते है	से आज़माते हैं।
३५२	३	मूसा ल मुदरेकूना	मूसा इन्ना लमुदरेकून।
,,	५	फ़न्फ़ल फ़काना	फ़न्फ़लका फ़काना
३५३	२१	(दरि)	(दरिया)
३५४	८	दीजिए की फारस	दीजिए कि फारस
३५६	३	दूध पिलत रही	दूध पिलाती रही
३५७	२५	को अधविश्वास	को अन्धविश्वास
३५८	१३	हजरत मुहम्द	हज़रत मुहम्मद
३६०	१६	तब उसके	तब उन्होंने
३६१	२२	के अधविश्वासों के	के अन्धविश्वासों के
३६२	१२	तो निशक निकल चल थे,	तो निशंक निकल चले थे,
३६५	११	कभी स्वीकारन को	कभी स्वीकारने को
३६७	३	प्रारम्भ कर किया।	प्रारम्भ कर दिया।
३६८	१६	अहलल्बससते	अहलल्बसरते
३६९	१०	ना अकबल अन्देशी,	ना अकबत्त अन्देशी
,,	२४	हकतआले (खुदा)	हकतआला (खुदा)
३७१	१६	इसमें २० दिन का	इसमें ३० दिन का
३७४	२	बाल खींचन लगे।	बाल खींचने लगे।
३८०	६	निरकुश देख कर	निरंकुश देख कर

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१६	आज़ आशिवाद दे।	आज़ आशीर्वाद दें।
३८१		का किस ा ?	का किस्सा ?
३८३	१२	से २ हजार वर्षों	से ३ हजार वर्षों
३८५	३	फसौफातानी	फसौफातरानी
,,	२३	मैं ससार में	मैं संसार में
,,	२४	बड़े स्वग में हूँ।	बड़े स्वर्ग में हूँ।
३८७	१७	ल्कर्वा'	ल्कुर्वा'
३९२	३	कि मसा की	कि मूसा की
३९७	२	फ़न्जुर इना	फ़न्जुर इला
३९९	१४	तूमको जफा-	तुमको जला-
४००	१	पास तुरजबीन और	पास तुरंजबीन और
४०७	११	और मजभेद के क्या	और मतभेद के क्या
४२४	२१	तो काफर हो	तो काफ़िर हो
४३०	१२	पर पवत भी	पर पर्वत भी
,,	२३	बेमीसाकोहिम् व	बेमीसाकेहिम् व
४३१	२२	नतमष्तक हो	नतमस्तक हों
,,	२५	जा सकला है ?	जा सकता है ?
४३२	३	किवे हुए	किये हुए
४३५	१	आतकत कर	आतंकित कर
,,	२०	और बन्नी इस्राईल	और बनी इस्राईल
४३७	११	उत्यन्त कठोर	अत्यन्त कठोर
,,	२२	लहुमक्नन	लहुमक्नू
,,	,,	फज़अन्नाहानकालल्मा बैन	फ़ज़अलनाहा नकालल्मा बैना
४३८	२६	कथानुसार ७०	कथनानुसार ७०
४३९	क्र. १६ से २० तक की पंक्तियाँ निरस्त समझो जाएं।		

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२२	२	उन्हें मनुस्य	उन्हें मनुष्य
"	२३	स्वय को भी	स्वयम् खुदा को भी
४४४	७	इन् । शाअल्लाहो	इन्शाल्लाहो
"	८	वा ला तस्किलहस	वा ला तस्किलहसं
"	९	जेवाविल्हक्क़,	जेताविल्हक्क,
"	१२	काज़ालेका	कज़ालेका
"	१७	'बकर'	'बकरह'
"	१९	'ज़ा' की फत़ा	'ज़ा' को पेश से
"	"	'होज़ावा'	'हुज़ू'
"	"	'होज़् अा'	'हुज्वा'
४४९	२७	होता है ।	होती है
४५४	१७	पर हां मर	पर ही मर
४५५	६	शव शीवित हो	शव जीवित हो
"	२३	करते का नाटक	करने का नाटक
४५६		और शिझितजनों को	और शिक्षितजनों को
४५७	३	खश्यतिल्लाहो	ख़श्यतिल्लाहे
"	४	तामेलून ।	तामलून
४५८	२	यशजूबा	यस्ज़ूबा
"	४	खुसी-नाखुशी	खुशी-नाखुशी
"	१६	इम्मीन् शैइन	इम्मिन् शैइन
४५९	९	को आहद	को उहद
"	२६	सुभान अल्लाह !	सुब्हान अल्लाह
४६०	३	कि फ़करे आलम	कि फ़ख़्रे आलम
"	६	बनी और सिद्दीक	नबी और सिद्दीक
४६१	१४	नक्ज़ोहम्मीसाकाहुम़	नक्ज़ेहम्मीसाकाहुम्
"	१५	अन् मवाजएही	×

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६३	२	सहस्त्र गाँव हैं।	सहस्त्र गाँव हैं।
४६३	१०	सहस्र वर्षों	सहस्र वर्षों
,,	२७	शक्ति दोगे और	शक्ति दो और
४६४	४	लअदखलन्ना कुम्'	लउदखलन्नाकुम्'
,,	७	फकद ज़ल्लो	फकद ज़ल्ला
,,	१४	कासियह	कसेयह
,,	१५	यहर्रेफन-	यहर्रेफ़ूर-
४६५	५	फ़ मय्युर्रेदिल्लाहो	फ़ मंय्युरेदिल्लाहो
,,	६	यज्रअल् सदरह	यज्अल् सदरहू
,,	१०	सीने की तग ओर	सीने को तंग और
४६६	२५	न्योयाचित बात है ?	न्यायोचित वात है ?
४६८	२३	ले भा लाना।	ले भी आना।
,,	२६	और हेब्रो । तक	और हेब्रोन तक
४७१	२	तेरी कोति सुनी	तेरी कीर्ति सुनो
४७२	१	अन्य आयत भी	अन्य आयतें भी
,,	१२	जैसे सुलमान के	जैसे सूलेमान के
४७३	८	मान्यनाओं के	मान्यताओं के
४७४	१	फ़राकुम्मिनहूम्	फ़राकुम्मिनहुम्
४७५	१८	उनके विधान थे।	उनके विद्वान थे।
४७६	४	काफ्रिरों और यहून्यियों	काफ़िरों और यहूदियों
४७७	२३	तौरात की बात	तौरात की बातें
४७९	२	बेएदीहीम्	बेएदीहिम्
,,	३	फ़ वैलुल्लिज़ीन यक्तबूनल्किताबा-बेएदीहिम वा वैजुल्ला	फ वैलुल्हुम् मिम्मा-कतबत् एदीहिम वा वैलुल्ल

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८०	१५	कि सकट भी	कि संकट भी
४८१	२१	कठस्थ कर रखे	कण्ठस्थ कर रखे
४८२	७	नमस्सनन्नारो	तमस्सनन्नारो
"	१०	' ओलाएका	' फ़ ओलाएका
४८३	१३	सत्य का और	सत्यता और
"	२२	सक़ट होगा,	स ंकट होगा,
"	२५	लेकर पूस्तक में	लेकर पुस्तक में
"	२६	ऐसी परिवनित–	ऐसी परिवर्तित
४८५	१७	लिनकाफ़ रीना	लिल्काफ़ेरीना
४८६	५	भिक्षूओं	भिक्षुओं
४८७	२४	अन्स ने बुखार व	अन्स ने बुख़ारी व
४८८	२४	बह उस पर	वह उस पर
"	२५	अथाँत	अर्थात
"	२६	(खाहुल मुस्लिम)	(रवाहुल मुस्लिम)
४८९	८/९	वा सौफा यौतिका रब्बोका फ़त्तजो	ल सौफ़ा यौतिक रब्बोक फ़त्तर्ज़ा
"	१८	सामाजिक व्यवस्था में	समाधिक अवस्था में
४९०	१०	'योनिका रब्बोका'	'यौतीक रब्बोक'
४९१	१७	खेरय्यह"	खौरय्यह"
४९२	७	सहीहम	सहीहैन
"	९	मुआश के	मुआज़ के
४९३	१७	सांकट अ व य	संकट अवश्य
"	२५	भतिभाँति जान	भलिभांति जान
"	२६	उस बिषय में	इस विषय में
४९३	१३	बेख़ारेज़िना	बेखा[illegible]
"	१४	ला युक्रेज़ूना	ला [illegible]
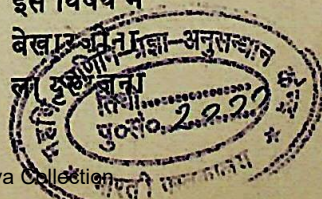
पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४९५	१	फ़ज़ूकु फ़ मा लिज्ज़ा-लेमिना	फ़ज़ूकू फ़ मा लिज्ज़ा-लेमीना
,,	१२	वल्अर्ज़ा इल्ला	वल्अर्ज़ो इल्ला
,,	२२	मस्दाकुम	मस्वाकुम्
,,	२२	इल्लामास अल्लाहो।	इल्लामाशा अल्लाहो।
४९७	१	बिन सुसैन	बिन हुसैन
,,	३	नल्ज़ान्नता।	नल्ज़ान्नते।
५००	५	व अमेलुस्साले ाते	व अमेलुस्सालेहाते
५०२	४	आवाज़ा देना चाहूँगा, उसको आवाज	अज़ाब देना चाहूंगा, उसको अज़ाब
,,	८	पारा २ पृष्ठ ३२७	पारा ८ पृष्ठ ३२७
५०४	१४	नाबूदो वा इय्याका	नाबुदो वा इय्याका।